निमाड़ी गीत

मध्यप्रदेश के निमाड़ जनपद के संस्कार गीत एवं उनकी स्वरलिपि

श्रीमती हेमलता उपाध्याय

निमाड़ी गीत

मध्यप्रदेश के निमाड़ जनपद के संस्कार गीत एवं उनकी स्वरलिपि

श्रीमती हेमलता उपाध्याय

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल-462002
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755-2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2014 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण – मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

मूल्य – 300/- रुपये (तीन सौ केवल)

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

ISBN - 978-93-83118-97-7

जनपदीय गीत सांस्कृतिक परम्परा के आधार हैं। वाचिक परम्परा में लोकगीत शब्द रचना और संगीत रचना एक साथ है। संस्कारों के गीत विभिन्न अवसर और अनुष्ठानों तथा लोकाचारों से जुड़े हुए हैं। वे साहित्य और संगीत की लोकपरम्परा से आगे हमारी सांस्कृतिक चेतना और स्वरूप का दर्शन हैं। निमाड़ी गीत मूलत: स्त्रियों का गान हैं, उनकी भावाभिव्यक्ति हैं। निमाड़ी गीतों के भाव, सम्वेदना और संगीत में आंचलिक संस्कृति का हार्द्र बसता है।

निमाड़ी गीतों के माध्यम से हम जनपदीय भूगोल और उसके जीवन के उदात्त पक्षों, स्वप्नों, अकांक्षाओं तथा आचरण को सहजता से समझ सकते हैं। वाचिकता में गीत की यात्रा ही इसकी प्रमाणिकता है कि गीत में वर्णित तथ्य और संकेत उस जनपद के जीवन आचरण का हिस्सा हैं।

निमाड़ी की वाचिक परम्परा अत्यंत समृद्ध रही है। विविधतापूर्ण वाचिक साहित्य के गीतों पर आधारित यह पुस्तक आपके हाथों में है। श्रीमती हेमलता उपाध्याय ने अकादमी के आग्रह पर गीतों के संग्रह अनुवाद एवं उसकी स्वरलिपि तैयार करने की कृपा की है। अकादमी इस उदारता के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है।

- सम्पादक

अपनी बात

देववाणी संस्कृत विश्व की समस्त बोलियों-भाषाओं की जननी है। हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी भी इन बोलियों से पोषित हुई है। राष्ट्रहित में भारतीय संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन, उन्नयन हेतु शासन की विभिन्न योजनाएँ सराहनीय एवं प्रेरक हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को पोषित करने वाली तथा राष्ट्रीय एकता को एक सूत्र में पिरोने वाली हमारी असंख्य बोलियों में मध्यप्रदेश की एक प्रमुख बोली निमाड़ी का भी वैसा ही महत्त्व है, जैसा एक पुष्प की सुंदरता में उसकी एक-एक पंखुड़ी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक पंखुड़ी की अपनी विशेषताएँ तो हैं, किन्तु समवेत रूप में हर छोटी-बड़ी पंखुड़ी पुष्प को सर्वांगीण सुन्दर बनाने में योगदान देती है।

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी द्वारा समय-समय पर आयोजित श्रुति कार्यक्रमों एवं विचार गोष्ठियों में यही निष्कर्ष निकले कि संस्कृति संरक्षण हेतु इन बोलियों-भाषाओं के पारंपरिक गीतों की स्वरलिपि तैयार करना आवश्यक है। साथ ही मौलिक लोकधुनों में लोकगीतों का (ध्वन्यांकन कैसेट्स, सीडी आदि के रूप में) कर संरक्षित करना अनिवार्य है, अन्यथा हम अपनी मौलिक एवं विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति का बहुत कुछ खो बैठेंगे। अत: इस दिशा में निमाड़ी गीतों की स्वरलिपि रचना का यह प्रयास आपके समक्ष प्रस्तुत है। हमारे लोकगीत सागर में अनगिनत अनमोल रत्न की तरह हैं। असंख्य, अनाम, अज्ञात लोकगीत रचनाकारों, संगीतकारों के हम आभारी हैं, जिनसे हमें लोक गीतों का अक्षय भंडार विरासत में मिला। इन्हें सुरक्षित एवं संरक्षित कर भावी पीढ़ियों तक अविकल पहुँचाने के दायित्व निर्वहन से ही उनके ऋणों से उऋण होना संभव है।

वाचिक परंपरा से पीढ़ी दर पीढ़ी महिलाओं द्वारा हम तक आने वाले इन गीतों में विकास की दौड़, फिल्म प्रभाव, पश्चिम के अंधानुकरण एवं अज्ञानतावश दीर्घ अवधि में कुछ दोष भी आ गये, विशेषकर ताल, स्वर एवं विषयवस्तु की प्रस्तुति एवं धुनों में- किन्तु श्रमसाध्य, दुष्कर और इस महान कार्य संपादन में सरलता से दूषण दूर भी हुए।

पूर्ण सतर्कता से स्वरलिपि रचना में इनकी मौलिकता एवं पारंपरिकता का ध्यान रखा गया है। शास्त्र-सिद्धान्त और लोक-व्यवहार में स्वाभाविक रूप से अन्तर होता है। शास्त्र में नियम पालन व अनुशासन की कठोरता भी होती है, किन्तु लोक नियमों से दृढ़ता पूर्वक बंधा नहीं रहता। सहजता, सरलता, स्वाभाविकता व सरसता को वह सहज अपनाता है एवं अनुकरण कर लेता है। प्राकृतिक निर्झरणी की तरह स्वत: स्फूर्त्त ये लोक-रचनायें निरन्तर मधुरता के साथ नि:सृत होती रहीं और लोक गंगा को युगों-युगों से समृद्ध करती रही हैं- जो जीवन की एकरूपता व नीरसता को भंग कर आनन्द का संचार करने और सबको एक सूत्र में बांधे रखने की क्षमता रखती हैं। इन लोक रचनाकारों ने भले ही शास्त्र नियमों या संगीत की विभिन्न राग-रागिनियों में इन गीतों को नहीं रचा होगा, किन्तु स्वाभाविक रूप से ही इनमें शास्त्र सम्मत अनेक राग-रागिनियों के दर्शन हुये। स्वरलिपि रचना में गीतों की उत्पत्ति, थाट-राग, ताल, स्वर आदि को खोजने का अलग से कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा। आश्चर्य चकित हो इन गीतों की सर्वांगीणता को देखकर अपने उन अनाम रचयिताओं के प्रति नतमस्तक हूँ।

धन्य हैं हमारी पूर्वज महिलायें जिन्होंने वाचिक परंपरा से हम तक इन गीतों को सुरक्षित पहुँचाया। हम आभारी हैं, उन अनाम लोक गीतकारों के जिन्होंने इन गीतों की रचनायें कर उन्हें लोक सागर में सम्मिलित किया और अपने नामों को विसर्जित कर वे अमर हो गये। निश्चित ही हमारे इस प्रथम प्रयास में कुछ त्रुटियाँ संभव हैं, किन्तु विश्वास है कि हमारे उद्देश्य और प्रथम प्रयास को **विज्ञ-जन** अमूल्य मार्गदर्शन से हमें प्रोत्साहित करेंगे। इस विशद् कार्य के संपादन में सुश्री मनोनीता मुकर्जी एवं सुश्री वर्षा मालवीय का अमूल्य सहयोग मिला, जिनके बिना यह कार्य मुझ अल्पज्ञ से अकेले कर पाना संभव नहीं था। उनकी मैं विशेष आभारी हूँ।

श्रीमती पद्मा अत्रे, श्रीमती वर्षा मिश्रा एवं श्री गोविन्द दरबार जी का सहयोग भी मेरा संबल था। आदरणीय पद्मश्री रामनारायण जी उपाध्याय की प्रेरणा से मेरा लोक गीतों की ओर रूझान बढ़ा। श्री अशोक मिश्र की प्रेरणा से यह लोकगीत स्वरलिपि रचना आकार ले सकी। अत: उनकी मैं आभारी हूँ।

मैं अपनी माँ श्रीमती सुशीला देवी पारे, नानी श्रीमती नर्मदा बाई साकल्ले, सासू माँओं श्रीमती शकुन्तला देवी एवं सुभद्रा देवी उपाध्याय, श्रीमती जमुना देवी उपाध्याय, श्रीमती विमला साकल्ले के प्रति अनुगृहीत हूँ, जिनसे मुझे समय-समय पर ये गीत मिले और उनका मार्गदर्शन भी। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक महिलाओं के सहयोग के लिये मैं आभारी हूँ।

निमाड़ी पारंपरिक कुछ गीतों की स्वर-लिपि रचना को सौंपते हुये मुझे खुशी है। आपके आशीर्वाद और प्रतिक्रिया की आकांक्षा रहेगी।

- हेमलता उपाध्याय

अनुक्रम

संस्कार गीत – 11

पर्व -त्योहार के गीत – 120

अन्य गीत – 247

संस्कार गीत

श्री गणेश

पयलऽ मनाऊँ म्हारा गणपति देवाऽ
विघन हटाओ गिरजा का लाल तुम कवाणऽ वाळा
सोय सिंदूर लाल मोतियन की गळ माळ
कंठ बिराजो स्वामी आणंद का बढ़ावणऽ वाळा ।।
डमरू तिरसूळ हात, सारद खऽ लियो साथ
मूषक सवारी भोग मोदक का लगावण वाला ।।
अब तो भरोसो थारो, करजे संकट खऽ न्यारोऽ
आई शरण मं ऽ थारी बुद्धि का बढ़ावणऽ वाळा ।।
भगवन को करूँ ध्यान, रखजे सभा मंऽ मान
गिरधर अजाण थारो दास हऊँ कवाणऽ वाळो ।।

हमारे देश में कोई भी शुभ कार्य आरंभ करने के पूर्व गणपति जी का आह्वान किया जाता है, क्योंकि वे अत्यन्त सहज-सरल और सबकी सहायता करने के लिये तत्पर रहने वाले लोक देवता हैं, जो शीघ्र प्रसन्न भी हो जाते हैं और विघ्न-बाधाओं को दूर कर सदैव कार्यों को सानन्द संपन्न करवाते हैं। इसीलिये किसी कार्य को आरंभ करने के लिये कार्य का 'श्री गणेश करना' भी मुहावरा प्रचलित हो गया। श्री गणेश कला और संगीत के देवता हैं। विभिन्न संस्कारों, अवसरों पर सर्वप्रथम गणेश स्थापना, पूजन और वन्दन तथा उनके गीत-गायन की प्राचीन व सनातन परंपरा है।

पारंपरिक निमाड़ी लोक गीतों के स्वर–लिपि–लेखन के इस दुरूह, आवश्यक, ऐतिहासिक महान कार्य को गणेश जी, सरस्वती जी, गुरू एवं हमारे पूर्वज ही संपन्न करवा रहे हैं, ऐसा मेरा विश्वास है। इस कार्य की सिद्धि हेतु भी प्राचीन प्रचलित यह गणपति जी का गीत सर्वप्रथम प्रस्तुत है, जिसमें उनके रूप, वेश–भूषा, वाहन, प्रिय भोजन का उल्लेख करते हुये उनसे विघ्न नाश कर संकट से बचाकर कार्य सिद्धि हेतु प्रार्थना की गई है।

राग–भैरवी ताल–कहरवा
थाट–भैरवी स्वर– रे ग ध नि

पयल ऽ मनाऊँ म्हारा गणपति देवा ऽऽऽ.....

स्थाई

× – – –	0 – – –	× – – –	0 – – –
–सा सा सा	सा – रे –	ग – म –	ग– रे ग
प ऽ य	ल ऽ म ऽ	ना ऽ ऊं ऽ	म्हा ऽ रा ऽ
ग ग ग ग	म – ध ध	प – म –	ग – रे –
ऽ ग ऽ ण	प ऽ ति ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ध – ध –	प – ध –	प प म म
ऽ ऽ वि ऽ	घन ऽ ह ऽ	टा ऽ ओ ऽ	गि र जा क
रे –म –	ग – ग रे	सा – नि सा	ध – ध –
ला ऽ ल ऽ	तु ऽ म क	वा ऽ ण ऽ	वा ऽ ळा ऽ

अन्तरा

–– सा –	सा – रे –	ग – म –	ग रे ग –
ऽ ऽ सो ऽ	य ऽ सिं ऽ	दू ऽ र ऽ	ला ऽ ल ऽ
– ग – ग	म – ध –	प – म –	ग ग रे रे
ऽ मो ऽ ति	य ऽ न की	ग ऽ ळ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ
सा सा सा –	ध – ध –	प – ध –	प प म म
ऽ ल कं ऽ	ठ ऽ बि ऽ	रा ऽ जो ऽ	स्वा – मि ऽ
रे – म म	ग – रे –	सा – नि सा	ध – ध –
आ ऽ णं द	का ऽ ब ऽ	ढ़ा ऽ व ण	वा ऽ ळा ऽ

गणेश वन्दना

करूँ वन्दन हऊँ विघनहरनार 2
गौरी नन्दन, गौरीनन्दन हो शंभुकुमार..... 2।। करूँ वंदन हऊँ.....
तुम गणाओ हो बुद्धि का दाता 2
सब देव तुम्हारा गुण गावता ऽ ऽ 2
शुभ कारज मंऽ, शुभ कारज मंऽ सुमरऽ संसार।। करूँ वन्दन हऊं....
देव देवो मखऽ सद्बुद्धि ऽ ऽ 2
होवऽ अन्तः करण की शुद्धिऽ ऽ 2
यई मांगू हऊं गुण का भंडार..... 2।। करूँ वंदन .....
ज्ञान-वाणी - विचार विमल करजो ऽ..... 2
उर मंऽ भक्ति को पूर तुम भरजो ऽ..... 2
लाज राखोऽ ऽ ऽ , लाज राखोऽ हो शंभु कुमार ऽ ऽ ...
करूँ वंदन हऊं विघनहरनार.....

विघ्नों के नाश करने वाले गौरी-पुत्र शिवकुमार गणेश मैं आपकी वन्दना करती हूँ। आप प्रसन्न होईये और मुझ पर कृपा कीजिए। आपकी गणना बुद्धि देने वाले देवता के रूप में होती है। सारे देवता आपका ही गुणगान करते हैं और सारा संसार शुभ कार्यों में सर्व-प्रथम आपको ही स्मरण करता है। हे ज्ञानदाता ईश्वर! आप मुझे सद्बुद्धि दीजिये। हे शंभु पुत्र गणेश जी! मेरी आपसे यही विनती है। आप अपने कृपापूर्वक वरदान से मेरे ज्ञान, वाणी एवं विचार को पवित्र कीजिये, निर्मल कीजिये। हे गुणों के भंडार! शंभु कुमार! गौरीनन्दन! आपसे मेरी यही प्रार्थना है।

राग - किरवानी	ताल - दादरा
थाट - आसावरी	स्वर - गंधार, धैवत कोमल, (ग - ध) कोमल

करूं वन्दन हऊँ विघनहरनार.....

स्थाई

× - - -	*0 - - -*	*× - - -*	*0 - - -*
सा नि़ -	*सा रे ग -*	*रे सा -*	*रे ग म*
क रूं ऽ	*वं ऽ दन*	*ह ऊं ऽ*	*वि घ न*

प म म	प प प	प म –	ग – रे
ऽ ह र	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र
सा नि़ –	सा रे ग –	रे सा –	रे ग म
क रूं ऽ	वं ऽ दन	ह ऊं ऽ	वि घ न
प म म	प प प	प – –	प – –
ऽ ह र	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र
प – ध	नि – सां	सां – –	नि – सां
गौ ऽ री	नं ऽ द	न ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
प – ध	नि सां सां	सां – सां	नि – सां
गौ ऽ री	नं द न	हो ऽ ऽ	शं ऽ ऽ
प – प	प – –	म – म	ग रे सा
भु ऽ कु	मा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र

अन्तरा

× – – –	0 – – –	× – – –	0 – – –
नि़ – सा	ग ग –	ग – –	रे ग रे
तु म ग	णा ऽ ऽ	ओ ऽ हो	बु ऽ द्धि
सा – –	रे – –	रे – –	रे – –
का ऽ ऽ	दा ऽ ऽ	ता ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
रे – ग	प – प	– प ध	प ध नि
स ऽ ब	दे ऽ व	ऽ तु ऽ	म्हा ऽ रा
ध – प	ग – प	म – म	म म म
गु ऽ ण	गा ऽ व	ता ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
प – ध	नि सां सां	सां – –	नि – सां
शु ऽ भं	का र ज	मं ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
प – ध	नि सां सां	सां – सां	नि सां सां
शु ऽ भं	का र ज	मं ऽ ऽ	सु ऽ म
प – प	प – –	म म म	ग रे सा
र ऽ सं	सा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र

गणपति आमंत्रण

आओ म्हारा गणपति इना दरबार..... 2
राम दरबार हो, भोळा दरबार..... 2
आओ रे गजानन म्हारा रहां, रिद्धि-सिद्धी साथ,
आओ हो गजानन तुम खऽ साजऽ दुई-दुई नार ।।
एक नार प्रभु पाणी सरावऽ, दूजी नार न्हवाड़ऽ..... 2
एक नारी प्रभु सवळ्यो लावऽ, दूजी नार पेरावऽ..... 2
चंदन तिलक लगाव एक नारी,सेंदूर लगाव दूजी नार हो..... 2
तिलक लगाव वो तो दुरवा चढ़ाव, फूलड़ा चढ़ाव, वो तो माला पेराव रेऽऽ
आओ म्हारा गणपति इना दरबार.....
एक नार प्रभु मोदक लावऽ, दूजी नार जिमाड़ऽ..... 2
एक नार प्रभु पाणी लावऽ, तो दूजी नार पेवाड़ऽ..... 2
बिडुलो बणावऽ एक नारी जो, दूजी नार रचाड़ ऽऽऽ..... 2
बिडुलो बणावऽ वो तो ताम्बुळ करावऽ रे ऽऽऽ,
आओ म्हारा.....
एक नार प्रभु सार बिछावऽ, दूजी नार जिताड़ऽ.....2
एक नार प्रभु झूळो बांधऽ, दूजी नार झुलावऽ..... 2
शयन लगावऽ एक नार जो दूजी नार पवड़ावऽ 2
रीझणों ढुलावऽ वो तो पांय दवाड़ऽ रे ऽऽऽ
आओ म्हारा गणपति इना दरबार

कार्यक्रम की सिद्धि के लिये सिद्धिदायक गणपति को सर्वप्रथम आमंत्रित किया जाता है। वे लोकदेवता हैं। वे अत्यंत सरल-सहज स्वभाव के हैं और सबकी मदद के लिये तैयार रहते हैं। जिसने उन्हें बुलाया है, घर के आत्मीय जन की तरह सर्वप्रथम आकर कार्यों की पूरी तैयारी में सहयोग करते हैं, कार्य में आने वाली बाधाओं को दूर कर कार्य सफल करवा लेते हैं। शुभ कार्य हों या भजन अथवा भोजन आयोजन। उनके आ जाने पर निश्चिंतता हो जाती है।

आमंत्रित अतिथियों का समुचित आतिथ्य करना हमारी संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। उनका सेवा-सत्कार हमारा धर्म है। अत: प्रस्तुत गीत में गणेश जी के आवभगत-सत्कार का वर्णन है। गणपति जी के साथ उनकी पत्नियाँ रिद्धि-सिद्धि भी हैं। सेवा-सत्कार के इस गीत में पारंपरिक विधि के दर्शन होते हैं।

राग – काफी
थाट – काफी

ताल – कहरवा
स्वर – ग, नि कोमल

आओ म्हारा गणपति इना दरबार.....

स्थाई

× – – –	0 – – –	× – – –	0 – – –
सा ग॒ रे ग॒	सा रे प प	ग॒ रे सा नि	सा – सा –
आ वो म्हा रा	ग ण प ति	इ ना द र	बा ऽ ऽ र
सा प म प	ध॒ प – म	ग॒ रे सा प	म प ध॒ प
ऽ रा म द	र बा ऽ र	हो ऽ ऽ भो	ला द र बा
– – प प	म प ध॒ प	– म ग॒ रे	सा प म प
ऽ ऽ र रा	म द र बा	ऽ र हो ऽ	ऽ भो ळा द
ध॒ प प म	ग॒ रे सा सा	ग॒ रे ग॒ सा	रे रे प॒ – प
र बा ऽ ऽ	ऽ ऽ र आ	वो हो ग जा	न न म्हा रा
प ग॒ रे सा	नि॒ सा – सा	सा सा ग॒ रे	ग॒ सा रे रे
ग्हां रि द्धि सि	द्धि सा ऽ थ	ऽ आ वो हो	ग जा न न
पम॒ प – ग॒	– रे सा॒ – नि॒ –	सा – सा –	सा – – सा
तुम ख ऽ सा	ऽ ज दुई दुई	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र

अन्तरा

ग॒ ग॒ ग॒ ग॒	ग॒ रे सा रे	रे ग॒ रे सा	– रे म म
ए क ना र	प्र भु पा ऽ	णी स रा व	ऽ दू ऽ जी
ग॒ रे सा –	सा सा ग॒ ग॒	ग॒ ग॒ ग॒ रे	सा रे रे ग॒
नार र न व्हा	ऽ ड़ ए क	ना र प्र भु	स व ळ् यो
रे सा – रे	म म ग॒ रे	रे सा सा सा	प प प प
ला व ऽ दू	ऽ जी ना र	पे रा व ऽ	चं द न ति
म ग॒ म पप	प प प प	प ध॒ ध॒ प	म ग॒ प नि॒
ल क ल गाव	ए क ना री	सें दू र ल	गा व दू ऽ
प ग॒ – –	रे सा नि॒ नि॒	रे रे ग॒ म	ग॒ रे सा सा
जी ना ऽ ऽ	र हो ऽ सें	दू र ल गा	व दू जी ना
सा सा प प	प ध॒ प म	ग॒ रे सा प	म प ध॒ प

ऽ र तिल	क ल गा व	वो ऽ तो दु	र वा च ढ़ा
प – प म	प ध़ प म	ग़ रे सा प	म प ध़ प
व ऽ फू ल	ड़ा च ढ़ा व	वो ऽ तो मा	ऽ ळा पे रा
म ग़ रे सा	सा – सा सा		
व रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		

सरस्वती

विद्या की देवी सरसती माता,
तुम किरपा करजोऽ 2
बुद्धि की दाता सरसती मैया, तुम किरपा करजो 2

(1) धवळा छे वस्त्र तुम्हारा,
धवळा हो हंस तुम्हाराऽ 2
धवळ मति हमखऽ दीजो, ओ सरसती माता
विद्या की देवी सरसती मैया, तुम किरपा करजो.....

(2) ज्ञान-विज्ञान जननी,
कला साहित्य की करणी.....2
संगीत सुर की वो देवी, सुर हमखऽ दीजो.....2
विद्या की देवी सरसती-----

(3) ब्रह्मा-विष्णु जी पूजऽ,
शिव-शंकर जी पूजऽ 2
पूजऽ रे तुम खऽ तीनई लोक वो सरसती माता 2
पूजां हो हम सबई लोग हो बुद्धि दाता, विद्या.....

(4) काम कारज मंऽ रे पयळऽ, गणपति आवऽ,
गणपति आवऽ संग मंऽ रिद्धि-सिद्धि धावऽ 2
संग बिराजो म्हारा हिरदा ओ सरसती माता
ज्ञान की जोत जगावजो ओ सरसती माता।। विद्या.....

(5) बुद्धि सी हीन छे हऊं, सम्पत से दीन छे हऊं 2
आई सभा मंऽ, बड़ी आस मंऽ
तुम लज्जा रखजो.....2
सभा मंऽ मान म्हारो राख जो ओ सरसती माता
विद्या की देवी सरसती माता, तुम किरपा करजो.....

संस्कृति-साहित्य-कला-संगीत की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती हैं। सांस्कृतिक धरोहर की वाहक महिलायें होती हैं। रीति-रिवाज, संस्कार गीत आदि की संपत्ति को संभालकर और उसमें अन्य सांस्कृतिक संपत्ति-सामग्री को सम्मिलित कर वे अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करती हैं। इसी कारण हमारी संस्कृति, लोक गीत, लोक रीति-रिवाज, बोली-भाषा सुरक्षित हैं और उसमें निरंतर प्रवहमान रहने की सामर्थ्य है। अत: हमारे लोक गीत- लोक कलाओं, भाषा, संस्कृति को सुरक्षित हम तक लाने वाली एवं अनंत गीतों की अनाम रचनाकार, संगीतकार, गीत गायिकाओं के हम आभारी हैं। उनके उपकार अनन्त हैं, हम पर उनके ऋण हैं। उनके प्रति अपार आदर-सम्मान व्यक्त करते हुये उन समस्त महिलाओं के ऋण से उऋण तभी हो सकेंगे, जब हम वर्तमान एवं भावी पीढ़ी तक इस सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित पहुँचायें और अपनी सांस्कृतिक संपत्ति के महत्त्व को समझते हुये उनमें उसके प्रति रूचि व सम्मान जाग्रत रखें। लोक गंगा और संस्कृति-रूप अथाह सागर के अनगिनत अनमोल रत्न-मोती रूपी गीतों में से कुछ मोती मुझे भी प्राप्त हुये हैं। देवी सरस्वती की प्रेरणा से कुछ निमाड़ी गीतों की रचना भी हुई, उनमें से गणपति और सरस्वती के गीत मैं भी इस लोक संपत्ति में सम्मिलित करना चाहती हूँ। अत: संगीत की देवी सरस्वती से संगीत सुर और कलाओं का ज्ञान पाने की याचना करती हुई ये पंक्तियाँ, ये गीत मैं समर्पित कर रही हूँ। देवी सरस्वती स्त्री जाति की श्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं, अत: लोक गीतों के इस संग्रह में उनके प्रति सम्मान स्वरूप यह गीत प्रस्तुत है।

राग - बिहाग	ताल-कहरवा
थाट - बिलावल	स्वर- दोनों मध्यम म, मे

विद्या की देवी सरसती मैया ....

स्थाई

× - - -	0 - - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग ग	ग रे गम मग	ग - रे -	सा नि़ सा - रे
वि द्या की ऽ	दे वी सर सती	मै ऽ या ऽ	तु म किर पा
सा नि़ सा -	- - - -	ग ग ग ग	ग रे गम मग
क र जो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	सं ऽ गी त	सु र कीऽ वोऽ
ग - रे -	सा नि़ सा रे	सा नि़ सा रे	सा - - -
दे ऽ वी ऽ	तु म कि र	पा ऽ क र	जो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा सा ग म	प प ग ग -	प - - -	प प प ग

ध व ळा छे	व स्त्र तु म्हा	रा ऽ ऽ ऽ	ध व ळा हो
म म ग ग	ग – रे सा	सा सा ग मे	प प नि ध
हं स तु म्हा	रा ऽ ऽ ऽ	ध व ळा छे	व स्त्र तु म्हा
प – – –	प प प ग	म म ग ग	ग – रे सा
रा ऽ ऽ ऽ	ध व ळा हो	हं स तु म्हा	रा ऽ ऽ ऽ
ग ग ग –	ग रे ग ग	म – – –	ग – रे –
ध व ळ ऽ	म ति ह म	ख ऽ ऽ ऽ	दी ऽ जो ऽ
सा नि़ सारे	सा नि़ सा –		
ओ सर सति	मै ऽ या ऽ		

गोद-भराई

खारक री बाळद बुळाई द्यो सासू जी बाई,
खारिक री मन साध छे हो म्हारा,
भोळा सासू जी सी काम छे..... 2

(1) गोठळा-गोठळा खाई ल्यो सासू जी बाई,
म्हारो मन दरियाव छे हो म्हारा भोळा सासूजी सी काम छे
म्हारा भोळा सासूजी सी काम छे

(2) नारेळ री बाळद (बोगी) बुलई द्यो जेठाणी बाई
नारेळ री मन साध छे हो म्हारा
भोळा भाभी जी सी काम छे,
नट्टी-नट्टी खाई लेओ भाभी जी बाई..... 2
म्हारो मन दरियाव छे, म्हारा भोला भाभी जी सी काम छे

(3) केला री बाळद बुलई द्यो नणद बाई,
केला री मन साध छे, म्हारी भोळई
जीजी बाई सी काम छे
फोतरा-फोतरा खाई लेवा जीजी बाई
म्हारो मन दरियाव छे, म्हारी भोळई जीजी बाई सी काम छे

(4) अमली री बालद बुलई देओ भुआ जी बाई
अमळी री मन साध छे, म्हारी भोळई भुआ जी सी काम छे
बीजा-बीजा खाई ल्यो भुआ जी बाई
म्हारो मन दरियाव छे म्हारी भोळई भुआजी सी काम छे
खारक री बाळद बुलई द्यो.....

सोलह संस्कारों में जन्म से संबंधित पुंसवन संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विवाह के पश्चात् बहू के सर्वप्रथम रजस्वला होने पर शुभ मुहुर्त्त में उत्सव पूर्वक बहू-बेटी की गोद भरी जाती है। इसी प्रकार गर्भवती स्त्री की भी सातवें या नौवें मास में स्वस्थ-सुंदर, सद्‌गुणी, चिरायु, यशस्वी संतान होने की कामना एवं आशीर्वाद सहित गोद भरने का कार्यक्रम होता है। मान्यता है कि गर्भवती की जो इच्छा, हो उसे अवश्य पूर्ण करना चाहिये, इसे 'दोहद पूर्त्ति' कहते हैं अर्थात् दो हृदयों की (गर्भवती मां एवं गर्भस्थ शिशु के हृदयों) इच्छा। अत: गर्भिणी को विविध व्यंजन खिलाये जाते हैं, उसे हर प्रकार से प्रसन्न रखा जाता है- ताकि वह स्वस्थ, दीर्घायु, गुणी संतान को जन्म दे सके।

गर्भवती मेवों, आम-इमली की इच्छा व्यक्त कर सास, जेठाणी, ननद व परिवार की अन्य महिलाओं से इन वस्तुओं को पर्याप्त मात्रा में मंगा देने का निवेदन करती है और कहती है कि मैं बहुत उदार और दरियादिल हूँ,अकेले ही थोड़े खाऊँगी, आप लोगों को भी अवश्य उसमें से कुछ भाग खाने के लिये दूंगी। जैसे खारिक मैं खा लूंगी और गुठलियां आप खाना, नारियल का गोटा या खोपरा मैं खाऊंगी तो उसकी नट्टियां आप खाना और केला मैं खा लूंगी और उनके छिलके आप खा लेना। है ना! उदारता।

खुशी, आनंद उत्सव के अवसर पर नृत्य-गान के साथ ही हास-परिहास का भी वातावरण रहता है। गोद भराई के अन्य संस्कार गीतों के साथ ही यह गीत गुदगुदा जाता है।

राग - भीमपलासी　　ताल-दादरा
थाट - काफी　　स्वर- ग , नि कोमल

खारक री बाळद बुलई द्‌यो सासू जी बाई .....

स्थाई

×	0	×	0
प़ नि़ नि़	नि़ सा सा	सा सा सा	सा रे -
खा ऽ र	क री ऽ	बा ऽ ळ	द बु ऽ
नि़ नि़ नि़	सा - रे -	सा नि़ -	प़ प़ -
ल ई ऽ	द्‌यो सा ऽ	सू जी ऽ	बा ई ऽ
रे - रे	- रे -	ग़ - -	रे सा सा
खा ऽ रि	ऽ क ऽ	री ऽ ऽ	म न ऽ
नि़ - नि़	सा - सा	रे ग़ -	रे सा -

सा ऽ ऽ	ध ऽ ऽ	छे हो ऽ	म्हा रा ऽ
नि़ – सा	– सा –	रे – ग़	– रे –
भो ऽ ळा	ऽ सा ऽ	सू ऽ जी	ऽ सी ऽ
सा – सा	सा – –	सा – –	सा – –
का ऽ ऽ	म ऽ ऽ	छे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0 – – –	× – – –	0 – – –
प़ प़ नि़	नि़ नि़ सा	सा सा सा	सा सा सा
गो ऽ ठ	ऽ ळ ऽ	गो ऽ ठ	ऽ ळ ऽ
नि़ नि़ सा	– रे –	सा – नि़	– प़ प़
खा ई ल्यो	ऽ सा ऽ	सू ऽ जी	ऽ बा ई
रे – रे	– – –	ग़ ग़ ग़	ग़ रे सा
म्हा ऽ रो	ऽ ऽ ऽ	म ऽ न	ऽ द रि
नि़ – –	सा – –	रे – ग़	रे – सा
या ऽ ऽ	व ऽ ऽ	छे ऽ हो	म्हा ऽ रा
नि़ – सा	– सा –	रे – ग़	– रे –
भो – ळा	ऽ सा ऽ	सू ऽ जी	ऽ सी ऽ
सा – –	सा – –	सा – –	सा – –
का ऽ ऽ	म ऽ ऽ	छे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

जच्चा

न्हाई जो धोई देवकी, ओन दियो पलंग पर पांय भोळई दायण हो,
धन का ससरा जगाड़ो बधावो बाबा नंद को

(1) *जागो न ससरा जी सुलेखणा*
हो गाड़्या ते गड़िन्त्र हेड़ाव
तुमरी वऊव नऽहो राजा जायो नंदलाल
बधावो बाबा नंद को.....

(2) *जागो न जेठ जी सुलेखणा*
हो बारा दिन द्रव्य लुटाव
तुमरी वऊव नऽहो राजा जायो नंदलाल
बधावो बाबा नंद को.....

(3) जागो न देवर जी सुलेखणा
हो बारा दिन बंदुक छोड़ाव
तुमरी भावज हो राजा जायो नंदलाल
बधावो बाबा नंद को....

(4) जागो न नणदई जी सुलेखणा
हो बारा दिन, बजन्त्र वजाव, बारा दिन सांजी वटावऽ
तुमरी साळा हेली नऽ हो राजा जायो नंद लाल
बधावो बाबा नंद को.....

(5) जागो न स्वामी जी सुलेखणा
हो बारा दिन मिठाई वटाव
तुमरी गोरी न हो राजा जायो नंदलाल
बधावो बाबा नंद को.....
न्हाई जो धोई देवकी.....

शिशु जन्म की पूर्व तैयारियाँ चल रही हैं। शिशु आगमन की सभी को उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा है। परिवार के सभी सदस्य अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ निबाहने के लिये सतर्क हैं। इसी बीच कृष्ण स्वरूप शिशु का जन्म होता है। प्रसूता अपनी सारी प्रसव-पीड़ा बच्चे का मुख देख कर भूल जाती है और प्रसन्नता पूर्वक दाई माँ से अपने ससुर, जेठ, देवर, ननदोई और स्वामी जी को यह शुभ संदेश पहुँचाने का आग्रह करती है। इस आनंद अवसर पर दाई माँ भी बधाई देकर भेंट चाहती है। इस अवसर के लिये संचित धन ससुर जी निकालें, जेठ जी दान करें, देवर जी खुशी में बन्दूक छुड़ा कर भतीजे के आगमन की घोषणा करें, तो ननदोई जी बाजे ढोल-ढमाके की व्यवस्था करें और स्वामी जी बारह दिन तक मिठाई बटवायें। सभी को इस शुभ अवसर पर अनेक बधाईयाँ।

राग - भीमपलासी　　ताल-दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर- ग , नि कोमल

न्हायी जो धोई देवकी, ओनऽ दियो पलंग पर पांय .....

स्थाई

× - - -	2 - - -	× - - -	3 - - -
प़ - -	नि़ - नि़ -	सा - -	ग - म -
न्हा ऽ ऽ	ई ऽ जो ऽ	धो ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ

ग़ – –	नि़ – सा –	– – – –	सा – ग़ –
दे ऽ ऽ	वं ऽ की ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ओ ऽ न ऽ
ग़ – म	– म – –	ग़ – रे	सा – नि़ –
दि ऽ यो	ऽ प ऽ ऽ	लं ऽ ग	प ऽ र ऽ
सा – –	सा – – –	सा सा –	ग़ – म –
पां ऽ ऽ	ऽ ऽऽऽ	य ऽ ऽ	भो ऽ ळ ई
प – प	म – प –	ग़ – –	सा – नि़ –
दा ऽ ऽ	य ऽ ण ऽ	हो ऽ ऽ	ध न का ऽ
सा – सा	ग़ – रे म	ग़ रे –	सा – नि़ –
स ऽ स	रा ऽ ज ऽ	गा ऽ ऽ	ड़ो ऽ ब ऽ
सा – सा	रे ग़ रे म	ग़ – –	रे – सा नि़
धा ऽ वो	बा ऽ बा ऽ	नं ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ
सा – –	– – – –	– – –	– – – –
को ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
प़ – नि़	नि़ – नि़ –	सा सा सा	ग़ – म –
जा ऽ ऽ	गो ऽ न ऽ	स स रा	जी ऽ सु ऽ
ग़ – –	– – नि़ –	सा – –	सा – ग़ –
ले ऽ ऽ	ऽ ऽ ख़ ऽ	णा ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ
ग़ – –	म – प –	ग़ रे –	सा – नि़ –
गा ऽ ऽ	ड़ुया ऽ ते ऽ	ग ड़ि ऽ	न्त्र ऽ हे ऽ
सा – –	सा – – –	– – –	ग़ – म म
ड़ा ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	तु ऽ म री
प – प	म – प –	ग़ – –	सा – नि़ –
व ऽ ऊ	व ऽ न ऽ	हो ऽ ऽ	रा ऽ जा ऽ
सा – सा	ग़ – रे म	ग़ – रे	सा – नि़
जा ऽ यो	नं ऽ द ऽ	ला ऽ ऽ	ळ ऽ ब ऽ
सा – सा	रे ग़ रे म	ग़ – –	रे – सा नि़
धा ऽ वो	बा ऽ बा ऽ	नं ऽ ऽ	द ऽ ऽऽ
सा – –	– – – –	– – –	– – – –
को ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

जच्चा (जलवाय पूजन)

लेवो-लेवो वसुदेव जी हात मंऽ कूची
खोलो ते वजीर किवाड़
चार प्रहर जुग जागजो हो
राणी देवकी न जायो नंदलाल, झूले पालणो नंदलाल

(1) झगो सिवाडूं बाला मखमल को रे
टोपी मंऽ फूंदा लगाऊं..... 2
पांय मंऽ नेहूर वाजण्या हो
बाळो चल ते ठुम्मुक चाल, झूले पालणो नंदलाल

(2) सोन्ना-रूपा का घड़ा-घड़ीला रे,
(देवकी जी) यशोदा जी पाणी खऽ जाय
जल्दी चलो न म्हारी संग की सहेली
म्हारो बाळो ते इलख्यो (बिलख्यो) जाय
झूले पालणो नंदलाल

(3) सोन्ना रूपा का चेंडू-पाटली
कृष्ण जी खेलण जाय
दूर खेलण मति जाओ रे बालाजी
मथुरा मंऽ मामा - ममसाळ झूले पालणो नंदलाल

बच्चे के जन्म होने पर सर्वत्र परिवार में आनंद छा जाता है। जन्मोत्सव में परिवार जन, कुटुम्ब एवं रिश्तेदार आते हैं और जन्म के दस दिन बाद जलवाय पूजन (जल, वायु, सूरज पूजा) का मुहूर्त्त निकलवाया जाता है। पूजन पश्चात् बच्चे को पालने में झुलाया जाता है एवं नामकरण संस्कार संपन्न होता है। इस अवसर पर गीत गाये जाते हैं।

राग - काफी — ताल-दीपचंदी
थाट - काफी — स्वर- ग कोमल तथा दोनों निषाद नि नि

लेवो-लेवो वसुदेव जी हात मंऽ कूची.....

स्थाई

× - - -	2- - -	× - - -	3 - - -
रे ग -	रे - सा -	रे - सा	सा - सा सा
ले वो ऽ	ले ऽ वो ऽ	व ऽ सु	दे ऽ व जी

रे – म	म – रे –	प – प	म – प –
हा ऽ ऽ	त ऽ मं ऽ	कू ऽ ऽ	ची ऽ ऽ ऽ
ग – रे	रे – म –	प – म	रे – नि़ –
खो ऽ ऽ	लो ऽ ते ऽ	व ऽ जी	र ऽ कि ऽ
सा – –	सा – – –	रे – म	म – म –
वा ऽ ऽ	ड़ ऽ ऽ ऽ	चा ऽ ऽ	र ऽ प्र ऽ
प – ध	नि – ध –	प – म	म – प –
ह ऽ र	जु ऽ ग ऽ	जा ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
ध – –	नि – ध –	प – ध	प – म –
जो ऽ ऽ	रा ऽ णी ऽ	दे ऽ व	की ऽ न ऽ
रे – प	म – रे –	सा – –	– सा –
जा ऽ यो	नं ऽ द ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ल ऽ
रे – म	प – म –	म – रे	– म – –
झू ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ
प – म	रे – नि़ –	सा – –	सा – – –
णो ऽ ऽ	नं ऽ द ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
रे – ग	रे – सा –	रे – सा	सा – सा –
झ ऽ ऽ	गो ऽ सि ऽ	ला ऽ ऊं	बा ऽ ळा ऽ
रे – म	म – रे –	प – प	प म प –
म ऽ ख	म ऽ ळ ऽ	को ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
म – रे	रे – ग –	प – म	रे – नि़ –
टो ऽ ऽ	पी ऽ मं ऽ	फुं ऽ ऽ	दा ऽ ल ऽ
सा – सा	– – – –	रे – –	म – म –
गा ऽ ऊं	ऽ ऽ ऽ ऽ	पां ऽ ऽ	य ऽ मं ऽ
प – ध	नि – ध –	प – –	– म – –
ने ऽ ऽ	हू ऽ र ऽ	वा ऽ ऽ	ऽ ज ऽ ऽ
प ध –	नि – ध –	प प –	प – म –
व्या हो ऽ	बा ऽ ळो ऽ	च ऽ ऽ	ल ऽ ते ऽ

रे – प	म – रे –	रे – सा	– रे – –
ठु ऽ ऽ	मु ऽ क ऽ	चा ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ
रे – म	प –म –	म – रे	– म – –
झू ऽ ऽ	ले ऽ ऽ ऽ	पा ऽऽ	ऽ ल ऽऽ
प – म	रे – नि़ –	सा – –	सा – – –
णो ऽ ऽ	नं ऽ द ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ

जच्चा

जल्म्या देखो राम बड़ा आणंद मंऽ
भया रे नंदलाल बड़ा आणंद मंऽ

(1) राजा दशरथ न रे घोड़ा लुटाया.... 2
बच्यो रे घोड़ो एक सूरज का रथ मंऽ.... 2

(2) राजा दशरथ न रे हाती लुटाया.... 2
बच्यो रे हाती एक वो कदली बन मंऽ.... 2

(3) राजा दशरथ न हो गऊआ लुटायी.... 2
बची रे गऊआ एक वो नंदन बन मंऽ.... 2

(4) राजा दशरथ न हो हीरा लुटाया.... 2
बच्यो रे हीरो एक कौशल्या का हार मंऽ.... 2

(5) राजा दशरथ न रे मोती लुटाया.... 2
बच्यो रे मोती एक कौशल्या की नथ मंऽ.... 2

(6) राजा दशरथ न रे साड़ी लुटाई.... 2
बची रे साड़ी एक कौशल्या का तन पऽ.... 2
जल्म्या देखो राम बड़ा आणंद मंऽ.....

शिशु जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीत जच्चा गीत कहलाते हैं। हमारी संस्कृति में जन्म लेने वाले शिशु का राम या कृष्ण के रूप में मान देकर स्वागत किया जाता है। नवजात शिशु का वर्णन राम या कृष्ण के रूप में किया जाता है और माता–पिता राजा दशरथ और कौशल्या माँ अथवा बाबा नंद या मैया यशोदा के रूप में इन गीतों में वर्णित हैं। पिता पुत्र–जन्म की खुशी में (संतान सुख प्राप्ति में) सबको अपने आनंद में सम्मिलित करता है तथा अपने मूल्यवान सुख साधन, ऐश्वर्य आभूषण–वस्त्रादि प्रसन्नता पूर्वक सबको भेंट में देता है, जैसे राजा दशरथ ने पुत्रों के जन्म होने पर अपना सर्वस्व–खजाना लुटाया था। राजा दशरथ ने राम जन्म होने पर हाथी–घोड़े, गाय, हीरे–मोती, रत्न, वस्त्र इतने लुटाये कि हर चीज एक ही शेष रही। यहाँ तक

कि रानी कौशल्या के शरीर पर मात्र एक साड़ी ही शेष रही। नाक की नथ में मात्र एक मोती बचा और हार में भी केवल एक हीरा बचा। सुख–आनंद और त्याग की है ना पराकाष्ठा।

राग – पीलू ताल–चलत दादरा
थाट – काफी स्वर– दोनों ग, दोनों नि

जल्म्या देखो राम बड़ा आणंद मंऽ.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – रे	ग – ग	रे – सा	रे – म
ज ऽ ल	म्या ऽ रे	दे ऽ खो	रा ऽ ऽ
ग – रे	सा – –	नि – –	सा सा सा
म ऽ ब	ड़ा ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	णं द मं
– सा रे	ग – ग	रे – सा	रे – म
ऽ भ ऽ	या ऽ रे	नं ऽ द	ला ऽ ऽ
ग – रे	सा – –	नि – –	सा – सा
ल ऽ ब	ड़ा ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	णं द मं

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
सा – सा	ग म –	प – प	प – प
रा ऽ जा	द श ऽ	र ऽ थ	न ऽ रे
ग म ध	– प –	ग – रे	सा सा रे
घो ऽ ड़ा	ऽ लु ऽ	टा ऽ ऽ	या ब ऽ
ग – ग	रे – सा	रे – म	ग – रे
च्यो ऽ रे	घो ऽ ड़ो	ए ऽ ऽ	क ऽ सू
सा सा नि	सा – सा	सा – –	सा – –
र ज का	र ऽ थ	मं ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

लोरी

हात रे नाना हाती का,
गुड़ फुटाणा काकी काऽ

संजा-फूली बुआ बाई की,
सवां रे की रोटी मावसी बाई की ऽऽऽ
हात रे भाई हात
नाना म्हारा का ठुमक्या पांय,
ठुमुक ठुमुक नानो बाड़ी मंऽ जाय
वाड़ी मंऽ का बनफल तोड़ी-तोड़ी खाय
एतरा मंऽ आई गई मालेणमांय
मालेण मांय न लई लिया झगा न झूल
रड़-कुढ़ रे म्हारो नानो सो बुल ऽऽऽ
रस्ता मंऽ मिली गई भूआ मांय
केयूं (क्यूं) रड़ऽ रे म्हारा नाना बुळ
नाना भाई न तोड़ी लिया कमळ का फूळ
मालेण मांय न छोड़ई लिया झगा न झूल
ला वो मालेण मांय थारा कमळ का फूळ
दऽ म्हारा नाना का झगा नऽ झूल ऽऽऽ
हात रे भई हात.....

जैसा कि सभी जानते हैं कि गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक सरस, सरल, बोधगम्य और मधुर होता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है-लोरी, जिसे सुनकर रोता हुआ अबोध शिशु भी रोना बंद कर चुपचाप उस ध्वनि और स्वर लहरी की लय में खो जाता है और कब चुपके से निंदिया रानी आकर उसे सुला जाती हैं, पता ही नहीं चलता।

विभिन्न संस्कारों और विविध प्रसंगों के गीतों में लोरी गीतों का अपना एक विशिष्ट स्थान और महत्त्व है। कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में-'लोरियों में आदिम सुकुमारिता है।' वास्तव में इन गीतों की मधुरता को ही 'वात्सल्य रस' कहते हैं।

बच्चों के गीत बच्चों की ही तरह शरारती, चंचल और अर्थहीन तथा तुकबंदी युक्त होते हैं। माँ जब अनिवार्य गृहकार्यों में व्यस्त रहती है- तब दादी, ताई, बुआ, दीदी या घर की अन्य कोई महिला बच्चे को झोली में झुलाते हुये या झूले पर बैठ गोद में शिशु को लोरी गीत गाकर उन्हें बहलाकर चुप कर लेती हैं। माँ फुरसत पाकर बच्चे को गोद में लेती है, तो शीघ्र ही शिशु दुग्धपान कर सो जाता है। हाथ की झोली बनाकर झुलाते हुये भी गाकर बच्चों को सुला दिया जाता है। इस प्रकार झूलते हुये और लोरी गीतों की अंगुली पकड़ उनकी लय के साथ मधुर कल्पना लोक में विचरण करते हुये शिशु कब बड़ा हो गया, बालक बन गया- पता ही नहीं

चलता। बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में इन लोरी गीतों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

राग – बिलावल　　ताल–कहरवा
थाट – बिलावल　　स्वर– सब शुद्ध

हात रे नाना हाती का, गुड़ फुटाणा काकी का.....

ध़ – सा –	सा – – –	रे – सा –	ध़ – प़ –
हा ऽ त ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ
ध़ – सा सा	सा सा ग ग	ग – ग –	ग – – –
हा ऽ ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	का ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग – म म	ग – रे –	सा – – –	रे – – –
गु ऽ ऽ ऽ	ड़ ऽ फु ऽ	टा ऽ ऽ ऽ	णा ऽ ऽ ऽ
ग – म –	ग – रे –	रे – – –	रे – – –
का ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ	का ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ध़ – – –	सा – – –	रे – सा –	ध़ – – –
सं ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	फू ऽ ऽ ऽ	ली ऽ ऽ ऽ
ध़ – सा –	सा – ग –	ग – – –	ग – – –
बु ऽ आ ऽ	बा ऽ ई ऽ	की ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग – म –	ग रे – –	सा – – –	रे – – –
स ऽ वां ऽ	ऽ की ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ	टी ऽ ऽ ऽ
ग – म –	ग – रे –	रे – – –	– – – –
मा ऽ व सीऽ	बा ऽ ई ऽ	की ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

लोरी

नाना म्हारा का ठुमक्या पांय,
ठुमुक–ठुमुक नानो वाड़ी मंऽ जाय,
वाड़ी मंऽ का वनफळ तोड़ी–तोड़ी खाय,
एतरा मंऽ आई गई माळेण मांय,
माळेण मांय नंऽ लई लिया झगा न झूल
रड़–कुढ़ रे म्हारो नानो सो बुळ ऽ ऽ
रस्त मंऽ मिली गई भुआ मांय,

केऊं रड़ रेऽ म्हारा नाना बुळ (फूल) (भाई)
नाना भाई नंऽ तोड़ी लिया कमळ फूळ,
माळेण मांय नंऽ छोड़ई लिया झगा न झूल,
ल वो माळण मांय, थारा कमळ का फूल,
दऽ म्हारा नाना का झगा न झूल।।
हात रे भाई हात, हात रे कुतरा हाऽऽत,
हात वो मांजरी हा ऽऽऽ त-----

यह बच्चों का लोरी गीत है। बच्चों के गीत छोटे-छोटे और तुकबन्दी युक्त होते हैं। बच्चों को समझाने बहलाने के लिये इन गीतों में खिलौनों के बजाय घर में दिखाई देने वाले पशु-पक्षी-चिड़िया, मिठू, बिल्ली, कुत्ते आदि का नाम- वर्णन होता है। इनकी सुकुमारिता और मधुरता को गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'बाल्यरस' कहा है। चंचल सुंदर पक्षियों और बच्चों में स्वभाव, गुणों का साम्य प्रतीत होता है।

छोटे, नन्हें-नन्हें पांवों वाला मेरा बच्चा बाड़ी में गया। वहाँ वह वन के फल तोड़ कर खाने-खेलने लगा। इतने में रखवाली करने वाली मालन माँ आ गई और उसने बच्चे के टोपी-झबला ले लिये। मेरा नन्हा रोने लगा। रास्ते में बुआ माँ मिल गई। उन्होंने बच्चे से रोने का कारण पूछा। मालन को उन्होंने कहा- मेरे बच्चे ने कमल का फूल क्या लिया, तुमने उसके झगा-टोपी छीन लिये। लो मालन अपने कमल के फूल और मेरे बच्चे के झगा-झूल लौटा दे। लोरी के इस गीत से दुनियादारी की शिक्षा पालने में मिली।

बच्चे का रोना हँसना-डरना, रूठना क्षण भर में गायब हो जाता है। झट झगा झूल पाकर बच्चा खुश होकर हँसने लगा। बच्चों की हँसी सुंदर सुहावनी, निश्छल और पवित्र होती है।

राग - बिलावल　　ताल-कहरवा
थाट - बिलावल　　स्वर- सब शुद्ध

नाना म्हारा का ठुमक्या पांय, ठुमुक-ठुमुक.....

ध़ - - -	सा - - -	रे - - सा	ध़ - प़ -
ना ऽ ऽ ऽ	ना ऽ म्हा ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	का ऽ ऽ ऽ
ध़ - सा -	सा - ग -	ग - - -	ग - - -
ठु ऽ म ऽ	क्या ऽ ऽ ऽ	पां ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽऽ
ग - म -	ग - रे -	सा - सा -	रे - रे -
ठु ऽ मु ऽ	क ऽ ठु ऽ	मु ऽ क ऽ	ना ऽ नो ऽ

ग– म –	ग – रे –	रे – – –	रे – – –
बा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ मं ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
ध़ सा –	सा – सा –	रे – सा –	ध़ – प –
वा ऽ ड़ी ऽ	मं ऽ क ऽ	ब ऽ न ऽ	फ ऽ ळ ऽ
ध़ – सा –	सा – ग –	ग – – –	ग – – –
तो ऽ ड़ी ऽ	तो ऽ ड़ी ऽ	खा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
ग – म –	ग – रे –	सा – सा –	रे – रे –
ए ऽ त ऽ	रा ऽ मं ऽ	आ ऽ ई ऽ	ग ऽ ई ऽ
ग – म –	ग – रे –	रे – – –	– – – –
मा ऽ ऽ ऽ	ले ऽ ण ऽ	मां ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
ध़ – सा सा	सा – सा सा	रे – सा –	ध़ – प़ –
मा ऽ ले ण	मां ऽ य न	ल ऽ ई ऽ	लि ऽ या ऽ
ध़ – सा –	सा ग – –	ग– ग –	ग – – –
झ ऽ गा ऽ	ऽ न ऽ ऽ	झू ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ
ग – म –	ग रे – सा	– – – –	रे – रे –
र ऽ ड़ ऽ	ऽ कु ऽ ढ़	रे ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ रो ऽ
ग – म –	ग – रे –	रे – – –	– – – –
ना ऽ ऽ ऽ	नो ऽ सो ऽ	बु ऽ ऽ ऽ	ळ ऽ ऽ ऽ

बाल

नानी –सी गाय गटर गैंगणी, सौ पूला वो खाय।

ये छोटी–सी गैया बड़ी सुहावनी है। है तो छोटी सी, परन्तु खाती है घास के सौ पूले। अत: वह छोटी दिखने पर भी है शक्तिशाली, तभी तो वह शेर के सामने जाने से नहीं डरती है और उससे मुकाबला करती है। 'अच्छा माँ चलो अब चंदी दे दो।' तुकबंदी वाले छोटे–छोटे इन गीतों में लय है, रस है। चंदी मांगने जाने से मोहल्ले– गाँव वालों से परिचय होता है, स्वभाव मालूम होता है।

राग – बिलावल	ताल–कहरवा
थाट – बिलावल	स्वर– शुद्ध

नानी सी गाय गटर गैंगणी सौ पूला वो खाय.....

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा ग रे सा	सा ध़ सा रे	रे ग – –	रे ग रे सा
ना नी सी गा	ऽ य ग ट	र गैं ग णी	सौ ऽ पू ला
सा सा सा सा	रे रे रे रे	सा रे ग –	ग ग ग ग
वो खा ऽ य	मा ता ज म	ना को पा णी	पे ना हर
रे ग रे सा	सा – – सा		
सा ऽ म ऽ	जा ऽ ऽ य		

नानी सी मांजरी माळव ऽ गई .....
माळव सी लाई माटी, माटी का बनाया हत्ती
हत्ती चळऽ आणा–बाणा, लावो मांय टुलेक दाणा

छोटी–सी बिल्ली मालवा गई। मालवा से वह मिट्टी लाई। मिट्टी के उसने हाथी बनाये। हाथी आड़े–टेड़े ही चलते हैं, पर माँ तू तो हमें सीधे–सीधे एकाध टूली (आधा किलो माप) अनाज दे–दे। हमें और भी जगह जाना है।

शरारती स्वर है। मांगना भी है, लेना भी है, एहसान भी जतलाना है। खेल–खेल में शिक्षा भी मिलती है।

राग – बिलावल
थाट – बिलावल
ताल–कहरवा
स्वर– शुद्ध स्वर

नानी सी मांजरी मालव ऽ .....

सा ग रे सा	सा सा सा –	सा – रे ऽ	ग – – –
ना नी सी मां	ऽ ज ऽ री	मा ल व ऽ	ग ऽ ई ऽ
रे ग रे सा	सा सा सा –	सा ग रे सा	सा सा सा –
मा ळ व ऽ	ग ऽ ई ऽ	मा ळ व सी	ला ऽ ई ऽ
सा रे ग –	रे – सा –	सा ग रे सा	सा सा सा –
मा ऽ टी ऽ	मा ऽ टी ऽ	मा टी का ब	णा ऽ या ऽ
सा रे ग –	रे – सा –	सा ग रे सा	सा सा सा –
ह ऽ त्ती ऽ	हऽ त्ती ऽ	ह ऽ त्ती ऽ	च ऽ ल ऽ
सा रे ग ग	सा रे ग –	रे ग रे सा	सा – सा सा
आ णा बा णा	ला वो मा य	टु ले ऽ क	दा ऽ णा ऽ

नद्दी – नद्दी दिया बळऽ काई जनावर जाय।
हरणी को नानो पिलको, ढोर चरावण जाय ।।
ला वो माँय बकेड़ी।

दशहरे से पूर्णिमा तक शरद की चाँदनी रात में बच्चे टोल (समूह) बनाकर उछल – कूद करते, घर–घर जाकर तुकबंदियों में गीत गाते हुये चंदा मांगते हैं। फिर उससे वे गोट (पिकनिक) करते हैं। बच्चों में सामूहिकता से सहकार और संगठित होकर कार्य करने के संस्कार पड़ते हैं। मांगना है तो नम्रता और कोमलता से और सबके लिये मिलकर काम करने की शिक्षा मिलती है। नेतृत्व के गुणों का विकास होता है, आत्म–विश्वास बढ़ता है, मोहल्ले और गाँव के लोगों से परिचय होता है तथा अपनापन बढ़ता है। तुकबंदी करना, गीत गाना और अपनी अभिव्यक्ति शक्ति बढ़ाने का तरीका है।

नदी किनारे यह कौन–सा जानवर जा रहा है? ये किसकी आँखें दीपक की तरह चमक रही हैं। अरे! यह तो हिरण का छोटा–सा बच्चा है, जो ढोर चराने जा रहा है। अच्छा माँ लाओ चन्दी (चंदा–दान–भिक्षा) दे दो।

राग – बिलावल　　ताल–कहरवा
थाट – बिलावल　　स्वर– शुद्ध

नद्दी –नद्दी दिया बल रे ऽ .....

सा रे सा सा	सा रे ग –	ग ग रे ग	ग रे रे प
न द्दी न द्दी	दि या ब ळ	रे का ई ज	ना ऽ व र
सा सा सा सा	म म म म	म म म म	म म प –
जा ऽ ऽ य	ह र णी को	ना ऽ नो ऽ	पि ल को ऽ
ग ग रे ग	रे सा सा सा		
ढो र च रा	व ण जा य		

लाओ मांय बकेड़ी (दान – चंदा)

अम्बो वायो न गढ़ झूमको,
कूण भाई बेड़वा जाय जी
असा छोटा (नाना) जी भाई पातळा,

अंबो बेड़ी घर लाया जी ऽ
घोड़िला लिया न सवा-साठ का
गया-गया मोठी बईण का गाँव जी।
घोड़िला पोयच्या न गांव घोयर ऽ
व्हां का लोग भाग्या जाय जी।
मत भागो मत भागो लोग न होणी,
हऊं छे मोठी बईण को वीरो जी ।
निकळ्यो मोठी बईण भायरऽ,
घोड़िला लेव पयचाण जी।
ये घोड़िला तो म्हारा बाप का,
बठण वाळ्यो माड़ी जायो जी ऽऽ
अम्बो वायो .....

आयु के बढ़ने के साथ-साथ बच्चों के गीतों का स्वरूप बदलता जाता है। गीतों में अपेक्षाकृत गंभीरता आने लगती है, जिम्मेदारी का अनुभव और गौरव की झलक भी मिलने लगती है। इस गीत में एक भाई द्वारा ससुराल वासी अपनी बहिन को लेने जाने का बड़ा ही सरस, आत्मीयता और स्नेह भरा चित्रण है।

छोटे-से झूमरदार वृक्ष में आम लग गये हैं। उसे तोड़ने कौन - सा भाई जायेगा। छोटे भाई आम तोड़ने जायेंगे और उस भेंट को लेकर वे बहन को लेने उसके गाँव जायेंगे। छोटे भाई ने झट सवा साठ के घोड़े लिये और ठाठ से और बहिन के गाँव के गोहे पर (गाँव सीमा) पहुँचे। नवागत छोटे से भैया को देख लोग इधर-उधर पूछने लगे- ये कौन अपने गाँव में आ गया? भैया ने उत्तर दिया- अरे! आप लोग मत भागिये, मैं तो बड़ी जीजी का छोटा भाई हूँ। भला अपरिचित पर कोई विश्वास करता है क्या? तो ठीक है- बड़ी बहिन घर से बाहर निकलो और इस घोड़े और घुड़सवार को पहचानो। झट दीदी ने कहा- ये घोड़ा तो मेरे पिताजी का है और इस पर बैठने वाला मेरा माड़ी-जाया वीरा (सहोदर भाई) है और सर्वत्र आनंद-रस की वर्षा होने लगी।

राग - मधुमात सारंग	ताल- दादरा
थाट - काफी	स्वर- निषाद (<u>नि</u>) कोमल

अम्बो वायो न गढ़ झुमको कूण भाई बेड़वा जाय जी .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
रे रे रे	रे सा सा	<u>नि</u> <u>नि</u> सा	रे रे सा

अ ऽ म्बो	ऽ वा ऽ	यो ऽ न	ग ऽ ढ़
सा सा सा	नि़ प़ प़	प़ प़ नि़	नि़ सा सा
झु ऽ म	को ऽ ऽ	कू ऽ ण	भा ई ऽ
सा सा सा	सा नि़ नि़	नि़ नि़ सा	रे – –
बे ऽ ड़	वा ऽ ऽ	जा ऽ य	जी ऽ ऽ
रे रे –	सा सा –	नि़ – सा	रे सा सा
अ सा ऽ	मो ऽ ऽ	ठा ऽ जी	भा ई ऽ
सा सा सा	नि़ प़ प़	प़ प़ नि़	नि़ सा सा
पा ऽ त	ला ऽ ऽ	अ ऽ म्	बो ऽ ऽ
सा सा सा	सा नि़ नि़	नि़ नि़ सा	रे रे रे
बे ऽ ड़ी	घ र ऽ	ला ऽ व	जी ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे रे रे	रे रे सा	नि़ नि़ सा	रे सा सा
घो ऽ ड़ी	ला ऽ लि	या ऽ न	स वा ऽ
सा सा सा	नि़ प़ प़	प़ नि़ नि़	नि़ सा सा
सा ऽ ठ	का ऽ ऽ	ग या ऽ	ग या ऽ
सा – सा	सा सा रे	नि़ नि़ सा	रे – –
मो ठी ब	ई ण का	गां ऽ व	जी ऽ ऽ
रे रे –	रे सा सा	नि़ नि़ सा	रे रे सा
घो ड़ि ऽ	ला पो य	च्या ऽ न	गाँ व का
सा नि़ नि़	प़ प़ –	प़ नि़ नि़	नि़ सा सा
घो ऽ ऽ	य र ऽ	व्हां का लो	ऽ ग ऽ
सा सा सा	सा सा सा	नि़ नि़ सा	रे – –
भा ऽ ऽ	ग्या ऽ ऽ	जा ऽ य	जी ऽ ऽ

संजा

बाई संजा तू एक दूर बसी
तुख लेण खऽ जायगा कूण
जाय – जाय रे सूरज वीरो
ओकी मोटर रे झटपट जाय

हऊं तो रूकूं रूकूं रे, सरवरिया री पाल
नीच्च ऽ मंयती को झाड़,
हऊं तो रचूं रचूं रे
दुई दुई हात, हऊं तो रचूं रचूं रे, दुई – दुई हात .....

संजा बहन तू अकेली दूर देश में बसी है, तुझे लेने कौन जायेगा। अरे हाँ! सूरज वीरा (भाई) लेने जायेगा, वह जायेगा तभी संजा आयेगी। सूरज वीरा की मोटर अब छटपट जाती है। मैं तो यहाँ सरोवर किनारे पाल पर रुकूंगी और नीचे जो मेहंदी का झाड़ है, उससे मेहंदी तोड़कर अपने दोनों हाथ रचूंगी। संध्या की लालिमा सर्वत्र सुहावनी प्रतीत हो रही है।

राग – भूपाली ताल– दादरा
थाट – कल्याण स्वर– सभी शुद्ध

बाई संजा तू एक दूर बसी .....

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा	ध़ – सा	रे – –	ग – –
बा ऽ ई	सं ऽ जा	तू ऽ ऽ	ए ऽ ऽ
रे – –	ग – –	रे – सा	सा – –
क ऽ ऽ	दू ऽ ऽ	र ऽ ब	सी ऽ ऽ
सा सा –	रे – –	ग – –	ग – –
तु ख ऽ	ले ऽ ऽ	ण ऽ ऽ	ख ऽ ऽ
रे – –	ग – –	रे – –	सा – –
ऽ ऽ ऽ	जा ऽ य	गा ऽ ऽ	कू ऽ ण
सा – –	रे – –	ग – –	ग – –
जा ऽ य	जा ऽ य	रे ऽ ऽ	सू ऽ ऽ
रे सा –	रे – –	सा – –	– – –
र ज ऽ	वी ऽ ऽ	रो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
सा – –	सा – –	रे ग –	ग – –
ओ की ऽ	मो ऽ ऽ	ट र ऽ	रे ऽ ऽ
रे – –	ग – –	रे – –	सा – –
ऽ ऽ ऽ	झ ऽ ट	प ऽ ट	जा ऽ य
प प प	प प प	प प प	सा – –

ह ऊं तो	रू ऽ कूं	रू ऽ कूं	रे ऽ ऽ
सा – –	प प प	प प प	प प प
ऽ ऽ ऽ	स र वरि	या री ऽ	पा ऽ ळ
म म म	प ध –	प – म	ग रे सा
नी ऽ च्च	मं य ऽ	दी ऽ को	झा ऽ ड़
रे – –	सा रे –	रे ग –	ग – –
हऊं तो ऽ	र चूं ऽ	र चूं ऽ	रे ऽ ऽ
रे – –	ग – –	रे – –	सा – –
ऽ ऽ ऽ	दु ई ऽ	दु ई ऽ	हा ऽ थ

चल वो संजा अपुण खेलण चलां ...2
कसी चलूं बाई मनऽ लीपणोऽ घोळ्यो ... 2
लीप थारी काकी भाभी, काम करऽ भौजाई
घाम चढ़ऽ तो माथो दुखऽ, घीं का घेवर खाई
मामा देगा लाल दुशाला, मामी–देगी साड़ी .....

साथ खेलने वाली सहेलियों के नाम लेकर गीत गाती जाती हैं बालिकायें।

चल संजा अपन खेलने चलें। परन्तु मैं कैसे अभी चल सकती हूँ? मैं तो घर के काम कर रही हूँ। ये देखो, मैंने घर– आँगन लीपने के लिये गोबर घोल रखा है। तो सहेली ने उपाय सुझाया कि लीपने का कार्य तो तुम्हारी काकी या भौजाई कर लेंगी। काम के समय उनका सिर दर्द करने लगता है। दिन निकला नहीं कि उनके सिर में दर्द होने लगता है और खाते समय उन्हें परेशानी नहीं होती। घी में बने घेवर वे खाती हैं। अतः अब लीपने का काम वे करेंगी, चलो अपन तो खेलने चलें।

राग – शिवरंजनी	ताल– कहरवा
थाट – काफी	स्वर– दोनों गंधार

चल वो संजा अपुण खेलण चलां .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा सा	ग ग रे रे	सा सा सा सा	ग ग रे रे
च ऽ ल ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	सं ऽ जा ऽ	अ ऽ पु ण

ध़ ध़ ध़ ध़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
खे ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ण ऽ	च ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ
सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे	सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे
क ऽ सी ऽ	च ऽ लूं ऽ	बा ऽ ई ऽ	म ऽ न ऽ
ध़ ध़ ध़ ध़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
ली ऽ प ऽ	णो ऽ ऽ ऽ	घो ऽ ऽ ऽ	लयो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे	सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे
ली ऽ प ऽ	था ऽ री ऽ	का ऽ की ऽ	भा ऽ भी ऽ
ध़ ध़ ध़ रे	रे रे रे सा	सा सा सा सा	सा सा सा सा
का ऽ म क	र ऽ भौ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
सा सा ग़ ग़	ग़ ग़ रे रे	सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे
घा म च ढ़	तो ऽ ऽ ऽ	मा ऽ थों ऽ	दुः ऽ ख ऽ
ध़ ध़ ध़ ध़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
घी ऽ का ऽ	घे ऽ व र	खा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
सा सा सा सा	ग़ ग़ रे रे	सा सा सा ग़	ग़ ग़ रे रे
मा ऽ मा ऽ	दे ऽ गो ऽ	शा ऽ ल दु	शा ऽ ला ऽ
ध़ ध़ ध़ ध़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
मा ऽ मी ऽ	दे ऽ गी ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ

खेल

छोटी–सी गाड़ी लुढ़कती जाय, लुढ़कती जाय,
जेम बठी संजा बाई, संजा बाई ,
घाघरो घमकावती जाय, चूनड़ी चमकावती जाय,
चूड़िलो खनकावती जाय, बिछिया बजावती जाय
बाई जी की नथनी झोला खाय, झोला खाय
छोटी–सी गाड़ी लुढ़कती जाय, लुढ़कती जाय.....

आगे क्रम से सब लड़कियों के नाम लेकर गीत गाती जाती हैं बालिकायें।

श्राद्ध- पक्ष में पन्द्रह दिन बालिकायें संध्या बेला में प्रतिदिन संजा-फूली खेलती हैं। परस्पर सहयोग से हर सहेली के घर संजा बनाई जाती है और फिर समूह रूप में हर बालिका के घर संजा-पूजा गीतों के साथ होती है।

इस गीत में सज-धज कर, गाड़ी में बैठकर संजा खेलने जाने का वर्णन है। वेशभूषा में घाघरा-ओढ़नी और गहनों की विशेषताओं-पहचान और उनकी विशेष आवाज,ध्वनि, खनक का उल्लेख है, जो छोटी बालिकाओं के सामान्य ज्ञान को बढ़ाता है। जैसे- घाघरे के घेर की घमक, ओढ़नी की चमक, चूड़ियों की खनक और बिछियों-पायल की रुनझुन मधुर ध्वनि होती है।

हर गीत में पहले आराध्या संजा का नाम लिया जाता है और फिर जिसके घर पूजा की जा रही है, उसका नाम और आगे क्रम से सभी सहेलियों के नाम लेते जाते हैं। संजा खेल पर्व के इन गीतों से खेल-खेल में जीवन की शिक्षा और संस्कार बालिकाओं को मिलते हैं।

राग - मिश्र शिवरंजनी　　ताल- कहरवा
थाट - काफी　　स्वर- दोनों गंधार

छोटी -सी गाड़ी लुड़कती .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – रे –	– रे – –	सा – – –	ध़ – – –
छो ऽ टी ऽ	ऽ सी ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	रे – रे –	ग – ग –	ग – ग –
लु ऽ ड़ ऽ	क ऽ ती ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	ग – रे –	सा – – –	सा – – –
लु ऽ ड़ ऽ	क ऽ ती ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – रे –	सा – सा –	ध़ – ध़ –
जे ऽ ऽ ऽ	म ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ऽ ऽ	ठी ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – – –	ग – ग –	ग – ग –
सं ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	बा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
रे – म –	म – म –	म – म –	ग – ग –
घा ऽ घ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	घ ऽ म ऽ
रे – ग –	ग – ग –	रे – रे –	सा – सा –

का ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
रे – म –	म – म –	म – म –	ग – ग –
चु ऽ न ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	च ऽ म ऽ
रे – ग –	ग – ग –	रे – – –	सा – – –
का ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
रे – म –	म – म –	म – म –	ग – ग –
चु ऽ ड़ि ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ख ऽ न ऽ
रे – ग –	ग – ग –	रे – – –	सा – – –
का ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
रे – म –	म – म –	– – – –	ग – ग –
बि ऽ छि ऽ	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	ग – – –	रे – – –	सा – – –
जा ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
रे – ग़ –	ग़ – रे –	सा – सा –	नी़ – नी़ –
बा ऽ ई ऽ	जी ऽ की ऽ	न ऽ थ ऽ	नी ऽ ऽ ऽ
रे – ग़ –	ग़ – रे –	सा – सा –	सा – सा –
झो ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	खा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ

संजा

संजा सहेलड़ी, बजार मंऽ खेलऽ
बजार मंऽ डोलऽ
तू किनकी बेटी, तू खाय खाजा–रोटी
तू पेरऽ माणक मोतीऽ,
गुजराती चाल चलऽ
निमाड़ी बोली बोलऽ
संजा सेळ्यो रे, माथऽ बेड़ो रेऽ
चार चिंदी रे, माथऽ बिंदी रे, माथऽ बिन्दी रेऽऽ

संजा सहेली तुम बाजार में खेल रही हो, घूम रही हो (सर्वत्र संजा की लाली दिखाई देती है)। तुम किनकी बेटी हो? तुम खाजा– रोटी खाती हो। तुम्हारी चाल चतुर– सुंदर गुजराती बालिका जैसी है और तुम्हारी बोली निमाड़ी है, तुमने सुंदर माणिक–मोती के आभूषण पहने हैं। भला तुम कौन हो, कहाँ से आई हो? (संजा तो सबकी है, सब जगह वह पहुँचती है।) तुमने

माथा गूँथ रखा है, रात्रि की फैलती अंधियारी उसका माथा है (सिर है), जिसे उदित होते तारों-सितारों से गूँथा हुआ है। क्या तुम्हारे सिर पर चाँद का घड़ा - बेड़ा रखा है? और तुमने शुक्र और ध्रुव तारे की बिंदी लगा रखी है। इसीलिये संध्या सहेली बहुत सुंदर और मोहिनी प्रतीत हो रही है।

बालिकाओं को प्रकृति, संध्या के विभिन्न रूपों का परिचय मिलता है।

राग - शिवरंजनी　　ताल- दादरा

थाट - काफी　　स्वर- दोनों गंधार- ग ग़

संजा सहेलड़ी बजार मं ऽ खेल ऽ .....

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा	सा रे –	सा – –	प़ प़ प़
सं ऽ जा	ऽ स ऽ	हे ऽ ल	ड़ी ऽ ब
सा – –	रे – –	ग़ – रे	– – सा
जा ऽ र	मं ऽ ऽ	खे ऽ ल	ऽ ऽ ब
सा – –	रे – –	ग़ – रे	– सा –
जा ऽ र	मं ऽ ऽ	डो ऽ ल	ऽ तू ऽ
सा – –	रे – –	ग़ – रे	– सा –
कि न ऽ	की ऽ ऽ	बे ऽ टी	ऽ तू ऽ
सा – –	रे – –	ग़ – रे	– सा –
खा ऽ य	खा ऽ जा	रो ऽ टी	ऽ तू ऽ
सा – –	रे – –	ग़ – रे	– सा –
पे ऽ र	मा ण क	मो ऽ ती	ऽ गु ज
सा – –	रे – –	ग़ रे –	रे सा –
रा ऽ ती	चा ऽ ल	च ल ऽ	ऽ नि ऽ
सा – –	रे – –	ग़ रे –	सा रे –
मा ऽ ड़ी	बो ऽ ली	बो ल ऽ	सं जा ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	सा रे –
से ऽ ऽ	ळो ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	मा थ ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	सा रे –
बे ऽ ऽ	ड़ो – –	रे ऽ ऽ	चा र ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	सा सा रे

चिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	ओ मा थ
ग – –	रे – –	सा – –	सा – रे
बिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	मा ऽ थ
ग – –	रे – –	सा – –	– – – –
बिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

संजा तू थारा घर जाऽ
कि थारी मांय मारगा कि कूटगा
चाँद गयो गुजरात,
हिरणी का बड़ा – बड़ा दांत
कि पोर्या–पार्ईऽ डरगा कि चमकगा
डरगा कि चमकगा .....
ईशा तू थारा घर जाऽ
कि थारी मांय मारगा कि कूटगा
चाँद गयो गुजरात, हिरणी का बड़ा बड़ा दांत
कि पोर्या पारईऽ डरगा कि चमकगा .....

संजा– फूली खेल में बालिकाओं को जीवन की शिक्षा खेल–खेल में देने की व्यवस्था है। सामूहिकता, एकता, संगठन, नेतृत्व, अनुशासन, सहकारिता आदि के गुण बालिकाओं को खेलते हुए मिलते हैं। खेलने के समय की भी सीमा का ध्यान रखना आवश्यक है। खेलने में यदि रम गये तो अन्य कार्य समय पर नहीं हो पायेंगे। अनुशासन आवश्यक है। उसका पालन अनिवार्य है। अच्छा काम होने पर प्रशंसा और पुरस्कार से प्रोत्साहन मिलता है, किन्तु गलती करने पर या अनुशासन–हीनता होने पर सजा द्वारा उस त्रुटि को सुधारने की प्रेरणा दी जाती है। संजा के भय से भी नियमों का पालन हो जाता है।

संध्या की समाप्ति होने पर रात्रि का अंधकार बढ़ जाता है। अधिक रात्रि तक घर से बाहर न खेलने की बालिकाओं को सुरक्षा की दृष्टि से हिदायत दी जाती है, अत: वे याद दिलाती हैं कि घर जाओ, देखो रात्रि अधिक हो गई है। तुम्हारी माँ मारेंगी–पीटेंगी। चाँद भी दूर गुजरात देश की ओर चला गया और हिरणी के दाँत बड़े–बड़े और डरावने दिखाई दे रहे हैं। साथ आये छोटे भाई–बहन डरेंगे, चमकेंगे। अत: अब चलो, घर चलें।

राग – बिलावल	ताल– कहरवा
थाट – बिलावल	स्वर– शुद्ध स्वर

संजा तू थारा घर जा .....

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा सा	सा – सा –	सा – सा –	रे – रे –
सं ऽ जा ऽ	ऽ तू ऽ ऽ	था ऽ रा ऽ	घ ऽ र ऽ
सा – सा –	सा – सा –	ध़ – – –	ध़ – – –
जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ ऽ
सा सा सा सा	सा – सा –	सा – सा –	रे – रे –
सं ऽ जा ऽ	ऽ तू ऽ ऽ	था ऽ रा ऽ	घ ऽ र ऽ
ध़ – ध़ –	– रे – रे	रे – – –	रे – – –
जा ऽ ऽ ऽ	ऽ कि ऽ ऽ	था ऽ री ऽ	मा ऽ य ऽ
सा – सा –	रे – रे –	ग – ग –	ग – ग –
मा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ कि ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – – –	– – – –
कू ऽ ऽ ऽ	ट ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – – –	सा – – –	सा – – –	रे – रे –
चाँ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ग ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	गु ऽ ज ऽ
सा – सा –	सा – सा –	ध़ ध़ ध़ ध़	सा – – –
रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	सा – सा –	सा – – –	रे – – –
हि र णीऽ	का ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ड़ा ऽ	ब ऽ ड़ा ऽ
ध़ – ध़	ध़ रे – –	रे – रे –	रे – रे –
दाँ ऽ त ऽ	ऽ कि ऽ ऽ	पो र या ऽ	पा ऽ रई ऽ
सा – – –	रे – – –	ग – – –	ग – – –
ड ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ कि ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – – –	सा – – –
च ऽ म ऽ	क ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

तू जा बाई संजा सासरऽ... 2
संजा का सासरऽ सी हत्ती बी आयो
घोड़ो बी आयो, म्यानो बी आयो
पालकी बी आई तू जा बाई संजा सासरऽऽ

हत्ती हाल बंधाड़ो (हत्ती सामनऽ उभाड़ो)
घोड़ा घुड़साल बंधाड़ो, पालकी छज्जा उतारो
म्याना धाबा धराड़ो,
हऊं तो नईं जाऊं दादा जी सासरऽ... 2
तू जा बाई संजा सासरऽ... 2

संजा फूली गीतों में यह संजा की विदा का गीत है। वास्तव में हमारे यहाँ बचपन से ही और खेल-खेल में ही बालिकाओं को संस्कारित किया जाता है, विवाह पश्चात् घर-गृहस्थी संभालने के लिये यह सीख बहुत काम की होती है। संजा खेल भावी-जीवन का पूर्वाभ्यास ही है। विवाह होने पर लड़की को माता-पिता का घर छोड़ पति के घर याने ससुराल जाना पड़ता है।

इस गीत में कहा जा रहा है कि ससुराल से हाथी-घोड़े-पालकी सहित बारात आ गई, अब खेलना छोड़ो और ससुराल जाने की तैयारी करो, अपना मन बनाओ। परन्तु बालिका माता-पिता का लाड़-प्यार, खेल-कूद का आनन्द छोड़ दूसरे घर नहीं जाना चाहती। कहती है- बारात को वापिस लौटा दीजिये, हाथी को बांध दीजिये, घोड़े को घुड़साल में बंधाईये, पालकी छज्जे पर रखिये और म्याने को ऊपर धावे पर (दूसरी-तीसरी मंजिल पर) रखवा दीजिये, क्योंकि मैं तो ससुराल नहीं जाऊँगी। परन्तु पिता उसे समझाते हैं और सहमति से ससुराल भेजते हैं। बेटी की तो विदाई करनी ही पड़ती है।

राग - पीलू　　ताल - दादरा
थाट - काफी　　स्वर - दोनों गंधार

तू जा बाई संजा सासर.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
			सा –
			तू ऽ
सा – –	रे – ग़	रे – –	सा – –
जा ऽ ऽ	बा ऽ ई	सं ऽ ऽ	जा ऽ ऽ
नि़ – नि़	सा सा सा	सा – सा	सा – सा
सा ऽ ऽ	ऽ स ऽ	र ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
सा – रे	ग़ – –	रे – सा	सा – नि़

सं ऽ जा	का ऽ ऽ	सा ऽ स	रा ऽ सी
सा – रे	ग़ – –	रे – सा	सा – नि़
हा ऽ त्ती	बी ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
सा – रे	ग़ – –	रे – सा	सा – नि़
घो ऽ ड़ो	बी ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
सा – रे	ग़ – ग़	रे – सा	सा – नि़
पा ऽ ल	की ऽ बी	आ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ
सा रे रे	ग़ – –	रे – सा	सा – नि़
म्या ऽ नो	बी ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
सा – –	रे ग़ ग़	रे – –	सा – –
जा ऽ ऽ	बा ई ऽ	सं ऽ ऽ	जा ऽ ऽ
नि़ – नि़	सा – सा	सा – सा	सा –सा
सा ऽ ऽ	ऽ स ऽ	र ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – सा	सा रे –	– ग़ –	रे सा – –
हा ऽ ती	सा मनु ऽ	ऽ उ ऽ	भाड़ो ऽ ऽ
सा – सा	सा – रे	रे – ग	रे सा – –
घो ऽ ड़ा	घुड़ ऽ सा	ल ऽ बं	घाड़ो ऽ ऽ
सा – सा	सा – रे	– ग़ –	रेसा – –
पा ल की	छ ऽ ज्जा	ऽ उ ऽ	तारो ऽ ऽ
सा – सा	सा – रे	– ग़ –	रेसा – –
म्या ऽ ना	धा ऽ वा	ऽ ध ऽ	राड़ो ऽ ऽ
सा – सा	सा – सा	रे – ग़	ग़ – रे
ह ऊं तो	न ऽ ईं	जा ऽ ऊं	दा ऽ दा
सा – –	नि़ – –	सा – सा	सा – सा
जी ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	र ऽ ऽ

विवाह

गढ़ हो गुंडी ऊप्पर नववत वाजऽऽ... 2
नववत वाज ऽ इन्दरगढ़ गाजऽ तो

झीनी-झीनी झांझर वाजऽ गजानन ...2
गढ़ हो गुंडी ऊपर नववत वाजऽऽ

(1) जवं हो गजानन जोसी घर जाजो... 2
तो अच्छा-अच्छा लगिण निकाळो हो गजानन... 2 ।। गढ़ हो....

(2) जवं हो गजानन सोनी घर जाजो 2
तो अच्छा-अच्छा गयनाऽ घड़ाओ हो गजानन... 2।। गढ़ हो ....

(3) जवं हो गजानन बजाजी घर जाजो... 2
तो अच्छा-अच्छा कपड़ाऽ इसावो हो गजानन... 2।। गढ़ हो ....

(4) जवं हो गजानन पटवा घर जाजो ...2
तो अच्छा-अच्छा मऊड़ इसावो हो गजानन ...2 ।। गढ़ हो ....

(5) जवं हो गजानन साजन घर जाजो ... 2
तो अच्छो सो बनड़ो (अच्छी सी बनड़ी) ब्याहो हो गजानन

किले के ऊपरी गुम्मद पर नौवत बज रही है, अर्थात् शुभ कार्य होने जा रहा है। इन्दरगढ़ वाद्यों की गर्जना से गूंज रहा है और झीनी-झीनी मधुर झांझर बज रही है। हे सिद्धि विनायक गणपति जी! आप शीघ्र आईये। आईये और शुभ-विवाह की तैयारियाँ करवा दीजिये। जोशी (पंडित) के यहाँ जाकर विवाह के सारे शुभ कार्यों के शुभ मुहूर्त निकलवाईये। सोनी से सुंदर गहने घड़वाईये। बजाजी के यहाँ से अच्छे-अच्छे कपड़े दिलवाईये। पटवा के यहाँ से वर-वधू के मौड़ बनवा दीजिये और हलवाई से मिठाईयाँ, मालन से सुंदर हार-गजरे बनवा दीजिये। समधी के घर चलकर अच्छे सुयोग्य वर और सुंदर, गुणी बन्नी का ब्याह करवा दीजिये। आपके बिना ये सब कार्य सफल नहीं होंगे। अतः - हे गणेशडु! आप शीघ्र आईये। शुभ-विवाह की बधाईयाँ बजने लगी है।

राग - देसी　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल ग, नि

गढ़ हो गुंडी उप्पर नववत .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा	रे ग़ रे -	सा - -	नि़ ध़ ध़

ग ढ़ ऽ	हो ऽ गुं ऽ	डी ऽऽ	उ ऽ प्प र
ध़ – नि़	सा– रे –	ग – –	रे रे सा सा
न ऽ व	ब ऽ त ऽ	बा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ ऽ
सा – सा	रे – म –	म – –	म – म –
न ऽ व	ब ऽ त ऽ	बा ऽ ऽ	ज ऽ इ ऽ
ग – ग	रे – ग –	सा – रे	सा – सा –
न्दर ऽऽ	ग ऽ ढ़ ऽ	गा ऽऽ	ज ऽ तो ऽ
सा – सा	रे ग रे –	सा – –	नि़ – ध़ –
झी ऽ नी	झी ऽ नी ऽ	झां ऽ ऽ	झ ऽ र ऽ
ध़ – नि़	सा – रे –	ग – –	रे – सा –
बा ऽऽ	ज ऽ ग ऽ	जा ऽऽ	न ऽ न ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	रे – म –	म – म	म – म –
ज ऽ वं	हो ऽ ग ऽ	जा ऽऽ	न ऽ न ऽ
ग – ग	रे – ग –	सा – रे	सा – – –
जो ऽ सी	घ ऽ र ऽ	जा ऽऽ	जो ऽ तो ऽ
सा – सा	रे ग रे सा	सा – –	नि़ – ध़ –
अ ऽ च्छा	अ ऽ च्छा ल	गि ऽऽ	ण ऽ नि ऽ
ध़ – नि –	सा – रे –	ग – – –	रे – सा –
का ऽ ळो ऽ	हो ऽ ग ऽ	जा ऽऽऽ	न ऽ न ऽ

बधावा

जो बी पांच बधावा रे ये भला आविया,

(1) *जो बी देखो म्हारा ग्हां पयलो बधावो रे ये भला आविया*
जो बी देखो म्हारा ग्हां गाय रे भेंस रो ठाट,
म्हारा ग्हां सोहन खंब बिलोवणोऽ।

(2) *जो बी देखो म्हारा ग्हां दूसरो बधावो रे आविया*
जो बी देखो म्हारा ग्हां देवर जेठ री जोट।।
देराणी जेठाणी रो झूमकोऽ

(3) जो बी देखो म्हारा यहां तीसरो बधावो रे आविया
जो बी देखो म्हारा य्हां जीम ते सब (सो) रे पचास
म्हारा य्हां राम रसोई ते निपजे

(4) जो बी देखो म्हारा य्हां चवथो बधावो रे आविया
जो बी देखो म्हारा य्हां घोड़ा रे घोड़िला रो ठाट,
म्हारा य्हां चढ़ूया ते तेजीव चढ़िया।।

(5) जो बी देखो म्हारा य्हां पांचवो बधावो रे आविया
जो बी देखो म्हारा य्हां खड़ी रे झलूरण पूत,
म्हारा य्हां सुगड़ा साहेब जी सी गोठणो।।

(6) धन-धन, धन-धन वो लाड़ी वऊ रो कन्त,
लंका देस सी सोन्नो मोल्व्यो,
लाड़ी लेवो वऊ लेवो तो हार घड़ाय,
अपणा नाना सुदीप भाई रो सोयलो।।

(7) धन-धन, धन-धन वो लाड़ी वऊ रो कंत,
मांडवी देस सी मंयदी मोळवी,
लाड़ी लेवो वऊ लेवा ते हात रचाय,
अपणी नानी ईशा बाई रो सोयलो।।

(8) धन-धन, धन-धन वो लाड़ी वऊ रो कंत
मालवा देस सी नाड़ो मोलव्यो
लाड़ी लेवो वऊ लेवो ते सीस गुथाय
अपणा नाना अन्नू भाई रो सोयळो
जोबी पांच बधावा रे भला आविया

विवाहादि शुभ कार्यों का आरंभ होने पर हर काम मंगल गीतों के साथ ही होता है। कूटना, पीसना, बड़ी बनाना, पापड़ बनाना, आटा सानना और पकवान बनाना तथा शादी की विभिन्न तैयारियाँ मधुर गीतों सहित ही होती हैं और बधाईयों का आदान-प्रदान होता है। एक दूसरे को तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर खुशी मनाते हुये सारे कार्य संपादित होते हैं। प्रस्तुत बधावे गीत में घर की सुख-संपन्नता, पारिवारिक प्रेम, एकजुटता का वर्णन करते हुए विभिन्न स्थानों से आई हुई मूल्यवान एवं शुभ वस्तुओं को खरीदने, गहने बनवाने एवं मेहंदी रचाने, केश गुँथाने और श्रृंगार तथा सजावट कर शादी की तैयारियाँ करने का आत्मीय आग्रह है।

राग - धानी　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

जोबी पांच बधावा रे ये भला आविया .....

स्थाई

ग ग सा	म ग म –	ग – नि़	सा – म –
जो ऽ बी	पां ऽ ऽ ऽ	च ऽ ब	धा ऽ ऽ ऽ
ग – म	ग – म	म सा –	म ग म –
वा ऽ रे	ये ऽ ऽ	भ ला ऽ	आ ऽ ऽ ऽ
ग – सा	सा – सा –	सा – –	सा – – –
वि ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

ग ग सा	म ग म –	ग – –	– – – –
जो ऽ बी	दे ऽ ऽ ऽ	खो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा नि़ नि़	सा – ग –	ग – –	म ग म –
म्हा रा ग्हां	गा ऽ य ऽ	रे ऽ ऽ	भै ऽ ऽ ऽ
ग – सा	म– ग –	म ग सा	नि़ – नि़ –
स ऽ रो	ठा ऽ ऽ ऽ	ऽ ट ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ नि़	सा – ग –	ग – म	ग – म –
म्हा रा ग्हां	सो ऽ ऽ ऽ	व ऽ न	खं ऽ ऽ ऽ
ग – सा	म – ग म	ग – सा	सा – सा –
ब ऽ बि	लो ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ	णो ऽ ऽ ऽ

तुम तो आवजो न रे, अंबा बन का सोगीटाऽ
आज वीरा जी घर सोयळो.... 2

(1) तुम खऽ बठणऽ खऽ रेऽ, अच्छा ऽ बाजुट देवांऽ
बठो तो लागो रे सुहावणा.... 2 ।। तुम तो .....

(2) तुम खऽ चुगणऽ खऽ रे, सच्चा ऽ मोतीड़ा देवांऽ
चुगो तो लागो हो सुहावणा .... 2 ।। तुम तो .....

(3) तुमराऽ पांय मंऽ रेऽ, रूण झुण घुंघरू बंधावां
चलो तो लागो रे, सुहावणा .... 2।। तुम तो आवजो.....

(4) तुमरीऽ चों मंऽ रेऽ हीरा-रतन जड़ावांऽ 2
बोलो तो लागो रे सुहावणा .... 2।। तुम तो आवजो.....

(5) तुमराऽ पंख मंऽ रे सोन्नो-रूप्पो मढ़ावां (हीरा रतन जड़ावां)
उड़ो तो लागो हो सुहावणाऽ .... 2।। तुम तो आवजो.....
तुम तो आवजो न रेऽऽ, अंबाऽ बन का सोगीटाऽ

शुभ कार्य के मुहूर्त्त निकलने पर हम अपने सभी परिवारजन, कुटुम्बीजन, आत्मीय, रिश्तेदार व परिचितों को शुभ संदेश देते हैं। शुभ कार्य में सम्मिलित होने का निमंत्रण देते हैं तथा आने का आग्रह करते हैं। आमंत्रितों के स्वागत-सत्कार एवं सुविधाओं की व्यवस्था करते हैं। मनुष्य स्वभाव होता है कि वह अपनी खुशी में सभी को सम्मिलित कर खुश होता है। उमंग और उत्साह से भरकर वह उदारतापूर्वक सभी को आमंत्रित करता है। पर्यावरण एवं प्रकृति प्रेमी भारतीय मन सुख की घड़ी में अपने आस-पास के पशु-पक्षियों तक को बुलावा देता है कि उनके आने से, बोलने-बैठने, खाने-चलने और उड़ने से भी घर-आँगन इस शुभ अवसर पर सुहावना हो उठेगा। अतः वे जरूर आयें। आम्रवन में रहने वाले सोगीटा (तोता) तुम आओ, तुम्हें बैठने के लिये बाजुट, चुगने के लिये सच्चे मोती देंगे। तुम्हारे पैरों, परों और चोंच को हीरा-मोती सोने-चाँदी से मढ़वा देंगे तो तुम और सुहावने-मनमोहक लगोगे और तुमसे हमारा विवाह मण्डप सुशोभित व सुहावना हो जायेगा।

राग - भीमपलास | ताल - कहरवा
थाट - काफी | स्वर - ग़ नि़ कोमल

तुम तो आवजो न ऽ रे, अंबा वन का सोगीटा.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग़ - ग़ सा	नि़ -सा ग़	ग़ - म -	प - - -
तु ऽ म तो	ऽ ऽ आ व	जो ऽ न ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
प - म ग़	- ग़ - म	प - म -	सा - - -
अ ऽ म्बा ऽ	ऽ ब ऽ न	का ऽ सो ऽ	गी ऽ ऽ ऽ
ग़ - नि़ -	- सा - -	ग़ - म -	प - म -
टा ऽ ऽ ऽ	ऽ आ ऽ ऽ	ज ऽ वी ऽ	रा ऽ जी ऽ
ग़ - म -	सा - - -	- नि़ - -	सा - - -
घ ऽ र ऽ	सो ऽ ऽ ऽ	ऽ य ऽऽ	ळो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग़ ग़ सा नि़	– – सा ग़	ग़ – म –	प – – –
तु म ख ऽ	ऽ ऽ ब ठ	ण ऽ ख ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
प – म –	ग़ – ग़ म	प – म –	सा – – –
अ ऽ च्छा ऽ	ऽ बा ऽ	जु ऽ ट ऽ	दे ऽ ऽ ऽ
ग़ – नि़ –	– – सा –	ग़ – म –	प – म –
वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ब ऽ	ठो ऽ तो ऽ	ला ऽ गो ऽ
ग़ – म –	सा – – –	– – नि़ –	सा – – –
हो ऽ सु ऽ	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ

स्वागत

हजार पान सुपारी डेढ़ सौ
हां जी तुम घर निवतो शरद जवई राजा आवणो
शरद जवई घोड़ा असवार, कान्ति बाई पालकी
उनको नानो भाई बड़ोई तुकार, बड़े राजा आवणो
दळ–बादळ मेहूळो वरस, हां जी,
भींज उनकी जाण वरात बड़े राजा आवणो
मोठा जी भाई पगरण आरंभियो
उनकी ईशा बइण देव परणाय,
बड़े राजा आवणो .....
हजार पान सुपारी डेढ़ सौ .....

शुभ कार्यों में आमंत्रित रिश्तेदारों, मेहमानों व परिवार–कुटुम्ब के लोगों के आने पर आरती से तिलक–अक्षत लगाकर उपरोक्त गीत गाते हुए अतिथियों का स्वागत किया जाता है।

हजार पान और डेढ़ सौ सुपारियों के साथ आपका हार्दिक स्वागत है, आप पधारिये। गृहस्वामी ने शुभ–मुहूर्त निकलवाकर विवाह कार्य आरंभ किया है। आप सब उनके बेटे–बेटी का विवाह सानंद संपन्न करवाईये। सुख और आनंद के बादल छा गये हैं, जिनसे प्रेम आनंद की शुभ बरसात हो रही है। प्रेम, स्नेह और आशीष सहित पधारिये, आपका स्वागत है।

राग – भीमपलास	ताल – दीपचंदी
थाट – काफी	स्वर – ग़ नि़ कोमल

हजार पान सुपारी डेढ़ सौ, हां जी .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प नि़ –	नि़ – – –	सा – –	रे – नि़ –
ह जा ऽ	र ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	न ऽ सु ऽ
सा – –	रे – नि़ –	ग़ – –	रे – सा –
पा ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	डे ऽ ऽ	ढ़ ऽ सौ ऽ
– – –	म – म –	म – प	प – म –
ऽ ऽ ऽ	हाँ ऽ जी ऽ	तु ऽ म	घ ऽ र ऽ
म – रे	म – ग़ –	रे – –	नि़ – नि़ –
नि ऽ व	तो ऽ आ ऽ	नं ऽ ऽ	द ऽ ज ऽ
सा सा –	ग़ – रे –	नि़ – सा	सा – सा –
व ई ऽ	रा ऽ जा ऽ	आ ऽ ऽ	व ऽ णो ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ नि़ नि़	नि़ – नि़ –	नि़ सा –	रे –नि़ नि़
आ नंद ज	व ऽ ई ऽ	घो ऽ ऽ	ड़ा ऽ अ स
सा – –	रे – नि़ –	सा – –	रे – नि़ –
वा ऽ ऽ	र ऽ पू ऽ	नम ऽ ऽ	बा ऽ ई ऽ
ग़ – –	रे – सा –	– – –	म – म म
पा ऽ ऽ	ल ऽ की ऽ	ऽ ऽ ऽ	उ ऽ न को
म प –	प – म –	म – रे	म – ग़ –
ना नो ऽ	भा ऽ ई ऽ	ब ऽ ड़ो	ई ऽ तु ऽ
रे – –	सा – नि़ –	सा – –	ग़ – रे –
का ऽ ऽ	र ऽ ब ऽ	ड़े ऽ ऽ	रा ऽ जा ऽ
नि़ – सा	सा – सा –		
आ ऽ ऽ	व ऽ णो ऽ		

उबटन

(गहूं)घऊं चणाऽ केरो उगसणो
(अऊर रे) लाओ रे तिल्ली रो तेल,
रायजादो बयठ्यो उगसणोऽ
आओ म्हारा पिता तुम देखो 2
तोहि देखी हम सुख होय,
रायजादो बयठ्यो उगसणो..... 2

इसी तरह दादा, काकाजी, मामाजी, जीजाजी आदि का नाम लेते हुए गीत गाया जाता है।

विवाह, यज्ञोपवीत, मुंडन आदि शुभ-कार्यों में वर-वधू-बटुक को राजा-रानी, राजकुमार जैसा सम्मान दिया जाता है। प्रतिदिन सुहागनें उन्हें गीत गाते हुए उबटन लगाती हैं, स्नान करवाती हैं।

प्रस्तुत गीत उबटन लगाते समय गाया जाता है, जिसमें उबटन की सामग्री का उल्लेख करते हुए शुभ अवसर आने के सुख-सौभाग्य का वर्णन है। इस शुभ दिन के आने से परिवार जन सुखी होते हैं और उन्हें सुखी व आनंदित होते देख वर -वधू भी प्रसन्न होते हैं।

राग - बिलावल　　ताल - दीपचंदी
थाट - बिलावल　　स्वर - सब शुद्ध

घऊं चणा केरो उगसणो .....

स्थाई

ध़ सा सा	सा रेग म ग	रेसा रे ग	रे - - -
घ ऽ ऊं	च णाऽ के रो	ऊऽ ग ऽ	स णो ऽ ऽ
प प ध	प ध ध प	प प मे	ग मे ग -
ला ओ रे	ति ल्ली रो ऽ	ते ऽ ल	रा य ऽ जा
रे रे -	रे ग रे -	ग म म	रे रे ग सा
ऽ दो ऽ	ब य ठ्यो ऽ	ऽ ऽ ऽ	उ ग स णो

अन्तरा

ध़ सा सा	सा रेग म ग	रेसा रे ग	रे - - -
आ ओ म्हा	रा पिऽ ता जी	तुम दे ऽ	खो ऽ ऽ ऽ

प प ध	प ध ध प	प प मे	ग मे ग –
तो ऽ हि	दे खी ह म	सु ख हो	य रा ऽ य
रे रे –	रे ग रे –	ग म म	ग रे ग सा
जा ऽ दो	बै य ठ् ऽ	यो ऽ ऽ	उ ग स णो

स्नान

गाजऽनी गरज्यो वो सखि बाई,
मेहुलड़ो सो वरस्यो आज .... 2 (राज)
अंगणाऽ मंऽ कीच्चड़ सखि बाई
किन्न कियो जीऽ ऽऽ
मोठा भाई को लाड़ को छोरो
सवा घड़ो दूध न्हावऽ आज राज (आज)
अंगणाऽ मंऽ कीच्चड़ सखि बाई
उन्नऽ कियो जीऽऽ

वर-वधू को उबटन के पश्चात् चौक-पाट पर आँगन में सुहागने स्नान करवाती हैं, उस समय यह गीत गाया जाता है।

एक सखी दूसरी से पूछती है कि आज न तो बिजली चमकी, न बादल गरजे, फिर यह वर्षा कैसे हो गई या किसने आंगन में पानी फैलाकर कीचड़ कर दिया है? सखी ने हँसते हुए उत्तर दिया कि बड़े भाई का लाड़ला बेटा आज सवा घड़े दूध से स्नान कर रहा है। ऐसा सौभाग्यशाली दिन है आज और उसी ने आँगन में यह कीचड़ किया है। शुभ दिन आया है।

राग – भूपाली	ताल – कहरवा
थाट – कल्याण	स्वर – सभी शुद्ध

गाज नी गरज्यो वो सखि बाई, मेहुळ्यो सो बरस्यो आज .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – ग रे	ग रे सा ध़	ध़ सा सा ग	ग ग रे ग
गा ऽ ज ऽ	नी ऽ ग र	ज्यो स खि बा	ई मे ऽ ऽ

ग प ग रे	ग रे सा –	सा रे ग रे	ग – – –
हु ळ ड़ो ऽ	सो ब र स्यो	ऽ रा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ ऽ
ग रे ग प	ग रे ग –	रे सा सा सा	सा रे ग ग
अं ऽ ग ऽ	णा ऽ मं ऽ	की च्च ड़ ऽ	स खि बा ई
सा रे रे ग	ग रे रे –	रे – – –	
कि ऽ न्न ऽ	कि यो ऽ जी	ऽ ऽ ऽ ऽ	

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा ग रे	ग रे सा ध	सा – सा रे	ग रे ग ग
मो ठा ऽ भा	ई को ऽ ऽ	ला ऽ ड़ को	ऽ छो ऽ रो
ग प ग ग	रे ग ग रे	सा रे सा सा	रे – ग ग
स वा ऽ घ	ऽ ड़ो दू ऽ	ध न्हा व ऽ	आ ऽ ज ऽ
ग रे ग प	ग रे ग –	रे सा सा सा	सा रे ग ग
अं ग णा ऽ	मं ऽ की ऽ	च्च ड़ स खि	बा ई उ न्न
ग रे रे –	रे – – –		
कि ऽ यो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ		

देवी पूजन

जगदम्बा (शीतला माता, अंबे माता) का दरबार,
फूलण चम्पो मंवरियो जीऽऽ.... 2
मंवर्‌यो–मंवर्‌यो छे डालम–डाळ
फूलण चम्पो मंवरियो जी 2

(1) *कूण भाई तोड़ऽ छे फूल,*
कूण वऊ गजरा (हार) गूथऽ जीऽ 2
मोठा भाई तोड़ छे फूल,
लाड़ी वऊं हार (गजरा) गूथ जी 2

(2) *गूथ्या–गुथाड़्या छे हार,*
जगदंबाऽ खऽ (शीतला माता खऽ, अंबे माता खऽ)
चढ़ावो जीऽऽऽ

(3) *मांगणूं होय सो मांगो,*

आज को दिन तुम खऽ दियो जी.... 2
अन-धन भर्‌या रहै भंडार, अव्हात, गोदी को बाळो
लाल मांगाऽ जीऽऽऽ.....2
सीतळा माता का दरबार, फूलण चम्पो मंवरियो जी.....

देवी पूजन के लिये जाते समय, पूजा तथा चौघट लीपते समय भी यह गाया जाता है। देवी के दरबार में, आँगन में चम्पा लकदक फूल रहा है। कौन भाई फूल तोड़ रहा है और कौन-सी बहू हार गूँथ रही है? जिनके बच्चे का शुभ-विवाह हो रहा है, वे बड़े भाई फूल तोड़ रहे हैं और उनकी पत्नी देवी के लिये हार गूँथ रही हैं। हार बन जाने पर देवी को चढ़ाया तो वे प्रसन्न होकर कह रही हैं, आज जो भी मांगना हो वो वरदान मुझसे माँग लो, क्योंकि मैंने सेवा से प्रसन्न होकर आज का दिन तुम्हें दिया है। वर के माता-पिता ने कहा- जगदम्बा अन्न-धन के भंडार भरे रहें, सुख सौभाग्य तथा अखंड सुहाग बना रहे और गोदी का बाल-लाल माँगते हैं। अर्थात् सुख-सौभाग्य, सुहाग और हरी-भरी गोद रहे, यही वरदान मांगते हैं माता। देवी कृपा से ही आज यह शुभ दिन आया है, आपके मंगल आशीर्वाद सदा बने रहें।

राग - भूपाली	ताल - दादरा
थाट - कल्याण	स्वर - सभी शुद्ध

जगदम्बा दरबार फूलण चम्पो मंवरियो .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग	रे ग रे	सा सा सा	प ध प
ज ग दं	बा ऽ द	र बा र	फू ल ण
प प प	ग ग प	ध - प	प ग ग
चं पो ऽ	मं व रि	यो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
ग ग ग	ग रे ग	रे सा सा	प ध प
मं व र्‌यो	छे डा ल	म डा ल	फू ल ण
प प प	ग ग प	ध - प	प ग ग
चं पो ऽ	मं व रि	यो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ

अन्तरा

ग ग ग	रे ग रे	सा सा सा	प ध प
कु ण भा	ई तो ड़	छे फू ल	कु ण ऽ

प प प	ग ग प	ध – प	प ग ग
व ऊ ऽ	हा र गू	थ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
ग ग ग	रे ग रे	सा सा सा	प ध प
मो ठा भा	ई तो ड़	छे फू ल	ला ड़ी ऽ
प प प	ग ग प	ध – प	प ग ग
व ऊ ऽ	हा र गू	थ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ

मान

बाबा पानड़ पानड़ दिया बळऽ
थारा दिवलड़ा खऽ लागी जगा जोत रेऽऽ
आज म्हारा घर गणपति बाबा पावणा 2

(1) *वो तो गणपति बाबा की मैया पूछऽ वातुली.... 2*
तुख किन्न आज निवत्यो म्हारा पूत रेऽऽ
आज म्हारा घर गणपति बाबा पावणा
वो तो निवत्यो छे अन्नू भाई की मांय न
वो तो जिमाड़्या छे मोदक अरू लाड़ू रेऽऽ
आज म्हारा घर गणपति बाबा पावणा

(2) *बाबा पानड़ पानड़ दिया बळऽ*
थारा दिवलड़ा खऽ लागी जगा जोत रेऽऽ
आज म्हारा घर सीतळा माता पावणी
वो तो सीतळा माता की मैया पूछऽ वातुली 2
तुख किन्न आज निवत्यो म्हारी बईण वोऽऽ
आज म्हारा घर सीतळा माता पावणी
वो तो निवत्यो छे ईशा बाई की मांय नऽ
वो तो जिमाड़्यो छे धई अरू भात रेऽ
आज म्हारा सीतळा माता पावणी

(3) *बाबा पानड़ पानड़ दिया बळऽ*
थारा दिवलड़ा खऽ लागी जगा जोत रेऽऽ
आज म्हारा घर भीलट बाबा पावणा
वो तो भीलट बाबा की मैया पूछऽ वातुली
तुख किन्न आज निवत्यो म्हारा पूत रेऽऽ

आज म्हारा घर भीलट बाबा पावणा
वो तो निवत्यो छे सिद्देश भाई की मांय नऽ
वो तो जिमाड़्यो छे दूध अरू लापसी (खिचड़ी खोपरो)
आज म्हारा घर भीलट बाबा पावणाऽ
बाबा पानड़-पानड़ दिया बळऽऽ

किसी देवी-देवता के समक्ष अपनी कोई अभिलाषा पूर्ण करने के लिए आदर, श्रद्धापूर्वक विनती की जाती है और मनौती मानी जाती है कि इस कार्य के होने पर सम्बन्धित देवी-देवता के समक्ष आकर मान उतारेंगे। इसके अलावा मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि शुभ कार्य प्रारंभ होने पर गणपति के अतिरिक्त शीतलामाता, देवी गौरा, अंबिका माता के पूजन की परंपरा है। अत: वर-वधू-बटुक सहित गाते-बजाते मंदिर पहुँचकर 'मान' दी जाती है। दंडवत प्रणाम करते हुये विधि-विधान से पूजन करने के पश्चात् विधिवत् विवाहादि कार्य प्रारंभ होते हैं। उस समय यह गीत गाया जाता है।

गणपति के पश्चात् जिस देवी-देवता की पूजा के लिये जाते हैं, उनका नाम लिया जाता है। उन देवी-देवता की माता पूछती हैं कि आज मेरे बेटे-बेटी तुम्हें किसने निमंत्रण दिया है? जिसका विवाह हो रहा है वह बटुक या उनकी माता ने निमंत्रण दिया है। अत: वर-वधू या बटुक का नाम लिया जाता है, और उस देवी-देवता के प्रिय भोजन-व्यंजन का भोग लगाया जाता है। उस वस्तु का उल्लेख किया जाता है। पूजा में लगाये गये उनके प्रज्ज्वलित दीप ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो सम्मान में वृक्षों के पत्ते-पत्ते पर दीपक जल उठे हैं और देवी-देवता के समक्ष प्रज्ज्वलित दीपक का प्रकाश सर्वत्र प्रतिबिम्बित हो रहा है, संपूर्ण वातावरण उस प्रकाश से आलोकित हो उठा है।

राग - भीमपलास　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

बाबा पानड़-पानड़ दिया बल ऽ .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
			सा म
			बा बा
ग़ ग़ रे रे	सा सा नि़ नि़	सा सा ग़ ग़	ग़ ग़ म म
पा ऽ ऽ ऽ	न ऽ ड़ ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	न ऽ ड़ ऽ

ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़	सा – – –	सा सा प प
दी ऽ या ऽ	ऽ ऽ ब ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	था ऽ रा ऽ
प प ध ध	प प म म	म म ग ग	ग ग प प
दी व ल ऽ	ड़ा ऽ ख ऽ	ला ऽ गी ऽ	ज ऽ गा ऽ
म म ग ग	म म म म	ग ग ग ग	रे सा नि़ नि़
जो ऽ त ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ज ऽ	म्हा रा घ र
सा ग ग ग	ग ग म म	ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़
ग ण प ति	बा ऽ बा ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ
सा – – –	सा सा सा म		
णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ वो तो		

अंतरा

ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़	सा सा ग ग	ग ग म म
ग ण प ति	बा ऽ बा की	मै ऽ या ऽ	पू ऽ छ ऽ
ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़	सा – – –	सा सा प प
वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ तु ऽ	ली ऽ ऽ ऽ	तु ऽ ख ऽ
प प ध ध	प प म म	म म ग ग	ग प म –
कि ऽ न्न ऽ	आ ऽ ज ऽ	नि व त्यो ऽ	म्हा ऽ रा ऽ
म म म म	म ग म म	ग ग ग ग	रे सा नि़ नि़
पू ऽ त ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ज ऽ	म्हा रा घ र
सा ग ग ग	ग ग म म	ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़
ग ण प ति	बा ऽ बा ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ
सा – – –	सा सा म म	ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़
णा ऽ ऽ ऽ	वो ऽ तो ऽ	नि ऽ व ऽ	त्यो ऽ छे ऽ
सा ग ग ग	ग ग म म	ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़
अ ऽ न्नु ऽ	भा ई की ऽ	मां ऽ ऽऽ	ऽ ऽ य ऽ
सा सा सा सा	सा सा प प	प ध प ध	प प म म
न ऽ ऽ ऽ	वो ऽ तो ऽ	जि ऽ मा ऽ	ड़्या ऽ छे ऽ
ग ग ग ग	ग प म म	म म ग ग	म ग म म
मो ऽ द क	अ ऽ रू ऽ	ला ऽ ड़ू ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
ग ग ग ग	रे सा नि़ नि़	सा ग ग ग	ग ग म म

आ ऽ ज ऽ	म्हा रा घ र	ग ण प ति	बा ऽ बा ऽ
ग ग रे रे	सा सा नि़ नि़	सा – – –	– – सा म
पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ बा बा

कूकड़ा

शुक्रभान कुकड़ो सार बोलऽ, कोयळ शब्द सुणाविया
कूकड़ा थारा रे बोलत सब जागिया,
जाग्या ते चारई देव, बोल वचन का रे कूकड़ा

(1) *इनी गया का गजाधर जागिया,*
काशी का विश्वनाथदेव, बोल वचन कारे कूकड़ा,
इनी मन्धाता का ओंकार देव जागिया,
अयोध्या का रामचन्द्र देव, बोल वचन का रे कूकड़ा

(2) *कूकड़ा थारा रे बोलत सब जागिया,*
जाग्या ते चारई वीर, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी मजलस का मोठा भाई जागिया,
कचेरी का छोटा भाई उमराव, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी इसकूल का इचला भाई जागिया,
चेंडू का नाना भाई सरदार, बोल वचन का रे कूकड़ा

(3) *कूकड़ा थारा रे बोलत सब जागिया,*
जागी ते चारई सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी मण्डप की मोठी बईण जागिया
ईरीत की छोटी बईण सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी आरती की इचली (मंजली) बईण जागिया,
साती की नानी बईण सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा

(4) *कूकड़ा थारा रे बोलत सब जागिया,*
जागी ते चारई वऊ सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी भंडार की मोठी वऊ जागिया,
पनघट की छोटी वऊ सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा
इनी रसवई की इचली वऊ जागिया,
महीड़ा की नानी वऊ सुवाय, बोल वचन का रे कूकड़ा

(5) *कूकड़ा थारा रे बोलत सब जागिया,*
जाग्या ते चारई जवई भाण्ड, बोल वचन का कूकड़ा

मांगलिक कार्यों के अवसर पर प्रतिदिन महिलायें प्रात: और संध्या का स्वागत मंगल गीतों से करती हैं। मुर्गे की बांग सुबह होने का प्रतीक माना जाता रहा है। अत: सुबह के मंगल गीतों को 'कूकड़ा, (मुर्गा) कहा जाता है एवं सायंकाल के समय गाये जाने वाले गीतों को 'सांजुली' कहते हैं।

प्रस्तुत गीत प्रात: गाया जाने वाला कूकड़ा गीत है। इसमें सूर्योदय होने पर मुर्गे की आवाज या बांग पर सभी देवताओं एवं विवाह घर के सभी परिवार जनों के जाग उठने का सुंदर चित्रण है। इसके साथ ही देवताओं के स्थान पर पारिवारिक सदस्यों के निर्धारित कार्यों एवं उनके परस्पर सहयोग का भी चित्रण है। कौन किस कार्य, व्यवसाय-व्यापार से जुड़ा है, इसका भी संकेत है। कौन-सी बहिन कौन-सा शगुन कार्य विशेष रूप से सबके साथ संभालेंगी, इसका उल्लेख है।

मजलस के बड़े भाई, कचेरी के छोटे भाई, स्कूल के बिचले मँझले भाई और गेंद खेलने वाले नाना (छोटे) भाई, सभी मुर्गे के बोल पर जाग गये हैं।

मुर्गे की आवाज पर भोर होते ही मंडप की बड़ी बहिन, ईरीत (देवी पूजा) की छोटी बहन, आरती की (बिचली) मँझली बहिन और साती की छोटी नन्नी सी बहिन जाग गई है। भंडार संभालने वाली बड़ी बहू, पनघट की छोटी बहू, रसोई की मँजली बहू तथा दही-मही का कार्य भार संभालने वाली नानी-छोटी बहू जाग गई है।

उसी समय परिवार में आये हुये दामाद भी जाग गये हैं। मंगल प्रभात हो चुका है और शुभ कार्य प्रारंभ हो गया। सुहावनी सुबह हो गई।

राग - देसी　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

कूकड़ा थारा रे बोलत .....

स्थाई

3 - - -	×- - -	2 - - -	0 - - -
सा सा रे ग़	रे सा -	रे नि़ नि़	सा सा -
कू क ड़ा ऽ	था रा ऽ	रे ऽ बो ऽ	ल त ऽ
रे - प -	ग़ - -	रे - नि़ -	सा - -
स ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	गि ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ
प म - प	रे प प	प प प प	म - -

जा ग या ते	चा ऽ ऽ	र ऽ ई ऽ	दे ऽ ऽ
म ध़ प म	रे सा सा	रे – नि़ –	सा – सा
ऽ ऽ ऽ व	बो ऽ ऽ	ल – व –	च ऽ न
रे – प –	म रे –	नि़ – नि़ –	सा – –
का ऽ रे ऽ	कू ऽ ऽ	क ऽ ऽ ऽ	ड़ा ऽ ऽ

अन्तरा

3 – – –	×– – –	2 – – –	0 – – –
सा सा रे ग़	रे – –	सा – – –	रे – –
इ ऽ नी ऽ	ग ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	का ऽ ऽ
नि़ – नि़ –	सा – –	सा – – –	रे – –
ग ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	घ ऽ ऽ
प – – –	ग़ – –	रे – नि़ –	सा – –
र ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ	गि ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ
प म प रे	प – –	प – म –	म – –
का शी का वि	श्व ऽ ऽ	ना ऽ थ ऽ	दे ऽ ऽ
म ध़ प म	रे सा सा	रे – नि़ –	सा – सा
ऽ ऽ ऽ व	बो ऽ ऽ	ल ऽ व ऽ	च ऽ न
रे – प –	म रे –	नि़ – नि़ –	सा – सा
का ऽ रे ऽ	कू ऽ ऽ	क ऽ ऽ ऽ	ड़ा ऽ ऽ

सांजुली

जी हो य ई रे दीवळो इन्द्र लुहार घड़्यो,
जेम पुरव्यो सवा पळो तेल, सोवन डांडी दिया हो बळऽ

(1) जी हो यई रे दिवळो देव मंदिर धर्‌यो
जहां बठ्या म्हारा गणपति देव, सोवन डांडी दिया हो बळऽ

(2) जी हो यई रे दीवळो कचेरी मंऽ धर्‌यो,
कचेरी बठ्या म्हारा दसरथ बाप, सोवन डांडी दिया हो बळऽ

(3) जी हो यई रे दीवळो झूला मंऽ धर्‌यो,
झूला-झूलऽ म्हारी कवसल्या माँय, सोवन डांडी दिया हो बळऽ

(4) जी हो यई रे दीवळो मंडप मंऽ धर्‌यो,
मण्डप बठ्या म्हारा राम-लछमन वीर, सोवन डांडी.....

(5) जी हो यई रे दीवळो रसवई मंऽ धर्‌यो,
रसवई निपजऽ म्हारी सीता उर्मिला भावज, सोवन डांडी.....
(6) जी हो यई रे दीवळो मजगेर मंऽ धर्‌यो,
मजगेर जीमऽ म्हारा देवर-जेठ, सोवन डांडी दिया .....
(7) जी हो यई रे दीवळो आरती मंऽ धर्‌यो,
आरती उठावऽ म्हारी सदासुहासेणी बईण, सोन्ना की डांडी .....
(8) जी हो यई रे दीवळो पटसाळ मंऽ धर्‌यो,
पटसाल बठ्‌या म्हारा साजन-समधी लोग, सोवन डांडी.....
(9) जी हो यई रे दीवळो पाळणाऽ मंऽ धर्‌यो,
पाळणा झूलऽ म्हारा नाना-ताना-बाळ, सोवन डांडी.....
(10) जी हो यई रे दीवळो तोरण मंऽ धर्‌यो,
तोरण उभ्‌या अच्छा दुल्हव राय, सोवन डांडी दिया हो बळऽ

शुभ कारज के दिनों में आने वाले सभी लोगों का स्वागत किया जाता है, तो फिर भला सुहावनी संध्या का क्यों नहीं स्वागत हो? अपने मांगलिक कार्यों में आने वाली सुहावनी संध्या के स्वागत में महिलायें गा उठती हैं- यह सांध्य गीत। शाम के समय अपने घरों में भगवान के समक्ष दीपक लगाकर घर के हर कमरे में ले जाया जाता है और परिवार के सदस्य आरती लेते हैं। दीपक जीवन, ज्ञान, आनंद और प्रकाश का दाता है। इस गीत में जीवन, परिवार की सुख-समृद्धि का चित्रण इस दीपक के माध्यम से किया गया है।

राग - भीमपलास | ताल - कहरवा
थाट - काफी | स्वर - ग़ नि़ कोमल

जी हो यई रे दिवळो इन्द्र लुहार .....

स्थाई

सा - - -	रे रे ग़ म	ग़ - - -	रे - - -
जी ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ	ही ऽ ऽ ऽ
सा - नि़ प़	नि़ - - -	सा - - -	रे - - -
रे ऽ दि ऽ	व ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	इं ऽ ऽ ऽ
म - - -	ग़ - - -	रे - - -	सा - - -
द्र ऽ ऽ ऽ	लु ऽ ऽ ऽ	हा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ
नि़ - - -	सा - - -	सा - - -	प - - -

घ ऽ ऽ ऽ	ड्यो ऽ ऽ ऽ	जे ऽ ऽ ऽ	मं ऽ ऽ ऽ
प – – –	ध – – –	प – – –	म – – –
पु ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	व्यो ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ
ग – – –	म ध प –	म – – –	म – – –
वा ऽ ऽ ऽ	प ऽ ळो ऽ	ते ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ध – – –	प – – –	ग – – –	रे – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	सो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – – –	नि ऽ ऽ ऽ	सा – ग –	ग ग ग म
व ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ऽ	डां ऽ ऽ ऽ	ऽ डी ऽ दि
ग – रे –	सा – – –	सा – नि़ –	सा – – –
या ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ब ऽ ऽ	ळ ऽ ऽ ऽ

हऊं तो अगवाड़ लगाऊं अंबा आमली 2
पिछवाड़ न हो अच्छी नागर बेल कि
रंग भरी दीवळो संजोवती
वो तो हसी रळ्ई पिव पूछ वातुली
म्हारी गोरड़ी वो थारो वाळ्इयो कूण कि
रंग भरी दीवळो संजोवती
वो तो प्रथम वाळ्ईया म्हारा पिता जी
दूसरा वण हो म्हारी मांय सुवाय कि
रंग भरी दीवळो संजोवती,
वो तो तीसरा वाळ्ईया म्हारा वीरा जी
चवथावण हो म्हारी भावज सुवाय कि
रंग भरी दीवळो संजोवती
गोरी यई वो वचन का कारण.... 2
मारिस वो तुख चाबुक दुई चार कि
रंग भरी दीवलो संजोवती.....
वो तो प्रथम वाळ्ईया म्हारा ससरा जी
दूसरावण हो म्हारी सासू सुवाय कि
रंग भरी दीवळो संजोवती .....
वो तो तीसरा वाळ्ईया म्हारा जेठ जी
चवथावण हो म्हारी जेठाणी सुवाय कि

रंग भरी दिवळो संजोवती.....
वो तो पांचवां वाळ्ईया म्हारा स्वामी जी,
छटवांवण हो म्हारी नणद बाई रा वीरा जी
रंग भरी दिवळो संजोवती
गोरी यई वो वचन का कारण.... 2
घड़ाईस वोऽ तुख नवलख्यो हार कि रंग भरी दीवलो, वराईस वो
मोहर दुई चार कि रंग भरी दीवळो संजोवती
हऊं तो वारूं वो वऊ जी थारी जीब ख (जीभ)
वखाण्यो वो म्हारो सब परिवार कि
रंग भरी दीवळो संजोवती ....
हऊं तो वारूं वो सासू जी तुमरी कूख ख
जेन जाया छे वो असा अरजुन भीम कि
रंग भरी दीवळो संजोवती.....
हऊं तो अगवाड़ लगाऊं अंबा आमळी .....

निमाड़ में विवाहादि शुभ कार्य आरंभ होने पर प्रात: काल और संध्या भी शुभ हो उठती है। प्रतिदिन सुबह-शाम सुहावनी प्रतीत होती है और उनके स्वागत में मंगल गीत गाये जाते हैं। सूर्योदय के स्वागत में सुबह गाये जाने वाले गीत 'कूकड़ा' कहलाते हैं एवं संध्या के स्वागत में गाये जाने वाले लोक गीत 'सांजुली' गीत कहलाते हैं-

भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन प्रात: स्नान-ध्यान, पूजन-पाठ, दैनिक दिनचर्या की शुरूआत होती है। सायंकाल देवस्थान में दीप प्रज्ज्वलित कर प्रार्थना-आरती कर उस शुभ-पवित्र-मंगल आशीर्वादमय दीपक को घर में सभी कमरों में ले जाया जाता है और घर के सभी सदस्यों को आरती दी जाती है।

प्रस्तुत गीत में घर की नवविवाहित बहू (पुत्रवधू) जब सायंकालीन आरती का दीपक अपने स्वामी जी के कक्ष में ले जाती है, तो स्वामी जी सहज ही पूछते हैं- गोरी तुम्हारा रखवाला कौन है? और पत्नी उतनी ही सहजता से उत्तर देती है कि मेरे प्रथम रखवाले मेरे पिता जी हैं, मेरी सौभाग्यशाली माँ, फिर मेरे भाई और सुहागवती भावज रखवाले हैं। यह सुन पति महोदय को निराशा होती है, उन्हें तो स्वयं का तथा अपने परिवार का नाम सुनने की उम्मीद थी, सो चिढ़कर बोले-गोरी तुम्हें बोलने की भी तमीज नहीं है, ऐसी बातों से तो तुम्हें दो चाबुक मारूँगा। यह सुन समझदार पत्नी संभलकर बात को सुधारते हुए कहती है- स्वामी जी मेरे रखवाले तो मेरे श्वसुर, सौभाग्यशाली सासू जी, मेरे जेठ और आप, यानी मेरी नणद बाई के वीरा जी मेरे रखवाले हैं।

यह सुन प्रसन्न मन पति कहते हैं–गोरी तुम तो बहुत अच्छी बोलती हो, तभी तो मैं तुम्हें नवलखा हार घड़वा कर दे रहा हूँ, तुम पर मैं सोने की मुहरें न्यौछावर करूँगा।

यह वार्तालाप सुन सास ने बहू की बलैयां ली और प्रशंसा करते हुए कहा– बहू! मैं तुम्हारी जीभ पर वार–वारी जाऊँ, जिसने मेरे परिवार का शुभ बखान किया। भला चतुर बहूरानी कब हार मानने वाली थी। उसने भी तुरंत सासू जी के पाँव छूते हुए कहा– सासू जी, मैं तो आपकी कूख (कोख) पर न्यौछावर हूँ– अनुगृहीत हूँ जिसने ऐसे योग्य अर्जुन–भीम जैसे वीर तेजस्वी बेटों को जन्म दिया है।

राग – भीमपलास ताल – दीपचंदी
थाट – काफी स्वर – ग़ नि़ कोमल

हाऊँ तो अगवाड़ लगाऊँ .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग़ ग़ सा	सा – सा –	ग़ – म	प प प प
ह ऊं तो	अ ऽ ग ऽ	वा ऽ ड़	ल गा ऊं ऽ
म ग़ म	सा ग़ ग़ –	– नि़ –	सा – – –
अं बा ऽ	आ ऽ ऽ	ऽ म ऽ	ळी ऽऽऽ
प म –	प – प –	नि़ – नि़	प – – –
पी छ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ड़ ऽ न	हो ऽ ऽ ऽ
म ग़ म	प – – –	म – ग़	सा – – –
अ ऽ च्छी	ना ऽ ऽ ऽ	ग ऽ र	वे ऽ ऽ ऽ
ग़ – नि़	सा – सा –	ग़ – म	प – प –
ळ ऽ कि	रं ऽ ग़ ऽ	भ ऽ री	दी ऽ व ऽ
म – ग़	रे – रे –	– नि़ –	सा – – –
ळो ऽ सं	जो ऽ ऽ ऽ	ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

ग़ ग़ सा	सा – सा –	ग़ म –	प – प –
वो ऽ तो	हं ऽ सी ऽ	र ळ ई	पि ऽ व ऽ
म – ग़	रे – ग़ –	– नि़ –	सा – – –

पू ऽ छ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ तु	ली ऽ ऽ ऽ
प – म	प – प –	नि – नि	प – – –
म्हा ऽ री	गो ऽ ऽ ऽ	र ऽ ड़ी	वो ऽऽ ऽ
म ग म	प – प –	म ग – –	सा – – –
था ऽ रो	वा ऽ ऽ ऽ	व्यो ऽ ऽ	कू ऽ ऽ ऽ
ग – नि	सा – सा –	ग – म –	प – प –
ण ऽ कि	रं ऽ ग ऽ	भ ऽ री ऽ	दी ऽ व ऽ
म – ग	रे – रे	– नि –	सा – – –
ळो ऽ सं	जो ऽ ऽ	ऽ व ऽ	ती ऽ ऽ ऽ

बन्ना

बठ्या –बठ्या रे कौशल्या री गोद,
रामचन्द्र दुल्हव बण्या 2

(1) सीस बना जी खऽ पागा सोहे..... 2
पेंच पऽ नाचऽ रे मोर, रामचंद्र दुल्हव बण्या .....2 ।।

(2) कान बना जी खऽ कुण्डल सोहे 2
मोती पऽ नाचऽ रे मोर, रामचंद्र दुल्हव बण्या 2

(3) गळऽ बनाऽ जी खऽ माला सोहे
लाकेट पर (हीरा पर) नाचऽ रे मोर ।। रामचंद्र .....

(4) हात बना जी खऽ मूंदी (बीटी) सोहे 2
नगीना पर (घड़ी पर) नाचऽ रे मोर, रामचंद्र .....

(5) अंग बना जी वागाऽ सोहे 2
जाकेट पर (बंडी पर) नाचऽ रे मोर, रामचंद्र .....

(6) संग बना जी खऽ बनड़ी सोहे 2
जोड़ी आगऽ नाचऽ दुई मोर, रामचंद्र दुल्हव बण्या
बठ्या–बठ्या रे कौशल्या री गोद
रामचन्द्र दुल्हव बण्याऽ .....

विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों में बन्ना–बन्नी गीतों का विशेष महत्त्व है। इन गीतों में दूल्हा–दुल्हन के सौंदर्य, सज्जा, परस्पर प्रेम–आकर्षण, हास्य–परिहास आदि का बड़ा ही मनोहर वर्णन होता है। जोश, उमंग–उत्साह से भरे ये गीत विवाह घर का आकर्षण होते हैं और ये गीत व नृत्य समा बांध देते हैं। विवाह के समय वर–वधू को राजा राम तथा रानी सीता के रूप

में मान्यता व सम्मान दिया जाता है। इस गीत में श्री रामचंद्र के देखते-देखते युवा होकर दूल्हा बनने और उनकी साज-सज्जा का मनोरम चित्रण है।

राग - पीलू | ताल - चलत दादरा
थाट - काफी | स्वर - शुद्ध एवं कोमल

बठ्या-बठ्या रे कौसल्या री गोद.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा -	रे - रे	म म -	ग रेग -
ब ठ् या	ब ठ् या	रे कौ ऽ	स ल्या ऽ
रे - -	सा - -	सा रे -	नि़ - नि़
री ऽ ऽ	गो ऽ ऽ	ऽ द ऽ	रा ऽ म
सा - रे	ग़ रे ग़	रे सा सा	सा सा -
चं ऽ द्र	दु ल्ल व	ब ण् या	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - -	ग ग म	प - -	प प प
सी ऽ ऽ	स ऽ ब	ना ऽ ऽ	जी ख ऽ
ग - म	ध़ प -	ग़ - रे	सा रे -
पा ऽ ऽ	गा ऽ ऽ	सो ऽ ऽ	हे ऽ ऽ
रे - म	म - म	ग - रे	ग़ रे -
पें ऽ च	प ऽ ऽ	ना ऽ च	ऽ रे ऽ
सा - -	सा रे -	नि़ नि़ -	सा - रे
मो ऽ ऽ	ऽ र ऽ	रा ऽ म	चं ऽ न्द्र
ग़ रे ग़	रे सा सा	सा - -	सा - -
दु ल्ल व	ब ण् या	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

बन्ना - बन्नी

बना जी तुम बम्बई जाजो जी
वहां सी लावजो जालई री चूनड़ी... 2

(1) बनी जी ओको रंग बतई देओजी
कसी तो लावां जालई री चूनड़ी
बना जी ओका हरा नीला पल्लव जी
सुआ-पंखी जालई की चुनड़ी
(2) बनी जी ओख पेर बतई देओ जी
कसी तो लाग जालई की चूनड़ी... 2
बना जी थारा घर मंऽ अंधारो जी
कसी तो पेरां जालई की चूनड़ी
(3) बनी जी हम बीजलई लगई देवां जी
तवं तो पेरो जालई री चूनड़ी
बना जी थारीमाता जी री नजर बुरी
कसी तो पेरां जालई री चूनड़ी
(4) बनी जी हम माता जी ख तीरथ भेजां
तवं तो पेरा जालई री चूनड़ी
बना जी थारी बईण री नीयत बुरी
कसी तो पेरां जालई री चूंदड़ी
(5) बनी जी हम बईण को याव करां (बईण ख सासरिया भेजां)
तवं तो पेरा जालई री चूनड़ी
अवं तो पेरां जालई री चूनड़ी
अवं तो पेरां जालई की चूनड़ी

विवाह के अवसर पर दूल्हा-दुल्हन को पाणिग्रहण के पूर्व लोक गीतों में बन्ना-बन्नी संबोधित किया गया है। बन्ना-बन्नी गीतों का विवाह गीतों में विशेष महत्त्व है। इन गीतों में प्रेम, श्रृंगार, आकर्षण, हास, सौंदर्य एवं वस्त्राभूषण आदि का वर्णन होता है।

प्रस्तुत गीत में वधू (बन्नी) बन्ने से अपने लिये जाली की चुनरी बम्बई से ला देने की फरमाईश करती है। बन्ना उसकी पसंद की चूनरी लाता है और उसे पहनकर दिखाने का आग्रह करता है, परन्तु बन्नी अनेक बहाने बनाकर उसे मना करती है। बन्ना उन समस्याओं के निराकरण का उपाय सुझाता है, तब आश्वस्त होकर बन्नी उस चूनर को ओढ़ने के लिये तैयार होती है।

यह गीत हास-परिहास-चुटकी लेने और स्वभाव-परिचय देने वाला मधुर गीत है।

राग - बिलावल　　ताल - कहरवा
थाट - बिलावल　　स्वर - सब शुद्ध

बना जी तुम बम्बई जाजो जी .....

स्थाई

			सा –
			ब ऽ
सा – रे –	सा – नि़ –	सा – –	ग – ग –
ना ऽ जी ऽ	तु ऽ म ऽ	बं ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ई ऽ
ग – – –	म – ग –	रे – – –	– – नि़ –
जा ऽ ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ
सा – रे –	सा – नि़ –	ध़ – ध़ –	– – ध़ –
हाँ ऽ सी ऽ	ला ऽ व ऽ	जो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ऽ
नि़ – – सा –	रे – नि़ –	सा – सा –	– – सा –
ळ्ई ऽ री ऽ	चू ऽ न ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ब ऽ

अन्तरा

सा – रे –	सा – नि़ –	सा – – –	ग – ग –
नी ऽ जी ऽ	ओ ऽ को ऽ	रं ऽ ऽ ऽ	ग ऽ ब ऽ
ग – ग –	म – ग –	रे – – –	– – नि़ –
ळ ऽ ई ऽ	द् ऽ यो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ क ऽ
सा – रे –	सा – नि़ –	ध़ – ध़ –	– – ध़ –
सी ऽ तो ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ऽ
नि़ – – सा –	रे – नि़ –	सा – – –	– – सा –
ळ्ई ऽ री ऽ	चू ऽ न ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ब ऽ

बन्नी

मीना जड़ी बीटी लेता आवजो जीऽ
बन्ना पयली पेसिंजर-सी आवजो जीऽऽ

(1) माथ सारूं बिंदी लावजो, माथ सारूं टीको 2
माथा सारूं किलिप लेता आवजो जीऽऽ बन्ना पयली....

(2) कान सारूं करणफूल, कान सारूं झुमकीऽ 2
कान सारूं कुण्डल लेता आवजो जीऽऽ बन्ना पयली....

(3) गळ सारूं माळा लावजो गळ सारूं तुस्सीऽ 2
गला सारूं वजट्टी लेता आवजो जीऽ बन्ना .....

(4) हाथ सारूं चूड़ी लावजो, हाथ सारूं कंगन 2
हाथ सारूं बीटी लेता आवजो जीऽ बन्ना पयली .....
(5) पांय सारू चम्पक लावजो पांय सारूं रमझोळ 2
पांय सारूं मच्छी लेता आवजो जी, बन्ना पयली .....
(6) अंग सारूं साड़ी लावजो, अंग सारूं चूनड़ 2
अंग सारूं पैटणी लेता आवजो जीऽ बन्ना .....

यह विवाह में गाया जाने वाला बन्नी गीत है, जिसमें वधू की आभूषण प्रियता, रुचि तथा फरमाईश का वर्णन है। बन्नी–बन्ना के लिये संदेश भिजवाती है कि आप शीघ्रातिशीघ्र आईये और मेरे श्रृंगार के लिये सभी अंगों के विविध आभूषण अवश्य लेते आईये।

राग – भैरवी | ताल – दादरा चलत
थाट – भैरवी | स्वर – रे ग ध नि सभी कोमल

मीना जड़ी बीटी लेताआवजो जी बन्ना.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – प	प – प	प – ध	प – म
मी ऽ ना	ज ऽ ड़ी	बी ऽ टी	ले ऽ ता
म म म	ग ग ग	गम पध प	म – म
आ ऽ व	जो ऽ ऽ	जीऽ ऽऽ ऽ	ब ऽ न्ना
ग रे ग	– रे रे	सा रे ग	म – –
प य ली	ऽ पे ऽ	सिं ज र	सी ऽ ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	सा – –
आ ऽ व	जो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	सा – रे	ग – म	म म म
मा ऽ थ	सा ऽ रूं	बिं ऽ दी	ला व जो
ग – रे	ग – म	रे – –	सा – –
मा ऽ थ	सा ऽ रूं	टी ऽ ऽ	को ऽ ऽ

सा – प	प – प	प ध़ – –	प – म
मा ऽ थ	सा ऽ रूं	कि लिप ऽ	ले ऽ ता
म – म	ग़ ग़ ग़	गम प ध़ प	म – म
आ ऽ व	जो ऽ ऽ	जीऽ ऽऽ ऽ	ब ऽ न्ना
ग़ रे ग़	– रे़ रे़	सा रे़ ग़	म – –
प य ली	ऽ पे ऽ	सिं ज र	सी ऽ ऽ
ग़ – –	रे़ – –	सा – –	सा – –
आ ऽ व	जो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

गणपति

गढ़ हो गुंडी सी बाबो गणपति आयो
हो गणपति आयो हो
आई न उतर्‌यो सेला वड़ तळऽ
पूछतो–पूछतो बाबो नगरी मंऽ आयो
हो सयर मंऽ आयो हो
राय हो मोठा जी भाई को घर कांऽ छेऽ
आमी की सामी बाबा लम्बी पटसाळ,
हो लंबी पटसाळ
केळ जामुन राय का अंगणा मंऽ
थाल भरी मोतीड़ा हो सीप भरी सिरीखंड
हो सीप भरी सिरीखंड हो
गणेस वधावण मोठी बइण संचर्‌या
आओ म्हारा गणपति बठो म्हारा अंगणा हो
बठो म्हारा अंगणा हो
तुम बिन कारज सिद्ध नी होय

विवाह, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्यों में गणेश पूजा के समय ये गीत गाया जाता है। गणेश लोक देवता हैं। वे अत्यन्त सहजता और सरलता से घर के आत्मीय और बुजुर्ग की तरह आमंत्रण मिलने पर आ जाते हैं तथा सारे कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करवा देते हैं। इसीलिये शुभ कार्य प्रारंभ करने के पूर्व गणेश जी को सर्वप्रथम आमंत्रित कर सम्मान–पूजा कर कार्य प्रारंभ किया जाता है।

निमंत्रण मिलने पर वे आकर गाँव– नगर में पहुँचकर, लोगों से विवाह वाले घर का पता

पूछकर विवाह स्थल पहुँच जाते हैं और उनका स्वागत घर की सुहागन स्त्री आरती, भेंट, मिठाई से करती हैं। घर के लोग निश्चिंत हो जाते हैं कि अब सभी कार्य निर्वघ्न संपन्न होंगे।

राग – भूपाली ताल – दीपचंदी
थाट – कल्याण स्वर – सब शुद्ध स्वर

गढ़ हो गुंडी सी बाबो गणपति आयो .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	रे – रे –	सा – ध़	सा – रे ग
ग ऽ ढ़	हो ऽ गुं ऽ	डी ऽ सी	बा ऽ बो ऽ
ग – सा	ग – रे –	सा ध़ –	सा – ग –
ग ऽ ण	प ऽ ति ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ हो ऽ
ग – सा	ग – रे –	सा ध़ –	सा – ग –
ग ऽ ण	प ऽ ति ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ हो ऽ
ग सा सा	ग – रे –	सा – ध़ –	सा – रे ग
आ ऽ ऽ	ई ऽ न ऽ	उ त र्‌यो	से ऽ ळा ऽ
रे – सा	सा – – –	रे – –	– – – –
व ऽ ड़	त ऽ ऽ ऽ	ळ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – – –	रे – रे –	सा – ध़ –	सा – रे ग
आ ऽ ऽ	मी ऽ कि	सा ऽ मी ऽ	बा ऽ बा ऽ
ग – सा	ग – रे –	सा – ध़	सा – ग –
लं ऽ बी	प ऽ ट ऽ	सा ऽ ऽ	ळ ऽ हो ऽ
ग – सा	ग – रे –	सा – ध़	सा – ग –
लं ऽ बी	प ऽ ट ऽ	सा ऽ ऽ	ळ ऽ हो ऽ
ग सा सा	ग – रे –	सा – ध़	सा ग रे ग
के ऽ ऽ	ळ ऽ जा ऽ	मु ऽ न	रा य का ऽ
रे – सा	सा – – –	रे – –	– – – –
अं ऽ ग	णा ऽ ऽ ऽ	मं ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

कईं दोंद दोंदाळ्यो रे गणपति सदा मतवाळो
कईं छोटी पीली न कामनगारो न रेऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो

(1) *कईं चलो गणेस अपुण जोसी घर जावां (चलां)*
कईं लगिण लिखाई बेगा आवां न रेऽऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो

(2) *कईं चलो गणेस अपुण सोनी घर जावां*
कईं गयणा घड़ाई बेगा आवां न रेऽऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो

(3) *कईं चलो गणेस अपुण बजाजी घर चलां*
कईं कपड़ा इसाई बेगा आवां न रेऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो

(4) *कईं चलो गणेस अपुण पटवा घर चलां*
कईं मऊड़ ईसाई बेगा आवां न रेऽऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो

(5) *कईं चलो गणेस अपुण साजन घर चलां*
कईं बन्दड़ी बिहाई बेगा आवां न रेऽऽ
म्हारो गणेस दोंदाळ्यो
कई दोंद दोंदाळ्यो रे गणपति सदा मतवाळो.....

जब आमंत्रण पाकर गणपति जी विवाह घर में आ जाते हैं, तो विवाह के आवश्यक सभी कार्य निर्विघ्न संपन्न होते हैं। उनके साथ विवाह की आवश्यक तैयारियाँ तथा खरीदी की जाती है। पंडित के घर जाकर विवाह का शुभ मुहूर्त्त निकलवाना, सुनार की दुकान पर जाकर गहने घड़वाना, कपड़े मौड़ तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदना, बारात ले जाकर निर्विघ्न विवाह संपन्न करवाकर वधू सहित बारात लेकर घर आना तथा अन्य शुभ कार्य उनके सान्निध्य-सहयोग से ही सिद्ध होते हैं। बड़ी सी तोंद और छोटे-छोटे पैरों वाले गणपति सदा ही प्रसन्न हों।

राग - बिलावल　　ताल - कहरवा
थाट - बिलावल　　स्वर - सब शुद्ध

कईं दोंद दोंदाळ्यो रे गणपति, सदा मतवाळो .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	ध़ – – –	सा – रे –	रे – – –
क ऽ ईं ऽ	दों ऽ ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ	दों ऽ ऽ ऽ
प – प –	म – ग –	रे – ग –	रे – सा –
ऽ ऽ दा ऽ	ळ्यो ऽ रे ऽ	ग ऽ ण ऽ	प ऽ ति ऽ
सा – रे –	ग – – –	रे – – –	सा – – –
स ऽ दा ऽ	म ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – सा –	ध़ – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ळो ऽ ऽ ऽ	क ऽ ईं ऽ	छो ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	रे – – –	प – – –	म – – –
टी ऽ ऽ ऽ	पी ऽ ऽ ऽ	ल्ली ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ऽ
ग – – –	रे – – –	सा – – –	रे – – –
का ऽ ऽ ऽ	म ऽ ण ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
प – – –	म – ग –	रे – – –	सा – – –
न ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	ग – – –	रे – सा –	रे – – –
ग ऽ णे ऽ	स ऽ ऽ ऽ	दों ऽ ऽ ऽ	दा ऽ ऽ ऽ
– – – –	सा – – –		
ऽ ऽ ऽ ऽ	ळ्यो ऽ ऽ ऽ		

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	ध़ – सा –	रे – ग –	रे – प –
क ऽ ईं ऽ	च ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
म – – –	ग – – –	रे – ग –	रे – सा –
णे ऽ ऽ ऽ	स – – –	अ ऽ ऽ ऽ	पु ऽ ण ऽ
सा – रे –	ग – – –	रे – सा –	सा – – –
जो ऽ ऽ ऽ	सी ऽ ऽ ऽ	घ ऽ र ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – सा –	ध़ – सा –
ऽ ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	क ऽ ईं ऽ	ल ऽ गि ऽ

रे – ग –	रे – – –	प – – –	म – – –
ण ऽ ऽ ऽ	लि ऽ ऽ ऽ	खा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
ग – – –	रे – – –	सा – – –	रे – – –
बे ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ
प – – –	म – ग –	रे – – –	सा – – –
न ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	ग – – –	रे – सा –	रे – – –
ग ऽ णे ऽ	स ऽ ऽ ऽ	दों ऽ ऽ ऽ	दा ऽ ऽ ऽ
– – – –	सा – – –		
ऽ ऽ ऽ ऽ	ळ्यो ऽ ऽ ऽ		

थाळ भर्‌या सीग मोतीड़ा
चन्दन भरी सीप
पयलो विनायक अमुक बईण तुमनऽ पूज्यो
हंसिये-हंसिये रळिइये रळिइये अमुक जवई
पूछऽ वात,
म्हारी वो गोरड़ी नार कहाँ गई ।।
हमारा अन्नू भाई पाट सा बटाट्‌या।
चऊक सा बयट्‌या
उनखऽ वधावण साहेब जी हम गया ।।

इसी प्रकार अन्य बहू-बेटियों के नाम एवं बेटों और दामादों के नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

विवाह जीवन का महत्त्वपूर्ण संस्कार है और उसमें गणेश पूजा का विशेष स्थान है। इस दिन वर-वधू को सुहागनें प्रातः सुवासित उबटन लगाकर स्नान करवाती हैं, फिर दूल्हे की सजधज और गाजे-बाजे के साथ वरमाता वर-वधू एवं सुहागनें देवी-पूजन के लिये जाते हैं और उसके पश्चात् गणेश-पूजन होता है। गणेश पूजा के अन्तर्गत ही सुहागनें वर-वधू को तिलक कर उन्हें गणेश जी की एवं पाँच मुहूर्त्त के दिन तैयार हल्दी लगाती हैं- पाँच-सात-नौ-ग्यारह और इसी क्रम में और अधिक सुहागनें उसे बधाती हैं, तिलक अक्षत लगाकर आँचल का कोना वर-वधू के सिर पर लगाती हैं। उस समय हास-परिहास, आनंदपूर्वक यह गीत गाया जाता है। वर माता कांसे के थाल में गुणी-घुंघरी-लड्डू रखकर आँचल से ढाँककर थाल-वड़ी वर-वधू को

लगाती है। यह जीवन का बड़ा साध भरा मनोरथ पूरा करने का माता के लिये विशेष शुभ अवसर होता है। थाल का यही प्रसाद सुहागनों को वर की माता वर-वधू से दिलवाती हैं, सभी को यह प्रसाद वितरित किया जाता है। उल्लास, हास-परिहास के इन क्षणों में जो आनंद का संचार होता है, उससे जीवन की एकरसता समाप्त होती है।

राग - काफी
थाट - काफी
ताल - कहरवा
स्वर - ग नि कोमल

थाल भर्‌या सीग मोतिड़ा, चंदन भरी सीप .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग रे	सा सा रे रे	ग ग रे सा	ग म म प
था ळ भ र्‌या	सी ऽ ग ऽ	मो ऽ ती ड़ा	चं ऽ द न
प प म ग	म प म ग	ग म प म	ग म प -
ऽ भ ऽ री	सी ऽ प ऽ	प य ऽ लो	वि ऽ ना ऽ
म - म -	सा - सा ग	म म म म	रे ग सा सा
य ऽ क ऽ	पू न म बा	ई तु म नऽ	पू ऽ ज्यो ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग रे	सा सा सा -	ग ग ग रे	सा सा सा सा
हं सि ये ऽ	हं सि ये ऽ	र ळ्ई ये ऽ	र ळ्ई ये ऽ
ग म म प	प प प म	ग म ग म	म प म ग
आ नं द ज	व ई पू ऽ	छ ऽ वा ऽ	ऽ ऽ त ऽ
ग म म प	प म ग म	प म ग सा	- - म म
म्हा ऽ री ऽ	वो ऽ गो ऽ	र ड़ी ऽ ना	ऽ ऽ र क
ग रे सा -	सा - - -	ग ग ग रे	सा सा रे -
हाँ ऽ ग ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	ह म रा ऽ	अ ऽ न्नू ऽ
ग - रे सा	ग म म प	ग म म प	ग म प ग
भा ऽ ई ऽ	पा ऽ ट ऽ	सा ऽ ब य	ठ्या ऽ च ऽ
ग - - -	प म ग -	ग म म प	प म ग म
उ क सा ऽ	बै ऽ ठ्या ऽ	उ न ख ऽ	व धा व ण

प म ग म	प म ग सा	सा – – –
सा हे ब जी	ह ऽ म ऽ	ग या ऽ ऽ

ममेरा

अंगणाऽ मंऽ बाजऽ जंगी ढोल,
मयल बाजा बाजिया जीऽऽ 2

(1) म्हारा पिता जी आया हो राज, चूनड़ लाया रेशमी जी,
हऊं मापूं तो हात पचास,
तोलूं तो तोला तीस की जीऽऽ
हऊं धरूं तो तरसऽ म्हारो जीव,
पेरूं तो खिरऽ मोतीड़ा जीऽऽऽ
अंगणा मंऽ वाज जंगी ढोल.....

(2) म्हारा वीरा जी आया हो राज
चूनड़ लाया रेशमी जी,
हऊं मापूं तो हाथ पचास
तोलूं तो तोला तीस कीजी
हऊं धरूं तो तरसऽ म्हारो जीव
पेरूं तो खीरऽ मोतीड़ा जीऽऽऽ
अंगणा मंऽ वाज.....

इसी प्रकार काका, दादाजी, मामाजी, मौसाजी, जीजाजी, फूफाजी आदि का उल्लेख करते हुये गीत आगे गाते जाते हैं।

विवाहादि शुभ कार्यों में तथा मण्डप-प्रतिष्ठा हवन के पश्चात् वर-वधू के मामा पक्ष से वस्त्रादि भेंट लाई एवं दी जाती है। मायके या पीहर से आई पेरावणी को ही ममेरा कहते हैं। मामा-नाना पक्ष भी अपनी सामर्थ्य और प्रतिष्ठानुसार बेटी-बहन के सहित उसके परिवार के सदस्यों के लिये इस खुशी के अवसर पर वस्त्रादि भेंट करते हैं। वर-माता अपने घर के वस्त्र छोड़ मायके के वस्त्र धारण कर ही विवाह के शेष शुभ रीति-रिवाजों को संपन्न करती है। मायके की वस्तु का विशेष महत्त्व होता है। वरमाता भी प्रसन्न होती है। उसके लिये ये साड़ी-चूनर अनमोल होती है। वह कहती है कि मेरे पिताजी, वीराजी जो साड़ी लाये हैं, वह बहुत सुंदर रेशमी साड़ी है। यदि उसे नापती हूँ तो वह पचास हाथ लंबी है, परन्तु तौल में तो बस तीस तोले की है, अर्थात् उसमें हीरे-मोती-रत्न जड़े हैं और सोने-चाँदी की जरी है। कीमती होने और खराब

हो जाने के भय से यदि उसे नहीं पहनती हूँ तो मन तरसता है और पहनती हूँ तो उसके मोती झड़ते हैं। बहुत प्रसन्नता है, परन्तु बड़ी विचित्र मनोदशा है।

राग – पीलू　　ताल – दीपचंदी
थाट – काफी　　स्वर – शुद्ध एवं कोमल

अंगणा मं ऽ वाज ऽ जंगी ढोल .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
म़ – प़	नी़ – नी़ –	सा – सा	रे ग़ रे म
अं ऽ ग	णा ऽ मं ऽ	वा ऽ ज	जं ऽ गी ऽ
ग़ रे रे	सा – नी़ –	सा सा सा	रे ग़ रे म
ढो ऽ ऽ	ल ऽ म ऽ	य ऽ ल	बा ऽ जा ऽ
ग़ रे रे	सा – नि़ –	सा – –	
बा ऽ ऽ	जि ऽ या ऽ	जी ऽ ऽ	

अन्तरा

			नि़ – ध –
			म्हा ऽ रा ऽ
म़ प़ प़	नि़ नि़ नि़ नि़	सा – –	रे ग़ रे म
पि ऽ ऽ	ता ऽ जी ऽ	आ ऽ ऽ	या ऽ हो ऽ
ग़ रे रे	सा – नि़ –	सा – –	रे ग़ रे म
रा ऽ ऽ	ज ऽ चु ऽ	न ऽ र	ला ऽ या ऽ
ग़ रे रे	सा – नि़ –	सा – –	सा – – –
रे ऽ ऽ	श ऽ मी ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

मण्डप

म्हारा हरिया मण्डप मांय,
जड़ाको लाग्यो रे दुई नयना सी ...2
(1) *म्हारा ससरा जी गांव का राजवई ...2*
म्हारो बाप दिल्ली केरो राज, जड़ाको लाग्यो रे .....

(2) म्हारी सासू सरस्वती नद्दी वयऽ 2
म्हारी मांय गंगा केरो नीर, जड़ाको लाग्यो रे .....
(3) म्हारी नणद कड़कती बीजळ्ई 2
म्हारी बईण सरावण तीज, जड़ाको लाग्यो रे .....
(4) म्हारो देवर देवुळ आगड़ो 2
म्हारो भाई गोकुळ केरा कान्हऽ
जड़ाको लाग्यो रे दुई नयना सी .....
म्हारा हरिया मण्डप मांय .....

विवाह संस्कार के अंतर्गत मण्डप छाया जाता है। मण्डप- प्रतिष्ठा के पश्चात् पीयर वालों व अन्य आत्मीय जनों द्वारा वर-वधू के माता-पिता और परिवार जनों को वस्त्र भेंट आदि देते हैं, जिसे 'पेरावणी' कहते हैं। पेरावणी के पश्चात् मिला-भेंटी होती है, जिसमें मायके से दिवंगत हो चुके आत्मीयजनों की अनुपस्थिति के कारण सुख के मिलन क्षणों में उनकी स्मृति में आँखें भीग जाती हैं और गमगीन माहौल हो जाता है। अतः पुनः खुशी व नृत्य-गान का वातावरण निर्मित किया जाता है। सर्वप्रथम 'वर-माता' को मंडप में नृत्य करना होता है, उस समय यह गीत गाया जाता है। मंडप के ही दिन रात्रि में पूर्वजों को निमंत्रित करने के लिये 'रूखड़ी' गीत गाया जाता है और स्वाभाविक रूप से परिवार के दिवंगतों के स्मरण में आँखें छलछला उठती हैं। विवाह पश्चात् बेटी की बारात विदा करने के पश्चात् वधू की माता भी इस गीत पर सर्वप्रथम मंडप में नृत्य करती है, जिसमें ससुराल पक्ष की तुलना में पीयर पक्ष को अधिक श्रेष्ठ वर्णित किया गया है। ससुर गाँव के मुखिया हैं, परन्तु पिता दिल्ली के राजा हैं। सासू जी सरस्वती नदी हैं तो माँ गंगाजल है, ननद कड़कती बिजली है तो बहिन शीतलता देने वाली श्रावण की तीज है और देवर मंदिर के मुखिया हैं तो भाई गोकुल का कान्हा ही है।

राग - भीमपलास　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - ग नि कोमल

म्हारा हरिया मण्डप मांय जड़ाको लाग्यो .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
			- - नि़ नि़
			म्हा रा
सा ग ग ग	म - ग म	प प प म	ग ग म म

ह रि या ऽ	मं ऽ ड प	मां ऽ य ज	ड़ा ऽ को ऽ
म प प प	म म ग़ ग़	रे रे सा सा	सा – नि़ नि़
ला ऽ ग्यो ऽ	रे ऽ दु ई	न य ना ऽ	सी ऽ म्हा रा

अन्तरा

सा ग़ ग़ म	म म ग़ ग़	रे सा सा सा	सा सा प प
स स रा जी	गाँ ऽ व का	रा ऽ ज ऽ	व ई म्हा रो
प प प प	प प ध़ प	म ग़ ग़ ग़	ग़ ग़ म म
बा ऽ प दि	ल्ली ऽ के रो	रा ऽ ज ज	ड़ा ऽ को ऽ
म प प प	म म ग़ ग़	रे रे सा सा	सा – नि़ नि़
ला ऽ ग्यो ऽ	रे ऽ दु ई	न य ना ऽ	सी ऽ म्हा रा

हास-परिहास

नानी नणद म्हारी लाड़ली
जिन्न माण्ड्यो छे हाट (हठ)
नांव पूछ जी भरतार को
हाँ जी बाई बिन्दी घड़ई देऊ सवा लाख की,
जेम जड़्यो जड़ाव, नाव नी कवां जी भरतार को ।। नानी.....

(1) *सासू कय म्हारी कुल वऊ वो*
जाजे-बणिया दुकान,
व्हां सी कपूर वऊ लावजे
नानी नणद म्हारी साथ मंऽ गई थी बणिया दुकान,
ओ बणिया मसाला जोख दऽऽ

(2) *तीन सौ साठ म्हारी कोथळई वो,*
सुन्दर नाव बताव, नाव बतावो रंभा पातळई
संकर सरीका उजळा, नारी जेकी साथ
ओ बणिया मसाला जोख दऽ ऽ ।। नानी नणद .....

(3) *सासू कय म्हारी कुळ वऊ वो*
गई थी बणिया दुकान,
एतरी अबेर वऊ कहाँ लागी 2
बैशाख पीछऽ वो आव वो सासू लाग्यो असाढ़
वेई उभ्या था गैल मंऽ

नानी नणद म्हारी लाड़ली जिन्न माण्डयो छे हाट .....

नव–विवाहित बहू की व्यावहारिक बुद्धि की परीक्षा लेने वाला यह नृत्य–गीत अत्यंत मनोरंजक है। छोटी ननद ने हठ माना है कि भाभी–भैया का नाम बताओ। भारत में परंपरा है कि नव–वधुएँ गुरुजनों एवं परिवार जनों में पति का नाम सम्मान और मर्यादा के कारण नहीं बोलती हैं। पूजा–विवाहादि कार्यक्रमों में, विशेष अवसरों पर यदि पति का नाम बोलना ही पड़ता है, तो (बहाने) व्याज से– पद्य आदि में बाँध कर बोलने का चलन है। जब बहू नाम नहीं कहती तो सास उसे पूजा के लिये कपूर लाने छोटी –बेटी के साथ भेजती है, ताकि वह कपूर शब्द बोल दे, क्योंकि बेटे का नाम कपूरचंद जैसा कुछ था। बहू बहुत होशियार थी। दुकान पर जाकर उसने कहा–मसाला दे दो। दुकानदार ने कहा– मेरे पास तीन सौ साठ डिब्बों में सामान है, तुम्हें क्या चाहिये नाम बोलो! बहू ने कहा संकर (शिव) जैसा उजला (कर्पूर गौरं करूणावतारं....) है और जो जोड़ी में ही रहता है (कपूर–चावल या शक्कर के साथ रखा जाता है, ताकि उड़े नहीं) वही दे दो। बनिया समझ गया और उसने कपूर दे दिया। सासू जी ने देर से लौटने का कारण पूछा– तो उसने फिर चतुराई से उत्तर दिया–वैशाख के बाद जो आता है और उसके बाद आषाढ़ लग जाता है, वे ही (अर्थात् ज्येष्ठ–जेठ जी) गैल में (रास्ते, गली में) खड़े थे, इसलिये देर हो गई। जेठ शब्द का उसने उपयोग नहीं किया और मर्यादा का पालन किया। कायदा है कि सामने से अपने गुरुजन आ रहे हों तो उन्हें रास्ता दिया जाय। दो घरों के बीच की संकरी गली में से निकलते समय ऐसा लिहाज करते हुए मर्यादा का पालन किया जाता है।

इस प्रकार नई बहू ने अपनी बुद्धिमता, चतुराई और व्यावहारिक ज्ञान का परिचय दिया।

राग – गौड़ मल्हार	ताल – दादरा
थाट – बिलावल	स्वर – सब शुद्ध

नानी नणद म्हारी लाड़ली जिन् न मांड्यो छे हाट .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ध – सा	– सा –	रे रे –	सा – सा
ना ऽ नी	ऽ न ऽ	ण द ऽ	म्हा ऽ री
रे – म	– रे –	प – प	प – –
ला ऽ ऽ	ऽ ड़ ऽ	ली ऽ जी	न्न ऽ ऽ
ध – प	प – म	रे – ग	रे – –
मा ऽ ण्ड्	यो ऽ छे	हा ऽ ऽ	ट ऽ ऽ

प – म	– ग –	रे – म	म – म
ना ऽ व	ऽ पू ऽ	छ ऽ जी	भ ऽ र
रे – ग	सा – सा	प प –	प – प
ता ऽ र	को ऽ ऽ	हां जी ऽ	बा ऽ ई
म – प	– म –	ग – रे	म म –
बिं ऽ दी	ऽ घ ऽ	ड़ा ऽ ऊं	स वा ऽ
रे – ग	सा – –	– – –	सा – सा
ला ऽ ख	की ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	जे ऽ म
रे ग –	– सा –	रे – –	– रे –
ज डूयो ऽ	ऽ ज ऽ	ड़ा ऽ ऽ	ऽ व ऽ
प – ध	प – म	रे – म	म – म
ना ऽ व	नी ऽ क	वा ऽ जी	भ ऽ र
रे – ग	सा – –	सा – –	– – –
ता ऽ र	को ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ध़ – –	सा – –	रे – रे	सा सा सा
सा ऽ ऽ	सू ऽ ऽ	ळ ऽ य	म्हा ऽ री
रे – म	म – रे	प – प	प – –
कु ऽ ळ	व ऽ ऊ	वो ऽ जा	जे ऽ ऽ
ध ध प	म – –	ग – –	– रे –
ब णि या	दु ऽ ऽ	का ऽ ऽ	ऽ न ऽ
प – म	– ग –	रे – –	म – म
व्हां ऽ सी	ऽ क ऽ	पू ऽ र	व ऽ ऊ
रे – ग	सा – –	सा – –	– – –
ला ऽ व	जे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ध़ ध़ सा	– सा –	रे रे –	सा – सा
ना ऽ नी	ऽ न ऽ	ण द ऽ	म्हा ऽ री
रे – म	– रे –	प प प	प – –
सा ऽ ऽ	ऽ थ ऽ	मं ग ई	थी ऽ ऽ
ध ध प	– म –	ग – – –	रे – –

ब णि या	ऽ दु ऽ	का ऽ ऽ	न ऽ ऽ
प प म	– ग –	रे – –	म – –
ब णि या	ऽ म ऽ	सा ऽ ऽ	ला ऽ ऽ
रे – ग	सा – –	सा – –	– – –
जो ऽ ख	द ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

कुल देवी पूजन

गाड़ी झुपी नऽ म्हारी मंगळा माता आवऽ
या गाड़ी कूण छोड़ावऽ
(1) गाड़ी छोड़ावऽ म्हारो रजनीस भाई घरास्यो (सौभाग्यो)
देवी की महिमा बढ़ावऽ
धवळ्यो कय म्हारो सींग मढ़ावो (रंगावो)
काळ्या की झूल बणावो
धवल्यो कय म्हारो सींग मढ़ावोऽ
देवी खऽ अगर (मुकुट, छत्र) घड़ावोऽ
(2) गाड़ी छोड़ावऽ म्हारो मनीष भाई घरास्यो (सौभाग्यो)
देवी की महिमा बढ़ावऽ
धवळ्यो कय म्हारो सींग मढ़ावोऽ
काळ्या की झूळ बणावोऽ
धवळ्यो कय म्हारो सींग मढ़ावोऽ
देवी खऽ अगर (मुकुट छत्र) घड़ावोऽ

इसी तरह घर के सब भाई-बेटों, नाती-पोतों के नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है। अपनी-अपनी कुल देवी का नाम लेकर गीत गाया जाता है।

शुभ विवाह में मंडप के दिन, देवी पूजन के लिये चौघट लीपते समय, ईरीत बनाते समय या देवी की फोटो रखते समय ये गीत गाया जाता है। सब परिवारों की अपनी-अपनी अलग कुलदेवी होती हैं और अपनी-अपनी पूजा नैवेद्य की रीति-नियम होते हैं, अत: गीत में अपनी कुल देवी का नाम लिया जाता है।

शुभ कार्य में कुल देवी पधार रही हैं, उनकी गाड़ी ससम्मान कौन छुड़वा रहा है? जिनके पुत्र-पुत्रियों का विवाह है, सर्वप्रथम उनका या उनके परिवार के सबसे बड़े भाई तथा क्रमानुसार सब भाइयों के नाम गाड़ी छुड़ाने में लिये जाते हैं। सौभाग्यशाली भाई ने गाड़ी छुड़ाई, उनके घर

कुल देवी आई हैं, उन्होंने देवी की महिमा बढ़ाई है। देवी की गाड़ी का सफेद बैल कह रहा है– मेरा सींग रंगवा दो, मढ़वा दो और काले बैल की झूल बनवा दो तथा देवी को मुकुट और छत्र चढ़ाओ।

राग – भीमपलास	ताल – दीपचंदी
थाट – काफी	स्वर – ग नि कोमल

गाड़ी झुपी न ऽ म्हारी मंगला माता ....

स्थाई

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
नि नि –	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
गा ऽ ऽ	ड़ी ऽ झु ऽ	पी ऽ न	म्हा ऽ री ऽ
सा – सा	ग – ग –	ग रे – –	नि – प –
मं ग ळा	मा ऽ ता ऽ	आ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ
प नि नि	सा – रे –	रे ग ग	रे – रे –
या ऽ ऽ	गा ऽ ड़ी ऽ	कू ऽ ऽ	ण ऽ छो ऽ
सा – रे	सा – सा –	सा – सा	सा – सा –
ड़ा ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
नि नि –	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
गा ऽ ऽ	ड़ी ऽ छु ऽ	ड़ा ऽ व	म्हा ऽ रा ऽ
सा – सा	ग ग ग ग	ग – रे	नि – प –
र ज नीश	भ ई घ रा	ऽ ऽ ऽ	स्या ऽ ऽ ऽ
प नि नि	नि – सा –	रे ग ग	रे – रे –
दे ऽ ऽ	वी ऽ की ऽ	म हि ऽ	मा ऽ ब ऽ
सा – रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
ढ़ा ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
ध ऽ व	ळ्यो ऽ क ऽ	य ऽ हो	म्हा ऽ रा ऽ

सा – –	ग़ – ग़ –	रे – –	नि़ – प़ –
सीं ऽ ऽ	ग ऽ म ऽ	ढ़ा ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प़ – नि़	नि़ सा – सा	रे – ग़	ग़ – रे –
दे ऽ ऽ	वी ख ऽ ऽ	अ ऽ ग	र ऽ च ऽ
सा – रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
ढ़ा ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

माता आरती मंऽ बेल बिजोरोऽ, सवा पळ्ो तेल बळऽ
आरती अजब बणी (वो माता)
वो माता कूण भाई सन्त पियारा,
कूणऽ वऊ सेवा करऽ वो
माता मोठा भाई सन्त पियारा
लाड़ी वऊ सेवा करऽ वो
माता उनखऽ सुफळ देवोऽ
सदा ही वो आणंद करऽ वो
माता उनखऽ अम्मर करी राखो
सदा ही वो आणंद करऽ वो

माता की आरती में बेल बिजोरा है और दीपक में सवा पली तेल जल रहा है, अर्थात् तेल का अखण्ड दीपक प्रज्ज्वलित है, आपकी महिमा अजब है, निराली है। इस आरती को करने वाले भाई सन्त प्यारे हैं, अर्थात् सभी सन्त उन्हें महत्त्व देते हैं और उनकी पत्नी भी देवी की सेवा करती हैं। देवी उन्हें सपरिवार सुफल देना, उन्हें अमर करना, वे सदा आनंद ही करें।

राग – पीलू	ताल – दीपचंदी
थाट – काफी	स्वर – दोनों गंधार, दोनों धैवत

माता आरती मं ऽ बेल बिजोरो.....

स्थाई

सा रे ग़	सा – रे –	सा – नि़	नि़ सा सा –
मा ऽ ता	आ ऽ र ऽ	ती ऽ म	बे ऽ ऽ ऽ
रे – रे	ग़ – ग़ –	रे – रे –	नि़ – सा –

ल ऽ बि	जो ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽ
रे – रे	रे – ग़ –	रे सा नि़	सा – सा –
र ऽ ती	अ ऽ ज ऽ	ब ब ऽ	णी ऽ वो

अन्तरा

सा रे ग़	सा – रे –	सा – नि़	नि़ – सा –
मा ऽ ता	कू ऽ ण ऽ	भा ऽ ई	सं ऽ ऽ ऽ
रे – रे	रे – ग़ –	रे सा नि़	सा – सा –
त ऽ ऽ	पि ऽ या ऽ	रा कू ऽ	ण ऽ ऽ ऽ
रे – रे	ग़ – ग़ –	रे नि़ –	सा – सा –
व ऽ ऊ	से ऽ ऽ ऽ	वा क ऽ	र ऽ वो ऽ
सा रे ग़	सा – रे रे	सा – नि़	सा – सा –
मा ऽ ता	मो ऽ ठा ऽ	भा ऽ ई	सं ऽ ऽ ऽ
रे – –	रे – ग़ –	रे – सा	सा – – –
त ऽ ऽ	पि ऽ या ऽ	रा ऽ ला	ड़ी ऽ ऽ ऽ
रे – रे	ग़ – रे	सा – नि़	सा – सा –
व ऽ ऊ	से ऽ ऽ ऽ	वा ऽ क	र ऽ वो ऽ
सा रे ग़	सा – रे –	सा – सा	नि़ – सा –
मा ऽ ता	उ ऽ न ऽ	ख ऽ अ	म्म ऽ र ऽ
रे ग़ सा	रे ग़ – ग़	रे – नि़ –	नि़ – सा –
क ऽ री	ऽ रा ऽ ऽ	खो ऽ स ऽ	दा ऽ ही ऽ
रे – रे	ग़ – ग़ –	रे – नि़	सा – सा –
वो ऽ आ	नं ऽ ऽ ऽ	द ऽ क	र ऽ वो ऽ

रूखड़ी

सरग भवन्ती वो गिरधरणी,
एक संदेसो लई जाव 2
सरग का मोठा भाई सी यूं कयजो,
तुम घर नाती को याव 2
जेम सर रे ओम सारजो,
हमारो ते आवणूं नी होय 2

ताला जड़्या रे लोहा बंद का,
जड़ी दिया वजीर किवाड़ 2
सरग भवन्ती वो गिरधरणी.....

विवाह की तिथि तय हो जाने पर विवाह की विविध तैयारियाँ प्रारंभ हो जाती हैं। इस हेतु निमंत्रण पत्रिकाएँ छपवा कर आत्मीयजनों, परिजनों, कुटुम्बियों, परिचितों को आमंत्रित किया जाता है। मंडप के दिन रात्रि में 'रूखड़ी निवती' जाती है, अर्थात् अपने पूर्वजों को शुभ-विवाह होने की सूचना देते हुए आमंत्रित किया जाता है। दूर आकाश में बहुत ऊँचाई तक उड़कर जाने वाले गिद्ध-गिधनी को स्वर्ग में रहने वाले अपने पूर्वजों-प्रियजनों को संदेश देने का आग्रह किया जाता है और स्वर्गवासी पूर्वज भी उसी गिधनी के माध्यम से अपना संदेश और आशीर्वाद भिजवाते हुये कहते हैं कि जैसे भी संभव हो तुम विवाह कार्य संपन्न कर लो, हमारा तो आना नहीं हो सकेगा, क्योंकि हमारे रास्ते बंद हैं। स्वर्ग के द्वार बड़े-बड़े लोहे के भारी दरवाजों से बंद किये गये हैं और उनमें बड़ी-बड़ी भारी अर्गलायें लगा दी गई हैं तथा मोटी-मोटी बड़ी मजबूत साँकलों में भारी-भरकम ताले जड़े हुए हैं। अत: हमारा आना, विवाह में उपस्थित होना असंभव है। यह अत्यंत करुण गीत है। सभी अपने प्रिय पूर्वजों की स्मृति में शोकाकुल हो जाते हैं। परन्तु शीघ्र ही 'वर-माता' मंडप में गीत और नृत्य प्रारम्भ करती है और फिर अन्य महिलायें नृत्य करती हैं। गीत-संगीत-नृत्य-हास-परिहास से सारा वातावरण उल्लास, उमंग, उत्साह-आनंद से भर उठता है।

राग - भीमपलास　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

सरग ऽ भवन्ती वो गिरधरणी.....

स्थाई

× - - -	2- - -	× - - -	3 - - -
सा सा सा	म म ग़ सा	ग़ ग़ ग़	म म प म
स र ऽ	ग ऽ ऽ	व ऽ ऽ	न्ती ऽ वो ऽ
म म म	ग़ - म ग़	- ग़ -	म ग़ ग़ सा
गि र ऽ	ध ऽ र णी	ऽ ए ऽ	क ऽ सं ऽ
ग़ ग़ ग़	ग़ म प म	म म म	ग़ ग़ ग ग
दे सो ऽ	ल ऽ ई ऽ	जा ऽ ऽ	ऽ व ऽ ऽ
सा सा सा	म - ग़ सा -	सा ग़ ग़	ग़ म प म

स र ऽ	ग ऽ का ऽ	मो ठा ऽ	भा ई सी ऽ
म म ग	म –ग –	ग ग ग	म – ग –
यूं ऽ क	य ऽ जो ऽ	तु म ऽ	घ ऽ र ऽ
सा ग ग	ग म प म	म – –	ग ग ग ग
ना ऽ ऽ	ती ऽ को ऽ	या ऽ ऽ	ऽ व ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
सा सा म	म ग सा –	ग ग ग	ग म प म
जे ऽ म	ऽ स ऽ ऽ	र रे ऽ	ओ ऽ म ऽ
म म म	ग – सा –	ग ग ग	म म ग ग
सा ऽ ऽ	र ऽ जो ऽ	ह मा ऽ	रो ऽ ते ऽ
सा ग –	म – प –	प म –	ग ग ग ग
आ व ऽ	णुं ऽ नी ऽ	हो ऽ ऽ	ऽ य ऽ ऽ
सा – म	म ग सा ग	ग – –	ग म प म
ता ऽ ला	ऽ ज ऽ ड़्या	रे ऽ ऽ	लो ऽ हा ऽ
म म म	ग – सा –	ग ग ग	म – ग –
बं ऽ ऽ	द ऽ का ऽ	ज ड़ी ऽ	दि ऽ या ऽ
सा ग ग	म – प –	म म –	ग ग ग ग
व जी ऽ	र ऽ कि ऽ	वा ऽ ऽ	ऽ ड़ ऽ ऽ

परछन

अरी माई असो ते म्हारा यहां नित नवो होय,
सांवला हरि नी आरती जी,
आरती करो हो तुम माता जसोदा
सांवळा हरि नी आरती जी,
आरती करो हो तुम बईण सुभद्रा
सांवळा हरि नी आरती जी
अरी माई पड़छो ते यदुपति राय
अरी माई पड़छो ते मुकुंद मुरारी,
सांवळा हरि नी आरती जी

(1) लाओ रे साळ रा खांडणा, पड़छो ते यदुपति राय,

माईऽऽ पड़ऽ छोऽते यदुपति राय,
सांवळ्या हरि नी आरती जीऽ

(2) *लावो रे दहिया बिलोवणा, पड़छो ते यदुपति राय*
माईऽऽ पड़ऽ छोऽते यदुपति राय,
सांवळ्या हरि नी आरती जीऽ

(3) *लाओ रे सूत रा कातणा, पड़छो ते यदुपति राय*
माईऽऽ पड़ऽ छोऽते यदुपति राय, सांवला .....

(4) *लाओ रे जंगल रोयसो, पड़छो ते यदुपति राय,*
माईऽऽ पड़ऽ छोऽते यदुपति राय, सांवळ्या हरि.....

(5) *लाओ रे साळ रा झाडणा, पड़छो ते यदपुति राय,*
माईऽऽ पड़ऽ छोऽते यदुपति राय,
सांवळ्या हरि नी आरती जीऽ
अरि माई पड़छो ते मुकुंद मुरारी
सांवळ्या हरि नी आरती जीऽ ऽ ऽ

पड़छना अर्थात् नजर उतारना। विवाह के अवसर पर हल्दी से सजे-धजे अलंकृत वर-वधू आकर्षण के केन्द्र होते हैं। लोक मान्यतानुसार सुंदर वर-वधू और परिवार के सुख तथा सौभाग्य को देख कई ईर्ष्यालु अपनी दुर्भावना व्यक्त करते हैं। अत: बुरी नजर से बचाने के लिये वर-वधू को काजल लगाया जाता है, चाकू-कटार उनके पास रखे जाते हैं, उन्हें अकेला नहीं छोड़ा जाता, उनके साथ राई रखी जाती है।

विवाह के रीति-रिवाजों के अन्तर्गत बारात जाने के पूर्व मंडप के तोरण में वर-माता दूल्हे राजा को उक्त गीत के साथ पड़छती है और स्त्रियाँ इस गीत को गाती हैं। जब बारात वधू के यहाँ पहुँचती है, तब वहाँ मंडप में जाने के पूर्व तोरण में (वर-माता) वधू-माता वर को पड़छती है। विवाह उपरान्त बारात वर-वधू को लेकर जब आती है, तब दूल्हा-दुल्हन को पड़छती है। वरमाता यशोदा के रूप में कृष्ण-राधा रूपी दूल्हा-दुल्हन को पड़छती हैं- नजर उतारती हैं। स्वागत करती है।

राग - काफी　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　स्वर - ग नि कोमल

अरी माई असो ते म्हारा यहां नित-नवो हो.....

स्थाई

3 – – –	×– – –	2 – – –	0 – – –
सा नि़ सा रे	रे रे रे	रे ग़ रे सा	नि़ सा रे
अ री मा ई	अ सो ते	म्हा रा य हाँ	नि़ त ऽ
रे ग़ रे ग़	रे नि़ सा	सा रे ग़ सा	रें ग़ रे
न वो हो ऽ	य सां व	ला ह रि नी	आ र ती
सा नि़ सा –	सा नि़ सा	रे रे रे रे	रे रे रे
जी ऽ ऽ ऽ	आ र ती	ऽ क रो हो	ऽ तु म
रे ग़ रे सा	नि सा रे	रे रे रे रे	रे ग़ रे
मा ऽ ता ऽ	ज सा दा	सां व ळो ऽ	ह रि नी
रे ग़ रे –	सा नि सा		
आ ऽ र ती	जी ऽ ऽ		

अन्तरा

3 – – –	×– – –	2 – – –	0 – – –
सा नि़ सा रे	रे रे रे	रे ग़ रे सा	सा सा नि़
अ री मा ई	ला ओ रे	सा ळ रा खां	ऽ ड ण
नि़ नि़ रे रे	रे ग़ रे	सा नि़ सा –	सा नि़ सारे
प ड़ छो ऽ	ते य दु	प ति रा य	मा ऽ ईऽ
नि़ नि़ रे रे	रे ग़ रे	सा नि़ सा –	रे रे रे
प ड़ छोऽ	ते य दु	प ति रा य	साँ व ळा
रे ग़ रे –	रे ग़ रे	सा नि़ सा –	सा – –
ह रि नी ऽ	आ र ती	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

जेवनार

सेवक का घर सतगुरु आया
काई – काई मिजवानी करूं हो रामा 2
(1) *चित्त की चौकी, संतोष बठई नऽ*
प्रीत पांवड़्या डालूं,
ज्ञान गलीचा गम का तकिया
प्रेम पलंग बिछाऊं।। सेवक का घर सतगुरू.....

(2) सुरता का गड़वा मंऽ, जल भरी लाऊं,
सतगुरू सीस नवाऊं
चरण परवाळ्ई चरणामृत लेऊं
सतगुरु सीस नवाऊं।। सेवक का घर सतगुरु आया.....

(3) समिता अमिता तप रसोई,
प्रेम प्रसाद बणायो
फूल की फुलक्या, मन की मंगोड़ी
जुगत जलेबी बणाई।। सेवक का घर सतगुरु आयो.....

(4) भाव को भात बणायो तिलोख्या
दया जी की दाळ बणाई 2
हीव को हींग हळ्द हिरदा की
तत्त्व को तेल मंगायो।। सेवक का घर.....

(5) समता को रस ममता की मिरची
पांच मसाला मिलाया
शील की सेंव भक्ति का भटा बण्या
करम करेली बणाई।। सेवक का घर.....

(6) सब संतन जब जीमण बठ्या
सतगुरू परसण आया 2
धोई डालो हो बिंबि का जळ सी
करमन की कढ़वाई।। सेवक का घर.....
सेवक का घर सत्गुरु आया, काई-काई मिजवानी करूं हो रामा.....

शुभ कार्यों में, विवाह आदि प्रसंगों में अतिथियों और समधियों के भोजन करते समय उनके मनोरंजन, आनंद के लिये अनेक मधुर रसमय गीत गाये जाते हैं। जिनमें विविध व्यंजनों के वर्णन के साथ ही प्रेम, मेल-मिलाप, परोपकार, सत्कार्यों के परिणाम, जीवन के सत्य, आनन्द और आत्मा-परमात्मा के मिलन के वर्णन भी होते हैं। इन गीतों में गुरू के आने पर उनके आतिथ्य द्वारा उनकी कृपा पाने और जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने का संदेश है। भाव के भोजन और जीवन में अपनाये गये सद्गुण रूपी व्यंजनों से ही गुरू संतुष्ट होकर शिष्य पर अपनी अमृतमयी कृपा बरसाते हैं। वैसे ही आये हुए मेहमान संतुष्ट हों, आनंदित हों और कृपा बनाये रखें।

राग - भीमपलास　　ताल - दादरा
थाट - काफी　　स्वर - ग नि कोमल

सेवक का घर सतगुरू आया, कोई-काई मिजवानी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ प़ नि़	नि़ नि़ नि़	सा सा सा	– सा सा
से ऽ वं	ऽ कं ऽ	का घ ऽ	र ऽ ऽ
सा सा म	म म ग़	म म प	प – प
स ऽ त्	गु ऽ रू	आ ऽ या	ऽ ऽ ऽ
ग़ ग़ म	म प प	म म ग़	ग रे रे
का ई का	ऽ ई ऽ	मि ज बा	ऽ नी ऽ
नि़ नि़ सा	सा ग़ ग़	रे रे सा	सा – –
क ऽ रूं	ऽ हो ऽ	रा ऽ मा	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा	सा म म	म म म	म म म
चि ऽ त्त	ऽ की ऽ	चौ ऽ की	ऽ सं ऽ
प प म	म ग़ ग़	ग़ म म	प प प
तो ऽ ष	ऽ ब ऽ	ऽ ठ ई	न ऽ ऽ
नि़ नि़ प	प म म	म ग़ ग़	रे – सा नि़
प्री ऽ त	ऽ पां ऽ	ऽ व ऽ	ड्या ऽ ऽ
सा – सा	सा सा सा	सा सा म	म म म
डा ऽ लूं	ऽ ऽ ऽ	ज्ञा ऽ न	ऽ ग ऽ
म म म	म म म	म प प	ग़ म म
ली ऽ ऽ	चा ऽ ऽ	ग ऽ म	का ऽ ऽ
प प प	प प प	नि़ नि़ प	प म म
त ऽ कि	या ऽ ऽ	प्रे ऽ म	ऽ प ऽ
ग़ ग़ रे	रे सा सा	नि़ सा सा	सा सा सा
लं ऽ ग	ऽ बि ऽ	ऽ छा ऽ	ऊं ऽ ऽ
– – –	– – –		
ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ		

समधियों को गाली

कुन्दनपुर की नार कृष्ण खऽ
हिलमिल गावऽ गाऽऽळी ऽऽ.....2

(1) पयली माता जो देवकी जी, बंदीखाना डाली,
दूजी माता जसोमती जी छांछ बिलोवत हारी ऽऽ।। कुंदन.....
(2) राजा बलि आगऽ हात पसार्‌या, बणी गया आप भिकारीऽऽ
कुंदन पुर की नार.....
(3) बुआ तुम्हारी कुन्ती कहिये,
जायो करण (कर्ण) कुंवारी ऽऽऽ कुंदनपुर की.....
(4) भौजई तुम्हारी द्रौपदी कहिये,
पांच पुरुष एक नारी ऽऽऽ।। कुंदनपुर की.....
(5) बैईण तुम्हारी सुभद्रा कहिये,
अर्जुन संग सिधारी ऽऽऽ।। कुंदनपुर.....
(6) हमरी गालई को बुरो मत मानो,
तुम जीजा हम साळ्ई ऽऽऽ
कुंदनपुर की नार कृष्ण खऽ हिलमिल गावऽ गाऽऽऽळी ऽ।

विवाहादि मांगलिक अवसरों पर आये हुए मेहमानों तथा बारात में आये समधियों का भोजन के समय मधुर गीतों से मनोरंजन भी किया जाता रहा है। इन गीतों में प्रमुख जिमणार (जेवनार) गाली निव्हाळई है, जिनमें हास-परिहास, ऐतिहासिक-पौराणिक कथाओं का उल्लेख एवं आध्यात्मिक अर्थ निहित होते हैं। कृष्ण के समक्ष उनकी ससुराल में भोजन के समय महिलायें 'गाली' गाकर आनंद का वातावरण उपस्थित कर रही हैं। सामान्यत: गाली कोई दे तो बुरा लगता है, क्रोध आता है और लड़ाइयाँ हो जाती है, परन्तु विवाह या अन्य शुभ अवसरों पर गाई जाने वाली ये गालियाँ सभी को पुलकित करती हैं। कृष्ण को कहा जाता है- आपकी पहली माता याने जन्मदात्री तो बंदीखाने में डाल दी गई थी और दूसरी पालन करने वाली माँ छाँछ बिलोती रहीं। आप स्वयं बलि राजा के आगे भिखारी बन खड़े हुए तीन पग जमीन मांग कर रहे थे। आपकी बुआ कुंती ने कुँवारेपन में सूर्य-पुत्र कर्ण को जन्म दिया और क्या कहें? आपकी भौजाई द्रौपदी पाँच पतियों की पत्नी है और बहन सुभद्रा ने भाग कर अर्जुन से विवाह किया।

परन्तु 'हे कृष्ण! हमारी गालियों का बुरा मत मानना' आप जीजाजी हैं- हम सालियाँ, तो मजाक करने और आपको चिढ़ाने का हमारा हक बनता है।

राग - पीलू　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - गंधार, धैवत कोमल

कुंदनपुर की नार कृष्ण खऽ हिलमिल गाव गाली.....

स्थाई

रे रे रे रे	सा सा सा सा	रे रे रे रे	सा – – –
कुं ऽ ऽ ऽ	द ऽ न ऽ	पु ऽ र ऽ	की ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – सा –	सा सा सा सा	सा – – –
ना ऽ ऽ ऽ	र ऽ कृ ऽ	ष्ण ऽ ऽ ऽ	ख ऽ ऽ ऽ
ग़ ग़ – ग	ग़ ग़ ग़ ग़	रे – – –	सा – – –
हि ऽ ल ऽ	मि ऽ ल ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ
नि़ नि़ सा सा	नि़ नि़ सा सा	रे रे ग़ ग़	रे रे सा सा
गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ळी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

रे रे रे रे	रे रे रे रे	म म म म	म म म म
प ऽ य ऽ	ली ऽ मा ऽ	त ऽ ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ
प – प –	प प प प	प प प प	प – – –
दे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	की ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
रे – – –	म – – –	प प ध़ ध़	प प म म
बं ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ	खा ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ
ग़ ग़ ग़ ग़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
डा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ली ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे रे रे रे	रे रे रे रे	म म म म	म म म म
दू ऽ ऽ ऽ	जी ऽ मा ऽ	त ऽ ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ
प प प प	प – प प	प प प प	प प प प
य ऽ शो ऽ	ऽ म ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
रे रे रे रे	म म म म	प ध़ प –	म म म म
छाँ ऽ ऽ ऽ	छ ऽ बि ऽ	लो ऽ व ऽ	त ऽ ऽ ऽ
ग़ ग़ ग़ ग़	रे रे रे रे	सा सा सा सा	सा सा सा सा
हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

समधन

सुण समदन री, थारो नयो जो बण्यो
नई हेत नई पयचाण (हुई) भई.... 2

(1) सुण समदन री थारो सीस नारेळ कसी रेख
कि चोटी भुजंग बणी
सुण समदन री थारी आंख अंबा कसी फाक
कि भवर कमान कसी।। सुण समदन.....

(2) सुण समदन री थारी नाक सुआ कसी चोंच
कि बेसर अजब बणी,
सुण समदन री थारा दांत दाड़िम कसा बीज
कि होठ तमोळ रची (हिंगुल रची)

(3) सुण समदन री थारा हात चम्पा कसी डाळ
कि अंगळई मूंगफळई
सुण समदन री थारो पेट पुरायण पान
कि हिवड़ो संच ढुलऽऽ

(4) सुण समदन री थारा पांय देवुळ कसा खम्ब
कि पिंडली बेलण बनी
सुण समदन री थारी बिछिया री झणकार
कि सयर मंऽ हूळ मची

(5) सुण समदन री थारो घाघरो रे घमघोळ
कि सयर सब सोर लियो
सुण समदन री गजानन्द जी जीजमान
कि जोड़ी तेरी कछु न बणी
सुण समदन री ललित नारायण जी सा उमराव
कि जोड़ी थारी अजब बणी।। सुण समदन.....

विवाह तथा अन्य शुभ अवसरों पर कुटुम्बीजन, आत्मीयजन, रिश्तेदार एवं समधीजन भी सम्मिलित होते हैं। भोजन करने के उपरान्त हास-परिहास-मनोरंजन आदि के कार्यक्रम भी होते हैं। महिलायें इस समय 'गाली', 'जिमणार' 'जेवनार' निव्हालई' और 'समदन' गाती हैं, जिसका विशेष महत्त्व एवं आनन्द होता है।

प्रस्तुत गीत में समदन के रूप-सौंदर्य का बड़ा ही रस भरा वर्णन है। नख-शिख वर्णन में उन्हें उलाहना देते हुए उनके पति के साथ उनकी जोड़ी को अनमेल ठहराते हुए अपने यहाँ के पुरुष के साथ उनकी जोड़ी को अनूठी और बेजोड़ निरूपित करते हुये हास-परिहास, विनोद और उमंग-उत्साह का वातावरण बना दिया जाता है।

राग – भूपाली
थाट – कल्याण

ताल – कहरवा
स्वर – सभी शुद्ध

सुण समदन री थारो नयो.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	ध़ –ध़ –	सा – रे –	ग – – –
सु ऽ ण ऽ	स ऽ म ऽ	द ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ
प – प –	प – प –	प – प –	ध – – –
था ऽ रो ऽ	न ऽ यो ऽ	जो ऽ ब ऽ	ण्यो ऽ ऽ ऽ
प – प –	ग – ग –	रे – सा –	सा – – –
न ऽ ई –	हे ऽ ऽ ऽ	त ऽ न ऽ	ई ऽ ऽ ऽ
रे – रे –	ग – ग –	रे – सा –	सा – – –
प ऽ य ऽ	चा ऽ ऽ ऽ	ण ऽ भ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	ध़ – ध़ –	सा – रे –	ग – – –
सु ऽ ण ऽ	स ऽ म ऽ	द ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ
प – प –	प – प –	प – प –	ध – ध –
था ऽ रो ऽ	सी ऽ ऽऽ	स ऽ ना ऽ	रे ऽ ळ ऽ
प – प –	ग – रे –	सा – – –	सा – – –
क ऽ सी ऽ	रे ऽ ख ऽ	की ऽ ऽ ऽ	चो ऽ ऽ ऽ
रे – रे –	ग ग ग ग	रे – सा –	सा – – –
टी ऽ ऽ ऽ	भु ऽ जं ऽ	ग ऽ ब ऽ	णी ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ध़ – ध़ –	सा – रे –	ग – – –
सु ऽ ण ऽ	स ऽ म ऽ	द ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ
प – प –	प प प प	प – प –	ध – ध –
था ऽ री ऽ	आं ऽ ऽ ऽ	ख ऽ लिं ऽ	बू ऽ ऽ ऽ
प – प –	ग – ग रे	सा – सा –	सा – सा –
क ऽ सी ऽ	फा ऽ ऽ क	की ऽ ऽ ऽ	भं ऽ व ऽ

रे – रे –	ग – ग –	रे – सा –	सा – सा –
र ऽ क ऽ	मा ऽ ऽ ऽ	न ऽ क ऽ	सी ऽ ऽ ऽ

पाणिग्रहण

नीच्ची उच्ची सरवरीया री पाल तो
साजन–साजन जुआं खेल जी
खेळतऽ जो खेलत पड़ी गयो डोल तो
कूण हार्‌या न कूण जीत्या जी
हार्‌या–हार्‌या लाड़कली रा पिता जी तो
गड़वा वो साजन जीती गया जी
घर म सी गोरी पूछ बात तो
आज म्हारा पीयू जी अनमना जी
कहूं तो गोरी कह्‌यो नहीं जाय वो
कह्‌या बिन नहीं ख्हां जी
हार्‌या–हार्‌या लाड़कली रा पिता जी तो
गड़वा हो साजन जीती गया जी
गऊआ सरसी बछुओ क्यों नी हार्‌या म्हारा पीयू जी
राजकुंवारी केऊं हार्‌या जी
साळ सरसी सवळ्‌यो क्यों नी हार्‌या म्हारा पीयू जी
राजदुलारी केऊं हार्‌या जी
गंगाळ सरसी वटळ्‌ई क्यों नी हार्‌या म्हारा पिता जी
राजदुलारी केऊं हार्‌या जी– – – – – –

विवाह संस्कार में पाणिग्रहण संस्कार के समय गाये जाने वाला अत्यंत करूण और मार्मिक गीत है। लाड़–प्यार से पाली–पोसी बेटी का हाथ वर के हाथ में देकर कन्यादान करते हैं, तब बेटी को सदा के लिये दे देने की पीड़ा के साथ ही बेटी को उसके घर सानंद पहुँचाने की व्यवस्था संपन्न होने का सुख भी है। पत्नी और बेटी भी कहती हैं कि आप दान में गाय–बछड़ा, बर्तन, वस्त्राभूषण क्यों नहीं दे देते, अपनी राजदुलारी प्यारी बिटिया को क्यों दे रहे हैं? पिता को भी बेटी से बिछुड़ने की कल्पना व्यथित कर देती है, परन्तु हमारी यही रीत है कि कन्या का पिता वर के पिता के सामने हारता है और गढ़ जीतने का सुख वर का पिता पाता है। यही सोचकर वह धैर्यपूर्वक स्वागत सत्कार के साथ बेटी को दहेज सहित सहर्ष विदा करता है।

राग – काफी | ताल – विलम्बित कहरवा

थाट – काफी | स्वर – ग़ नि़ कोमल

नीच्ची ऊच्ची सखरिया री पाल.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – ग़ –	म ग़ सा –	नि़ – – –	– – – –
नी ऽ च्ची ऽ	ऊ ऽ च्ची ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा ग़ ग़ प	म प म ग़	– – – –	ग़ – म –
स र व रि	या ऽ री ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	पा ऽ ऽ ऽ
– ग़ – –	– – रे सा	नि़ – सा –	सा ग़ ग़ प
ऽ ल ऽ ऽ	ऽ ऽ तो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ज न
म – प –	– म ग़ –	ग़ – म –	ग़ रे सा नि़
सा ऽ ऽ ऽ	ऽ ज न ऽ	जु ऽ आं ऽ	खे ऽ ऽ ल
सा – – –	सा – – –	सा सा सा ग़	म ग़ सा नि़
जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	खे ल त जो	खे ल त ऽ
– – – –	– – – –	सा ग़ ग़ प	म – प –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	प ऽ ड़ी ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
म – ग़ –	ग़ – म –	– म – –	रे – सा
यो ऽ ऽ ऽ	डो ऽ ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ	तो ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	सा ग़ ग़ प	म प म ग़	ग़ ग़ म ग़
ऽ ऽ ऽ ऽ	कू ऽ ण हा	र्‌या ऽ न ऽ	कू ऽ ण जि
रे – सा नि़	सा – – –	– – – –	– – – –
त्या ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – ग़ –	म ग़ सा नि़	– – – –	– – – –
हा ऽ र्‌या ऽ	हा ऽ र्‌या ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा ग़ ग़ प	म प म –	ग़ – – –	ग़ – म –
ला ऽ ड़ क	ली ऽ रा ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	पि ऽ ता ऽ

ग रे सा नि	सा – – –	– – – –	सा ग ग प
जी ऽ तो ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ग ढ़ वा हो
म – प –	म – ग –	ग – म –	ग रे सा नि
सा ऽ ऽ ऽ	ज ऽ न ऽ	जी ऽ ती ऽ	ग ऽ या ऽ
सा – – –	सा – – –		
जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		

बेटी की विदा

फूलड़ा बिणन्ती तू चली वो लाड़कली,
अपणा पिता जी का बाग मंऽ ...2
कछु बिण्या कछु बिणवा हो लाग्या
एतरा मंऽ आया दुल्लव राय जीऽ
उठो लाड़कली तुम बठो पालकड़ीऽ
चलो ते अपणाऽ देस जीऽऽ

(1) जवं हमरा पिता जी वर परखसेऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽ
जवं हमरा दादा जी दायजो संजोवऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽऽ।। फूलड़ा.....

(2) जवं हमरा जीजा जी मंडप छावऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽ
जवं हमरा मामा जी 'कुंवारी' संजोवऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽऽ । फूलड़ा.....

(3) जवं हमरा वीराऽ जीऽ डोली संजोवऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽ
जवं हमरी मांय जो कूख पुजाड़ऽ
तवं जाई जावां तुमरा साथ जीऽऽ।। फूलड़ा.....

(4) काहे ख पाळई रे बाबुल काहे खऽ पोसीऽऽ
काहे पिलायो काचो दूध जीऽ
माया खऽ पाळई रे बाबुल, माया खऽ पोसीऽ
ममता पिलायो काचो दूध जीऽऽऽ।।
फूलड़ा बिणन्ती तू चली वो लाड़कली
अपणा पिताजी का बाग मंऽऽऽ

कन्या के विवाह का सबसे करूण प्रसंग है बेटी की विदाई। लाड़-प्यार से पाली-पोसी अपनी प्यारी बेटी को सदा के लिये दान करना और उसे विदा करना पड़ता है। संसार से विरक्त संन्यासी महर्षि कण्व अपनी पाल्या शकुन्तला को दुष्यन्त के साथ बिदा करते समय अपने आप को संभाल नहीं पाये। व्याकुल हो अश्रुधारा बह निकली तो भला जन सामान्य का क्या हाल होता होगा। अपने प्रिय और हृदय के टुकड़े को अनजान-अपरिचित लोगों को सदा के लिये दे-देने में हृदय हाहाकार कर उठता है। संसार की रीत है, हमारी संस्कृति है- कन्या को उसके घर संसार में सादर सोत्साह समारोह पूर्वक विदा करना।

पिताजी के घर-आँगन, बाग-बगीचों में खेलने-कूदने वाली बेटी कब विवाह योग्य हो गई, पता ही नहीं चला। बाग में फूल चुनते हुये ही दूल्हे राजा ने कहा- चलो गोरी! पालकी में बैठो और अपने देश चलें। परन्तु मर्यादा का पालन करने वाली बेटी ने वर को उत्तर दिया- मैं आपके साथ ऐसे उठकर नहीं जा सकती। मेरे पिता जी जब वर को देख-परख लेंगे और वे ब्याह रचायेंगे, और तभी मैं आपके साथ चलूँगी। जब मेरे दादा जी, काका जी आदि परिजन मेरा दहेज संजायेंगे। मामा जी जब कुँवारी पंगत देंगे। जीजा जी मंडप छवायेंगे। मेरे वीरा जी जब मेरी डोली संजायेंगे तथा जब माँ मुझसे और आपसे अपनी कूख की पूजा करायेंगी, तभी विवाह संस्कार संपन्न होने पर मैं आपके साथ चलूँगी। इतना सब होने पर विदा की घड़ी आ गई और बेटी माता-पिता से अत्यंत करूणापूर्वक पूछती है- कि जब मुझे किसी पराये को ही सौंपना था, तो क्यों कच्चा दूध पिलाकर पाला-पोसा? माता-पिता ने भी उत्तर दिया कि हमने माया को पाला-पोसा और ममता को कच्चा दूध पिलाया।

राग - चारूकेशी	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - ग ध नि कोमल

फूलड़ा बिणन्ती तू चली वो लाड़कली.............

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा प	पध पध प म	गम पध प -	प प - प
फू ल ड़ा ऽ	बिऽ णंऽ ऽऽ	तिऽ ऽऽ तूऽ	ऽ च ऽ ली
म ध प म	प - म -	ग रे सा रे	नि - नि सा
वो ऽ ला ऽ	ड़ ऽ क ऽ	ली ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ अं प
सा - म म	म ग रे नि	ग ग रे ग	रे सा सा सा
णा ऽ पि ऽ	ता ऽ ऽ जी	ऽ का ऽ बा	ऽ ग मं ऽ

सा सा सा सा	पध पध प म	गम पध प –	प प म म
क छु बि ण	याऽ ऽऽ ऽऽ	कऽ छुऽ ऽऽ	बि ऽ ण ऽ
म ध प म	म ग रे नि़	नि़ सा म म –	ग रे सा –
वा ऽ हो ऽ	ला ऽ ग्या ऽ	ए त रा मंऽ	आया ऽदु ऽ
नि़ नि़ ग ग	रे – सा सा	सा सा प प	पध पध प प
ल्ल व ऽ रा	ऽ य जी ऽ	उ ठो ला ड़	ऽक लीऽ तुम
म ध प म	म ग रे –	नि़ सा म म	गरे सा नि़ –
ब ठो पाऽ	ल क ड़ी ऽ	च लो ऽ ते	अप ना ऽऽ
नि़ ग रे –	सा सा सा –		
ऽ दे ऽ स	जी ऽ ऽ ऽ		

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा प प	प मगमप धप पम	ध प म ग	रे नि़ ऽ सा
ज वं ह म	रा पिताऽऽ जीऽ वर	प र ख से	ऽ त वं जा
म ग रे नि़	नि़ ग ग रे	– रे सा –	सा सा प प
इ जा वां तु	म रा ऽ सा	ऽ थ जी ऽ	ज वं हम
प पगमप धप पम	धप म ग रे	– नि़ – सा	म ग रे नि़
र दादाऽऽ जी दाय	जोऽ सं जो व	ऽ त वं जा	इ जा वां तु
नि़ ग ग रे	– रे सा –	सा सा प प	ध प म गमपध प
म रा ऽ सा	ऽ थ जीऽ	फु ल ड़ा बि	णं ति तू ऽऽऽ

बेटी को सीख

मात कहे बात भली सुण वो सुंदरी
लक्षधरी वात नऽ निभावजे, वो स्याणी कुळ ना लजावजे

(1) ससरा ख अपणा पिता सम जाणजे
सासू ख मांय सम मानजे, वो स्याणी कुळ ना लजावजे

(2) जेठ का सामनऽ हळु-हळु चालजे –
जेठाणी को मान बढ़ावजे, वो स्याणी कुळ ना लजावजे

(3) देवर ख अपणा भाई समय जाणजे
देराणी ख सई सम मानजे, वो स्याणी कुळ ना लजावजे

(4) नणद ख अपणी बईण सम जाणजे

नणदई जी आया मिजवान हो, स्याणी कुळ ना लजावजे

(5) *स्वामी की आज्ञा बिन पाणी मत पीजे वो*
सब कुटुम की सेवा करजे, वो स्याणी कुळ न लजावजे
मात कहे बात भली सुण वो सुंदरी.....

यद्यपि माँ और परिवार के प्रियजन बेटी को जन्म से ही संस्कारित करते हैं, ताकि वह विवाह पश्चात् सुख-शान्ति पूर्वक अपनी गृहस्थी संभालने का उत्तरदायित्व कुशलता से निबाहे। फिर भी माँ अपनी बेटी को विदा करते समय अंत तक प्यार से व्यवहार की सीख, उपदेश देती है, ताकि वह नये लोगों और वातावरण में अपने आपको समायोजित कर सके और उसके ससुराल की ओर से कोई उलाहना न मिले। वह वर और बारातियों तक पहुँचाते हुये भी उसे सीख देकर आश्वस्त होना चाहती है कि नये घर-परिवार में सभी को अपना समझकर यथोचित व्यवहार रखना और सबकी प्रिय बनना।

राग - भीमपलास　　ताल - दादरा चलत
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि कोमल

मात कहे बात भली सुणवो सुन्दरी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग़ ग़ ग़	ग़ – रे	सा रे रे	सा – नि़
मा ऽ त	क ऽ हे	बा ऽ त	भ ऽ ली
सा सा सा	ग़ – म	प – –	– – –
सु ण वो	सुं ऽ द	री ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
प – प	प प प	प ध़ ध़	प – म
ल ऽ क्ष	ध ऽ री	वा ऽ त	न ऽ नि़
प – म	ग़ – सा	ग़ म –	प – –
भा ऽ व	जे ऽ वो	स्या ऽ ऽ	णी ऽ ऽ
ग़ – म	प नि़ प	ग़ – रे	सा – –
कु ऽ ल	ना ऽ ल	जा ऽ व	जे ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग़ – ग़	रे – –	सा – रे	सा – नि़

स स रा	ख ऽ ऽ	अ ऽ प	ण ऽ ऽ
ग़ ग़ ग़	म – प	ग़ – रे	सा – –
पि ता ऽ	स ऽ म	जा ऽ ण	जे ऽऽ
प – प	प – –	प ध़ –	प – म
सा ऽ सू	ख ऽऽ	मां य ऽ	स ऽ म
प – म	ग़ – सा	ग़ – म	प – –
मा ऽ न	जे ऽ वो	स्या ऽ णी	ऽ ऽ ऽ
ग़ – म	प नि प	ग़ – रे	सा – –
कु ऽ ळ	ना ऽ ल	जा ऽ व	जे ऽ ऽ

बधाई

आज सखि श्याम सुंदर ब्याही,
आज सिया राम की बधाई 2

(1) हरा-नीळा वास रो मंडपऽ बणायो 2
केळई रा खंब तो लगाईऽऽ।। आज सिया .....

(2) सूरिया जो गाय रो गोबर मंगाड़्यो 2
ढीगऽ-ढीगऽ अंगणा लिपाईऽऽ आज सिया .....

(3) सोहन गड़ुआ रो कलश भरायो 2
मोतियन चऊक तो पुराईऽ आज सिया .....

(4) बईण सुभद्रा नऽ आरती संजोई 2
रत्न रो दीपकऽ लगाई, आज सिया राम की .....

(5) बईण सुभद्रा नऽ आरती उठाई 2
चारई वीर मंडपऽ बधाईऽ आज सिया .....

(6) राणीऽ सुनयना नऽ बिदागी चुकाईऽ 2
हाथी दिया रे घोड़ा पालकीऽ, आज सिया राम .....

(7) राणीऽ कौशल्या नऽ बिदागी चुकाई 2
दखणा रो चीर ओढ़ाईऽऽ आज सिया राम की बधाई.....
आज सखि श्याम सुंदर ब्याही, आज सिया राम की बधाई

शुभ- विवाह संपन्न होने पर बारात वापिस वर के घर पहुँचने पर गाया जाने वाला बधाई गीत है। हरे-नीले बाँसों के मण्डप को आम्र-जामुन के पत्तों से छाया गया। केले के खम्ब लगाये गये। गाय के गोबर से घर-आँगन लीपे गये। सफेद ढीग चारों ओर दी गई और सुंदर मोतियों के

चौक बनाये गये हैं। बहन सुभद्रा ने रत्न के दीपक सहित आरती संजोई और चारों भाइयों को तिलक कर बधाया। विवाह उपरान्त रानी सुनयना ने अनेक बहुमूल्य भेंट विदाई में दी और साथ में हाथी, घोड़े, पालकी भी दिये। रानी कौशल्या ने भी सभी को मूल्यवान दक्षिण की रेशम के वस्त्रों की भेंट देकर सम्मानित किया। राम-सीता के इस शुभ-विवाह की अनेकानेक बधाइयाँ।

राग – भैरवी	ताल – दादरा
थाट – भैरवी	स्वर – रे ग ध नि कोमल

आज सखि श्याम सुंदर ब्याही...............

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – प	प – प	प – ध	प म म
आ ऽ ज	स ऽ खी	श्या ऽ म	सुं द र
ग प –	म – –	ग – रे	सा – रे
ब् या –	ही ऽ ऽ	आ ऽ ज	सि ऽ या
नि सा –	रे ग म	ग रे –	सा – –
रा म ऽ	की ब ऽ	ध ऽ ऽ	ई ऽ ऽ

अन्तरा

सा रे –	सा नि –	सा – –	ग – म
ह रा ऽ	नी ळा ऽ	वा ऽ ऽ	स ऽ रो
ग म –	प – म	ग रे –	सा – –
मं ऽ ड	प ऽ ब	णा ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
सा प प	प – प	प – ध	प – म
के ळ ई	रा ऽ ऽ	खं ऽ ब	तो ऽ ल
ग – प	म – –	ग – रे	सा – रे
गा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ	आ ऽ ज	सि ऽ या
नि – सा	रे ग म	ग रे –	सा – –
रा ऽ म	की ब ऽ	धा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ

ऋतु गीत

मारू जी पांच अरज म्हारी या सुणो
नणद बाई रा वीरा जी

(1) मारू जी पयली अरज म्हारी या सुणो नणद बाई रा वीरा जी
मारू जी स्याळ रव्हां आप य्हां,
ऊंढाळ रव्हां बाप य्हां,
मख चौमासा मंऽ मामा घर पोयचाय देओ जी।।

(2) मारू जी दूसरी अरज म्हारी या सुणो.....
मारू जी स्याळ रव्हां धावा पर,
ऊंढाळ रव्हां छज्जा पर,
मख चौमासा मंऽ मयल थिगाय देओ जी।।

(3) मारू जी तीसरी अरज म्हारी या सुणो .....
मारू जी स्याळ पेरां नट्टी को,
ऊंढाळ पेरां गट्टी को,
मख चौमासा म हरो चूड़ो मंगाय देओ जी।।

(4) मारू जी चवथी अरज म्हारी या सुणो .....
मारू जी स्याळऽ पेरां धोंगड़ो,
ऊंढाळ पेरां पोमचो,
मख चौमासा मंऽ पचरंग चूनड़ रंगाय देओ जी ।।

(5) मारू जी पांचवीं अरज म्हारी या सुणो .....
मारू जी सासू मारे लाकड़ी,
नणद मारे थापड़ी,
मख तुम तो हिरदा सी लगाय लेओ जी ।।
मारू जी पांच अरज म्हारी या सुणो .....

चौमासे में पत्नी–पति के बाहर यात्रा पर जाने से दु:खी हो उठती है। विरह–व्यथा की कल्पना से वह व्याकुल हो उठती है और पति को यात्रा पर न जाने के लिये मनाती है, तो कभी रूठती है और कभी शिकायत करती है। वह अपनी अनेक फरमाईशें पूरी करने का आग्रह करती है। कभी अनुनय–विनयपूर्वक रोकने का प्रयास करती है और यहाँ तक कि उनकी अनुपस्थिति में सास ननदों के अप्रिय व्यवहार की शिकायत करते हुए उनसे प्रेम से हृदय से लगा लेने का आग्रह भी करती है।

विवाह पश्चात् बेटी पीहर आती है या ससुराल जाती है, तब भी यह गीत गाया जाता है ।

राग – भीमपलास　　ताल – कहरवा
थाट – काफी　　स्वर – ग़ नि़ कोमल

मारू जी पांच अरज म्हारी या सुणो–.....

स्थाई

प़् सा सा रे	रे ग़ ग़ रे	सा – प़् –	नि़ – सा –
मा रू जी ऽ	पाँ ऽ ऽ ऽ	च ऽ अ ऽ	र ऽ ज ऽ
रे – म –	ग़ – – –	रे – सा प़्	नि़ – सा –
म्हा ऽ री ऽ	या ऽ ऽ ऽ	सु ऽ णो न	ण़ ऽ द ऽ
रे – ग़ सा	रे म ग़ म	रे ग़ रे सा	सा – – –
बा ऽ ई रा	वी ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

प़् सा सा रे	रे – ग़ –	ग़ – रे प़्	नि़ – सा –
मा रू जी ऽ	प ऽ य ऽ	ली ऽ अ ऽ	र ऽ जऽ
रे – म –	ग़ – – –	रे – सा प़्	नि़ – सा –
म्हा ऽ री ऽ	या ऽ ऽ ऽ	सु ऽ णो न	ण़ ऽ द ऽ
रे – ग़ सा	रे म ग़ म	रे ग़ रे सा	सा – – –
बा ऽ ई रा	वी ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
प़् सा सा रे	रे – ग़ –	रे सा नि़ –	सा – रे –
मा रू जी ऽ	स्या ऽ ळ ऽ	र ऽ व्हां ऽ	आ ऽ प ऽ
ग़ – ग़ –	सा – रे –	रे सा नि़ –	सा – रे –
य्हां ऽ उं ऽ	ढा ऽ ळ	र ऽ व्हां ऽ	बा ऽ प ऽ
ग़ – सा सा	सा रे रे म	म – प –	ग़ – ग़ –
य्हां ऽ म ख	चौ ऽ मा ऽ	सा ऽ मं ऽ	मा ऽ मा ऽ
रे ग़ सा रे	रे म ग़ म	रे ग़ रे सा	सा – सा –
घ र पो य	चा ऽ ऽ य	दे ऽ वो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	सा रे रे म	म – प –	ग़ – ग़ –
अ ऽ रे ऽ	चौ ऽ मा ऽ	सा ऽ मं ऽ	मा ऽ मा ऽ
रे ग़ सा रे	रे म ग़ म	रे ग़ रे सा	सा – – –
घ र पो य	चा ऽ ऽ य	दे ऽ वो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ

भावगीत

सीता तू देवी कवाय,
वन मंऽ विपदा घणी छे 2

(1) मांय बी छोड़ी तूनऽ बाप बी छोड़्यो 2
छोड़्यो तूनऽ सई न को साथ, वन मंऽ विपदा .....
(2) सासू (भी) बी छोड़ी तूनऽ ससरा जी छोड़्या 2
छोड़्यो कुटुम परिवार, वन मंऽ विपदा घणी छे
(3) लछमन सरीका देवर बी छोड़्या 2
छोड़्यो तू नऽ राम जी को साथ वन मंऽ विपदा .....
(4) लवकुश सरीका पुत्र बी छोड़्या 2
(रही) रई तूऽ धरती समाय, वन मंऽ विपदा .....
सीता तू देवी कवाय, वन मंऽ विपदा घणी छे .....

गीता में भगवान ने कहा है कि जब धरती पर धर्म की हानि और अधर्म का बोलबाला हो जाता है, तब धर्म और सज्जनों की रक्षा तथा पापियों के नाश के लिये धरती पर प्रभु अवतरित होते हैं। त्रेतायुग में विष्णु जी ने राजा दशरथ के पुत्र राम के रूप में अवतार लिया एवं सीता रूप में लक्ष्मी जी अवतरित हुई। भगवान ने अवतार लेकर मनुष्य को सत्य का पालन करते हुए परोपकार पूर्ण जीवन आदर्श प्रस्तुत किया। पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन को एक सामान्य मनुष्य की तरह जी कर बताया। देवी लक्ष्मी ने सीता के रूप में राम के साथ रहकर एक सामान्य स्त्री (मनुष्य रूप में) के जीवन-आदर्शों को व्यवहार में उतारा। जब आदमी से निम्न स्तर के कार्य करता है, तो दानव कहलाता है और मनुष्यता से उच्च स्तर के आचरण और कार्य करता है, तो देवता (देवी) कहलाता है।

मानव रूप में स्वर्ग से धरती पर आई सीता रूप में लक्ष्मी ने सभी कष्ट आदर्श और सत्य को स्थापित करने के लिये सहन किये, अत: जन ने उन्हें देवी कहा। लोकोपवाद के कारण प्रजारंजन हेतु राजा राम ने पवित्र सीता का परित्याग किया था। राजा राम की रानी सीता ने अपने पति के आदेश और इच्छा का पालन किया। राम की अनुगामिनी सीता ने माता-पिता व सखियों का साथ छोड़ा था और फिर सास-ससुर-कुटुम्ब-परिवार को छोड़ वन में निर्वासित जीवन पति की धरोहर (गर्भ में स्थित लव-कुश) की रक्षा कर राम को सौंपने के लिये जीवन व्यतीत किया और अन्त में पुन: अयोध्या-वासियों के समक्ष अपनी पवित्रता का प्रमाण देते हुए आत्मसम्मान की रक्षा में अपने अबोध व प्रिय पुत्रों लव और कुश को छोड़ धरती में समा गई। पवित्रता की साक्षात् मूर्ति सामान्य मानवी न होकर लोक के लिये देवी स्वरूप थीं, अत: इस लोकगीत में उन्हें देवी संबोधित किया है।

राग - पीलू　　ताल - दादरा
थाट - काफी　　स्वर - सभी कोमल एवं शुद्ध स्वर

सीता तू देवी कवाय, वन मं ऽ विपदा घणी छे.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे ग रे	ग रे सा	सा रे ग	म – ग
सी ऽ ता	ऽ तू ऽ	दे ऽ वी	ऽ ऽ क
म म म	म प प	ग ग रे	सा रे रे
वा ऽ ऽ	ऽ य ऽ	व ऽ न	मं ऽ ऽ
ग म ग	ग रे सा	सा सा सा	सा – सा
वि प दा	ऽ घ ऽ	णी ऽ छ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा सा प	प प प	प प ध	प प
मां ऽ य	बी छो ऽ	ड़ी ऽ तू	न ऽ ऽ
म म ध	ध प प	ग ग रे	सा – –
बा ऽ प	ऽ बी ऽ	छो ऽ ड़ूयो	ऽ ऽ ऽ
रे रे ग	रे रे ग	रे सा रे	ग म ग
छो ऽ ड़ूयो	तू ऽ न	ऽ स ई	न ऽ को
ग म म	म प –	ग ग रे	सा रे रे
ऽ सा ऽ	ऽ थ ऽ	व ऽ न	मं ऽ ऽ
ग म ग	ग रे सा	सा सा सा	सा – सा
वि प दा	ऽ घ ऽ	णी ऽ छ	ऽ ऽ ऽ

चाँदा थारी चकमक रात मंऽ जी कईं
चाँदा रा उजियाला चंवसर खेलसांऽ 2

(1) तू छे गोरी दुरबल घर की डीकरी जी कई
चंवसर खेलांऽऽ राज दीवान सीऽ

(2) हमरा जो पीयर सौ-सौ चरवा द्रव्य का जी कईं
तुमरा सरीका हरिवाण जी उभिया

(3) एतरो जो सुणत लागी राजा खऽ रीस, जी कईं
गोरा-सा मुखड़ा पर मारी थापड़ी जी कई
पतली-सी कम्मर पर मारी लाकड़ीऽ

(4) उठो दासी दीवलो लगाओ जी कईं
कारट तो लिखांऽ दुरबल बाप खऽ
(5) दीवलो जोवत दासी न देर हुई जी कईं
चाँदा रा उजियाला कारट लिखिया
(6) भरी सभा मंऽ इन्दर राजा बठिया जी कईं
डाक्या वालो देव दामोदर उभियाऽ
(7) कारट बाचत दादा जी बठिया जी कईं
अंसुवन भीग्यो हरिया रूमाल जीऽऽ
(8) अपणा जो घर मंऽ सौ-सौ चरवा द्रव्य का जी कईं
फौजां लई चलां बाई रा देस जीऽ
(9) अपणा जो घर मंऽ पांचई पुत्र छे जी कईं
फौजां लई-चलो बाई रा देश जीऽ
(10) उठो दासी खिड़की खोलो जी कईं
फौज्यां आई दुरबल बाप कीऽ
(11) अब की फौजां पच्छी फेरो राणी जी कईं
तुम जीत्या नऽ हम ते हारियाऽऽऽ
चाँदा थारी चकमक रात मंऽ जी कईं
चाँदा रा उजियालाऽ चंवसर-खेलसां

कभी-कभी छोटी-सी बात भी गंभीर रूप ले लेती है। कभी अभिमान या घमंड में व्यक्ति दूसरे के मान का ध्यान नहीं रखता है, तो स्थिति विकट बन जाती है। पति सदैव अपने परिवार को श्रेष्ठ और सही बतलाता है और पत्नी के पीहर वालो को अपने से कम मान-सम्मान वाले मानते हैं, इससे पत्नी को दु:ख होता है। स्वयं अधिक संपन्न हैं और ससुराल वाले किसी लायक नहीं हैं और न उनके समकक्ष ठहर सकते हैं। ऐसा जतलाते रहते हैं। ऐसा ही राजा रानी के इस गीत में वर्णन है।

जब पत्नी चाँदनी रात में चौसर खेलने का पति से आग्रह करती है, तो वह उपेक्षापूर्वक कह देता है कि- तुम तो गरीब घर की लड़की हो, चौसर तो बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं और दीवानों के साथ खेला जाता है, गरीबों के साथ नहीं। पत्नी को ये वाक्य तीर की तरह चुभ गये। वह बहुत दु:खी हुई। उसने दासी से कहा- दीपक जलाकर जल्दी ले आओ, मैं अपने गरीब पिता को पत्र लिखूँगी। परन्तु दासी के दीपक लाने तक धैर्य कहाँ? उसने चाँद के उजियाले में पत्र लिखा और दामोदर कृष्ण डाकिया बनकर पत्र लेकर पिता जी के दरबार में पहुँच गये। पिता पत्र पढ़कर दु:खी हो बैठ गये। आँसुओं की धार से उनका रूमाल भींग गया। अपना और अपनी

बेटी का अपमान और उसके दु:ख से व्याकुल हो उन्होंने क्रोध में कहा– मेरी बेटी ने तो सच ही कहा था कि मेरे पिता के यहाँ सौ–सौ चरवे द्रव्य (अशर्फियों से) से भरे हैं, वे बड़े राजा हैं, जिनके सामने आप जैसे अनेक राजा हाथ बांधे खड़े रहते हैं। इस बात पर मेरी बेटी को मारा, उसका अपमान किया। पाँचों पुत्र सहित फौज लेकर बेटी के देश पिता चले, उस अभिमानी का अभिमान चूर करने। पिता को फौज सहित आया जान रानी ने दासी से कहा– खिड़की खोलो, देखो, गरीब बाप की फौज आ गई। पति जी समझ गये कि गलती हो गई, बात बिगड़ गई। सो पत्नी को इस बार फौज वापिस करवाने का आग्रह करने लगे।

राग – पीलू	ताल – कहरवा
थाट – काफी	स्वर – दोनो गंधार दोनों निषाद

चांदा थारी चकमक रात मंऽ जी...........

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	प – प –	प – प –	नि – नि –
चां ऽऽऽ	दा ऽ ऽ ऽ	था ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
नि – नि –	ध – ध –	प – प –	म – म –
च ऽ ऽ ऽ	क ऽ ऽ ऽ	म ऽ ऽ ऽ	क ऽ ऽ ऽ
ग – म म	प – प –	ग – रे –	सा – नी –
रा ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ	म ऽ जीऽ	क ऽ ई ऽ
सा – – –	रे रे ग ग	रे – रे –	प – प –
चां ऽ ऽ ऽ	दा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	उ ऽ जि ऽ
म ध प म	ग ग रे सा	सा – सा –	रे रे ग ग
या ऽ ऽ ऽ	ळा ऽ ऽ ऽ	चौ ऽ ऽ ऽ	स ऽ ज ऽ
रे रे ग ग	रे रे सा सा	सा – सा –	सा – सा –
ख ऽ ऽ ऽ	ऽ ल ऽ ऽ	सां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	प – प –	प – नि नि	नि नि नि नि
तू ऽ ऽ ऽ	छे ऽ ऽ ऽ	गो ऽ री ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

नि – ध –	प – प –	म म म म	ग – ग –
दु ऽ र ऽ	ब ऽ ल ऽ	घ ऽ र ऽ	की ऽ ऽ ऽ
ग ग ग म	म प प प	ग – ग –	रे – सा नी़
डी ऽ ऽ ऽ	ऽ क ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	जी ऽ क ई
सा – सा –	रे रे ग ग	रे – रे –	प – प –
च ऽ व ऽ	स ऽ र ऽ	खे ऽ ऽ ऽ	लां ऽ ऽ ऽ
म प म ग	म ग रे –	सा – सा –	रे रे ग ग
रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ज ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ
रे रे सा सा	सा – सा –	सा – सा –	सा – – –
वा ऽ ऽ ऽ	ऽ न ऽ ऽ	सी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

रास

नथ म्हारी दीजो हो गिरिधारी 2

(1) रास रमन्ता नथ म्हारी गुमी गई 2
अमलो किन पर करसां कान्हा, नथ दीजो गिरिधारी

(2) मथुरा जो नगरी मंऽ सोनी बसत है 2
ओनऽ म्हारी नथनी घड़ी थी कान्हा।। नथ दीजो .....

(3) आस-पास हीरा मोती जड़्या था 2
बीच-बीच चुन्नी जड़ी थी कान्हा।। नथ दीजो.....

(4) तू मत जाण कान्हा नथ फोकट की 2
गौआ दलाली मंऽ जासे रे कान्हा ।। नथ दीजो .....

(5) सबरी गुवालन हिल मिल ढूंढो 2
ग्वालन भई रे उदासी कान्हो।। नथ दीजो .....
नथ म्हारी दीजो हो बनवारी .....

राधा-कृष्ण गोप-ग्वालों के असंख्य रास गीतों में से इस गीत में गोपी कृष्ण पर आरोप लगाती हुई कह रही हैं कि आपने मेरी अमूल्य नथ ले ली है, जो रास खेलते समय गिर गई थी। उस नथ को मथुरा नगरी के कुशल सुनार ने बनाया था जिसमें हीरे-मोतियों के बीच-बीच चुन्नी जड़ी हुई है। वह अत्यन्त सुंदर और मूल्यवान नथनी यदि तुमने नहीं लौटाई, तो तुम्हारी सारी गायें मैं रख लूँगी, जो तुम्हें बहुत प्रिय हैं। आखिर ग्वालन का मन रखने के लिये कृष्ण समस्त गोपियों को नथ ढूंढ़ने का कहते हैं, क्योंकि वह गोपिका बहुत उदास हो गई है। भला अपनी गोपिकाओं को आनंदित करने वाले कृष्ण उन्हें उदास कैसे देख सकते हैं।

राग – आसावरी
थाट – आसावरी

ताल – कहरवा
स्वर – ग ध नि कोमल

नथ म्हारी दीजो हो बनवारी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
म म ध ध	प म ग रे	सा सा रे रे	म – – –
न ऽ थ ऽ	म्हा ऽ री ऽ	ऽ दी ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ
प प नि नि	ध प म म	प प प प	प प प प
हो ऽ ऽ ऽ	ब ऽ न ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

प म म म	ग – म म	प प ध ध	प – – –
ऽ रा ऽ ऽ	स ऽ र ऽ	मं ऽ ऽ ऽ	ता ऽ ऽ ऽ
प प सां सां	सां सां सां सां	ध ध नि नि	ध ध प प
ऽ न थ ऽ	म्हा ऽ री ऽ	गु ऽ मी ऽ	ग ऽ ई ऽ
प सा सा प	प – – –	प प नि नि	ध ध प प
ऽ अ ऽ म	लो ऽ ऽ ऽ	कि ऽ न ऽ	प ऽ र ऽ
म म म म	ध ध प प	म म ग ग	रे रे सा सा
क ऽ र ऽ	सां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	का ऽ न्हा ऽ
सा सा सा रे	रे म म म	प प नि नि	ध प म म
ऽ न ऽ थ	ऽ दी ऽ ऽ	जो ऽ ऽ ऽ	ब ऽ न ऽ
प – – –	प – – –		
वा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ		

नृत्य

होटल मंऽ होय तो बुलई लीजो,
मखऽ इच्छू (बिच्छू) नऽ काट्यो 2
खेतऽ मंऽ होय तो बुलई दीजो,
मखऽ इच्छू नऽ काट्यो 2
(1) पयली लहेर म्हारा पांय प आई 2
पांय की मच्छी उतारी लीजो,

म्हारा पांय की पायल उतारी दीजो ।। होटल मंऽ .....

(2) *दूसरी लहेर म्हारा कम्मर पर आई 2*
कम्मर को कदरो उतारी दीजो, मखऽ बिच्छू नऽ काट्यो

(3) *तीसरी लहेर म्हारा गला तक आई 2*
गला की तुस्सी उतारी लीजो,
म्हारा गला की माला उतारी दीजो, मखऽ बिच्छू नऽ .....

(4) *चवथी लहेर म्हारा कानऽ तक आई 2*
कान की झुमकी उतारी दीजो,
म्हारा कान का टाप्स उतारी लीजो, मखऽ बिच्छू .....

(5) *पांचवीं लहेर म्हारा माथ तक आई 2*
माथा की बिन्दी उतारी लीजो रे,
म्हारा माथा को टीको उतारी दीजो, मखऽ बिच्छू नऽ.....
होटल मंऽ होय तो बुलई लीजो
मखऽ बिच्छू नऽ काट्यो .....

इस नृत्य गीत में नखराली नई-नवेली पत्नी अपनी सखियों और परिवारजनों से आग्रह पूर्वक कह रही है कि मेरे प्रियतम जहाँ कहीं भी हों, उन्हें शीघ्र बुला दीजिये। क्योंकि मुझे बिच्छू ने काट लिया है। मेरे प्रियतम ही इस विपत्ति और पीड़ा से मुझे बचा सकेंगे। अंग-अंग में विष का असर निरन्तर बढ़ रहा है। मेरे विभिन्न आभूषण उतार देना। उन्हें शीघ्र बुला दीजिये। वे होटल में होंगे या खेत में। उनके आने से ही बिच्छू का विष उतरेगा। सही भी है- नखरे उठाने वाले प्रियतम का प्रेम, चिंता और प्रिया की पीड़ा जनित व्याकुलता ही ऐसे कष्ट के समय में प्रिया को राहत देगी और तब पीड़ा का अनुभव कम ही होगा। वो साथ हों, सामने हों, तो मरने का भी कोई भय नहीं । श्रृंगार, उल्लास, उमंग और मधुरता से परिपूर्ण गीत है।

राग - धानी	ताल - दादरा
थाट - काफी	स्वर - ग़ नि़ कोमल

होटल मंऽ होय तो बुलई दीजो.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
म म म	म म म	म म म	म म म
हो ऽ ट	ळ मं ऽ	हो य ऽ	तो ऽ बु

ग ग ग	म प प	म म ग	सा सा –
ल ई ऽ	दी ऽ ऽ	जो ऽ ऽ	म ख ऽ
सा सा ग	नि़ – –	सा – सा	सा – सा
इ ऽ च्छू	न ऽ ऽ	का ऽ ट्	यो ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
म म म	म ग ग	म म ग	सा सा सा
प य ली	ऽ ल ऽ	य ऽ र	म्हा ऽ रा
सा सा ग	ग नि़ नि़	सा – सा	सा – –
पां ऽ य	ऽ प ऽ	आ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ पां
प प प	प प प	प प ध	ध प प
पां ऽ य	ऽ की ऽ	म ऽ च्छी	ऽ उ ऽ
म म ग	म प प	म म म	प प प
ता ऽ री	ली ऽ ऽ	जो ऽ ऽ	म्हा ऽ रा
प प प	प प प	प प ध	ध प प
पां ऽ य	ऽ की ऽ	पा ऽ य	ळ उ ऽ
म म ग	म प प	म म ग	सा सा सा
ता ऽ री	ली ऽ ऽ	जो ऽ ऽ	म ख ऽ
सा – ग	नि़ – –	सा – सा	सा – सा
बि ऽ च्छू	न ऽ ऽ	का ऽ ट्	यो ऽ ऽ

ऋतु

पाणी की पयली फुहार जीऽ
भींजऽ म्हारी रेशम की साड़ीऽ 2

(1) साड़ी भिंजाणी म्हारी अंगिया भिंजाणी 2
भींजी गयो जरी को पल्लव
भींजऽ म्हारी रेशम की साड़ी।। पाणी की पयली .....

(2) बिंदी भींजाणी म्हारो टीको भींजाण्यो 2
भींजी गयो मुखड़ो म्हारो हो 2
भींजऽ म्हारी रेशम की साड़ी ।। पाणी की .....

(3) रिमझिम-रिमझिम मेहुळो वरसऽ 2
पवन चलऽ पुरवाई हो 2
भींजऽ म्हारी रेशम की साड़ी ।। पाणी की .....

(4) संगी सहेली म्हारी झूलणाऽ झूल ऽ 2
सरावण मयनो आयो वोऽ 2
भींज म्हारी रेशम की साड़ी ।। पाणी की .....

(5) सरावण गरजऽ न भांदव वरसऽ 2
पवन चल रे पुरवाई वोऽ 2
भींजऽ म्हारी रेशम की साड़ी ।। पाणी की .....

ग्रीष्म के पश्चात् सुहावनी वर्षा का मनोरम आगमन होता है। चौमासे में (वर्षा काल) हमारे पर्व-व्रत-त्योहारों की भी झड़ी लगती है। आषाढ़ के घुमड़ते काले मेघ ग्रीष्म की तपन कम करते हैं और वर्षा की पहली फुहार तन-मन को भिगोकर उमंग, उत्साह और उल्लास से भर देती है।

पानी की सुखद पहली फुहार ने सुंदर रेशमी साड़ी और अंगिया भिगो दी। साड़ी की जरी का पल्ला भी उस फुहार में भीग गया। मन पुलकित हो उठा। ऐसे आनंद पर मूल्यवान साड़ी और आभूषण सब कुछ न्यौछावर है, जिसने मेरे अंग-अंग में उत्साह भर दिया। रिमझिम-रिमझिम वर्षा हो रही है और पुरवाई पवन ने सबको मस्ती के रंग में डुबो दिया। श्रावण के झूले पड़ गये हैं और सारी सखियाँ पीयर आकर अमराइयों में झूले-झूल रही हैं। श्रावण में गरजने वाले ये बादल भादव में बरसेंगे और तब मुझे अपने घर अवश्य लौटना है।

राग - बिहाग　　ताल - दादरा
थाट - बिलावल　　स्वर - सभी शुद्ध एवं दोनों मध्यम

श्रावण की ठंडी फुहार जी .....

स्थाई

ग ग ग	ग ग ग	ग रे रे	ग ग ग
पा ऽ णी	की प ऽ	य ली ऽ	फु ऽ ऽ
प प प	म म म	ग रे रे	सा सा नि
हा ऽ र	जी ऽ ऽ	भीं ज ऽ	म्हा ऽ री
नि़ नि़ सा	सा रे रे	ग रे रे	सा - -
रे ऽ स	म की ऽ	सा ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ

अन्तरा

सा सा ग	ग म मं	प प प	प प प
सा ऽ ड़ी	ऽ भीं ऽ	जा ऽ णी	म्हा ऽ री
म प मं	– प प	म म ग	– – –
अं गि या	ऽ भीं ऽ	जा ऽ णी	ऽ ऽ ऽ
ग – ग	ग – ग	– – –	– – –
भीं ऽ जी	ग ऽ यो	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ग – ग	ग – ग	ग ग रे	रे ग ग
भीं ऽ जी	ग ऽ यो	ज ऽ री	ऽ को ऽ
प प म	म म म	ग रे रे	सा सा नि़
प ऽ ल्लू	ऽ व ऽ	भीं ऽ ज	म्हा ऽ री
नि़ नि़ सा	सा रे रे	ग रे रे	सा – –
रे ऽ स	म की ऽ	सा ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ

घट्टी

घर रहो घर रहो जी
अब को चौमासो मारू जी घर रव्हो जी
घर रन्हो नणदी रा वीर
अब को चौमासो मारू जी घर रहो जी

(1) जाओ तो घोळ्या लीपणो जी
रहो तो मोतियन चऊक 2
घर रहो .....

(2) जाओ तो रांधा खीचड़ी जी
रहो तो नखछोळ्यो भात 2
घर रहो .....

(3) जाओ तो पेरां चूनड़ी जी
रहो तो दखणारो चीर 2
घर रहो .....

(4) जाओ तो रव्हां उदासी जी
रहो तो मांडा खेल 2

घर रहो घर रहो जी
अब को चौमासो मारू जी घर रहो जी
घर रहो नणदी रा वीर
अब को चौमासो मारू जी घर रहो जी

लोक गीतों में चौमासा गीतों का अपना विशिष्ट स्थान है । जब वर्षा की झड़ी लग जाती है, नदी-नाले पूर आ जाते हैं, तो व्यापार-व्यवसाय हेतु यात्रा पर न जाने का गृहिणी आग्रह करती है। वर्षा ऋतु में खेती बाड़ी के कार्यों में थोड़ी कमी आती है। परंतु अनिवार्य होने पर यात्रा पर जाना पड़ता है, तब पत्नी अकेलेपन की कल्पना कर विरह की संभावना से व्यथित हो यात्रा पर न जाने का निवेदन करती है। पत्नी का बनाव-श्रृंगार-सजावट पति की उपस्थिति में सुशोभित होता है, वह उत्साहित रहती है, तरह-तरह के व्यंजन पति के लिये बनाती है। परंतु पति के यात्रा पर जाने पर वह गृहकार्यों में अपने आपको व्यस्त रखती है। पहले के समय में आज की तरह अनाज पीसने की चक्कियाँ नहीं थीं और महिलायें प्रतिदिन प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर गीत गाते हुये चक्की (घट्टी) में अनाज पीसती थीं। इससे स्वस्थ भी रहती थीं, और खाद्य पदार्थ की शुद्धता भी रहती थी। गाते हुये चक्की पीसने से श्रम की थकान भी नहीं होती थी और समय भी व्यतीत हो जाता था।

विवाह पश्चात् बेटी जब मायके आती है, तब और ससुराल जाते समय यह बधावा गाया जाता है। इस गीत से बेटी को शिक्षा भी मिलती है कि प्रियतम के बिना सब कुछ सूना है, वे ही अब सर्वस्व हैं। उनके साथ ही जीवन के सारे सुख होते हैं। खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना-श्रृंगार सब कुछ उनके लिये है। अपने पति और परिवार में ही मन लगाना है- यह संदेश है इस गीत में।

राग - बिलावल　　ताल - दीपचंदी
थाट - बिलावल　　स्वर - शुद्ध स्वर

घर रहो घर रहो जी, अब को चौमासा .....

स्थाई

× - - -	2- - -	0 - - -	3 - - -
ध़ - सा	सा - सा -	रे - म	ग रे सा -
घ ऽ र	र ऽ हो ऽ	घ ऽ र	र ऽ हो ऽ

ग – –	रे – रे –	– – –	– – –
जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प – प	म – ग –	रे – सा	सा रे ग प
अ ऽ ब	को ऽ चौ ऽ	मा ऽ सो	मा रू जी ऽ
म – ग	रे – सा –	सा – –	– – – –
घ ऽ र	र ऽ हो ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ध़ – सा	सा – सा –	रे – म	ग – रे –
घ ऽ र	र ऽ हो ऽ	न ऽ ण	दी ऽ रा ऽ
सा – ग	– – रे –	– – – –	– – – –
वी ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प – प	म – ग –	रे – सा	सा रे ग प
अ ऽ ब	को ऽ चौ ऽ	मा ऽ सो	मा रू जी ऽ
म – ग	रे – सा –	सा – –	– – – –
घ ऽ र	र ऽ हो ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	0 – – –	3 – – –
– ग – –	रे – सा –	सा – –	सा – – –
जा ऽ ऽ	वो ऽ तो ऽ	घो ऽ ऽ	ळां ऽ ऽ ऽ
रे – म	– – म –	प – –	ध – – –
ली ऽ ऽ	ऽ ऽ प ऽ	णो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
प – ध	प – म –	ग – सा	रे – सा –
र ऽ ऽ	हो ऽ तो	मो ऽ ति	य ऽ न ऽ
सा – सा	सा सा प –	म – प	म ग रे –
च ऽ ऊ	ऽ क ओ ऽ	मा ऽ रू	जी ऽ ऽ ऽ
रे – ग	म – प –	म – ग	रे – सा –
र ऽ ऽ	हो ऽ तो ऽ	मो ऽ ति	ऽ य ऽ न
सा – सा	सा सा सा –	सा – – –	– – – –
च ऽ ऊ	ऽ क ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

पर्व-त्योहार के गीत

देवी गीत

गणगौरी रो पुत्र गजानन्द छे जी .....
गणगौरी रो पुत्र गजानन्द छे जी,
गजानन्द छे जी गणपति छे जी ।। गणगौरी .....
जे का पान फूल केवड़ा सुगन्ध छे जीऽ गणगौरी रो.....

(1) *भाई रे कुम्हार्‌या तम रींझणो जीऽ*
म्हारा गरभा खऽ गरभी पुरावजों जीऽ ।। गणगौरी.....

(2) *भाई किरसाण्या तम रींझणों जी*
म्हारा गरभा खऽ घऊंड़ा पुरावजों जीऽ ।। गणगौरी .....

(3) *भाई रे कसार्‌या तन रींझणो जी,*
म्हारा गरभा खऽ दिया पुरावजो जीऽ ।। गणगौरी.....

(4) *भाई पिंजार्‌या तम रींझणो जी*
म्हारा गरभा खऽ बाती पुरावजो जीऽ ।। गणगौरी .....

(5) *भाई रे तेली तम रींझणो जीऽ*
म्हारा गरभा खऽ तेल पुरावजो जीऽ ।। गणगौरी .....

(6) *भाई रे वाण्या तम रींझणो जीऽ*
म्हारा गरभा खऽ कपूर पुरावजो जीऽ ।। गणगौरी .....

(7) *भाई रे बजाजी तम रींझणो जीऽ*
म्हारा गरभा खऽ वन्नी ओढ़ावजो जीऽ ।। गणगौरी .....

(8) भाई रे कहार्‌या तम रींझणों जीऽ
म्हारा गरभा खऽ मेवो पुरावजो जीऽ।। गणगौरी .....

(9) भाई रे हलवईया तम रींझणो जीऽ
म्हारा गरभा ख मिठई पुरावजो जीऽ।। गणगौरी .....

(10) भाई रे माळ्ई तम रींझणो जीऽ
म्हारा गरभा खऽ हार पुरावजो जीऽ।। गणगौरी .....

(11) भाई रे तमाळ्ई तम रींझणोऽ जी
म्हारा गरभा खऽ पान पुरावजो जी।। गणगौरी रो पुत्र .....
गजानन्द छे जी गणपति छे जी,
हो जे का पान फूल केवड़ो सुगन्ध छे।। गणगौरी रो पुत्र .....

भारत वर्ष के अन्य क्षेत्रों की तरह ही निमाड़ में भी नवरात्रि में शक्ति की उपासना विभिन्न रूपों में की जाती है। कहीं देवी की मूर्ति स्थापित की जाती है, कहीं जवारे बोये जाते हैं और कहीं अखंड दीप प्रज्ज्वलित कर ज्योत रूप में देवी आराधना की जाती है। व्रत रखे जाते हैं। प्रति दिन देवी के गीत गाये जाते हैं। गरबा स्थापना कर देवी गीतों के साथ समूह में नृत्य किये जाते हैं। रंगीन मांडनों से चित्रित विशेष रूप से बनाई गई छिद्र युक्त मटकी में दीपक रख एवं उसके ऊपर छोटी मटकी एवं दीपक रखकर चौक पूरकर देवी रूप में स्थापित करते हैं। उसके चारों ओर गोलाकार रूप में देवी के गरबा गीत गाते हुए उत्साह-उमंग पूर्वक रात्रि में नृत्य जागरण करते हैं। इन विशिष्ट मटकियों को गरभा (बड़ी मटकी) तथा गरभी (छोटी मटकी) कहते हैं। साथ ही देवी के जवारे बोये जाते हैं। नौ दिन पश्चात् दशहरे पर समारोह पूर्वक विसर्जित किये जाते हैं।

प्रत्येक शुभ कार्य आरंभ करते समय सर्वप्रथम गणेश जी की स्तुति-प्रार्थना, विनयपूर्वक सभी कार्यों को निर्विघ्न सानंद संपन्न करवाने का आग्रह करते हैं। प्रतिदिन देवी गीत और गरबा नृत्य आरंभ गणेश जी की प्रार्थना से किया जाता है।

प्रस्तुत गीत में गाँव-शहर के सभी लोगों से सहयोग करने का एवं गणपति जी से सभी से कार्य करवा लेने का आग्रह है। हमारे सभी उत्सव सामूहिक रूप में और सहकार से मनाये जाते हैं। हर व्यक्ति एवं उसके कार्य का महत्त्व है। सबके सहयोग से ही कार्य सानंद संपन्न होते हैं। कुम्हार, किसान, पिंजारा, कसारा, तेली, बनिया, बजाजी, कहार, हलवाई आदि सभी से गणेश जी सहयोग करवायें। गणेश जी प्रसन्न हों और सभी आनंदित हों।

राग – काफी   ताल – दादरा चलत

थाट – काफी   स्वर – ग नि कोमल, नि शुद्ध

गणगौरी रो पुत्र गजानन छे जी ....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ सा –	रे ग रे	ग सा –	रे – प
ग ण ऽ	गौ ऽ री	ऽ रो ऽ	पु ऽ त्र
म प म	ग – ग	रे – रे	सा – –
ग जा ऽ	नं ऽ द	छे ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
प प –	प प –	नि – ध	प प –
ग जा ऽ	नं ऽ द	छे ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
म म –	रे रे रे	प प –	म – –
ग ण ऽ	प ति ऽ	छे ऽ ऽ	जी ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ सा –	रे ग रे	ग सा –	रे – प – –
अ रे ऽ	भा ई रे	ऽ कु ऽ	म्हा र्‍या ऽ
म प म	ग – –	रे – –	सा – –
त न ऽ	री ऽ झ	णो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
प प प	प प नि	ध ध ध	प प म
म्हा ऽ रा	ग र बा	ख ऽ ऽ	ग र भी
म म –	रे – रे	प – प	म म म
ऽ पु ऽ	रा ऽ व	जो ऽ ऽ	जी ऽ ऽ

देवी - पूजन

(1) *शीतळा माता का मढ़ मंऽ गई थी वो मांय*
वहां जळ चढ़ावऽ नाना बाळा की मांय,
ताना बाळा की मांय,
मांय मंऽ पींजणी गळ दुलरी हों माय 2

(2) शीतळा माता का मढ़ मंऽ गई थी वो मांय 2
वहां धईं चढ़ाव नाना बाळा की मांय,
ताना बाळा की मांय,
पांय मंऽ पींजणी गळ दुलरी हो मांय

(3) शीतळा माता का मढ़ मंऽ गई थी वो मांय 2
वहां वन्नी ओढ़ावऽ (पेळो ओढ़ावऽ) नाना बाळा की मांय,
ताना बाळा की मांय
पांय मंऽ पींजणी गळ दुलरी हो मांय 2

(4) शीतळा माता का मढ़ मंऽ गई थी वो मांय
वहां नारेळ चढ़ावऽ नाना बाळा की मांय,
ताना बाळा की मांय, पांय मंऽ पीजणी गळ दुलरी हो मांय 2

(5) शीतळा माता का मढ़ मंऽ गई थी वो मांय 2
वहां धईंभात चढ़ाव नाना बाळा की मांय,
ताना बाळा की मांय,
पांय मंऽ पींजणी, गळ दुलरी हो मांय 2

मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि शुभ कार्य प्रारंभ होने पर तथा किसी मनौती के पूर्ण होने पर देवी-पूजन के समय यह गीत गाया जाता है। वर-माता बटुक या वर-वधू के साथ देवी की पूजा करती और करवाती हैं। जल, दूध, दही से स्नान करवाकर उन्हें रेशमी पीला या लाल, गुलाबी वस्त्र ओढ़ाकर श्रृंगार करते हैं, उन्हें भोग लगाया जाता है एवं श्रीफल नारियल पैसे आदि भेंट चढ़ाकर आशीर्वाद की कामना की जाती है। निर्विघ्न शुभ कार्य सम्पन्न करवाने की प्रार्थना करते हैं। नृत्य-गान पूर्वक पूजा कर शुभ कार्यों के रीति-रिवाज प्रारंभ हो जाते हैं।

राग - बिलावल　　ताल - दादरा
थाट - बिलावल　　स्वर - सब शुद्ध

शीतळा माता मढ़ मंऽ गई थी वो मांय.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा	रे म म	म ग रे	सा रे ग
सी त ळा	ऽ मा ता	का म ढ़	मं ऽ ग
रे रे सा	सा सा सा	सा सा सा	रे म म

ग ई थी	वो मां य	व हाँ ज	ल च ढ़ा
म म प	प प ध	ध प म	प ध प
व ना ना	बा ळा की	मा य ता	ना बा ळा
म ग रे	सा – –	रे म म	प म ग
की मा ऽ	य ऽ ऽ	पां य मं	पीं ऽ ज
रे सा सा	सा रे ग	– रे ऽ	सा – –
ऽ णी ऽ	ग ल दु	ळ री ऽ	हो मां य

देवी आगमन

पावा जो गढ़ सी निसरी भुवाणी वोऽ
ओ देवी आई-आई खण्डवा मांय
पावागढ़ वाळ्ईऽ 2

(1) खंडवा का मोठा भाई आड़ा फिर्‌या, भुवाणी वोऽ
ओ देवी रहो-रहो दिन नव रात, पावागढ़ वाळ्ई .....2।। पावा.....

(2) हम कसा रव्हां भोळा मानवई, भुवाणी वोऽ
म्हारो लखीदड़ कहां रे समाय, पावागढ़ बाळ्ई।। पावा जो .....

(3) लखीदड़ उतारूं अंबा आमळी भुवाणी वो 2
देवी तुम खऽ ते मंदिर मांय पावागढ़ वाळ्ई ।। पावा .....

(4) लखीदड़ जिमाड़ लाड़ू लापसी भुवाणी वो 2
देवी तुम खऽ ते धई अरू भात।। पावा .....

(5) लखीदड़ पेराऊं पेळ्ई पामड़ी भुवाणी वोऽ
ओ देवी तुम खऽ ते दखणा रो चीर पावागढ़ वाळ्ई
देवी तुम खऽ ते मसरू रो काप पावागढ़ वाळ्ई।।
पावा जो गढ़ सी निसरी .....

पावागढ़ से देवी निकलकर पहाड़ों से उतरकर खंडवा नगर आई । खंडवा के बड़े भाई ने उन्हें प्रणाम कर नवरात्रि में खंडवा नगर में ही कृपापूर्वक रहने का आग्रह किया। देवी ने कहा- मैं कैसे रुक सकती हूँ? मेरे साथ मेरा बड़ा सा परिवार है। चौसठ योगिनियाँ, भैरव, भोलेनाथ सहित मेरा परिवार कहाँ समायेगा? भक्त ने कहा- देवी, आपके परिवार को बाग-बगीचों-उद्यानों में ठहरा देंगे और आपको मंदिर में। आपके परिवार को लड्डू-लापसी पकवान खिलायेंगे और आपको आपके प्रिय गुड़-घी-भात या दही चावल का खाना खिलायेंगे। आपके

परिवार के आतिथ्य और सम्मान में चुनरी एवं पागा पहनायेंगे तथा आपको दक्षिण की रेशमी चूनर ओढ़ायेंगे। मसरू का काप (ब्लाउज) पहनायेंगे। देवी आप नवरात्रि में हमारे यहाँ वास कीजिये। सभी भक्त आपकी सेवा करना चाहते हैं।

राग – भीमपलास ताल – गरबा ठेका
थाट – काफी स्वर – ग नि कोमल

पावा जो गढ़ सी तनसरी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ प़ प़	नि़ – –	सा सा –	सा – –
पा ऽ वा	जो ऽ ऽ	ग ढ़ ऽ	सी ऽ ऽ
म – ग़	म – –	प – –	प – –
नि ऽ ऽ	स ऽ ऽ	री ऽ ऽ	भु ऽ ऽ
ग़ – –	रे – –	सा – प	प म –
वा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ	वो ऽ हो	दे वी ऽ
प – ध़	प – म	प – ध़	प – म
आ ऽ ई	आ ऽ ई	खं ऽ ड	वा ऽ ऽ
ग़ – –	म – –	प – –	म – –
मा ऽ ऽ	य ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	वा ऽ ऽ
ग़ – ग़ –	रे – –	सा – –	– – –
ग ऽ ढ़	वा ऽ ऽ	ल ऽ ई	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ नि़ प़	नि़ – – –	सा – –	सा – –
खं ड वा	का ऽ ऽ	मो ऽ ठा	भा ऽ ई
म – ग़ –	ग़ म –	प – –	प – –
आ ऽ ड़ा	ऽ फि ऽ	र्या ऽ ऽ	भु ऽ ऽ
ग़ – –	रे – –	सा – प	प म –
वा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ	वो ऽ हो	दे वी ऽ

प – ध	प – म	प – ध	प – म
र ऽ व्हो	र ऽ व्हो	दि ऽ न	न ऽ व
ग – –	म – –	प – –	म – –
रा ऽ ऽ	त ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	वा ऽ ऽ
ग ग ग	रे – –	सा – –	सा – –
ग ऽ ढ़	वा ऽ ऽ	ळ ऽ ई	ऽ ऽ ऽ

हो चली जाओ अलबेली थारो लंबो बजार.....2
लंबो बजार जेकी सांकरी सी सेरी वो .....2 ।। चली जाओ.....

(1) माथ सारूं बिंदी न टीको शोभादार 2
टीको शोभादार जेकी लड़ी हार हार वो .....2 ।। चली जाओ .....

(2) कान सारूं झुमकी न टाप्स शोभादार 2
टाप्स शोभादार जेका घुंघरू हार हार वो .....2 ।। चली जाओ .....

(3) गळ सारूं माळा न तुस्सी शोभादार
तुस्सी शोभादार ओका घुंघरू हारहार वो ।। चली जाओ .....

(4) हाथ सारूं चूड़ी न कंगण शोभादार
कंगण शोभादार जेका मोती हार हार वो ।। चली .....

(5) पांय सारूं चम्पक न रमझोळ शोभादार
रमझोळ शोभादार ओका घुंघरू हार हार वो

(6) तन सारूं चूनड़ न पैटणी शोभादार 2
पेटणी शोभादार ओको पल्लव घुंघरूदार, चलो जाओ .....
चली जाओ अलबेली .....

नवरात्रि में देवी भक्तों के साथ रमती हैं, गरबा खेलती हैं। देवी और भक्तों के बीच इस आनंदमय वातावरण में कोई अकेला नहीं रह जाता। तन्मयता और भक्ति में सभी एकाकार हो जाते हैं। देवी के अलबेले निराले रूप और आकर्षक, सज्जा से सभी मोहित होते हैं। सखियाँ उन्हें अपने ही बीच की सखी मानने लगती हैं। वे उनके श्रृंगार, आभूषण और सौंदर्य का वर्णन गीतों में करती हैं एवं उमंग और उत्साह से नृत्य करती हैं।

फिर देवी के अलौकिक स्वरूप को पहचान कर कहती हैं- अलबेली नार तुम्हारी महिमा अपरंपार है। तुम्हारा माया बाजार अत्यन्त विस्तृत है, जिसे पार कर अत्यन्त कठिन भक्ति एवं तप मार्ग पर चलकर तुम तक पहुँचा जा सकता है। आपके प्रेम और भक्ति का मार्ग, माया-

मोह के बीच से अत्यंत सँकरे मार्ग पर एकान्त भाव से चलकर ही आप तक पहुँचाता है। उनके भौतिक रूप की रूप सुधा और आकर्षण में उनके दिव्य स्वरूप के दर्शन होते हैं।

राग – भीमपलास ताल – दादरा
थाट – काफी स्वर – ग नि कोमल

चली जावो अलबेली थारो.............

स्थाई

			0– – –
			प – म
× – – –	0– – –	× – – –	च ऽ ली
प – नि	ध – प	म ग रे	सा – सा
जा ऽ वो	अ ऽ ल	बे ऽ ली	था ऽ रो
रे – म	– म –	प – –	प – –
लं ऽ बो	ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	र ऽ ऽ
प – सां	सां रें रे	सां – नि	ध – प
लं ऽ बो	ऽ ब ऽ	जा ऽ र	जे ऽ की
प – सां	सां – रें	सां – नि	ध – प
सां ऽ क	री ऽ सी	से ऽ री	वो ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प – नि	ध – प	म ग रे	ग सा –
मा ऽ थ	सा ऽ रूं	बिं ऽ दी	ऽ न ऽ
रे – रे	म – म	प – –	प – –
टी ऽ को	शो ऽ भा	दा ऽ ऽ	र ऽ ऽ
प – सां	सां – रें	सां – नि	ध – प
टी ऽ को	शो ऽ भा	दा ऽ रं	जे ऽ की
प – सां	सां – रें	सां – नि	ध – प
ल ऽ ड़ी	हा ऽ र	हा ऽ र	वो ऽऽ
प – सां	सां – रें	सां – नि	ध – प

टी ऽ को	शो ऽ भा	दा ऽ र	जे ऽ की
प – सां	सां – रें	सां – नि	प – म
ल ऽ ड़ी	हा ऽ र	हा ऽ र	च ऽ ली

गरबा गीत

असी लंबी एणी न सिर धईं केरी माट,
वात कई देओ उधव जी समझाई न जीऽऽ

(1) म्हारा माथऽ सारूं बिंदी लाओ अलबेली 2
म्हारा टीका खऽ रतन जड़ई दीजो जी 2

(2) कान सारूं झुमकी लाओ अलबेली 2
म्हारा टाप्स खऽ रतन जड़ई दीजो जी 2

(3) नाक सारूं बेसर लाव अलबेली 2
म्हारी नतनी खऽ हीरा जड़ई दीजो जी 2

(4) गळ सारूं माळा लावऽ अलबेली 2
म्हारी तुस्सी मऽ हीरा जड़ई दीजो जी 2

(5) म्हारा हात सारूं कंगण लावऽ अलबेला 2
म्हारी चूड़ी मंऽ रतन जड़ई दीजो जी 2

(6) म्हारा पांय सारूं चम्पक लाओ अलबेला 2
म्हारी मच्छी मंऽ हीरा जड़ई दीजो जी 2

(7) अंग सारूं चूनड़ लावऽ अलबेली 2
म्हारी पेटणी मंऽ मोती लगवई दीजो जी 2
असी लंबी एणी न सिर धईं केरी माट
वात कई द्यो उधव जी समझई न जीऽऽऽ

नवरात्रि में समय महिलायें नये वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर गरबे में खेलने जाती हैं । इस उत्सव के लिए वे नये और सबसे अलग गहने, कपड़े धारणकर में विशिष्ट दिखना भी चाहती हैं। आखिर, कृष्ण के साथ गरबे खेलना है, रास खेलना है। राधा–कृष्ण के लिये संदेश उद्धव के द्वारा भिजवाती हैं। उद्धव से वे कहती हैं कि उन्हें अच्छी तरह समझा कर कह देना कि मेरे लिये गहने, कपड़े सबसे अलग और सबसे अच्छे लेकर आयें, जो अनोखे और निराले, अलबेले हों। बिंदी अलबेली हो और टीके में रत्नों का जड़ाव हो। इसी प्रकार हर अंग के मेरे गहने, वस्त्र आदि विशिष्ट हों और सबसे अलग, सुंदर, आकर्षक लगना चाहिये।

राग – भीमपलास ताल – दादरा (गरबा)

थाट – काफी स्वर – ग नि कोमल

असी लंबी एणी न सिर...............

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा नि़ –	प़ – नि	– नि़ –	सा सा सा
अ सी ऽ	लं ऽ बी	ऽ ए ऽ	णी ऽ न
सा सा सा	सा सा –	रे सा –	सा रे नि़
सि र ऽ	ध ईं –	के री ऽ	मा ऽ ट
सा रे रे	रे रे रे –	रे रे रे	म म ग –
वा ऽ त	क ई द्यो	ऽ उ ऽ	धव जी ऽ
रे सा –	नि – नि	सा – –	सा – –
स म ऽ	झ ऽ ई	न ऽऽ	जी ऽऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	सा सा सा	ग म –	प – –
म्हा ऽ रा	मा ऽ थ	सा रूं ऽ	बिं ऽ ऽ
प – –	म – प	म – प	ग रे सा
दी ऽ ऽ	ला ऽ वो	अ ऽ ल	बे ली ऽ
सा सा –	प़ प़ सा	सा – –	सा – रे
म्हा ऽ रा	टी ऽ का	ख ऽ ऽ	र ऽ त
नि़ – नि़	सा सा –	रे सा रे	ग – –
न ऽ ज	ड़ ई ऽ	दी जो ऽ	जी ऽ ऽ
ग म म	म म रे	रे – –	रे ग –
म्हा रा ऽ	टी ऽ का	ख ऽ ऽ	र त ऽ
रे – सा	नि़ – –	सा सा सा	सा – –
न ऽ ज	ड़ ई ऽ	दी ऽ जो	जी ऽ ऽ

ऊंग्यो शरद पुण्यव रो चाँद,
म्हारा हिरदा उपज्यो ज्ञान,
म्हारा घर गरभो खेलण आव
म्हारा मोठा भाई की नार 2

(1) कसी आऊं वो सहेलड़ी
म्हारी गोदी मंऽताणो बाळ
कसी आऊं वो सहेली,
म्हारी गोदी मंऽ सुतो बाळ

(2) थारा बाळा खऽ पाळणो सोवाड़
म्हारा घर गरभो खेलण आव
थारा बाळा खऽ झोळई सोवाड़
म्हारा घर गरभो खेलण आव
ऊंग्यो शरद पुण्यव रो चाँद,
म्हारा हिरदा उपज्यो ज्ञान .....

इस तरह विभिन्न भाइयों के नाम लेकर, उनकी पत्नियों को गरबा खेलने के लिये बुलाया जाता है और गीत आगे बढ़ता जाता है।

शरद ऋतु की सुहावनी पूर्णिमा का चाँद निकल आया है और अपनी पूर्ण चाँदनी बिखेर दी है। इस मनमोहक वातावरण में मेरे हृदय में गरबा खेलने की ललक जाग उठी है। सखियों आओ, हम सब इस सुहावनी चाँदनी रात में गरबा खेलें।

जिन सखियों ने अपनी परिस्थितियों के आधार पर असमर्थता बतलाई, उन्हें भी सहज उपाय बतलाकर गरबा खेलने आने का आग्रह किया जा रहा है। गोदी में यदि नन्हा बालक सो रहा है तो उसे झोली-पालने में सुलाकर आ जाओ और हम सब थोड़ी देर ही सही, गरबा खेलें।

राग - भीमपलास　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

ऊंग्यो शरद पुण्यव रो चाँद म्हारा.....

स्थाई

सा - रे -	नि़ - नि़ -	सा - सा -	सा - ग़ -
ऊं ऽ ऽ ऽ	ग्यो ऽ ऽ ऽ	श ऽ र ऽ	द ऽ पु ऽ

ग् – ग् –	म – प –	प – प –	प – प –
ण्य ऽ व ऽ	रो ऽ ऽ ऽ	चाँ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ
ग् – ग् –	म – म –	प – प –	म म – म
म्हा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	हि ऽ र ऽ	दा ऽ ऽ ऽ
ग् – ग् –	रे – रे –	सा – सा –	सा – सा –
उ ऽ प ऽ	ज्यो ऽ ऽ ऽ	ज्ञा ऽ ऽ ऽ	ऽ न ऽ ऽ
सा – रे –	नि़ – नि़ –	सा – सा –	सा – ग् –
ऊं ऽ ऽ ऽ	ग्यों ऽ ऽ ऽ	श ऽ र ऽ	द ऽ पु ऽ
ग् – ग् –	म म प प	प – प –	प – प –
ण्य ऽ व ऽ	रो ऽ ऽ ऽ	चाँ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ
ग् – ग् –	म – म –	प – प –	म – म –
म्हा ऽ रा ऽ	घ ऽ र ऽ	ग् ऽ र ऽ	भो ऽ ऽ ऽ
ग् – ग् –	रे – रे –	सा – सा –	सा – सा –
खे ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ण ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	नि़ – नि़ –	सा – सा –	ग् – ग् –
म्हा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	मो ऽ ऽ ऽ	ठा ऽ ऽ ऽ
ग् – म –	म – प –	प – प –	प प प प
भा ऽ ई ऽ	की ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ र ऽ ऽ
ग – ग –	म – म –	प – प –	म – – –
म्हा ऽ रा ऽ	घ ऽ र ऽ	ग ऽ र ऽ	भो ऽ ऽ ऽ
ग् – ग् –	रे – रे –	सा – सा –	सा – सा –
खे ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ण ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ

आओ–आओ हो अंबे मात, आओ दुर्गे माँ
म्हारा अंगणा पधारो मात, झुकी–झुकी लागूं पांय

(1) अंबे माता का माथऽ बिन्दी बिराजऽ 2
टीका पऽ वारी–वारी जाऊं अंबें मात, हऊं झुकी .....

(2) अंबे माता का कानऽ मंऽ टाप्स बिराजऽ (करणफूल) 2
झुमकी पऽ वारी–वारी जाऊं अंबे मात हऊं झुकी .....

(3) अंबे माता की नाक बेसर बिराजऽ 2
नतनी पऽ वारी–वारी जाऊं अंबे मात, हऊं झुकी .....

(4) अंबे माता का गला मंऽ हार बिराजऽ 2
माल पऽ वारी- वारी जाऊं अंबे मात, हऊं झुकी .....
(5) अंबे माता का हात मंऽ चूड़ी बिराजऽ 2
कंगण पऽ वारी -वारी जाऊं म्हारी मात, हऊं झुकी.....
(6) अंबे माता का पांय मंऽ पायळ बिराजऽ 2
बिछिया पऽ वारी-वारी जाऊं म्हारी मात, हऊं झुकी.....
(7) अंबे माता का तन पर साड़ी बिराजऽ 2
चूनड़ पऽ वारी-वारी जाऊं अंबे मात
हऊं झुकी-झुकी लागूं पांय

नवरात्रि के गरबोत्सव की संपूर्ण तैयारी है और सभी लोग गरबा खेलने को उत्सुक हैं। मैया के आगमन की व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे हैं। अंबे माँ! शीघ्र पधारिये, मैं आपको निवेदन करते हुए प्रणाम करती हूँ।

देवी जी अपनी संपूर्ण सज-धज के साथ जब गरबा रमने आईं तो उनके स्वरूप के दर्शन कर सभी कृतकृत्य हुए। उनके एक-एक अंग के सुंदर आभूषण पर हम सब निछावर हैं। उन आभूषणों के सौभाग्य हैं, जो देवी ने उन्हें धारण किया और इसी से उनका महत्त्व बढ़ा है। देवी के दर्शन से हम सभी धन्य हुए हैं।

राग - भीमपलास | ताल - दादरा चलत
थाट - काफी | स्वर - ग़ नि़ कोमल

आओ आओ हो अंबे मात.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा रे -	नि़ सा -	सा - -	ग़ ग़ म
आ ओ ऽ	आ ओ ऽ	हो ऽ ऽ	अं ऽ बे
प - -	प म -	ग़ - ग़	म - प
मा ऽ ऽ	ऽ त ऽ	आ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ
ग़ - -	रे - -	सा - सा	सा - रे
दु ऽ ऽ	र्गे ऽ ऽ	मा ऽ त	म्हा ऽ रा
नि़ नि़ सा	सा सा सा	ग़ - -	म - -

अं ग णा	ऽ प ऽ	धा ऽ ऽ	रो ऽ ऽ
प – –	प – –	ग़ ग़ –	म प –
मा ऽ ऽ	त ऽ ऽ	झु की ऽ	झु की ऽ
ग़ – – –	रे – –	सा – –	– – –
ला ऽऽ	गूं ऽ ऽ	पां ऽ य	ऽ ऽ ऽ

अंतरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि नि नि	– नि नि	प ध –	प – म
अं ऽ बे	ऽ मा ऽ	त ख ऽ	मा ऽ थ
प ध़ नि	नि नि नि	ध़ ध़ ध़	प प प
बिं ऽ दी	ऽ बिं ऽ	रा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ
सा – प	प प प	प प ध़	प प म
टी ऽ का	प ऽ र	वा ऽ री	वा ऽ री
म म म	म म ग़	गम पध़ प	प प –
जा ऽ ऊं	अं ऽ बे	माऽ ऽऽ ऽ	ह ऊं ऽ
ग़ ग़ –	म प –	ग़ – –	रे – –
झु की ऽ	झु की ऽ	ला ऽ ऽ	गूं ऽ ऽ
सा – –	– – –		
पा ऽ प	ऽ ऽ ऽ		

छाबड़ी

हरा–नीला वास की छाबड़ीऽ वोऽ
दवणा मोंगरा रा फूल
कि तू बेटी मालणी वोऽऽ
कि बणजारा घर की नार (बणजारा)
नईं हऊं बेटी मालणी वो, नई बणजारा घर की नार,
हऊं छे देवी भगोतणी वो
म्हारो चौदह भुवन को राज,
चौदह भुवन नव खंड बिराजे, जै जै अंबे माड़ी
देवी भगोतणी वोऽऽ
कि हरा नीळा वास की छाबड़ी वो

बांझ नऽ रूझ्यो छे दरबार..... 2
बांझ घर पालणो झुलाड़ो म्हारी माता,
चौदह भुवन की राणी
चौदह भुवन नव खंड बिराजे, जै जै अंबे भवानि,
देवी भगोतणी वोऽ ऽ ऽ
कि हरा नीळा वास की छाबड़ी वोऽ ऽ
अंधळा नऽ रूझ्यो छे दरबार 2
अंधळा खऽ आंख देवाड़ो म्हारी माता,
चौदह भुवन की राणी,
चौदह भुवन नव खंड बिराजे, जै-जै अंबे माड़ी
देवी भगोतणी वोऽ ऽ ऽ
कि हरा नीळा वास की छाबड़ी वोऽ ऽ ऽ

इसी प्रकार विभिन्न कष्टों अभावों से पीड़ित लोग देवी के दरबार में उनसे प्रार्थना कर कष्टों से मुक्ति पाते हैं।

देवी के विभिन्न रूपों के दर्शन होते हैं। कभी वे सुंदर बालिका के रूप में, तो कभी मालन के रूप में, तो कभी बंजारन के रूप में दिखाई देती हैं। नवरात्रि में देवी स्वयं रमने-खेलने आती हैं। वे गरबा खेलने वाले भक्तों के साथ स्वयं भी नृत्य करती हैं। उनके सुन्दर अलौकिक रूप को देख सभी आकर्षित होते हैं। लोग उनका परिचय प्राप्त करना चाहते हैं। उनके विविध रूपों को देख लोग आश्चर्यचकित होते हैं और उनसे पूछते हैं कि आप कौन हैं? हरे-नीले बाँसों की बनी सुंदर टोकनी जो विविध मोगरे आदि के फूलों से भरी है, उसे लेकर आप कहाँ जा रही हैं? क्या आप मालिन की बेटी हैं या घुमन्तू बंजारे के घर की नारी हैं, जो कभी दिख जाती हैं और कभी नहीं। कभी यहाँ और कभी वहाँ दिखाई देती हैं। उन्होंने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया- न तो मैं मालन की बेटी हूँ और न बंजारा घर की नारी हूँ। मैं तो देवी भगवती हूँ, चौदह भुवन में मेरा राज है और नव खंडों में मैं सर्वत्र विराजित हूँ। यह जानकर सभी धन्य हुए। देवी की जय-जयकार करने लगे। देवी का दरबार लगाकर लोगों ने उनसे अपने-अपने कष्टों को दूर करने की प्रार्थना की। कृपालु जगदम्बा ने सभी के कष्ट दूर किये। सभी खुशी से झूम उठे और पुनः अधिक उत्साह एवं भक्ति भाव से गरबा खेलने लगे- दिव्यानन्द की सृष्टि हुई ।

राग - भूपाली	ताल - कहरवा
थाट - कल्याण	स्वर - शुद्ध

हरा नीळावास की छाबड़ी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे –ग –	रे – सा –	सा – – –	ध़ – सा –
ह ऽ रा ऽ	नी ऽ ळा ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	स ऽ की ऽ
सा – रे –	सा – रे –	ग – – –	ग – – –
छा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ब ऽ	डी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – – –	रे – – –	रे – ग –	रे – सा –
वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	द ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	रे – ग –	ग – – –	रे – – –
मों ऽ ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ
सा – – –	सा – – –	रे – ग –	रे – सा –
फू ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	कि ऽ ऽ ऽ	तू ऽ ऽ ऽ
सा – – –	ध – – –	सा – रे –	सा – रे –
बे ऽ ऽ ऽ	टी ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ल ऽ
ग – ग –	ग – ग –	रे – रे –	रे – रे –
णी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – सा –	रे – रे –	रे – ग –
कि ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ण ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	रे – सा –	सा – – –	सा – – –
घ ऽ र ऽ	की ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ

अंतरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे – ग –	रे – सा –	सा – – –	ध़ – सा –
न ऽ ईं ऽ	ह ऽ ऊं	बे ऽ ऽ ऽ	टी ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	सा – रे –	ग – – –	ग – – –
मा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ल ऽ	णी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – – –	– – – –	रे – ग –	रे – सा –
वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	न ऽ ई ऽ	ब ऽ ण ऽ
सा – रे –	रे – ग –	ग रे रे रे	रे – सा –
जा ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	घ ऽ र ऽ	की ऽ ऽ ऽ

सा – – –	सा – – –	रे – ग –	रे – सा –
ना ऽऽ ऽ	ऽ र ऽ ऽ	ह ऽ ऊं ऽ	छे ऽ ऽ ऽ
सा – – –	ध़ – सा –	सा – रे –	सा सा रे –
दे ऽ ऽ ऽ	वी ऽ ऽ ऽ	भ ऽ गो ऽ	ऽ ऽ त ऽ
ग – – –	– – – –	रे – – –	रे – – –
णी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – सा –	सा – रे –	रे – ग ग
म्हा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ	चौ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ह भु
ग – ग –	रे – रे –	सा – सा –	सा सा सा सा
व ऽ न ऽ	को ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ज ऽ ऽ
म – म –	म – म –	म – म –	म – म –
चौ ऽ द ऽ	ह ऽ भु ऽ	व ऽ न ऽ	द ऽ स ऽ
रे – रे –	रे – प –	प – प –	प – प –
खं ऽ ऽ ऽ	ड ऽ वि ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	जे ऽ ऽ ऽ
म – – –	रे – – –	प – म –	रे – – –
जै ऽ ऽ ऽ	जै ऽ ऽ ऽ	अं ऽ ऽ ऽ	बे ऽ ऽ ऽ
सा – – –	सा – – –	ध़ – ध़ –	सा – सा –
मा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	वी ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	सा रे – रे	ग – – –	ग – – –
भ ऽ गो ऽ	ऽ त ऽ ऽ	णी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – – –	रे – – –		
वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ		

देवी

आणंद –आणंद आज, प्रेम की बाजी बंसुरिया
अंगणा मंऽ आओ अंबे मात
कि तुम बिन सूणी छे सखि नऽ
(1) सीस अंबा जी खऽ बिंदी सोहे 2
टीको छे शोभादार, प्रेम की बाजी बंसुरिया
(2) कान अंबा जी कुंडल सोहे 2
झुमकी छे शोभादार, प्रेम की बाजी बंसुरिया

(3) नाक अंबा जी खऽ काटो सोहे 2
नथनी छे शोभादार प्रेम की बाजी बंसुरिया
अंगणा मंऽ आओ अंबे मात कि
तुम बिन सूणी छे सखी नऽ

इस प्रकार श्रृँगार के सभी आभूषणों का क्रमानुसार नाम लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

आनंद का अवसर उपस्थित हुआ है। अंबे माता नवरात्रि के इस आनंदोत्सव में आप पधारिये। सभी भक्त उपस्थित हैं, आपके बिना सारी सखियाँ सूनी हैं, गरबा उत्सव में आपके बिना उत्साह नहीं है। हम सभी आपके दर्शनों के लिये व्याकुल हैं। आज आपके स्नेह, प्रेम की मधुर बंसी गुञ्जित हो रही है। माँ! शीघ्र गरबा आँगन में और इस मण्डप में पधारिये।

आपके दिव्य स्वरूप का वर्णन करते लोग थकते नहीं हैं। आपके शीश पर टीका और बिंदी शोभादार है। आपके कुंडल-झुमकी, माला-हार, नथनी, कंगन-चूड़ियाँ, पायल-बिछिया और चूनर-ओढ़नी सभी शोभादार हैं। आपके इस सुंदर स्वरूप को देख सब मंत्रमुग्ध हो गये हैं। आप इस आनन्दोत्सव की शोभा हैं, आप भक्तों के बीच आइये और रमिये तथा गरबा में हमारे साथ सम्मिलित होइये, यही प्रार्थना है।

राग - जयजयवन्ती　　ताल - दादरा
थाट - खमाज　　स्वर - शुद्ध स्वर

आणंद आणंद आज .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	नि़ – –	सा रे सा	नि़ – –
आ ऽ णं	द ऽ ऽ	आ ऽ णं	द ऽ ऽ
ध़ – ध़	ध़ ध़ ध़	रे रे रे	रे – –
आ ऽ ऽ	ऽ ज ऽ	प्रे ऽ म	की ऽ ऽ
सा – रे	ग – नि़	रे रे –	सा – –
बा ऽ ऽ	जे ऽ बं	सु रि ऽ	या ऽ ऽ
सा – –	सा – नि़	सा रे रे	सा – नि़
अं ऽ ग	णा ऽ मं	आ वो ऽ	अं ऽ बे

ध़ – –	ध़ ध़ रे	रे – रे	रे – रे
मा ऽ ऽ	ऽ त कि	तु ऽ म	बि ऽ न
सा रे ग	ग नि़ ऽ	रे – रे	सा – –
सु ऽ णी	ऽ छे ऽ	स ऽ खि	न ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – –	रे – रे	ग – –	ग – ग
सी ऽ ऽ	स ऽ अं	बा ऽ ऽ	जी ऽ ख
रे – ग	म –	रे – म	ग – –
बिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	सो ऽ ऽ	हे ऽ ऽ
सा – –	नि़ – –	सा – रे	सा – नि़
टी ऽ ऽ	को ऽ ऽ	छे ऽ ऽ	शो ऽ भा
ध़ ध़ ध़	ध़ ध़ ध़	रे रे रे	रे – –
दा ऽ ऽ	ऽ र ऽ	प्रे ऽ म	की ऽ ऽ
सा – रे	ग – नि़	रे रे –	सा – –
बा ऽऽ	जे ऽ ब	सु रि ऽ	या ऽ ऽ

गरबा

अंबे माता बेगा आवो नऽ घर काम छे
अंबे माता बेगा आवो नऽ घर काम छे 2
काम छे, काम छे नाम छे, अंबे माता बेगा आओ

(1) *म्हारा अंगणा मंऽ गऊआ खड़ेल छे 2*
रोटी देण कोऽ म्हारो नेम छे, अंबे माता .....

(2) *म्हारा अंगणा मंऽ तुळसां लगेल छे 2*
फेरा फिरणऽ को म्हारो नेम छेऽ, अंबे माता .....

(3) *म्हारा अंगणा मंऽ कन्या खड़ेल छेऽ 2*
कन्यादान देणऽ को म्हारो नेम छेऽ .....2 अंबे माता बेगा .....

(4) म्हारा अंगणा मंऽ साधु-संत खड़ेल छे 2
धरम देणऽ को म्हारो नेम छे, ज्ञान पाणऽ को म्हारो नेम छे 2

(5) *म्हारा अंगणा मंऽ अंबा जी खड़ेल छे 2*

दरसन करणऽ को म्हारो नेम छेऽ अंबे माता ......
अंबे माता बेगा आओ न घर काम छेऽऽऽ

अंबे माता हमारे घर नवदुर्गोत्सव और गरबा खेलने का शुभ कार्य है, आप शीघ्र आईये। आपके आने पर ही हमारे कार्य सान्नंद संपन्न होंगे। आपका नाम सुनकर ही सभी सोत्साह गरबा-मण्डप में उपस्थित हो गये हैं। हमारा घर-आँगन आपके आगमन के अनुकूल है और सभी सदाचारी भक्त आपके स्वागत के लिये तत्पर हैं।

सत्संग, सदाचार एवं धर्मानुरागी व्यक्तियों से माँ जगदम्बा प्रसन्न होती हैं। ऐसे स्थानों पर, ऐसे भक्तों के बीच वे आना और गरबा रमने की इच्छा करती हैं, अतः माता आप शीघ्र आईये।

राग - बिलावल　　　　ताल - दादरा चलत
थाट - बिलावल　　　　स्वर - सभी शुद्ध

अंबे माता बेगा आओ नऽ घर ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - सा	रे - ग	म - प	- म -
अं ऽ बे	मा ऽ ता	बे ऽ गा	ऽ आ ऽ
ग रे -	म - ग	रे - ग	सा - -
ओ न ऽ	घ ऽ र	का ऽ म	छे ऽ ऽ
प - प	नि - नि	ध प -	म - रे
का ऽ म	छे ऽ ऽ	का म ऽ	छे ऽ ऽ
म - म	रे - सा		
ना ऽ म	छे ऽ ऽ		

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि़ - सा	ध़ - नि़	सा - -	सा - -
म्हा ऽ रा	अं ऽ ग	णा ऽऽ	मं ऽऽ
प - म	ध - प	म - ग	सा - -
गौ ऽऽ	आ ऽ ख	ड़े ऽ ल	छे ऽ ऽ
प नि -	- ध -	प - प	म - रे

रो टी ऽ	ऽ दे ऽ	ण ऽ को	म्हा ऽ रो
म – म	रे सा –		
ने ऽ म	छे ऽ ऽ		

झूला झूलऽ वो खप्पर वाळ्ई मात
अंबा झूले छेऽ 2

(1) मख झूला झुलावणऽ की हौस घणी 2
भक्त झुलावोऽ खम्बा मंऽ अंबा खड़ी 2
झूला झूल छे खप्पर वाळ्ई मात,
अम्बा झूलऽ छेऽ

(2) मख बिंदी पेरावणऽ की हौस घणीऽ 2
भक्त पेराओ खम्बा मंऽ अंबा खड़ी
झूल झूल रेऽ खप्पर वाळ्ई मात, अंबा झूलऽ छेऽ

(3) मख झुमकी पेरावणऽ की हौस घणीऽ
भक्त पेराओ खम्बा मंऽ अंबा खड़ी।। झूला झूलऽ रे

(4) मख हार पेरावणऽ की हौस घणी 2
भक्त पेराओ खम्बा मंऽ अंबा खड़ी ।। झूला झूल रे.....

(5) मख चूड़िलो पेरावणऽ की हौस घणीऽ 2
भक्त पेराओ खम्बा मंऽ अंबा खड़ी।। झूला झूलऽ रे

(6) मख मंयदी रचावणऽ की हौस घणीऽ 2
भक्त रचाओ खंबा मंऽ अंबा खड़ी .....2 ।। झूला झूलऽ रे.....

खप्पर धारण करने वाली कालिका माँ ममतामयी अम्बा के रूप में झूला झूल रही हैं। भक्त भी आनंदित हैं। वे माता को झूला भी झुला रहे हैं और देवी का श्रृंगार कर सेवा का सुख भी ले रहे हैं। भक्तों को उन्हें विभिन्न सुंदर रत्नाभूषणों वस्त्रादि से सजाने की लालसा है। माता भी सबके बीच सहज उपस्थित हो, सेवा का अवसर दे रही हैं। झूला झूलती हुई वे आनंदित हो रही हैं और भक्तों पर सुखों की वर्षा हो रही है।

राग – भीमपलासी	ताल – दादरा
थाट – काफी	स्वर – ग़ नि़ कोमल

झूला झूले रे खप्पर वालई मान .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – –	प़ – सा	सा – –	सा रे रे
झू ऽ ला	झू ऽ ले	रे ऽ ऽ	ख प्प र
नि़ सा –	म – –	ग़ – –	ग़ म ग़
वा ळ ई	मा ऽ ऽ	त ऽ ऽ	अं ऽ ऽ
म प –	ग़ – –	रे – –	सा – –
बा ऽ ऽ	झू ऽ ऽ	ले ऽ ऽ	छे ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग़ म –	म प प	प – –	ध़ ध़ प
म ख ऽ	झू ऽ ला	झू ऽऽ	ला व ण
म – –	म – प	ग़ – म	प – –
की ऽऽ	हौ ऽऽ	स ऽ घ	णी ऽऽ
ग़ म –	म प प	प – –	ध़ ध़ प
भक्त ऽ	झु ऽ ला	ओ ऽ ऽ	खं ऽ बा
म – –	म प प	ग़ – –	म प –
मं ऽ ऽ	अं ऽ ऽ	बा ऽ ऽ	ख ड़ी ऽ

रूढ़ो गरभो रम्या छे देवी अंबिका जीऽ
अंबिका जी, देवी चंडिका का जीऽ 2
रूढ़ो गरभो रम्या देवी अंबिका जीऽ

(1) इनो शब्द गयो आकास मंऽ जीऽ 2
आकास सी इन्द्र देव आविया जीऽ 2
संग राणी इन्द्राणी खऽ लाविया जीऽ .....2 ।। रूढ़ो गरभो.....

(2) इनो शब्द गयो पाताळ मंऽ जीऽ 2
पाताळ मंऽ सी नाग देव आविया जीऽ 2
संग पद्मा नागेण खऽ लाविया जीऽ ।। रूढ़ो गरभो .....

(3) इनो शब्द गयो अयोध्या जीऽ 2

अयोध्या सी रामचन्द्र आविया जीऽ 2
संग सती सीता जी खऽ लाविया जीऽ ....2 ।। रूढ़ो गरभो ....

(4) *इनो शब्द गयो कैलास मंऽ जीऽ 2*
कैलास सी महादेव आविया जीऽ 2
संग सती गवरा जी खऽ लाविया जीऽ ....2 ।। रूढ़ो ....

(5) *इनो शब्द गयो मथुरा मंऽ जीऽ 2*
मथुरा सी हो कृष्ण देव आविया जीऽ 2
संग रूकमणी सती खऽ लाविया जीऽ 2
रूढ़ो गरभो रम्या छे देवी अंबिका जीऽऽऽ

सुन्दर गरबा खेलने की पूर्ण तैयारी है। माँ अंबिका जी आप पधारिये और रमण कीजिये, हम सबके साथ गरबा खेलिये। गरबा नृत्योत्सव एवं गीतों की आवाज सर्वत्र पहुँची और सभी देवी-देवता, नाग-किन्नर सभी सपरिवार इस दिव्य, अलौकिक आयोजन में सम्मिलित हुये हैं। आप भी शीघ्र पधारिये, सभी प्रतीक्षारत हैं। आपके आने पर ही दिव्यानन्द अपने चरमोत्कर्ष पर होगा।

राग - भीमपलासी ताल - दादरा
थाट - काफी स्वर - ग नि कोमल

रूढ़ो गरभो रम्या छे देवी ....

स्थाई

प म -	ग म प	नि पप -	ग - रे
रू ढ़ो ऽ	ग र भो	ऽ रम् ऽ	या ऽ छे
सा - नि	सा - सा	ग - म	प - -
दे ऽ वी	अं ऽ बि	का ऽ ऽ	जी ऽ हो
प - -	नि - ध	नि सां -	नि ध ध
ऽ ऽ ऽ	अं ऽ बि	का ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
ध ध प	म - प	ग ऽ म	प - -
दे ऽ वी	चं ऽ डि	का ऽ ऽ	जी ऽ ऽ

अन्तरा

प - म	ग म प	नि - प	ग रे -

इ ऽ नो	श ऽ ब्द	ऽ ऽ ग	यो ऽ ऽ
सा – नि़	सा – –	ग़ – म	प – –
आ ऽ ऽ	का ऽ श	मं ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
नि – ध	नि – सां	सां – –	नि – ध
आ ऽ ऽ	का ऽ श	सी ऽ ऽ	इ ऽ न्द्र
प – –	म – प	ग़ – म	प – –
दे ऽ व	आ ऽ वि	या ऽ ऽ	जी ऽ ऽ
नि – ध	नि – सां	सां – –	नि – ध
सं ऽ ग	रा ऽ णी	ऽ इ ऽ	न्द्रा ऽ णी
प – –	म – प	ग़ – म	प – –
ख ऽऽ	ला ऽ वि	या ऽऽ	जी ऽऽ

काळा जो तन काचळई वो सई म्हारी वोऽ 2
जेख पेरूं ते वार तिव्हार स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी
ब्रह्मचारी रे दीनानाथ, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी

(1) कागद हुतो तो हऊं वाची लेती वो सई म्हारी वो 2
असो तगदीर वाच्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी

(2) तांबो हुतो तो हऊं बदळई लेती वो सई म्हारी वोऽ 2
असो तगदीर बदळ्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी 2

(3) पीत्तळ होतो तो हऊं एची लेती वो सई म्हारी वोऽ ।।.....2
असो तगदीर एच्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी ।।.....2

(4) सोन्नो हुतो तो हऊं मोड़ी देती सई म्हारी वोऽ 2
असो तगदीर मोड़्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी 2

(5) खेती हुती तो हऊं वाटी लेती वो सई म्हारी वोऽ 2
असो तगदीर वट्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी 2

(6) कन्या हुती तो हऊं परणई देती वो सई म्हारी वोऽ
असो तगदीर परण्यो नी जाय, स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी 2
ब्रह्मचारी रे दीनानाथ स्वामी म्हारो ब्रह्मचारी .....
काळा जो तन की काचळई वो सई म्हारी वोऽ ऽ ऽ

जिस तरह सर्प अपनी केंचुली को बदलकर नई धारण करता है, वैसे ही आत्मा जीर्ण शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। जैसे हम पुराने वस्त्र छोड़ नये धारण करते हैं, इसी

प्रकार जन्म और जीवन चक्र परिवर्तित होता रहता है। मनुष्य इस सांसारिक जीवन के चक्र में मोहित होकर सुख-दु:ख की अनुभूति करता है।

प्रस्तुत गीत में देवी पार्वती अपनी सखी से मनोव्यथा व्यक्त कर रही हैं। उनके स्वामी देवाधिदेव भस्मी लगाकर धूनी रमाते समाधि में लीन रहते हैं। उनकी उदासीनता से परेशान पार्वती अपनी सखी से कहती हैं कि मेरे स्वामी जगत् का कल्याण करने वाले, दीन-दु:खियों का दु:ख-दर्द दूर करने वाले हैं, किन्तु उनके पास मेरे लिये तो समय ही नहीं है। मेरी किस्मत में तो ब्रह्मचारी ही मेरे स्वामी हैं। भला मैं श्रृंगार क्यों करूँ और किसके लिये करूँ? सब कुछ बदला जा सकता है, बेचा जा सकता है, बाँटा जा सकता है, परन्तु भाग्य नहीं। तांबा, पीतल, सोना, खेती बेची जा सकती है, परन्तु भाग्य नहीं। कन्या का परिणय कर विदा किया जा सकता है, परन्तु भाग्य को विदा नहीं किया जा सकता, न उसे लिखे हुए कागज की तरह पढ़ा जा सकता है। अरी सखी! जगत् के स्वामी महादेव मेरे स्वामी हैं, जो निर्मोही और ब्रह्मचारी हैं।

राग - भीमपलासी	ताल - दादरा चलत
थाट - काफी	स्वर - ग़ नि कोमल

काळा जो तन की काचलई वो सई .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
प़ - नि़	नि़ नि़ -	सा - सा	सा - -
का ऽ ळा	ऽ जो ऽ	त ऽ न	की ऽ ऽ
म - ग़ -	ग़ म -	प प प	प - प
का ऽ ऽ	ऽ च ऽ	ळ ई वो	स ऽ ई
ग़ - -	रे - -	सा - प	प प म
म्हा ऽ ऽ	री ऽ ऽ	वो ऽ हो	जे ख ऽ
प ध़ प	म - -	प ध़ प	म - -
पे ऽ रूं	ते ऽ ऽ	वा ऽ र	तिव ऽऽ
ग़ - ग़	- म -	प - प	म - म
हा ऽ ऽ	ऽ र ऽ	स्वा ऽ मी	म्हाऽ रो
ग़ - -	रे - -	सा - -	सा रे -
ब्रह्म ऽ	चा ऽ ऽ	री ऽ ऽ	ब्र ह्म ऽ
नि़ - सा	सा - -	ग़ - -	म - -

चा ऽ री	रे ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	ना ऽ ऽ
प – –	प – –	ग़ ग़ ग़	म प म
ना ऽ ऽ	ऽ थ ऽ	स्वा ऽ मी	म्हा रो ऽ
ग़ – –	रे – –	सा – –	सा – –
ब्र म्ह ऽ	चा ऽ ऽ	री ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

प नि़ नि़	नि़ सा –	सा – –	सा – –
का ग द	हु तो ऽ	तो ऽ ऽ	ह ऽ ऊं
म म ग	– म –	प – प	प – प
वा ऽ ची ऽ	ऽ ले ऽ	ती ऽ वो	स ऽ ई
ग़ – –	रे – –	सा – –	प प –
म्हा ऽ ऽ	री ऽ ऽ	वो ऽ ऽ	अ सो ऽ
प ध़ प	म – –	प ध़ प	म – –
त ग दी	र ऽ ऽ	वा ऽ च्यो	नी ऽ ऽ
ग़ – –	– म –	प – प	म – म
जा ऽ ऽ	ऽ य ऽ	स्वा ऽ मी	म्हा ऽ रो
ग़ ग़ ग़	रे – –	सा – –	– – –
ब्र ह्म ऽ	चा ऽ ऽ	री ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

नाग सूतो रेऽऽ वाळा 2
(कि) नागेण घुम्मर दई-दई नाचऽ
कि तुम गिरधारी रेऽऽ वाळा
कि तुम बनवारी रेऽऽ वाळा

(1) *(म्हारा) माथऽ सारूं बिंदी लावजो रेऽऽ वाळा 2*
म्हारा टीका खऽ रतन जड़ाव, म्हारा वाळा
कि तुम गिरधारी रेऽऽ वाळा,
कि तुम बनवारी रेऽऽ वाळा

(2) *म्हारा कान सारूं कुंडळ लावजो रेऽऽ वाळा*
म्हारी झुमकी खऽ रतन जड़ाव म्हारा वाळा
कि तुम गिरधारी रे वाळा

कि तुम बनवारी रे वाळा
नाग सूतो रेऽऽ वाळा
नागेण घुम्मर दई-दई नाचऽ,
कि तुम गिरधारी रेऽऽ वाळा
कि तुम बनवारी रेऽऽ वाळा

अन्य आभूषणों का नाम क्रमानुसार लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

नवरात्रि में सखियाँ कृष्ण से कह रही हैं कि आप नाग को बांधिये। नागिन भी गोल-गोल घूम-घूम कर नाच रही है। नाग को भी आप नचाईये, आप गिरधारी हैं, बनवारी हैं। हमारे साथ आप भी नृत्य कीजिये, आप सभी के प्रिय हैं।

प्रिय कृष्ण! आप हमारे लिये विभिन्न सुंदर आभूषण जरूर लायें। मेरे सिर की बिंदी लाइये जिसमें रत्न जड़वा दीजिये। कान के लिये कुंडल लाइये और मेरी झुमकी में आप हीरे-रत्न जड़वा दीजिये। इस प्रकार भिन्न-भिन्न अंगों के विविध आभूषण हमारे लिये आप लेते आइये। उनमें रत्न-हीरे-मोती अवश्य जड़वा कर उन्हें और सुंदर बनवा दीजिये।

राग - पीलू	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - कोमल एवं शुद्ध

नाग सुतो रे वाळा कि .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - रे -	सा - नि़ -	सा - - -	रे - - -
ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ग	सु ऽ ऽ ऽ	तो ऽ ऽ ऽ
ग़ - रे -	ग़ - रे -	सा - - -	सा - सा
रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ळा ऽ की ऽ
रे - म -	म - - -	म - - -	म - - -
ना ऽ ऽ ऽ	गे ऽ ण ऽ	घु ऽ ऽ ऽ	म्म ऽ र ऽ
रे - म -	प - म -	ग़ - रे -	ग़ - सा सा
द ऽ ई ऽ	द ऽ ई ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽच कि
रे - रे -	सा - नि़ -	सा - - -	रे - - -
तु ऽ म ऽ	गि ऽ र ऽ	धा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ

ग़ – रे –	ग़ – रे –	सा – – –	सा – – –
रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ळा ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – रे –	सा – सा –	सा – सा –	नि़ – नि़ –
मा ऽ थ ऽ	सा ऽ रूं ऽ	बिं ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – रे –	ग़ – रे –	ग़ – रे –
ला ऽ व ऽ	जो ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – – –	सा – – –	सा – सा –	सा – सा –
वा ऽ ऽ ऽ	ळा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – म –	म – म –	रे – म –
म्हा ऽ रा ऽ	टी ऽ ऽ ऽ	का ऽ ख ऽ	र ऽ त ऽ
प – म –	ग़ – रे –	सा – सा –	रे – रे –
न ऽ ज ऽ	ड़ा ऽ ऽ ऽ	वो ऽ कि ऽ	तु ऽ मऽ
नि – सा –	सा – – –	रे – – –	ग़ – – –
ब ऽ न ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
– – – –	सा – – –	सा – – –	सा – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

देवी थारा नव दिन रेऽ दस रात्रि, भवानि गरभो रमे रे लोल

(1) *देवी थारो सीस नारेळ री रेख,*
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

(2) *देवी थारी आंख लिंबू री फोड़*
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

(3) *देवी थारी नाक सुआ कसी चोंच (रेख)*
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

(4) *देवी थारा होंट हींगुळ री रेख,*
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

(5) *देवी थारा हात चम्पा रा छोर,*
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

(6) देवी थारा पांय केळई रा खम्ब,
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल
देवी थारा नव दिन रेऽ दश रात्रि
भवानि गरभो रमे रेऽ लोल

देवी! तुम्हारा स्वरूप अलौकिक एवं अद्वितीय है। आपका सिर नारियल जैसा, आँखें नींबू की फाँक जैसी सुडौल सरस हैं, तो नाक सुआ (तोते) की चोंच जैसी सुरेख, सुन्दर है। तुम्हारे होंठ हींगुल (सिंदूर) की तरह लालिमायुक्त हैं। तुम्हारे हाथ चम्पा की लम्बी लचीली कोमल पतली डाली की तरह हैं और पैर केले के खम्ब की तरह सुडौल सुन्दर हैं। हे अलौकिक रूप-स्वरूप वाली जगदम्बा! नौ दिन व दसवीं सुहावनी रात्रि में हमारे साथ गरबा रमिये।

राग - पीलू	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - ग, नि- कोमल एवं शुद्ध

देवी थारा नव दिन रे दशरात्र .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि़ - सा -	रे- रे -	रे - रे -	रे - रे -
दे ऽ वी ऽ	था ऽ रा ऽ	न ऽ व ऽ	दि ऽ न ऽ
रे - म -	ग़ - रे -	सा - नि़ -	नि़ नि़ नि़ नि
रे ऽ ऽ ऽ	दे ऽ स ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ त्र ऽ भ
नि़ - सा -	रे - ग़ -	सा - रे -	रे - म -
वा ऽ नि ऽ	ग ऽ र ऽ	भो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ
ग़ - रे -	सा - नि़ -	सा - - -	सा - - -
मे ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि़ - सा -	रे - रे -	रे - - -	रे - रे -
दे ऽ वी	था ऽ रो ऽ	सी ऽ ऽ ऽ	स ऽ ना ऽ
म म म म	ग़ - रे -	सा - नि़ -	नि़ - नि़
रे ऽ ळ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ख ऽ भ ऽ

नि़ नि़ सा –	रे – ग़ –	सा – रे –	रे – म –
वा ऽ नि ऽ	ग ऽ र ऽ	भो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ
ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – – –	सा – – –
म ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ

विनन्ती

मांग्यो देवो नी म्हारी मात,
अंबेमाता मांग्यो देवो नीऽ
मांग्यो देवो नी म्हारी मात,
माता जी मखऽ मांग्यो देवो नीऽ

(1) द्वार आओ तोमाता फूलड़ा बिछाऊं 2
मोतिड़ा केरा चऊक पुराऊं 2
सातिया सिंदूरी मांग,
माता जी मखऽ मांग्यो देवो नीऽ

(2) अंधो आई न माता ज्योति मांगऽ 2
लंगड़ो आई न माता पगल्या मांगऽ 2
वांजुली खऽ बाळा री आस
माता जी मखऽ मांग्यो देवो नीऽ
मांग्यो देवो नी .....

(3) अंधो जो आयो माता ज्योति लई जाये 2
लंगड़ो जो आयो माता दवड़ी घर जाये 2
वांझुली झुलावऽ पालणा
माता जी मखऽ मांग्यो देवो नीऽ
मांग्यो देवो नी म्हारी मात .....
अंबे माता मांग्यो देवो नीऽ

हे मेरी जगदम्बा! आप सभी मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। आप मेरा मांगा हुआ मुझे दे दीजिये, अर्थात् मेरी इच्छायें सभी पूर्ण कीजिये। आप शीघ्र आइये। आप हमारे यहाँ आइये। हमने आपके स्वागत में फूल बिछाये हैं। मैं आपके स्वागत में तोरण लगाऊँगी, मोतियों के चौक बनाऊँगी, दरवाजे पर सातिया लगाऊँगी, आपको सिंदूर लगाकर आपका श्रृंगार करूँगी। आपके द्वार आकर अंधा आँख मांगता है, लंगड़ा पैर मांगता है और नि:सन्तान संतान की आस लेकर आते हैं। आपने अंधे को आँखें दी, ज्योति दी। लंगड़ा तो दौड़ता हुआ अपने घर गया और बांझ

बच्चे को झूला झुलाने लगी, अर्थात् उसे सन्तान प्राप्त हुई । माता जी आप मेरी भी मनोकामनायें पूर्ण कीजिये।

राग – जयजयवन्ती | ताल – दादरा
थाट – खमाज | स्वर – दोनों निषाद (शुद्ध एवं कोमल)

मांग्यो देवो नी म्हारी मात.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा	– नि़ –	सा – रे	सा – नि़
मां ग्यो ऽ	ऽ दे ऽ	वो ऽ नी	म्हा ऽ री
ध़ – –	ध़ ध़ रे	रे – रे	रे रे रे
मा ऽ ऽ	ऽ त मा	ता ऽ जी	म ख ऽ
सा रे ग	– रे –	नि़ – रे	सा – –
मां ऽ ग्यो	ऽ दे ऽ	वो ऽ ऽ	नी ऽ ऽ

अन्तरा

सा – –	– रे –	ग – ग	ग – ग
द्वा ऽ रे	ऽ आ ऽ	ओ ऽ तो	मा ऽ ता
म म म	– ग –	रे – म	ग – –
फू ल ड़ा	ऽ बि ऽ	छा ऽ ऽ	ऊं ऽ ऽ
सा – –	रे – –	ग – –	ग – –
मो ऽ ति	ड़ा ऽ ऽ	के ऽ ऽ	रा ऽ ऽ
म म म	– ग –	रे – म	ग – –
च ऊ क	ऽ पु ऽ	रा ऽ ऽ	ऊं ऽ ऽ
सा – सा	सा – नि़	सा – रे	सा – नि़
सा ऽ ति	या ऽ सिं	दू ऽ ऽ	री ऽ ऽ
ध़ – –	ध़ – रे	रे – रे	रे रे रे
मां ऽ ऽ	ग ऽ मा	ता ऽ जी	म ख ऽ
सा रे ग	– रे –	नि़ – रे	सा – –
मां ऽ ग्यो	ऽ दे ऽ	वो ऽ ऽ	नी ऽ ऽ

गरभी

(1) हां जी वाळा राजा नऽ कागद मोकल्यो
म्हारा घर बाग देखण आवो
प्यारी लागऽ वो मदन गुजरी
हां जी वाळा थारा बाग ख काई देखणूं 2
म्हारा घर फूली कचनार, प्यारी लाग वो मदन गुजरी

(2) हां जी वाळा राजा नऽ कागद मोकल्यो,
म्हारा कुवो देखण आवो, प्यारी लाग वो मदन गुजरी
हां जी राजा थारा कुआं को काई देखणूं 2
म्हारा घर रतन तळाव, प्यारी लाग वो मदन गुजरी

(3) हां जी वाला राजा नऽ कागद मोकल्यो 2
म्हारा घर हाती देखण आव, प्यारी लाग वो मदन गुजरी
हां जी वाळा थारा हाती को काई देखणूं 2
म्हारा घर गैया न को ठाट, प्यारी लाग वो - - - -

(4) हां जी वाळा राजा नऽ कागद मोकल्यो 2
म्हारा घर कन्या देखण आवो, प्यारी लागऽ वो .....
हां जी वाळा थारी कन्या को काई देखणूं 2
म्हारा घर झूलऽ नंदलाल, प्यारी लागऽ वो मदन गुजरी

(5) हां जी वाळा राजा नऽ कागद मोकल्यो 2
म्हारा घर मैहल देखण आवो, प्यारी लाग वो .....
हां जी वाळा थारा मैहल को काई देखणूं 2
म्हारा घर लंबी पटसाळ, प्यारी लागऽ वो मदन गूजरी .....

नवदुर्गा में गरबा नृत्य में देवी गीतों के साथ ही कृष्ण की रास लीलाओं और भक्ति के गीत और नृत्योत्सव का भी चलन है। नायक ग्वाला-ग्वालन को अपनी समृद्धि दर्शा कर आकर्षित करना चाहता है, परन्तु ग्वालन उसके किसी भी प्रलोभन में नहीं आती और उसके ऐश्वर्य से श्रेष्ठ अपने सुख-साधनों का वर्णन करती है। मधुर हास-परिहास और परस्पर आकर्षण का चित्रण है।

ग्वाला कहता है- मेरे यहाँ सुंदर उद्यान हैं, तुम देखने आओ। ग्वालन सहजता से कह देती है, मेरे यहाँ भी कचनार फूली है। फिर ग्वाला कहता है- मेरे यहाँ हाथी हैं। ग्वालन का उत्तर था- मेरे घर गायों के ठाठ हैं, यदि आपके महल हैं तो मेरे यहाँ सुन्दर बड़ी-बड़ी पटसाल

यानी भवन हैं। और जो कहते हो मेरे यहाँ कन्या देखने आओ, तो मेरे यहाँ पालने में नंदलाल झूल रहे हैं। भला मैं क्यों आऊं?

राग – गौड़ मल्हार
थाट – बिलावल
ताल – दादरा चलत
स्वर – सभी शुद्ध स्वर

हां जी वाळा राजा नऽ कागद .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प प प	प प प	म – प	– म –
हां ऽ जी	वा ऽ ळा	रा ऽ जा	ऽ न ऽ
ग – रे	म ग –	रे – ग	सा – –
का ऽ ऽ	ग द ऽ	मो ऽ क	ल्या ऽ ऽ
ध़ – सा	सा – सा	रे म ग	रे सा सा
म्हा ऽ रा	घ ऽ र	बा ऽ ग	दे ख ण
रे – रे	– प –	प – म	– ग –
आ ऽ ऽ	ऽ व ऽ	प्या ऽ री	ऽ ला ऽ
रे – म	म ग ग	रे ग –	सा – –
ग ऽ वो	म द न	गु ज ऽ	री ऽ ऽ
प प प	प प प	म – प	– म –
हां ऽ जी	वा ऽ ळा	था ऽ रा	ऽ बा ऽ
ग – रे	म ग –	रे – ग	सा – –
ग ऽ को	का ई ऽ	दे ऽ ख	णूं ऽ ऽ
ध़ – सा	सा सा सा	रे म ग	रे सा –
म्हा ऽ रा	घ ऽ र	फू ली ऽ	क च ऽ
रे – –	– प –	प – म	– ग –
ना ऽ ऽ	ऽ र ऽ	प्या ऽ री	ऽ ला ऽ
रे – म	म ग ग	रे ग –	सा – –
ग ऽ वो	म द न	गु ज ऽ	री ऽ ऽ

गरबा

चांदा थारी चाँदणी सी रात राज
चाँदणी सी रात राज

रमवा जो गई सीता थी सयर मंऽ हो राज 2

(1) रम्या-रम्या घड़ी दुई चार राज,
घड़ी दुई चार राज,
एतरा मंऽ आई गई बैरण (भोलई) नींदुली हो राज

(2) रमी-रमी घर सा आया राज,
घर सा आया राज,
खिड़की सी खोलो राज,
दरवज्जो सो खोलो राज,
रमवा जो गई थी सीता सयर मंऽ हो राज

(3) जळता-बळता स्वामी जी उठ्या राज
स्वामी जी उठ्या राज
खूटी मंऽ का हेड़्या चाँदी चोपका हो राज
मार्या-मार्या दुई अरू चार राज,
दुई अरू चार राज,
दिन तो निकाळूं थारा बाप य्हां हो राज

(4) रड़ता -कुढ़ता मायक्या सिधार्या राज
मायक्या सिधार्या राज
माय मिल्या बाप मिल्या,
कहो बेटी मन की बात,
काय खऽ मार्या चाँदी चोपका हो राज

(5) तुम्हारी बेटी हात की चालाक राज,
हात की चाळक राज,
मूंडा की उतार राज, मुंडा की उतार राज
इ कारण मार्या चांदी चोपका हो राज
चांदा थारा चाँदनी सी रात राज .....

पूर्णिमा के चाँद की चाँदनी अत्यन्त सुहावनी लग रही है और शहर में नवरात्रि के गरबे खेले जा रहे हैं। नव विवाहिता भी सखियों के साथ शहर में गरबे खेलने-देखने में व्यस्त है। कुछ देर बाद थकान से नई-नवेली को देखते-देखते बैरन नींद आ गई। वह नींद खुलने पर घर पहुँची और स्वामी जी को दरवाजा खोलने के लिये आवाज दी। अनावश्यक देरी होने पर स्वामी जी पत्नी पर नाराज हुए और क्रोध में एक-दो चाबुक मार दिये। रोते हुए वह अपने माता-पिता के पास पहुँची, तो उन्होंने मारने का कारण पूछा। स्वामी जी ने शिकायत करते हुये कहा कि आपकी

बेटी कार्य ठीक नहीं करती और बोलने का तरीका भी ठीक नहीं है–बस इसी कारण मारा। भला वे और क्या कारण अपनी बेचैनी को छुपाने के लिये बतलाते! थोड़ी देर बात माता–पिता की समझाईश पर सुलह हो गई और वे प्रेम से अपने घर लौट गये।

सुख–शांतिमय व्यवस्थित जीवन के लिये समय की पाबंदी और अनुशासन भी आवश्यक है। मनोरंजन के साथ ही मर्यादा और अपने घर की रीति–नीति का अनुकरण करना भी दाम्पत्य जीवन की आवश्यक शर्त है।

राग – बिलावल ताल – दादरा चलत
थाट – बिलावल स्वर – सभी शुद्ध

चांदा थारी चांदणी सी रात .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – रे	सा – नि़	सा – ग	ग म –
चां ऽ दा	था ऽ री	चां ऽ द	णी सी ऽ
प – म	ग – सा	सा – ग	ग म –
रा ऽ त	रा ऽ ज	चां ऽ द	णी सी ऽ
प – म	ग – रे	रे ग रे	– ग –
रा ऽ त	रा ऽ ज	र म वा	ऽ जो ऽ
म – प	म ग रे	रे ग ग	रे नि़ –
ग ई थी	सी ऽ ता	स य र	म हो ऽ
सा – –	सा – –	सा – रे	सा – नि़
रा ऽ ऽ	ऽ ज ऽ	र ऽ म्या	र ऽ म्या
सा ग –	ग – म	प – म	ग – सा
घ ड़ी ऽ	दु ऽ ई	चा ऽ र	रा ऽ ज
सा ग –	ग – म	प – म	ग – रे
घ ड़ी ऽ	दु ऽ ई	चा ऽ र	रा ऽ ज
रे ग –	रे ग –	म – प –	म ग –
ए त ऽ	रा मं ऽ	आई गई ऽ	भो ळ ई
रे – ग	रे – नी़	सा – सा	सा सा सा
नीं ऽ दु	ली ऽ हो	रा ऽ ऽ	ऽ ज ऽ

देवी

नवदुर्गा की रात चांदणी, गरभो खेलण गई 2
ओ सखि मनऽ नथ छोगा की खोई 2
(1) सासू बी ढूंढ म्हारी ससरा जी ढूंढऽ.....2
देवर करऽ थई-थई, देवर करऽ थई-थई वो सखि.....
(2) जेठ बी ढूंढ म्हारा, जेठाणी बी ढूंढ 2
भतीजोऽ करऽ थई-थई, ओ सखि मन नथ छोगा.....
(3) देवर बी ढूंढ म्हारा, देराणी बी ढूंढऽ
नात्यो करऽ थई-थई 2
ओ सखि मनऽ नथ छोगा की खोई ।। नव .....
(4) नणद बी ढूंढ म्हारी, नणदई बी ढूंढ 2
भाणिज करऽ थई-थई, वो सखि मन नथ .....
(5) छोरो बी ढूंड म्हारी छोरी बी ढूंढ 2
स्वामी कर थई-थई, ओसखि मनऽ नथ .....
(6) हऊं बी ढूंढू म्हारी सई न बी ढूंढ 2
नथ म्हारी मख मिली गई, ओ सखि मनऽ नथ छोगा की पाई .....
नवदुर्गा की रात चांदणी गरभो खेळण गई .....

नवरात्रि के अवसर पर बालिकायें और महिलायें गरबा मांड कर उसके आस-पास प्रतिदिन रात्रि में नृत्य करती हैं। नव दिनों तक देवी के आगमन पर हर्ष-उल्लास और उत्साह पूर्वक पूरा गाँव उत्सव मनाता है। देवी के गरबा और जवारा गीतों के साथ ही विविध हास-परिहास पूर्ण नृत्य-गीत, प्रहसन आदि द्वारा दुर्गोत्सव मनाया जाता है।

स्त्रियाँ और बालिकायें नये वस्त्राभूषणों से सज्जित होकर उत्सव में सम्मिलित हो देवी को प्रसन्न करती हैं। प्रस्तुत गीत में गरबा खेलते समय नथ खो जाने की सूचना एक सखी अपनी दूसरी सहेली को देती है और उसे ढूँढने में सहायता लेती है- साथ ही परिवार के सदस्य भी नथ ढूँढने का प्रयास करते हैं। नाराजी भी व्यक्त करते हैं- कीमती आभूषण को लापरवाही पूर्वक खो देने के कारण। किन्तु तभी उस पीड़िता को अपनी खोई हुई नथ मिल जाती है और खुशी एवं उत्साह में पुनः सब सखियाँ गरबा खेलने में व्यस्त हो जाती हैं।

राग - बिलावल　　ताल - कहरवा
थाट - बिलावल　　स्वर - सभी शुद्ध

नवदुर्गा की रात चांदणी गरभो .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0– – –
रे – ग ग	ग – – –	ग – – –	ग – – –
न ऽ व ऽ	दु ऽ ऽ ऽ	र्गा ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ
रे – ग ग	ग ग ग ग	ग – ग –	रे – रे –
रा ऽ ऽ ऽ	त ऽ चां ऽ	द ऽ णी ऽ	ग ऽ र ऽ
ग – – –	ग – प –	म – ग –	रे – रे –
भो ऽ ऽ ऽ	खे ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ण ऽ	ग ऽ ई ऽ
रे – रे –	रे – ग –	रे – सा –	ध़ – ध़ –
ऽ ऽ ओ ऽ	स ऽ खि ऽ	म ऽ न ऽ	न ऽ थ ऽ
रे – – –	ग – – –	रे – – –	सा – सा –
छो ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ	खो ऽ ई ऽ
सा – – –	सा – – –	सा – – –	सा – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग – ग –	प प प प	ध – ध –	ग – ग –
सा ऽ ऽ ऽ	सू ऽ बी ऽ	ढूं ऽ ढ ऽ	म्हा ऽ रा ऽ
ग – ग –	प प प प	ध – ध –	ग – ग –
स ऽ स ऽ	रा ऽ जी ऽ	ढूं ऽ ऽ ऽ	ढ ऽ ऽ ऽ
ग – – –	ग – ग –	रे – ग –	रे – सा –
दे ऽ ऽ ऽ	व ऽ र ऽ	क ऽ र ऽ	थ ऽ ई ऽ
रे – रे –	रे – – –	रे – – –	रे – – –
थ ऽ ई ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प प प प	प – प –	ध – ध –	प – प –
दे ऽ व र	क ऽ र ऽ	थ ऽ ई ऽ	थ ऽ ई ऽ
रे – रे –	रे – ग –	रे – सा –	ध – ध –
ऽ ऽ ओ ऽ	स ऽ खि ऽ	म ऽ न ऽ	न ऽ थ ऽ
रे – – –	ग – – –	रे – – –	सा – सा –
छो ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ	खो ऽ ई ऽ

आरती

रूढ़ो गरभो रूढ़ो पेराओ श्याम चूड़ो,
गरभा राम राम कयजो,
म्हारी काया निरमळ हुजो
पयली जो आरती पड़वां की वो अम्बे माड़ी
म्हारा बाळा को पयलो उपास
बाळो म्हारो ब्रह्मचारी
ब्रह्मचारी रे दीनानाथ, बाळो म्हारो ब्रह्मचारी।। रूढ़ो .....
दूसरी जो आरती दूज की वो अम्बे माड़ी
म्हारा बाळा को दूजो उपास, बाळो म्हारो ब्रह्मचारी,
दूसरी जो आरती दूज की वो अम्बे माई,
जेका तो रहो रे उपास, बाळो म्हारो ब्रह्मचारी,
ब्रह्मचारी रे दीनानाथ बाळो म्हारो ब्रह्मचारी।। रूढ़ो .....
तीसरी जो आरती .....

उपरोक्तानुसार नौ दिनों और उसके नव व्रतों का उल्लेख करते हुए आरती गीत आगे बढ़ता जाता है।

सरस सुंदर गरबा मंडाया गया है। सुंदर गरबा मंडप सजा हुआ है, जिसमें सभी सुसज्जित होकर सोत्साह आये हैं और गरबे खेलने के लिये उत्सुक और तत्पर हैं। कृष्ण स्वयं गरबा-रास-मंडल की सखियों के आभूषण ले आये, सभी परस्पर मिलकर खुश होते हैं। राम-राम का अभिवादन करते हैं। देवी के आँगन में गरबा खेलने से तन और मन सभी निर्मल होते हैं। नवरात्रि में सभी ने व्रत रखा है। देवी की आरती सभी मिलकर करते हैं और जगदम्बा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

राग - बिलावल　　ताल - कहरवा
थाट - बिलावल　　स्वर - गंधार कोमल, शुद्ध

रूढ़ो गरभो रूढ़ो, पेराओ श्याम .....

स्थाई

ध़ - सा -	सा - सा -	सा - सा -	सा - सा -
रू ऽ ढ़ो ऽ	ग ऽ र ऽ	भो ऽ ऽ ऽ	रू ऽ ढ़ो ऽ

– सा – –	ध़ – ध़ –	सा सा सा –	सा – सा –
ऽ पे ऽ ऽ	रा ऽ ओ ऽ	श्या ऽ म ऽ	चू ऽ ड़ो ऽ
सा सा सा –	ध़ – ध़ –	सा – सा –	सा – सा –
ग र ऽ भो	रा ऽ म ऽ	रा ऽ म क	य ऽ जो ऽ
सा – सा –	ध़ – सा –	सा सा सा सा	सा – सा –
म्हा ऽ री ऽ	का ऽ या ऽ	नि र म ळ	की ऽ जो ऽ
– – – –	ध़ – ध़ –	सा – सा –	सा – सा –
ऽ ऽ ऽ ऽ	प ऽ य ऽ	ली ऽ जो ऽ	आ ऽ र ऽ
रे – – –	म म म म	ग ग ग ग	रे – सा –
ती ऽ ऽ ऽ	प ऽ ड़ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	की ऽ वो ऽ
रे – ग़ –	रे – ग़ –	रे – सा –	सा – – –
अं ऽ ऽ ऽ	बे ऽ ऽ ऽ	मा ऽ ऽ ऽ	डी ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ध़ – सा –	सा – सा –	सा – सा –
म्हा ऽ रा ऽ	बा ऽ ळा ऽ	को ऽ ऽ ऽ	प ऽ य ऽ
रे – रे –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –	सा – सा –
लो ऽ उ ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ	बा ऽ ळो ऽ
रे – रे –	ग़ – ग़ –	रे – रे –	सा – सा –
म्हा ऽ रो ऽ	ब ऽ म्ह ऽ	चा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ध़ – सा –	सा – सा –	सा – सा –
ब्र ऽ म्हऽ	चा ऽ री ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ
रे – रे –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –	सा – सा –
ना ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	थ ऽ ऽ ऽ	बा ऽ ळो ऽ
रे – रे –	ग़ – ग़ –	रे – रे –	सा – सा –
म्हा ऽ रो ऽ	ब्र ऽ म्ह ऽ	चा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ

होली

काजळ की डब्बी खोलो नणद बाई,
मयनो आयो फागुण कोऽ 2
(1) बिन्दी तो म्हारी जूनी–पुराणी 2
टीको नवो घड़ाई द्यो नणद बाई
मयनो आयो फागुण को ।। काजळ की.....

(2) झुमकी तो म्हारी जूनी पुराणी 2
कुंडल नवा घड़ई द्यो नणद बाई
मयनो आयो फागुण को ....काजळ की .....

(3) तुस्सी तो म्हारी जूनी-पुराणी .....2 तुस्सी तो म्हारी .....
माळा नवी घड़ावो नणद बाई, मयनो आयो फागुण को

(4) चूड़ी तो म्हारी जूनी-पुराणी 2
कंगण नवा घड़ई द्यो नणद बाई
मयनो आयो फागुण को .....

(5) रमझोळ तो म्हारा जूना-पुराणा 2
पायळ नवी मंगाड़ो नणद बाई
मयनो आयो फागुण को .....
काजळ की डब्बी .....

(6) छायल तो म्हारी जूनी-पुराणी 2
चूनड़ नवी मंगाड़ो नणद बाई, मयनो आयो फागुण को
काजळ की डब्बी खोलो नणद बाई
मयनो आयो फागुण को .....

वसन्त ऋतु की फागुनी बयार वातावरण में उत्साह-उमंग का संचार करती है। प्रकृति में भी नवरंगों का, नव कोपलों का, पुष्पों का आवरण उसे नया रूप प्रदान कर रहा है- तो हमारा मन भी उल्लसित हो नये वस्त्राभूषण धारण करने के लिये उत्सुक हो रहा है।

प्रस्तुत गीत में पारिवारिक जीवन में रिश्तों की मधुरता और मर्यादा के दर्शन होते हैं। भौजाई अपनी ननद से फागुन की मस्ती भरी बयार से उत्फुल्लित हो नव श्रृंगार करने की इच्छा प्रगट करती है और मर्यादाओं का पालन करते हुये नवीन वस्त्र-आभूषण मंगवा देने का आग्रह करती है।

ये पर्व-त्योहार जीवन के विविध रसों का, भावों का अनुभव कराते हैं। जीवन के सुख-दुख, आत्मीयता को समझने का अवसर प्रदान करते हैं, जिससे नये लोगों (ससुराल) से संबंधों में मधुरता और प्रागाढ़ता आती है।

राग - पीलू　　ताल - चलत दादरा
थाट - काफी　　स्वर - सभी शुद्ध कोमल स्वर

काजल की डब्बी खोलो नणद बाई .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़् नि़् नि़्	नि़् सा –	सा – –	सा सा –
का ज ल	की ऽ ऽ	ड ऽ ऽ	बा ऽ ऽ
नि़् – सा	– रे –	सा – सा	नि़् – प़्
खो ऽ लो	ऽ न ऽ	ण ऽ द	बा ऽ ई
नि़् – रे	रे – –	ग़् – रे	रे – –
म ऽ य	नो ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
नि़् – –	सा – –	सा – –	सा – –
फा ऽ ऽ	गु ऽ ण	को ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	ग म –	प – प	प – प
बिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ	तो ऽ ऽ	म्हा ऽ री
ग़् म ध़्	– प –	ग़् – रे	सा – सा
जू – ऽ नी	ऽ पु ऽ	रा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ
रे – –	रे – –	रे – –	ग़् – रे
टी ऽ ऽ	को ऽ ऽ	न ऽ ऽ	वो ऽ घ
सा सा रे	– नि़् –	सा – सा	रे – रे
ड़् ई द़्यो	ऽ न ऽ	ण ऽ द	बा ऽ ई
नि़् – रे	रे – –	ग़् – रे	रे – –
म ऽ य	नो ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
नि़् – –	सा – –	सा – –	सा – –
फा ऽ ऽ	गु ऽ ण	को ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

आवसे रे पिया फागुण मयनो
हमरा वीरा जी लेण आवसे
कन्हैया नऽ बंसी बजाई 2
बंसी बजाई न राधा मोही रे
कन्हैया नऽ बंसी बजाई

(1) मति जाओ गोरी फागुण मयना 2
किनका सी खेलां हम होळ्ई
कन्हैया नऽ बंसी बजाई
किन पर नाखां पिचकारी
कन्हैया नऽ बंसी बजाई
(2) काकी-भाभी सी पिया खेलो होळ्ई 2
सौकन पर पिचकारी
कन्हैया नऽ बंसी बजाई
सौकन पर पिचकारी, कन्हैया न बंसी बजाई
आवसे रे पिया फागुण मयनो.....

फागुन की फागुनी बयार मन को प्रफुल्लित कर देती है। उल्लास और आनन्द सृष्टि के कण-कण में समा जाता है। प्रिय को उलाहना देने, शिकवा-शिकायत करने और चुटकी लेने में आनंद होता है। सो प्रियतम को परेशान करने वाली बात कहकर प्रिया उसके मन की व्याकुलता और अपने प्रति प्रेम के भाव का अनुभव कर धन्य हो उठती है। वह फागुन में पीहर जाने की बात कहकर उसे प्रेम में परेशान देख खुश होती है। साथ ही विनोदपूर्वक चिढ़ाते हुए अन्य स्त्री के प्रति पति के जरा से भी आकर्षण से उत्पन्न ईर्ष्या को भी व्यक्त कर देती है। फागुन में मेरी अनुपस्थिति में आप अपनी काकी-भाभी से होली खेल लीजिये और सौतन पर रंग डाल अपने मन की कीजिये ना! मुझे किसी से भी और आपसे भी कोई मतलब नहीं है, मैं तो अपने पीहर जाकर खुश रहूँगी। पर भला फागुन में रंगों के त्योहार पर प्रियतम को छोड़कर जाना संभव है क्या? नहीं ना!

राग - पहाड़ी | ताल - दादरा
थाट - बिलावल | स्वर - सभी शुद्ध, सौंदर्य वर्धक कोमल स्वर

आवसे रेऽ पिया फागुण मयनो .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा	सा सा रे	ग प प	प प -
आ ऽ व	ऽ से ऽ	रे ऽ ऽ	पि या ऽ
ग प प	ध प प	ग ग ग	ग - -
फा ऽ ऽ	गु ण ऽ	म य ऽ	नो ऽ ऽ

सा रे ग	– रे –	ग – रे	सा ध़ –
ह म रा	ऽ वी ऽ	रा ऽ जी	ले ण ऽ
ध़ रे रे	रे रे सा	रे ग प	ग – –
आ व से	ऽ क ऽ	न्है या ऽ	न ऽ ऽ
ग – रे	– सा –	ग रे ग	ग – –
बं ऽ सी	ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ
सा – सा	– रे –	सा नि़ नि़	ध़ ध़ –
बं ऽ सी	ऽ ब ऽ	जा ई न	रा धा ऽ
रे रे रे	– रे सा	रे ग प	ग – –
मो ही रे	ऽ क ऽ	न्है या ऽ	न ऽ ऽ
ग – रे	– सा –	ग रे ग	ग – –
बं ऽ सी	ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ

अन्तरा

सा सा सा	सा – रे	ग – प	प – प
म ऽ ति	जा ऽ ऽ	वो ऽ ऽ	गो ऽ री
ग प प	ध प प	ग ग़ ग	ग – –
फा ऽ ऽ	गु ण ऽ	म य ऽ	ना ऽ ऽ
सा रे ग	– रे –	ग – रे	सा ध़
कि न का	ऽ सी ऽ	खे ऽ ला	ह म ऽ
ध़ रे रे	रे रे सा	रे ग प	ग – –
हो ऽ ळ्ई	ऽ क ऽ	न्है या ऽ	न ऽ ऽ
ग – रे	– सा –	ग रे ग	ग – –
वं ऽ सी	ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ
प प प	प प म	ध ध ध	प म म
कि ऽ न	प ऽ र	ना खां ऽ	पि ऽ च
ग रे ग	– रे सा	रे ग प	ग – –
का ऽ री	ऽ क ऽ	न्है या ऽ	न ऽ ऽ
ग – रे	– सा –	ग रे ग	ग – –
बं ऽ सी	ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ	ई ऽ ऽ

कैलाश मंऽ फाग मच्यो रीऽ ऽ ऽ
शिव गवराऽ खेल होळ्ई 2

(1) वाघम्बर की झोळ्ई बणाई 2
बिच्छू तुतैयों की मगजी लगाई 2
सर्प का बंद कस्यो रीऽ ऽ ऽ
शिव गवरा खेलऽ होळ्ई।। कैलास मंऽ .....

(2) घोळ भस्म को रंग बणायो 2
गंगाजल सी दे घुटवायो 2
केसरियो रंग बण्यो रीऽ ऽ ऽ
शिव गवरा खेलऽ होळ्ई ।। कैलास मंऽ .....

(3) शिव जी का हात कंचन पिचकारी 2
भरी पिचकारी मुख पर डाली 2
भींजी गई गवरा प्यारीऽऽऽ
शिव गवरा खेलऽ होळ्ई ।। कैलास मंऽ .....

(4) भूत-प्रेत सब ताळ बजावऽ 2
डाकिनी-सर्पिणी होळ्ई गावऽ 2
शिव शंकर मन मंऽ हंस रीऽऽऽ
शिव गवरा खेलऽ होळ्ई ।।
कैलाश मंऽ फाग मच्यो रीऽऽऽ
शिव गवरा खेलऽ होळ्ई।।

ऋतुराज बसन्त के आगमन पर उनके स्वागत में सारी प्रकृति ही अलंकृत हो उठती है। शीतल,मंद सुवासित पवन मन को उमंग से भर देती है। वृक्षों-बेलों-पौधों में नवसञ्चार हो जाता है। नई कोपलें-कलियाँ-फूल प्रकृति का नवश्रृंगार करते हैं। ऐसी सुहावनी ऋतु में, मन में उल्लास की तरंगें उठती हैं। फागुनी बयार सबको मस्ती से भर देती है और ऐसे में हमारा होली त्योहार आता है। रंग-बिरंगे फूलों से सजी प्रकृति को देख मनुष्य तो क्या देवी-देवता भी एक दूसरे को रंग कर प्रफुल्लित होते हैं। भस्मी लगाकर, धुनी रमाने वाले और समाधि में लीन रहने वाले भूतभावन भोलेनाथ भी फागुनी बयार से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। राधा-कृष्ण, मर्यादा पुरुषोत्तम राम-सीता की होली से निराली शिव-पार्वती की होली की धूम कैलाश में मची है। उन्होंने रंग रखने के लिये वाघम्बर की झोली बनाई है, जिसमें बिच्छू-ततैयों की मगजी और सर्पों के बंद लगे हैं। भस्म को गंगाजल मिलाकर घोटा गया, जिससे अनोखा केशरिया रंग तैयार हो गया। इस अद्भुत होली में भूत- प्रेत ताल दे रहे हैं, डाकिनी-सर्पिणियाँ होली गीत गा रही हैं

और देवों के देव महादेव मन ही मन मुस्कुरा रहे हैं। अनोखी अलौकिक होली का वर्णन इस गीत में है।

राग – पीलू　　ताल – कहरवा
थाट – काफी　　स्वर – ग ध नि कोमल

कैलास मंऽ फाग मच्यो रीऽ ऽ ऽ .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
			सां सां
			कै ला
सां सां रें सां	नि ध प म	ग म प ध	प ग ग रे
ला ऽ स म	फा ऽ ग म	च्यो ऽ री ऽ	ऽ शि ऽ व
ग प म प	ग रे सा रे	ग ग सा सा	– – – –
ग व रा ऽ	खे ऽ ल ऽ	हो ऽ ळ ई	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

प प सां सां	सां सां रें सां	ध ध नि नि	सां नि ध प
वा ऽ घ ऽ	म्ब र की ऽ	झो ऽ ल ई	ब णा ऽ ई
प प सां सां	सां सां रें सां	ध ध नि सां	नि ध प प
बि ऽ च्छू तु	तै ऽ ईन कीऽ	म ग जी ल	गा ऽ ई ऽ
प प सां सां	सां सां प म	प प सां सां	नि ध प म
स ऽ र्प का	ऽ ऽ ओ हो	स ऽ र्प का	बं ऽ द ल
ग म प ध	प ग ग रे	ग प म प	ग रे सा रे
स्यो ऽ री	ऽ शि ऽ व	ग व रा ऽ	खे ऽ ल ऽ
ग ग सा सा	सा सा सां सां		
हो ऽ ल ई	ऽ ऽ ऽ ऽ		

गणगौर – गणपति

गणपति लागां थारा पांय,
रना देवी आया पावणा जीऽ ऽ 2

(1) कईं माता अपणा सयर किरसाण बस जीऽ 2
कईं घऊंड़ा (गऊंड़ा) सा बेगा लई आव, रना देवी आया.....
(2) कईं माता अपना सयर झमराळ्यो बस जीऽ
कईं कुरकई सी बेगा लई आव, रना देवी आया.....
(3) कईं माता अपणा सयर कहार बस जीऽ
कईं मेवो सी बेगा लई आव रना देवी आया.....
(4) कईं माता अपणा सयर सुतार बस जीऽ
कईं बाजुट सो बेगा लई आव, रना देवी आया.....
(5) कईं माता अपणा सयर बजाजी बस जीऽ
कईं बन्नी सी बेगा लई आव, रना देवी आया पावणा
(6) कईं माता अपणा सयर कसार्यो बस जीऽ
कईं आरती सी बेगा लई आव, रना देवी आया .....
(7) कईं माता अपणा सयर पिंजार्यो बस जीऽ
कईं बाती सी बेगा लई आव, रना देवी आया .....
(8) कईं माता अपणा सयर वाण्यो बस जीऽ
कईं कपूर सो बेगा लई आव, रना देवी आया .....
(9) कईं माता अपणा सयर मंऽ तेली बस जी 2
कईं तेल सो बेगा लई आव, रना देवी.....
(10) कईं माता अपणा सयर मंऽ माळ्ई बस जीऽ
कईं फूलड़ा (माळा) सा बेगा लई आव, रना देवी.....
(11) कईं माता अपणा सयर तम्बोळ्ई बस जीऽ
कईं पान सा बेगा लई आव, रना देवी .....
गणपति लागां थारा पांय, रना देवी आया पावणा जी .....

कोई शुभ या कार्य व्रत-अनुष्ठान, पूजन करते हैं तो कार्य सिद्धि के लिये सर्वप्रथम गणेश जी को स्मरण किया जाता है। आमंत्रित कर सर्वप्रथम उनका स्वागत-सत्कार किया जाता है। गणगौर 9-10 दिनों तक चलने वाला आनुष्ठानिक पर्व है, जिसमें संपूर्ण गाँव सम्मिलित होता है और समाज के हर वर्ग के लोगों की भागीदारी होती है। सबकी अपनी-अपनी जवाबदारियाँ होती हैं। गणेश जी रना देवी के आने के पूर्व की तैयारियों से लेकर दस दिनों तक चलने वाले इस महान गणगौर व्रतोत्सव के हर कार्य में उपस्थित रहकर सबसे कार्य करवा लें और निर्विघ्न उत्साह पूर्वक उत्सव सम्पन्न हो, यह कामना की जाती है।

राग – भीमपलास | ताल – कहरवा
थाट – काफी | स्वर – ग़ नि़ कोमल

गणपति लागां थारा पांय .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – ग़ –	रे – सा –	नि़ – सा –	रे ग़ सा रे
ग ऽ ण ऽ	प ऽ ति ऽ	ला ऽ गां ऽ	था ऽ रा ऽ
ग़ – – –	रे – नि़ –	सा – रे रे	रे ग़ सा रे
पां ऽऽऽ	य ऽ र ऽ	नु ऽ बा ई	आ ऽ या ऽ
ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – सा –	सा – सा –
पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णी ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा ग़ रे	सा – नि़ नि़	नि़ – सा –	रे रे सा रे
मा ऽ ता ऽ	अ ऽ प णा	स ऽ य र	मं ऽ कि र
ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – सा –	सा – सा –
सा ऽ ण ऽ	व ऽ स ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ क ईं
सा – ग़ –	रे – सा –	नि़ – सा –	रे ग़ सा रे
घ ऽ ऊं ऽ	ड़ा ऽ सो ऽ	बे ऽ गा ऽ	ल ऽ ई ऽ
ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – रे –	रे ग़ सा रे
आ ऽ ऽ ऽ	व ऽ र ऽ	नु ऽ बा ई	आ ऽ या ऽ
ग़ – रे –	सा – नि़ सा	सा – सा –	सा – सा –
पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णी ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

आगमन

फागुण फरक्यो न चइत लागियो
म्हारी रनुबाई जोव छे वाट, असी रूढ़ी ग्यारस
वीरो म्हारो आवसे (वीरो कवं आवसे .....)

(1) कि खेत को हलणो किरसाण भाई भूली गयो

ओको लगी गयो घऊंड़ा सी ध्यान,
असी रूढ़ी ग्यारस, वीरो म्हारो आवसे .....

(2) कि सुपड़ा बणवणो झमराळ्यो भाई भूली गयो
ओको लगी गयो कुरकई सी ध्यान
असी रूढ़ी ग्यारस, वीरो म्हारो आवसे

(3) कि घड़ीला बणावणो कुम्हार्‌यो भाई भूली गयो
ओको लगी गयो गरभी सी ध्यान
असी रूढ़ी ग्यारस वीरो कवं आवसे

(4) कि रूई धुणणो पिंजार्‌यो भाई भूली गयो
ओको लगी गयो बाती सी ध्यान, असी रूढ़ी .....

(5) कि हाट को करणो वाण्यो भाई भूली गयो
ओको लगी गयो वन्नी सी ध्यान, असी रूढ़ी .....

(6) कि मिठाई को बणावणो हलवाई भाई भूली गयो
ओको लगी गयो मेवा सी ध्यान

(7) कि बासण घड़णो कसार्‌यो भाई भूली गयो
ओको लगी गयो दीया सी ध्यान, असी रूढ़ी ग्यारस
वीरो म्हारो आवसे .....

फागुन मास फरफरा कर फूर्ति से बीता जा रहा है। होली दहन के बाद चैत्र माह प्रारंभ हो गया है, नवरात्र प्रारंभ होने को है। रनुबाई गणगौर पर्व हेतु पीहर जाने के लिये उत्सुक है और भाई की प्रतीक्षा कर रही हैं कि वीरा लेने कब आयेगा। गणगौर की तैयारियों में सभी ग्रामवासी व्यस्त हो गये हैं। नौ दिन रनुबाई–धणियेर राजा और सभी देवी–देवताओं का गाँव में रहवास होगा। सो, आनन्दोत्सव की तैयारियों में लोगों ने अपने अन्य कार्य स्थगित कर दिये हैं और गणगौर की तैयारियों में सब कुछ भूल कर व्यस्त हो गये हैं।

राग – भीमपलास　　ताल – कहरवा
थाट – काफी　　स्वर – ग़ नि़ कोमल

गणपति लागां थारा पांय फागुन फरक्यो नऽ चाइत

स्थाई

नि़ सा नि़ प़	नि़ – सा सा	– – – –	रे – नि़ –
फा ऽ गु ण	फ ऽ र क्यो	ऽ ऽ ऽ ऽ	न ऽ च ऽ

सा – रे –	ग़ – रे –	सा – रे रे	ग़ म ग़ –
ई ऽ त ऽ	ला ऽ गि ऽ	यो ऽ म्हा री	र नु बा ई
नि़ – ग़ –	ग़ – रे सा	नि़ – प़ प़	नि़ सा नि़ प़
जो ऽ ऽ ऽ	व ऽ छे ऽ	वा ऽ ऽ ट	अ सी रू ढ़ी
नि़ – सा –	– – सा –	नि़ नि़ सा रे	ग़ – रे –
ग्या ऽ र ऽ	ऽ ऽ स ऽ	वी रो म्हा रो	आ ऽ व ऽ
सा – – –	– – सा –		
से ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ		

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ सा नि़ प	नि़ – सा सा	– – रे –	नि़ नि़ सा रे
खे ऽ त को	ह ऽ ल णो	ऽ ऽ कि र	सा ण भा ई
ग़ – ग़ रे	सा – रे रे	ग़ म ग़ रे	नि़ – नि़ –
भू ऽ ली ग	यो ऽ ओ को	ल गी ग् यो	घ ऽ ऊं ऽ
ग़ – रे –	सा – नि़ –	प़ नि़ सा	नि़ प़ नि़
ड़ा ऽ सी ऽ	ह्या ऽ ऽ	ऽ न अ सी	रू ढ़ी ग्या ऽ
सा – – –	सा – – –	नि़ नि़ सा रे	ग़ – रे –
र ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ	वी रो म्हा रो	आ ऽ व ऽ
सा – – –	– – सा –		
से ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ		

तपेश्वरी (भिक्षा)

भर डोंगर मंऽ झूला बंध्या वो, म्हारी बाई झुलवा जाय जी,
झूलत जो झूलत तपेसरी आई माता, हम खऽ भिक्षा देओ जी
थाळ भरी मोतिड़ा रनुबाई न लिया,
आज की भिक्षा लेओ जी
काई करां वो थारा माणक मोती
अन्न की भिक्षा देओ जी
खेत नी वायो, खळो नी घायो,
काय की भिक्षा देवा जी

आवसे रे चईत को मयनो
जासा हमारा पीयर जी
लावसां रे घऊंड़ा री बाळद
तवं जाई भिक्षा देवां जी

गाँव में तालाब किनारे वृक्ष पर झूला बंधा है, जिसपर रनुबाई झूलने जाती हैं। झूलते-झूलते ही तपेश्वरी देवी गौरा आई और उन्होंने भिक्षा मांगी। रनुबाई हीरे मोती-माणक भरा थाल लेकर भिक्षा देने आईं। गौरा देवी ने कहा कि मैं तुम्हारे माणिक मोतियों का क्या करूँगी मुझे तो अन्न की भिक्षा चाहिये, अर्थात् गेहूँ, ताकि जवारों के रूप में देवियाँ पृथ्वी पर आ सकें। रनुबाई गृहिणी उन्हें कहती हैं कि अभी तो खेतों में गेहूँ की बोवनी नहीं की, खलों में दावण नहीं चली, भला आपको अन्न की भिक्षा कैसे दूँ। हाँ, चैत्रमाह आने पर हम अपने पीहर जायेंगे और तब तक गेहूँ की बहुत फसल आ जायेगी, हम बाळद (बोगी?) भरकर गेहूँ लायेंगे और तब आपको अन्न की भिक्षा देंगे।

राग – भूपाली　　ताल – कहरवा
थाट – कल्याण　　स्वर – शुद्ध

भर डोंगर मंऽ झूला बध्या.....

स्थाई

ग – ग –	ग – ग –	रे – सा –	ग – – –
भ ऽ र ऽ	डों ऽ ऽ ऽ	ग ऽ र ऽ	मं ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग – – –	रे – रे –	सा – सा –
झू ऽ ला ऽ	ऽ बं ऽ ऽ	ध्या ऽ वो ऽ	म्हा ऽ री ऽ
सा – सा –	रे – रे –	सा – सा –	ध़ – ध़ –
र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	झु ऽ ल ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
रे – ग – ऽ	रे – ग –	ग – – –	ग – – –
जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग – रे –	सा – – –	ग ग ग ग
झू ऽ ल ऽ	त ऽ जो ऽ	झू ऽ ल ऽ	त ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग – ग –	रे – रे –	सा – सा –
त ऽ पे ऽ	स ऽ री ऽ	आ ऽ ई ऽ	मा ऽ ता ऽ
सा – सा –	रे – रे –	सा – – –	ध़ – – –

ह ऽ म ऽ	ख ऽ ऽ ऽ	भि ऽ ऽ ऽ	क्षा ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – ग –	ग – – –	ग – – –
दे ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग – ग –	ग – ग –	रे – सा –	ग – – –
था ऽ ल ऽ	भ ऽ र ऽ	मो ऽ ति ऽ	ड़ा ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग ग ग –	रे – रे –	सा – सा –
र ऽ नु ऽ	बा ई न ऽ	लि ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – – –	सा – सा –	ध़ – ध़ –
ले ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ज ऽ	की ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – ग –	ग – – –	ग – – –
भि ऽ ऽ ऽ	क्षा ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग – ग –	रे – सा –	ग – – –
का ऽ ई ऽ	क ऽ रूं ऽ	था ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	ग – ग –	रे – – –	सा – – –
मा ऽ ऽ ऽ	ण ऽ क ऽ	मो ऽ ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – रे –	सा – – –	ध़ – ध़
अ ऽ ऽ ऽ	न्न ऽ की ऽ	भि ऽ ऽ ऽ	क्षा ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – ग –	ग – ग –	ग – ग –
दे ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

झूला

भर डोंगर मंऽ रतन तलाव
म्हारी रनु बाई झूला झूली रह्या जी ।
हो उनका धणियेर राजा हँसी पूछ वात
तुम्हारो पीयर कहां वस जी?
खंडवा का मोठा भाई उमराव
हमारो पीयर वहां वस जी।
गोरी तुमरा मायक्या तुम्हारो बड़ो मान
हमारा घोड़िला कहां छूट जी?

साहेब जी वीरा जी की लम्बी पटसाळ
तुम्हारा घोड़िला वहां छूट जी
साहेब जी आमी-सामी लंबी पटसाळ
तुम्हारा घोड़िला वहां छूट जी ।
(साहेब जी) राजा तुमखऽ ते धईं अरू भात।
हमारी भोळई लापसी जी,
(साहेब जी) राजा तुमखऽ ते सेळा अरू पाग
हमारी ते पेळई चुनड़ी .....

गाँव में तालाब किनारे बगीचे में रनुबाई अपने स्वामी धणियेर जी के साथ झूला झूल रही थीं और पीहर जाने की इच्छा व्यक्त करती है, क्योंकि फागुन में होली के बाद गणगौर और नवरात्रि का आगमन होने वाला है। अत: वे मायके की बातें करती हैं। हँसते हुये धणियेर जी पूछते हैं कि रानी तुम्हे मायके में किस भाई के घर जाना है? तुम्हारे पीहर में तुम्हें सब बहुत मान देते हैं, परन्तु मैं क्यों जाऊँ? तो रनुबाई उन्हें कहती हैं कि- स्वामी हमारे पीहर में आपका भी बहुत सम्मान है। वीरा जी का बड़ा सा भवन है, आँगन है, बरामदे हैं, घुड़साल है, जहाँ आपके घोड़ों को बाँधा जायेगा। आपके सम्मान में उत्सव मनाया जायेगा। मानपूर्वक विविध व्यंञ्जनों सहित दही-भात, गुड़-घी जो आपको भी प्रिय है, ऐसा सुस्वादु भोजन खिलाया जायेगा, मान पूर्वक वस्त्राभूषण की भेंट दी जायेगी।

राग - मधुमात सारंग　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - नि कोमल

भर डोंगर मंऽ रतन तलाव.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
रे - म म	रे - रे सा	नि़ - सा -	रे - रे -
भ ऽ र डों	ग ऽ र मं	र ऽ त ऽ	न ऽ त ऽ
सा - - -	- नि़ नि़ प़	प़ नि़ नि़ नि़	नि़ सा रे रे
ळा ऽ ऽ ऽ	ऽ व म्हा री	र नु बा ई	झू ऽ ला ऽ
नि़ - सा -	रे - सा -	सा - सा -	सा सा सा -
झु ऽ ली ऽ	र ऽ ह्या ऽ	जी ऽ हो ऽ	उ न का ऽ
रे रे म म	रे रे सा सा	नि़ नि़ सा सा	रे रे सा सा

ध णि य र	रा ऽ जा ऽ	ह ऽ सी ऽ	पू ऽ छ ऽ
सा – – –	– नि़ नि़ –	प़ – नि़ –	नि़ सा रे –
वा ऽ ऽ ऽ	ऽ त़ तु ऽ	म्हा ऽ रो ऽ	पी ऽ य र
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा सा सा सा
क ऽ हां ऽ	व ऽ स ऽ	जी ऽ हो ऽ	सा हे ब जी

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे – म –	रे – सा –	नि़ – सा –	रे रे रे रे
खं ऽ ड ऽ	वा ऽ का ऽ	मो ऽ ठा ऽ	भा ई उ म
सा – – –	– नि़ नि़ प़	प़ – नि़ –	नि़ सा रे रे
रा ऽ ऽ ऽ	ऽ व ह ऽ	मा ऽ रो ऽ	पी ऽ य र
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
व ऽ हां ऽ	व ऽ स ऽ	जी ऽ हो ऽ	गो ऽ री ऽ
रे – म –	रे रे सा –	नि़ – सा –	रे – सा –
तु ऽ म रा	मा य क्य तु	म्हा ऽ रो ऽ	ब ऽ ड़ो ऽ
सा – – –	सा नि़ नि़ प	प़ – नि़ –	नि़ सा रे रे
मा ऽ ऽ ऽ	ऽ न ह ऽ	मा ऽ रा ऽ	घो ड़ि ळ ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा सा सा सा
क ऽ हां	छू ऽ ट ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	सा हे ब जी
रे – म –	रे – सा –	नि़ – सा –	रे – सा –
वी ऽ रा ऽ	जी ऽ की ऽ	लं ऽ बी ऽ	प ऽ ट ऽ
सा – सा –	– नि़ प़ –	प़ – नि़ –	नि़ सा रे रे
सा ऽऽऽ	ऽ ळ तु ऽ	म्हा ऽ रा ऽ	घो ड़ि ला ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	– – – –
व ऽ हां	छू ऽ ट ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

गौर लेने जाते हुए

जागो जागो नगरी का लोग
रना देवी आया पावणा (रना देवी आव पावणा)
जागो-जागो ललित भाई (मोठा भाई) उमराव
रना देवी आया पावणा

हमरा घर कुरकई रो काज, रना देवी आया पावणा
हमरा घर घऊंड़ा रो काज,
रना देवी आया पावणा
हमरा घर बाजुट रो काज, रना देवी .....
हमरा घर फूलड़ा रो काज, रना देवी आया .....
हमरा घर बाती रो काज, रना देवी आया .....
हमरा घर कपूर रो काज, रना देवी आया ....
हमरा घर वन्नी रो काज, (पेळा रो काज ....
हमरा घर मेवा रो काज, रना देवी आव पावणा.....

होलिका दहन के पश्चात् चैत्र कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि या एकादशी को परंपरानुसार गणगौर पर्व प्रारंभ होता है, जो चैत्र शुक्ल तीज तक उमंग-उत्साह पूर्वक मनाया जाता है। यह लोकपर्व संपूर्ण ग्रामवासी मनाते हैं।

महिलायें गाते-बजाते होलिका दहन स्थल तक जाती हैं और वहाँ से गौर (पाँच सुडौल कंकर) चुनती हैं। होलिका की राख, शुद्ध मिट्टी और गेहूँ तथा गंगा-नर्मदा का (पवित्र जल) जल मिलाकर पाट पर गौर स्थापित कर अखंड दीप प्रज्ज्वलित कर गाते-बजाते नृत्य करते हुए अपने घर (बाड़ी) में लाकर पवित्रतापूर्वक स्थापित करते हैं। प्रति रथ पाँच कुरकईयाँ के हिसाब से कुरकईयों (छोटी बाँस की टोकनियाँ) में जवारे बोये जाते हैं। प्रतिदिन दोनों संध्याओं में आस्था, विश्वास तथा श्रद्धापूर्वक गाते हुये उन्हें सींचा जाता है। स्थापना हेतु गौर लेने (खड़े लेने) जाते समय यह गीत गाया जाता है, जिसमें गृह या बाड़ी प्रमुख के साथ ही संपूर्ण ग्रामवासियों को देवी को लेने जाने के लिये जगाया जाता है। देवी के आगमन की सूचना दी जाती है और सबको साथ चलने की सूचना दी जाती है। साथ ही देवी आराधना में जो सामान आवश्यक है, उसका नाम लिया जाता है उन सामग्रियों को बनाने, रखने, बेचने वाले भाईयों को भी सूचना दी जाती है और आवश्यकता बतलाई जाती है।

राग - मधुमाद सारंग　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - ग़ नि़ कोमल

जागो जागो नगरी का लोग रनादेवी.....

स्थाई

रे - ग़ -	रे - सा -	नि़ - सा -	रे - रे -
जा ऽ गो ऽ	जा ऽ गो ऽ	न ऽ ग ऽ	री ऽ का ऽ

प – म –	रे – रे –	नि़ – सा –	रे – रे –
लो ऽ ऽ ऽ	ग ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी	आ ऽ या ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – ग़ –	रे – सा –	नि़ – सा सा	रे – रे –
जा ऽ गो ऽ	जा ऽ गो ऽ	ल ऽ लि त	भा ई उ म
प – म –	रे – रे –	नि़ – सा सा	रे – रे –
रा ऽ ऽ ऽ	व ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी	आ ऽ या ऽ
नि़ – – –	रे – सा –	सा – सा –	सा – – –
पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे – ग़ –	रे रे सा सा	नि़ – सा –	रे – रे –
ह ऽ म रा	घ र कु र	क ऽ ई ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
प – म –	रे – रे –	नि़ – सा –	रे – रे –
का ऽ ऽ ऽ	ज ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी	आ ऽ या ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे रे ग़ ग़	रे रे सा सा	नि़ – सा –	रे – रे –
ह म ऽ रा	घ ऽ र ऽ	घ ऽ ऊं ऽ	ड़ा ऽ रो ऽ
प – म –	रे – रे –	नि़ – सा –	रे – रे –
का ऽ ऽ ऽ	ज ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी	आ ऽ या ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽव ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

बधावा

पाँच बधावा आया, म्हारा मन भाया 2
धणियर राजा आया उनकी रनु बाई आया 2
ईश्वर राजा आया उनकी गऊर बाई आया 2
ब्रह्मा राजा आया उनकी सईत बाई आया 2
विष्णु राजा आया उनकी लक्ष्मी बाई आया 2

चन्द्रमा राजा आया उनकी रोहण बाई आया 2
मौळ्ई राजा उनकी गजरा बाई आया 2
पेर वो बड़ा की बेटी चूनड़ रूळन्ती 2
चटक चूनड़ बिन शोभा नी होती 2
पांच बधावा आया म्हारा मन भाया 2

हमारे यहाँ उत्सव-त्योहार-पर्व एवं अन्य शुभ-प्रसंग उपस्थित होने पर गाँव-नगर में घर-घर बधाई बजाई जाती है और मंगल गीत गाकर उस शुभ-अवसर के आगमन की सूचना दी जाती है, शुभकामनायें व्यक्त की जाती हैं।

गणगौर पर्व का आरंभ होने के दिन स्थापना के पूर्व एवं पश्चात् स्वागत में बधावा गीत गाया जाता है। हमारे यहाँ पाँच बधावे आये हैं, क्योंकि धणियर राजा- रनुबाई, ईश्वर-गौर, ब्रह्मा-सावित्री, विष्णु-लक्ष्मी, चन्द्रमा-रोहणी और उनके सेवादार मौलई राजा-गजरा बाई सहित आ गये हैं। गाँव के सब लोग चलिये, उन्हें स्वागत-सत्कार सहित उत्सवपूर्वक ले आयें।

राग - मालकौंस	ताल - कहरवा
थाट - भैरवी	स्वर - ग ध नि (कोमल)

पाँच बधावा आया म्हारा मन भाया.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - सा -	ग - म ध	म - म -	ग म ग -
पां ऽ ऽ ऽ	च ऽ ब ऽ	धा ऽ वा ऽ	आ ऽ या ऽ
सा - सा -	नि - ध -	सा - सा -	म - म -
म्हा ऽ रा ऽ	म ऽ न ऽ	भा ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा - सा -	ग - म ध	म - म -	ग म ग -
ध णि यर	रा ऽ जा ऽ	आ ऽ या ऽ	उ न की ऽ
सा - सा -	नि - ध -	सा - सा -	म - म -
र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा - सा -	ग - म ध	म - म -	ग म ग -
ब्र ऽ म्हा ऽ	रा ऽ जा ऽ	आ ऽ या ऽ	उ न की ऽ
सा - सा -	नि - ध -	सा - सा -	म - म -

स ई ऽ त	बा ऽ ई ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – म ध	म – म –	ग म ग –
ई श वर	रा ऽ जा ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	उ न की ऽ
सा – सा –	नि – ध –	सा – – –	म – – –
ग ऽ ऊ र	बा ऽ ई ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – म ध	म – म –	ग म ग –
पे ऽ र ऽ	वो ऽ ब ऽ	ड़ा ऽ की ऽ	बे ऽ टी ऽ
सा – नि –	ध – ध –	सा – – –	म – – –
चु ऽ न ऽ	ऽ ऽ रू ऽ	ळ ऽ ण ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – म ध	म – म –	ग म ग –
च ऽ ट ऽ	क ऽ चु ऽ	न ऽ ड़ ऽ	बि ऽ न ऽ
सा – सा –	नि – ध –	सा – सा –	म – म –
शो ऽ ऽ ऽ	भा ऽ नी ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ

आगमन-स्वागत

रतनापुर सी हो, रनुबाई का रथ उतर्‌या-रथ उतर्‌या
हो देवी आया आया खंडवा माय,
रना देव की जय बोलो-जय बोलो

(1) खंडवा का मोठा भाई आड़ा फिर्‌या
देवी रहो-रहो दिन नवरात, रनादेव की जय बोलो-जय बोलो

(2) हम कसां रव्हां भोहा मानवई मानवई
म्हारो लखीधड़ कहां रे समाय, रना देव की जय बोलो-जय बोलो

(3) लखीदड़ उतारूं अंबा आमळई-आमळई
देवी तुमखऽ ते मंदिर माय, रना देव की जय बोळा-जय बोळा, रतनापुर सी हो ....

(4) लखीदड़ जिमाडूं लाडू लापसी-लापसी
देवी तुमखऽ ते धई अरू भात, रनादेव की जय बोलो-जय बोलो रतनापुर सी हो ...

(5) लखीदड़ पेराऊं पेळई पामड़ी-पामड़ी
देवी तुमखऽ ते दखणा रो चीर, रनुबाई की जय बोलो- जय बोलो
रतनापुर सी हो, रनु बाई का रत (रथ) उतर्‌या-रत उतर्‌या
हो देवी आया खंडवा माय
रना देव की जय बोलो-जय बोळा.....

गणगौर का आरम्भ होलिका दहन के बाद दशमी तिथि या परंपरानुसार एकादशी से होता है। गणगौर स्थापना के अवसर पर उनके स्वागत में जय-जयकार करते हुए उन्हें आने और नौ दिन यहाँ कृपापूर्वक रहने का आग्रह किया जाता है। उनके आने पर संपूर्ण गाँव में उत्सव मनाया जाता है। यह आस्था, श्रद्धा और अटूट विश्वास का लोकपर्व है।

जब देवी से आकर नौ दिन रहने का आग्रह किया जाता है, तो वे आश्वस्त होना चाहती हैं कि मैं अकेले नहीं आ सकती। मेरे साथ मेरा बड़ा-सा परिवार है, उनकी सेवा आतिथ्य कैसे करोगे? तो लोग कहते हैं- देवी आपको मंदिर में ठहरायेंगे और संपूर्ण परिवार को अमराईयों में सादर ठहरायेंगे। सबको लड्डू-लप्सी का और आपको दही-भात, गुड़, घी-भात का भोजन करायेंगे। सबको पीली चुनरियां और केसरिया पगड़ी पहनायेंगे। आपको मसरू का काप और दक्षिण-भारतीय रेशमी कीमती चुनरी ओढ़ाकर सबका स्वागत करेंगे। देवी सपरिवार सानंद गाँव में आ गई और फिर नौ दिनों तक श्रद्धा पूर्वक सारा गाँव उनकी सेवा-सत्कार में उल्लास पूर्वक उत्सव मनाता है। दसवें दिन सभी लोग देवी को बेटी की तरह विदा करते हैं। विदा के क्षण सदैव मार्मिक होते हैं। परन्तु उनके आगमन से विदा तक उत्सव का ही वातावरण होता है।

राग - भूपाली	ताल - दादरा
थाट - कल्याण	स्वर - सभी शुद्ध

रतनापुर सी हो, रनु बाई का रथ उतर्‌या.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ध़ - -	सा - -	सा - सा	रे - -
र ऽ त	ना ऽ ऽ	पु ऽ र	सी ऽ ऽ
ध़ - ध़	ध़ ध़ -	सा सा सा	रे - -
हो ऽ ऽ	ऽ र ऽ	नु वा ई	का ऽ ऽ
रे - ग	ग - ग	ग - -	रे - -
र ऽ थ	उ ऽ त	र्‌या ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ध़ - सा	सा - सा	सा - -	- ग ग
र ऽ थ	उ ऽ त	र्‌या ऽ ऽ	ऽ दे वी
रे ग -	रे ग -	रे - सा	ग - -
आ ई ऽ	आ ई ऽ	खं ऽ ड	वा ऽ ऽ
ग - ग	- ग -	रे सा -	रे - -

मा ऽ य	ऽ र ऽ	ना दे व	की ऽ ऽ
ग ग –	ग – –	ग – –	रे – –
ज य ऽ	बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ध़ ध़ –	सा – सा	सा – –	सा – –
ज य ऽ	बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ध़ – सा	सा – सा	सा – सा	रे रे –
खं ऽ ड	वा ऽ का	मो ऽ ठा	भा ई ऽ
सा – ध़	सा – –	रे – –	ग – –
आ ऽ ड़ा	फि ऽ ऽ	र्‌या ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ध़ – सा	सा सा सा	सा – –	सा ग ग
आ ऽ ड़ा	फि ऽ ऽ	र्‌या ऽ ऽ	ऽ दे वी
रे – ग	रे – ग	रे – सा	ग – ग
र ऽ व्हो	र ऽ व्हो	दि ऽ न	न ऽ व
ग – ग	ग ग –	रे सा सा	रे – –
रा ऽ त	ऽ र ऽ	ना दे व	की ऽ ऽ
ग ग –	ग – –	ग – –	रे – –
ज य ऽ	बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
ध़ ध़ –	सा – –	सा – –	सा – –
ज य ऽ	बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

जवारा स्थापना

माता पग – पग बोया थारा जाग
रना देवी आया पावणा वो 2
ओ माता कूण भाई लाव नुख पावणी वो 2
ओ माता कूण बऊ लाग थारा पांय,
रना देवी आया पावणा वो 2
ओ माता रजनीस भाई लाव नुख पावणी वो
माता मनीष भाई लाव नुख पावणी वो
ओ माता वंदना बऊ लाग थारा पांय, रना देवी आया.....

ओ माता स्वरूपा बऊ लाग थारा पांय
रना देवी आया पावणा वो .....
माता पग-पग बोया थारा जाग.....

उपरोक्त प्रकार से सभी देवियों-देवताओं का नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

होली के दसवें या ग्यारहवें दिन (जैसी परंपरा हो) होली स्थल पर पवित्रतापूर्वक महिलायें गाते-बजाते माता के 'खड़े लेने' जाती हैं। होली में से कंकर की गौर (पांच सुघड़ सामान्य आकार के कंकर), राख और मिट्टी में गेहूँ, गंगा जल मिलाकर पांच 'मूठ' बना पाट पर रखकर तथा राख-मिट्टी और गौर लेकर अखंड दीपक सहित पूजाकर आग्रह पूर्वक देवी को बाड़ी स्थल (जहाँ गणगौर बोई जाती है) तक गाते-बजाते लाती हैं। पूर्व से निर्धारित पवित्र स्थान पर माता की स्थापना करती हैं तथा आई हुई सभी कुरकईयों में (बाँस की छोटी-छोटी टोकनियाँ) माता के जाग रोपती (बोती हैं) और जल सिंञ्चन करती हैं। गेहूँ, शुद्ध स्थल की खेत की मिट्टी, अलोने कंडे, होली की राख (केसर -कस्तूरी) गंगा-नर्मदा जल मिलाकर देवी की स्थापना की जाती है। होली स्थल से लाई हुई गौर जवारों को आँगन में रख प्रतिदिन गाँव की सुहागन महिलायें-कन्यायें गौर पूजा करती हैं और उस अवसर पर गीत गाये जाते हैं।

राग - मधुमाद सारंग　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - नि कोमल

माता पग-पग बोयाथारा जाग.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि़ सा रे रे	सा - सा -	रे म रे -	नि़ - प़ -
मा ऽ ता ऽ	प ऽ ग ऽ	प ऽ ग ऽ	बो ऽ या ऽ
नि़ सा रे -	सा - सा -	रे म रे रे	सा - नि़ प़
था ऽ रा ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ग ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी
नि़ सा रे -	सा - सा -	रे - सा -	सा - सा -
आ ऽ या ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णा ऽ	वो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि़ सा रे रे	सा- सा -	रे म रे रे	नि़ - प़ -

मा ऽ ता ऽ	कू ऽ ण ऽ	भा ऽ ई ऽ	ला ऽ व ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे – सा –	सा – सा –
तु ऽ ख ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णी ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे म रे रे	नि़ – प़ –
मा ऽ ता ऽ	कू ऽ ण ऽ	व ऽ ऊ ऽ	लां ऽ ग ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे म रे –	सा – नि़ प़
था ऽ रा ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	य ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी
नि़ सारे रे	सा – सा –	रे – सा –	सा – सा –
आ ऽ या ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णा ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे म रे रे	नि़ – प़ –
मा ऽ ता ऽ	र ज नी श	भा ऽ ई ऽ	ला ऽ व ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे – सा –	सा – सा –
तुं ऽ ख ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	वे ऽ णी ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे म रे रे	नि़ – प़ –
मा ऽ ता ऽ	वं ऽ द ना	व ऽ ऊ ऽ	ला ऽ ग ऽ
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे म रे –	सा – नि़ प़
था ऽ रा ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	य ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी
नि़ सा रे रे	सा – सा –	रे – सा –	सा – सा –
आ ऽ या ऽ	पा ऽ ऽ ऽ	व ऽ णा ऽ	वो ऽ ऽ ऽ

गौर पूजन

बेल बिजोरो नारेळ हो, तुम पूजो रना देवी गऊर 2
गऊर पूजी न वर पाविया हो धणियर राजा सरीका भरतार
धवळो घोड़ो वो चढ़या वो उनका हात मंऽ लाल कमान 2
हात हीरा जड़्यो मूंदड़ो हो उनका सीस कुसुमल पाग 2
राऊळ–देवुळ मानवई हो सब देव न मंऽ सरदार 2
बेल बिजोरो .....

सभी देवी–देवताओं का नाम लेते हुए गौर पूजा चलती है एवं उसके बाद पूजन करने वाली महिलायें अपना और अपने पतियों का नाम लेते हुए गौर पूजा करती हैं।

प्रतिदिन प्रात: महिलाएँ व्रत रख गौर पूजा करती हैं, जो शिव–पार्वती के प्रतीक हैं। साथ ही अन्य देवी–देवताओं का भी पूजन गीत गाते हुए किया जाता है। जैसे गौर पूजा कर रनुबाई ने

धणियर राजा सा वर प्राप्त किया तथा अन्य देवियों ने अपने स्वामियों को पाया, वैसे ही पूजा करने वाली महिलाओं ने गौर पूजा करके ही अपने पतियों को प्राप्त किया और कन्याएँ गौर पूजा करके उपयुक्त वर प्राप्त करेंगी। धणियर राजा व अन्य देवताओं की तरह वीर, सुन्दर, बुद्धिमान तेजस्वी तथा प्रेमी पति प्राप्त करेंगी।

राग – काफी　　　　ताल – दीपचंदी

थाट – काफी　　　　स्वर – ग नि कोमल

बेल बिजारो नारेळ हो तुम पूजा ....

स्थाई

रे – –	रे – रे –	सा – रे	नि नि सा रे
बे ऽ ऽ	ल ऽ बि ऽ	जो ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
रे – –	रे – रे –	ग – ग –	रे – सा –
ना ऽ ऽ	रे ऽ ळ ऽ	हो ऽ ऽ	तु ऽ म ऽ
नि सा सा	सा रे रे –	ग – –	रे – सा –
पू ऽ ऽ	ऽ जो र ऽ	ना ऽ ऽ	दे ऽ वी ऽ
सा – सा	सा – सा –	– – –	– – – –
ग ऽ ऊ	ऽ ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

रे – रे	रे – रे –	सा – रे	नि नि सा रे
ग ऽ उ	र ऽ पू ऽ	जी ऽ न	व ऽ र ऽ
रे – –	रे – रे –	ग – –	रे रे सा सा
पा ऽ ऽ	वि ऽ या ऽ	हो ऽ ऽ	ध णि यर
नि सा सा	रे – रे –	ग – ग	रे – सा सा
रा ऽ ऽ	जा ऽ स ऽ	री ऽ का	भ ऽ र ऽ
सा – सा	सा – सा –	– – –	– – – –
ता ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – रे	रे – रे –	सा – रे	नि – सा –
ध ऽ व	ळो ऽ ऽ ऽ	घो ऽ ऽ	ड़ो ऽ ऽ ऽ
रे – रे	रे – रे –	ग – –	रे रे सा सा
वो ऽ ऽ	च ऽ ढ़ूया ऽ	वा ऽ ऽ	उ ऽ न का

नि़ – सा	रे – रे –	ग़ – –	रे – ग़ –
हा ऽ ऽ	थ ऽ मं ऽ	ला ऽ ऽ	ल ऽ क ऽ
सा – –	सा – – –	– – –	– – – –
मा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ न	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – रे	रे – रे –	सा – रे	नि़ नि़ सा –
हा ऽ ऽ	थ ऽ ही ऽ	रा ऽ ऽ	ज ऽ डूया ऽ
रे – रे	रे – रे –	ग़ – ग़	रे – रे –
मूं ऽ ऽ	द ऽ ड़ा ऽ	हो ऽ ऽ	उ ऽ न ऽ
सा ऽ ऽ	नि़ – सा –	रे – रे	ग़ – ग़ –
का ऽ ऽ	सी ऽ ऽ ऽ	स ऽ कु	सु ऽ ऽ ऽ
रे – सा	सा – सा –	सा – सा	रे – रे –
म ऽ ल	पा ऽ ऽ ऽ	ऽ ग ऽ	रा ऽ वु ल
सा रे नि़ सा	रे – रे –	रे रे ग़	रे सा – नि़
देऽ वु ळ	मा ऽ न ऽ	व इ हो	स ब ऽ दे
सा सा सा	रे – रे –	रे – ग़	रे – सा –
ऽ ऽ ऽ	व ऽ न ऽ	मं ऽ ऽ	स ऽ र ऽ
सा – –	सा – सा –	सा – –	सा – सा –
दा ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अर्घ्यगीत

दोब का डांडला, अकाव का फूल,
राणी वो रनुबाई अरघ देवाड़
अरघ दई न वर पाविया, धणियर राजा सो भरतार
धणियर राजा सोय वो पेळ्ई पामड़ी
रनुबाई अखण्ड अव्हात
आतुली पातुली लाओ रे गंगाजळ पाणी
न्हावण कर रनुबाई रानी, रनुबाई-रनुबाई खोलो किवाड़ी
पूजण वाळ्ई ऊभी द्वार, पूजण वाळ्ई काई मांग,
दूध-पूत अव्हात मांग, अटियाळो तालो मांगऽ
जटियाळो वीरो मांग, धणी को राज मांगऽ
बेटा की कमाई मांग, वऊ को रांध्यो मांगऽ,

दीय को परोस्यो मांग, दासी को पीस्यो मांगऽ
सोन्ना की सरवर गऊर पूजां वो रनादेव,
मांय न बेटी गऊर पूजां वो रना देव,
सासू न वऊ गऊर पूजा वो रनादेव,
देराणी-जेठाणी गऊर पूजां वो रनादेव,
नणद-भौजाई गऊर पूजां वो रनादेव,
अड़ोसेण-पड़ोसेण गऊर पूजां वो रनादेव,
पड़ोसेण पर टूट्यो गरभो भान वो रनादेव,
कसी पत टूट्यो गरभो भान वो रनादेव,
दूध केरी दवणी मजगेर वो रनादेव,
पूत केरो पालणो पटसाळ वो रनादेव,
स्वामी सूता सुखलड़ी सेज वो रना देव,
आपुण रमसां पाछलड़ी पटसाळ वो रना देव,
धवळो घोड़ो धणियेर जी असवार वो रना देव,
पाछ लागी रनुबाई नार वो रना देव,
स्वामी हमख पियरिया री आळ वो रना देव,
मोड़ी मोड़ी कणियेर डाळ वो रनादेव,
भांजू थारा पियरीया री आळ वो रना देव,
जोड़्या-जोड़्या रनु बाई ने हात वो रना देव,
खीर खांड का भोजन जिमाड़ वो रनादेव,
चलती गवरनी जिमाड़ वो रना देव
तवं जाई पीयर सिधार वो रना देव

गणगौर में प्रतिदिन गौर पूजा होती है। देवी के जवारे प्रतिदिन दोनों संध्याओं में पवित्रता पूर्वक 'बाड़ी' के घर-परिवार की महिलायें सींचती हैं और आठवें दिन माता पाठ बैठने पर जगमाता हो जाने पर सभी देवी-दर्शन, पूजन करते हैं। देवी की स्थापना के दिन से प्रतीक स्वरूप गौर-पूजा में सभी महिलायें सम्मिलित होती हैं। एक अलग लकड़ी के पाट पर (पीढ़े पर) 'जवारे-पैसा-सुपारी-गौर' पहले ही स्थापित किये जाते हैं । उस पाट को बाड़ी वाले कमरे से लाकर बाहर सभी महिलायें प्रतिदिन निर्धारित समय पर एकत्रित होकर गौर पूजा करती हैं और अर्घ्य देती हैं। गणगौर माता, रनुबाई- धणियर राजा, ईश्वर-गौरा, ब्रह्मा-सावित्री, विष्णु-लक्ष्मी, चन्द्रमा-रोहिणी, मौलई राजा-गजरा बाई सभी के नामोल्लेख करते हुए पूजन-अर्घ्य-आरती सामूहिक रूप से करती हैं, उसी समय यह गीत गाया जाता है।

गीत के प्रारंभिक भाग में अर्घ्य देने की सामग्री का उल्लेख है। अर्घ्य देकर रनुबाई और शेष देवियों ने अखंड सौभाग्य प्राप्त किया, वैसे ही सभी पूजने वाली स्त्रियों ने अपने पति को सुख-समृद्धि और अखंड सौभाग्य प्राप्त किया। गीत के दूसरे भाग में पूजने वाली महिलाएँ देवी के समक्ष अपनी मनोकामनायें व्यक्त कर उन्हें पूर्ण करने की प्रार्थना करती हैं। गौर-पूजा हम सब साथ करें, यह इच्छा व्यक्त करती हैं। तीसरे भाग में हम सब सदा साथ में गौर पूजें और जैसी अभी तक कृपा रखी, सदा बनाये रखें।

यह गीत विशिष्ट है। तीनों भाग की धुन, लय एवं राग है।

राग - काफी	ताल - विलम्बित कहरवा
थाट - काफी	स्वर - कोमल तथा शुद्ध स्वर

दोब का डांडळा अकाव का फूल .....

स्थाई

× - - -	0----	×---	0---
प़ - सा -	नि़ - प़ -	प़ नि़ सा -	रे - रे -
दो ब का ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	डां ऽ ड ऽ	ला ऽ अ ऽ
ग रे सा नि़	सा - नि़ -	प़ - सा नि़	- प़ - -
का व का ऽ	फू ऽ ऽ ल	रा ऽ णी वो	ऽ ऽ ऽ ऽ
प़ नि़ सा रे	- - - -	रे ग रे सा नि़	सा - नि़ प़
र नु बा ई	ऽ ऽ ऽ ऽ	अ र घ दे ऽ	वा ऽ ऽ ड़
प़ सा नि़ प़	नि़ नि़ सा रे	- - - -	रे ग रे सा
अ र घ द	ई न वर	ऽ ऽ ऽ ऽ	पा ऽ वि या
- - - -	प - नि़ सा रे	- - - -	रे ग रे सा
ऽ ऽ ऽ ऽ	धणि यर राजा	ऽ ऽ ऽ ऽ	सो ऽ भ र
सा - सा -	प़ - प़ सा नि़	- - - -	प़ प़ नि़ सा
ता ऽ र ऽ	धणि यर राजा	ऽ ऽ ऽ ऽ	सो य वो पे
रे - - -	ग रे सा नि़	- - - -	प़ नि़ सा रे
ळ्ई ऽ ऽ ऽ	पा ऽ म ड़ी	ऽ ऽ ऽ ऽ	र नु बा ई
- - - -	ग रे सा नि़	सा - - -	- - - -
ऽ ऽ ऽ ऽ	अ खं ड अ	व्हा ऽ ऽ त	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

राग – खमाज ताल – कहरवा
थाट – खमाज स्वर – नि कोमल

आतुळी पातुली लाओ रे गंगा .....

सा – सा –	रे – नि़ –	सा – सा –	रे – नि़ –
आ ऽ तुळ ऽ	ली ऽ ऽ ऽ	पा ऽ तु ऽ	ली ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – नि़ –	सा – सा –	रे – नि़ –
ला ऽ ओ ऽ	रे ऽ गं ऽ	गा ऽ ज ळ	पा ऽ णी ऽ

शेष अन्तरा

राग – भूपाली ताल – कहरवा
थाट – कल्याण स्वर – सब शुद्ध स्वर

सोन्ना की सखर गऊर.....

ग – ग ग	रे – सा –	ग – ग –	ग – ग –
सो ऽ ऽ ऽ	न्ना ऽ ऽ ऽ	की ऽ ऽ ऽ	स ऽ र ऽ
ग – ग –	रे – – –	सा – सा –	सा – – –
व ऽ र ऽ	ग ऽ ऽ ऽ	ऊ ऽ र ऽ	पू ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – ध़ –	ध – सा –	रे – ग –
जां ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	ना ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	ग – ग –	ग – ग –	– – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

आरती

करण्डा कस्तूरी भरिया, छाबा भरिया फूलड़ा जी..... 2
तुम मोकलो हो धणियेर रनुबाई
जो हम करसां आरती जी
थारी आरतड़ी ख आदर दीसां
देव दमोदर भेटसां जी
करण्डा कस्तूरी भरिया छाबा भरिया फूलड़ा जी

तुम मोकलो हो ब्रह्मा सईत बाई, जो हम करसां आरती जी
तुम मोकलो हो ईसवर गऊर बाई, जो हम करसां आरती जी
तुम मोकलो हो विष्णु लक्षमी बाई, जो हम करसां आरती जी
तुम मोकलो हो चन्द्रमा रोहण बाई, जो हम करसां आरती जी
तुम मोकलो हो मौळई राजा गजरा बाई, जो हम करसां आरती जी
थारी आरतड़ी ख आदर दीसां
देव दमोदर भेटसां जी - - - - -

कारण्डा आरती में कुंकू-हल्दी, कस्तूरी, सिंदूर भरा है और छाबड़ी (टोकनी) भरकर फूलों से देवी रनुबाई और धणियेर राजा तथा क्रमानुसार ब्रह्मा-सावित्री, शिव-गौरा, विष्णु-लक्ष्मी, चन्द्रमा-रोहणी तथा मौलई राजा-गजराबाई की हम आरती करते हैं। आपकी आरती-पूजा-सेवा से साक्षात् देव दामोदर से भी भेंट होगी। आप सभी आरती से प्रसन्न होईये और कृपा बनाये रखिये।

गौर पूजा के पश्चात् घी के दीपक और कपूर को प्रज्ज्वलित कर आरती उतारी जाती है, जिससे सर्वत्र आनंद का प्रकाश फैल जाता है और आरती लेने पर सभी का मंगल कल्याण होता है।

राग - काफी	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - ग नि कोमल

करण्डा कस्तूरी भरिया ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
रे - म -	ग - ग रे	सा - रे -	सा - नि नि
क ऽ रं ऽ	डा ऽ क ऽ	स्तु ऽ री ऽ	भ रि या
प़ - नि नि	नि सा नि -	ग - ग -	रे - सा -
छा ऽ बा ऽ	भ रि या	फू ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ड़ा ऽ
सा - - -	- - सा रे		
जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ तु म		

अन्तरा

रे - म म	ग - ग रे	सा - रे रे	सा - नि नि
मो ऽ क लो	हो ऽ ध णि	य ऽ र र	नु ऽ बा ई

प़ प़ नि़ नि़	नि़ सा नि़ –	ग़ – – –	रे – रे –
जो ऽ ह म	क र सा ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	र ऽ ती ऽ
सा – – –	– – सां रे	रे रे म म	ग – रे
जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ था री	आ ऽ र त	ड़ी ऽ ख ऽ
सा रे रे रे	सा नि़ नि़ –	प़ – नि़ –	सा – नि़ नि़
आ ऽ द र	दी ऽ सां	दे ऽ व द	मो ऽ द र
ग़ ग़ ग़ ग़	रे – रे रे	सा – – –	सा – – –
भे ऽ ऽ ऽ	ट ऽ सां ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

पाती खेलना

अना बना मंऽ चम्पो मंवर्‌यो
मवर्‌यो रे फुलवारी 2
धणियेर राजा डाळ नवाड़, राणी रनुबाई फूलड़ा टोच 2
टोचत-टोचत काटो मुड़्यो नैना रो रस लीनो 2
पान पटोळ्ई पाटो बांध्यो लापसी सी सेक्यो 2
अना बना मंऽ चंपो मंवर्‌यो .....

उपरोक्त पंक्तियों की तरह अन्य देवियों-देवताओं का क्रमानुसार नाम लेकर गीत आगे चलता रहता है। प्रतिदिन कुँवारी कन्याएँ और नवविवाहिताएँ कलशों को फूल-पत्तियों से सजाकर बाग-बगीचों या अमराई में समूहों में जाती हैं। शिव-पार्वती की पूजा नृत्य गीत सहित करती हैं। आनंदोत्सव के ये क्षण उत्साह से भरपूर होते हैं। इसे 'पाती खेलना' कहते हैं । फिर गाते-बजाते हुए समूहों में सजे हुये कलशों सहित 'बाड़ी' में आकर देवी गीतों के साथ नृत्य करती हैं।

गणगौर पर्व के दिनों में प्रतिदिन प्रात: कन्याएँ एवं नवविवाहित महिलाएँ सज-सँवरकर, विभिन्न फूल-पत्तियों से कलशों को सजाकर, समूह रूप में गाते-बजाते अमराईयों या बाग-बगीचों में पहुँचती हैं और गौर रखकर शिव-पार्वती के रूप में पूजा कर गोलाकार रूप में कलशों के आसपास नृत्य करती हैं। अपने मंगेतरों या पतियों का नाम गीतों में लेती हैं। हास-परिहास का वातावरण उमंग से भरपूर होता है। इसे 'पाति खेलना' कहते हैं। फिर सभी उन सजे हुये कलशों को गाते-बजाते 'बाड़ी' तक लाती हैं और यहाँ भी देवी गणगौर, रनादेवी के गीतों पर नृत्य करती हैं। भावी जीवन के लिये अनुष्ठान पर्वों-व्रतों का अभ्यास और संस्कार बालिकाओं को मिलते हैं। उनमें नियम, निष्ठा और अनुशासन तथा भावाभिव्यक्ति व संयम के संस्कार पड़ते हैं।

राग – मालकौंस	ताल – कहरवा
थाट – भैरवी	स्वर – ग ध नि कोमल

अना बना मं ऽ चम्पो मंवर्‌यो ....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा ग ग	ग – म ध	म – म –	ग म ग
अ ना ऽ ब	ना ऽ म ऽ	च ऽ म्पो ऽ	मं व र यो
सा – सा –	नि – ध –	सा – सा –	म – म –
मं व र् यो	रे ऽ फू ल	वा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – सा –	ग ग म ध	म – म –	म ग म ग
ध णि य र	रा ऽ जा ऽ	डा ऽ ल न	वा ड़ रा नी
सा – सा –	नि नि ध ध	सा – सा –	म – म –
र नु बा ई	फू ऽ ल ड़ा	टो ऽ ऽ ऽ	च ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग ग म ध	म – म –	ग म ग –
टो ऽ च त	टो ऽ च त	का ऽ टो ऽ	मु ऽ ड़्यो ऽ
सा – सा –	नि – ध ध	सा – सा –	म – म –
नै ऽ ना ऽ	रो ऽ र स	ली ऽ ऽ ऽ	नो ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग ग म ध	म – म –	ग म ग –
पा न प ऽ	टो ऽ ळ ई	पा ऽ टो ऽ	बां ऽ ध्यो ऽ
सा – सा –	नि नि ध ध	सा – सा –	म – म –
ला ऽ प ऽ	सी ऽ सीं ऽ	से ऽ ऽ ऽ	क्यो ऽ ऽ ऽ

स्वरूप वर्णन

थारो काई–काई रूप वखाणूं रनुबाई
सोरठ देस सी आई वो 2

(1) *थारी अंगळई मूंग की सेंगळई रनुबाई,*
सोरठ देस सी आई वोऽ

(2) *थारो सीस नारेळ री रेख रनुबाई*

सोरठ देस सी आई वो

(3) *थारी आंक लिंबू री फोड़ रनुबाई*
सोरठ देस सी आई वो

(4) *थारी भंव कमान कसी वो रनुबाई*
सोरठ देस सी आई वो

(5) *थारी नाक सुआ कसी चोंच रनुबाई*
सोरठ देस सी आई वो

(6) *थारा हात कणिहर री डाल रनुबाई*
सोरठ देस सी आई वो

(7) *थारा पांय केळ्या रा खंब रनुबाई*
सोरठ दे सी आई वो

सौराष्ट्र देश से आने वाली देवी रनुबाई तुम्हारे रूप - स्वरूप का क्या-वर्णन करूँ? रूप-वर्णन में स्थापित सभी उपमानों ने मानों साक्षात् रूप धारण कर लिया हो! रानी रनुबाई का रूप देवोपम है, अलौकिक है, अवर्णनीय है। सौराष्ट्र (गुजरात) से आने वाली रूपवती रानी रनुबाई का सिर नारियल की तरह, आँखें नींबू की फाँक की तरह सुघड़, भौहें कमान की तरह कसी हुई, नाक तोते की तरह सुहावनी और ओंठ सिंदूर की पतली रेखाओं की तरह लाल सुडौल और सुंदर हैं, तो हाथ कनेर की डाली की तरह कोमल, लचीले व आकर्षक हैं। पैर तो सुगठित केले के खंब की तरह आकर्षक व सुंदर है। ऐसी सौराष्ट्र से आई देवी रनुबाई अनुपम हैं।

राग - भूपाली　　ताल - चलत दादरा
थाट - कल्याण　　स्वर - सब शुद्ध

थारो काई - काई रूप.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - सा	सा रे -	रे ग -	ग - ग
था ऽ रो	का ई ऽ	का ई ऽ	रू ऽ प
रे - -	सा - रे	ग - रे	सा - ध़
व ऽ ऽ	खा ऽ णू	र ऽ नु	बा ऽ ई
ध़ - -	सा - सा	रे - रे	सा - -
सो ऽ ऽ	र ऽ ठ	दे ऽ स	सी ऽ ऽ

ध़ – –	सा – –	सा – –	सा – –
आ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – सा	सा – रे	रेग – –	ग – ग
था ऽ री	अं ऽ ग	ळई ऽ ऽ	मूं ऽ ग
रे – –	सा – रे	ग – रे	सा – ध़
की ऽ ऽ	सें ग ळई	र ऽ नु	बा ऽ ई
ध़ – –	सा – सा	रे – रे	सा – –
सो ऽ ऽ	र ऽ ठ	दे ऽ स	सी ऽ ऽ
ध़ – –	सा – –	सा – –	सा – –
आ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
सा – सा	सा – –	रे – ग	ग ग – –
था ऽ रो	सी ऽ ऽ	स ऽ ना	रेळ ऽ ऽ
रे – सा	सा – रे	ग – रे	सा – ध़
क ऽ सी	रे ऽ ख	र ऽ नु	बा ऽ ई
ध़ – –	सा – सा	रे – रे	सा – –
सो ऽ ऽ	र ऽ ठ	दे ऽ स	सी ऽ ऽ
ध़ – –	सा – –	सा – –	सा – –
आ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

नृत्य

नई आई होळई दीवाळई रे डोला
नई आई सरावण तीज म्हारा ख्याली लाल
हम तो गणागौर खेलां मोकलो रे डोला
डोला जी चाल्या चाकरी रे डोला..... 2
इनी गोरी खऽ कूण हवाळ, म्हारा ख्यालीलाल
हम तो गणागऊर खेलां मोकलो रे डोला.....
नईं आई .....
माथ सारूं बिंदी लावजो रे डोला 2
म्हारा टीका ख रतन जड़ाव म्हारा ख्याली लाल
हम तो गणागऊर खेलां मोकलो रे डोला.....

उपरोक्त पंक्तियों की तरह सभी देवी–देवताओं का नाम लेते हुए गीत गाया जाता है और स्त्री के श्रृँगार के अंगानुसार आभूषणों का नाम लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

गणगौर लोक पर्व है। यह नारी जीवन का गीति काव्य है, जिसमें स्त्री जीवन के विविध पहलुओं की झलक मिलती है। सजीव स्वरूप के दर्शन होते हैं। पूजा–अर्घ्य–आरती के पश्चात् प्रतिदिन उत्सव मनाते हुए नृत्य–गीत चलते हैं। प्रस्तुत नृत्य–गीत में रनुबाई अपने प्रियतम से निवेदन करती हैं कि मुझे गणगौर खेलना है, मुझे जाने दीजिये ना! और यदि आप कार्यवश (नौकरी के) बाहर जा रहे हैं, तो मेरे लिये सजावट हेतु वस्त्राभूषण लेते आईये। सिर के लिये बिंदी लायें तो मेरे टीके में रत्न जड़वा दीजिये। इस प्रकार सभी अंगों के सुन्दर आभूषणों की फरमाईश करती हैं। उत्साह–उमंग से भरपूर है यह गीत।

राग – भीमपलासी	ताल – दादरा
थाट – काफी	स्वर – ग नि कोमल

नईं आई होळई दिवाळई रे डोला ....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ नि़ नि़	नि़ – सा	सा नि़ ग	– ग –
न ऽ ईं	आ ऽ ई	हो ऽ ळई	ऽ दि ऽ
रे – ग –	रे – –	सा – –	सा – –
वा ऽ ळई	रे ऽ ऽ	डो ऽ ऽ	ळा ऽ ऽ
सा – –	ग ग ग	म – – –	प – प
न ऽ ई	आ ई स	रा ऽ ऽ	व ऽ ण
म ग –	म – ग	सा – नि़	सा – नि़
ती ज ऽ	म्हा ऽ रा	ख्या ऽ ली	ला ऽ ल
प़ प़ नि़	नि़ – सा	सा – सा	नि़ – ग
ह म तो	ग ऽ णा	ग ऊ र	खे लां
रे ग –	रे सा –	सा – –	सा – –
मो क ऽ	लो रे ऽ	डो ऽ ऽ	ला ऽ ऽ
प़ – नि़	सा – –	नि़ – –	ग – –
डो ऽ ला	जी ऽ ऽ	चा ऽ ऽ	ल्या ऽ ऽ
रे – ग	रे – सा	सा – –	सा सा सा

चा ऽ क	री ऽ रे	डो ऽ ऽ	ला इ नी
सा – ग़	ग़ – –	म – प	– म –
गो ऽ री	ख ऽ ऽ	कू ऽ ण	ऽ ह ऽ
ग़ – ग़	म – ग़	सा – नि़	सा – नि़
वा ऽ ळ	म्हा ऽ रा	ख्या ऽ ली	ला ऽ ल
प़ प़ नि़	नि़ – सा	सा – सा	नि़ – ग़
ह म तो	ग़ ऽ णा	ग़ ऊ र	खे ऽ लां
रे ग़ –	रे सा –	सा – –	सा – –
मो क ऽ	लो रे ऽ	डो ऽ ऽ	ला ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ – नि़	नि़ – सा	नि़ – –	ग़ – –
मा ऽ थ	सा ऽ रूं	बिं ऽ ऽ	दी ऽ ऽ
रे – ग़	रे सा सा	सा – –	सा सा सा
ला ऽ व	जो रे ऽ	डो ऽ ऽ	ला म्हा रा
सा – ग़	ग़ – –	ग़ म –	प – म
टी ऽ का	ख ऽ ऽ	र त ऽ	न ऽ ज
ग़ – ग़	म – ग़	सा – नि़	सा – नि़
ड़ा ऽ व	म्हा ऽ रा	ख्या ऽ ली	ला ऽ ल
प़ प़ नि़	नि़ – सा	सा – सा	नि़ – ग़
ह म तो	ग़ ऽ णा	ग ऊ र	खे ऽ ला
रे ग़ –	रे सा –	सा – –	सा – –
मो क ऽ	लो र ऽ	डो ऽ ऽ	ला ऽ ऽ

जवारा सिञ्चन

म्हारा हरिया जवारा रे, कि घऊंड़ा हो लहर लहै 2
भोळा धणियर राजा न बोया जाग,
रनु बाई सींच लिया
राणी सींची न जाण्या वो,
जवारा हो पेळया पड़ूया 2
उनकी सरस पटोळई वो,

सुभद्रा बाई ढांप लिया 2
म्हारा हरिया जवारा रे .....

इसी प्रकार ब्रह्मा राजा–सईत बाई, ईश्वर राजा–गौर बाई, विष्णु राजा–लक्ष्मी बाई, चन्द्रमा राजा–रोहिणी बाई, मौलई राजा–गजरा बाई आदि के नाम लेकर गाते हुए जवारे प्रतिदिन प्रातः – संध्या काल सींचे जाते हैं।

गणगौर माता की स्थापना के पश्चात् दोनों संध्याओं में प्रतिदिन जवारों को गीत गाते हुए महिलायें सींचती हैं, जिससे वे प्रतिदिन बढ़ते जाते हैं और वे फैलकर बिखरे नहीं, इसलिये पाँचवे दिन से उनके नाड़े से (मौली) सीस गुँथे जाते हैं– अर्थात् उन्हें ऊपर सिरों पर कोमलता से बांधा जाता है। घर की गृहिणी– के साथ परिवार की अन्य महिलाएँ व बहन–बेटियाँ उन्हें सँवारती हैं। इस तरह दोनों सांझो में प्रतिदिन सींचते, देखभाल करते, पूजते हुए वे लहलहाने लगते हैं। सींचते समय यह जवारा गीत गाया जाता है। प्रतिदिन रात्रि में सर्वप्रथम पाँच 'जवारा' गीत गाए जाते हैं। नृत्य–प्रहसन–गान सहित जागरण होता है।

राग – काफी	ताल – कहरवा
थाट – काफी	स्वर – ग़ नि़ कोमल

म्हारा हरिया जवारा रे ऽऽ .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – म –	ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – सा –
म्हा ऽ रा ऽ	ह ऽ रि ऽ	या ऽ ज ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
म – म –	ग़ – ग़ –	– – ग़ –	ग़ – म –
रा ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ	घ ऽ ऊं ऽ
प – ग़ –	म – ग़ –	रे – सा –	सा – सा –
ड़ा ऽ हो ऽ	ल ऽ ह ऽ	र ऽ ल ऽ	हे ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – म –	ग़ – रे –	सा– नि़ –	सा – सा–
भो ऽ ळा ऽ	ध णि य र	रा ऽ जा न	बो ऽ ऽ ऽ
म – म –	ग़ – ग़ –	– – ग़ –	ग़ – म –
या ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ग ऽ	र ऽ नु ऽ

प – ग़ –	म – ग़ –	रे – सा –	सा – सा–
बा ऽ ई ऽ	छीं ऽ ऽ ऽ	च ऽ लि ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – म –	ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – – –
रा ऽ णी ऽ	सी ऽ ऽ ऽ	ची ऽ न ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
म – म –	ग़ – ग़ –	– –ग़ –	ग़ – – म
ण्या ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
प – ग़ –	म – ग़ –	रे – सा –	सा – सा –
रा ऽ हो ऽ	पे ऽ ऽ ऽ	ळा ऽ प ऽ	ड़्या ऽ ऽ ऽ
सा – म –	ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – सा –
उ न की ऽ	स ऽ र ऽ	स ऽ प ऽ	टो ऽ ऽ ऽ
म – म –	ग़ – ग़ –	– – ग़ –	ग़ – म –
ळ्ई ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ सु ऽ	भ ऽ द्रा ऽ
प – ग़ –	म – ग़ –	रे – सा –	सा – सा –
बा ऽ ई ऽ	ढ़ा ऽ ऽ ऽ	प ऽ लि ऽ	या ऽ ऽ ऽ

गणगौर – जवारा

उच्चो खेड़ो रे,
म्हारा हरिया जवारा, सरस जवारा,
व्हां रे हरण राजा जव चरऽ
बाण साधो रेऽ, मिरग मारो रे
सदाशिव राय रा धणियर जी
राय हो ब्रह्माजी, राय हो ईश्वर जी
तुमरा हो खेत विनासिया,
बाण साधो रे, मिरग मारो रेऽ
हम क्यों मारा रेऽ
हमारी मांय सांवहड़ी, गोरी पातलड़ी
बईण पूनमबाई सासरऽ
हम क्यों मारा रेऽ ऽऽ
उच्चो खेड़ो रेऽ ऽऽ

उच्चो खेड़ो रे, म्हारा हरिया जवारा.....

प्रतिदिन रात्रि में सर्वप्रथम जवारे गीत गणगौर उत्सव में गाये जाते है, उसके बाद जागरण होता है जिसमें नृत्य, गान, प्रहसन आदि होते हैं। इस गीत में प्राणी मात्र के प्रति दया और अहिंसा के भाव व्यक्त किये गये हैं। साथ ही परिवार के सुख समृद्धि दीर्घ जीवन की कामना से किसी भी प्राणी की हिंसा न करने की आदर्श भावना व्यक्त हुई है। ऊँचे टेकरे पर सरस हरियाले जवारे लगे हैं जिन्हें हिरण राजा चर रहे हैं। सदाशिव राय के धणियर जी, ब्रह्मा जी, ईश्वर जी हिरण आपके खेत नष्ट कर रहे हैं, बाण का निशाना साधिये और हिरण को मारिये वे कहते हैं हम क्यों उन्हें मारे? स्हेनमयी हमारी माँ है, सुंदर पत्नी है और प्यारी बहन ससुराल में है यह हमारा सुख-संसार है। किसी की हत्या करने पर भला हम और हमारा परिवार सुख शांति से कैसे हर पायेगा अत: हम नहीं मारेंगे।

राग – देस	ताल – दीपचंदी
थाट – खमाज	स्वर – नि कोमल

उच्चो खेड़ो रे ऽऽ, म्हारा.............

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा– सा	रे रे प प	प प प	म – म –
उ ऽ च्चो	खे ऽ ऽ ऽ	डो ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
म – म	म प प प	प नि –	ध – प –
म्हा ऽ रा	ह रि या ऽ	ऽ ज ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
म – – –	म – प –	प नि –	ध – प –
रा ऽ ऽ	स ऽ र ऽ	स ज ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
म – –	म – प –	प नि –	ध – ध –
रा ऽ ऽ	व ऽ हां ऽ	रे ह ऽ	र ऽ ण ऽ
प प म	म – म –	रे – सा	रे – रे –
रा ऽ जा	ज ऽ व ऽ	च ऽ र	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

म – म	म म प प	प प नि	ध – ध –
स दा शि	ब रा य ऽ	रा ध णि	य ऽ र ऽ
प – म	म – प प	प प नि	ध – ध –
जी ऽ ऽ	रा ऽ य ऽ	हो ब्र ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ

प – म	म – प प	प प नि	ध – ध –
जी ऽ ऽ	रा ऽ य ऽ	हो ई श्	व ऽ र ऽ
प – म	म – प –	प नि ध	प – प –
जी ऽ ऽ	तु ऽ म ऽ	रा हो खे	ऽ ऽ त ऽ
प प –	म – म –	रे – सा	रे रे – रे
ऽ वि ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	सि ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – सा	रे – प –	प – –	म – म –
बा ऽ ण	सा ऽ ऽ ऽ	धो ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
सा – सा	रे रे प प	प – प	म – म –
मि र ग	मा ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ

आणो

घोड़ा–बठी न धणियर जी आया
रनुबाई करऽ सिंगार वो चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पाणी
पीयर को पेळ्यो जड़ाव की टीकी
मेण की पाटी पड़ाड़ वो चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पाणी
घर म्हारो दूर घाघर म्हारी भारी
घाटी चढ़त हऊं हारी वो चंदा
कसी भरी लाऊं जमुना को पाणी
घोड़ा बठी न धणियर जी आया .....

इस प्रकार गीत में ब्रह्मा राजा, ईश्वर राजा, विष्णु राजा, चन्द्रमा राजा के नाम के साथ क्रम से देवियों का नाम लेकर गीत आगे बढ़ता है।

गणगौर पर्व पर बेटियाँ गौर पूजा के लिये मायके आती हैं और फिर दामाद जी लेने आ जाते हैं। प्रियतम के आने की पत्नी उत्सुकता से राह देखती है। किसी काम में मन नहीं लगता। अब पीहर की सखियों के साथ बतियाने, पनघट पर जाने या अन्य परिचितों से मिलने–जुलने की भी इच्छा नहीं रहती। यदि कोई बुलाये तो भी न जाने के असंख्य बहाने तैयार रहते हैं। धणियर जी रनुबाई को अपने घर ले जाने के लिये आ गये हैं और उसी समय रनुबाई की सहेलियाँ गागर–गुंडी लेकर पानी भरने (यमुना) नदी चलने के लिये रोज की तरह आ गईं। भला रनुबाई कैसे जाती। सखियों को वह कहती हैं– धणियर जी आ गये हैं, मैं श्रृंगार कर रही

हूँ। देखो ना पीहर की पीली साड़ी मैंने पहन ली है, मैं मेण लगाकर अपने बालों को सँवार रही हूँ। मैं ससुराल जाने के लिये तैयार हो रही हूँ। हाँ, नदी से मेरा ये घर दूर है और गागर भी मेरी भारी है, पानी भर-भर कर मैं तो थक गई हूँ, अतः मैं पानी भरने तुम्हारे साथ नदी तक कैसे जाऊँ? भला प्रियतम के आ जाने के बाद कहीं और जाने का मन होगा क्या?

राग – बिलावल	ताल – दादरा
थाट – बिलावल	स्वर – शुद्ध

घोड़ा बठी नऽ धणियर............

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा रे सा	ग ग ग	ग – रे	सा – रे
घो ड़ा ऽ	ब ठी न	ध ऽ णि	य ऽ र
ग – रे	रे – रे	रे – रे	ग ग ग
जी ऽ ऽ	आ ऽ ऽ	या ऽ ऽ	र ऽ नु
ग – ग	ग म म	ग रे रे	ग ग ग
बा ऽ ई	क र ऽ	सिं गा र	वो ऽ ऽ
सा – सा	ध़ – ध़	ध़ – सा	सा – रे
चं ऽ ऽ	दा ऽ ऽ	क ऽ सी	भ ऽ री
रे – रे	रे ग ग	सा सा –	रे – –
ला ऽ ऊं	ज मु ऽ	ना ऽ ऽ	को ऽ ऽ
रे – रे	रे – रे		
पा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ		

अन्तरा

सा रे –	सा – ग	ग – ग	ग – रे
घ र ऽ	म्हा ऽ रो	द ऽ र	ऽ गा ऽ
सा – सा	ग – रे	रे – रे	रे – रे
ग ऽ र	म्हा ऽ री	भा ऽ ऽ	री ऽ ऽ
ग – ग	ग म म	ग – म	म – म
घा ऽ टी	ऽ च ऽ	ढ़ ऽ त	ह ऽ ऊं
रे – रे	म ग ग	सा – सा	ध़ – –

हा ऽ री	वो ऽ ऽ	चं ऽ ऽ	दा ऽ ऽ
ध़ – सा	सा – रे	रे – रे	रे ग ग
क ऽ सी	भ ऽ री	ला ऽ ऊं	ज मु ऽ
सा – सा	रे – रे	रे – रे	रे – रे
ना ऽ ऽ	को ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ
सा रे सा	ग – ग	ग – ग	– ग रे
पी य र	को ऽ ऽ	पे ऽ ळो	ऽ ज ऽ
सा – सा	रे – ग	रे – –	रे – –
ड़ा ऽ व	की ऽ ऽ	टी ऽ ऽ	की ऽ ऽ
ग – ग	ग – ग	ग – म	– ग –
मे ऽ ण	की ऽ ऽ	पा ऽ टी	ऽ प ऽ
रे – रे	म ग ग	सा – सा	ध़ – ध़
ड़ा ऽ ड़	वो ऽ ऽ	चं ऽ ऽ	दा ऽ ऽ
ध़ – सा	सा – रे	रे – रे	रे ग ग
क ऽ सी	भ ऽ री	ला ऽ ऊं	ज मु ऽ
सा – –	रे – रे	रे – रे	रे – रे
ना ऽ ऽ	को ऽ ऽ	पा ऽ ऽ	णी ऽ ऽ

नृत्य

वाड़ वाया वाडुला म्हारा भंवरा रे
वाड़ी मंऽ जायगा कूण
जासे धणियेर पातळा म्हारा भंवरा रे
रनुबाई अन्न नी खाय
वो तो खाय खड़ाखड़ खोपरो म्हारा भंवरा रे
पेय कंचोळो भरी दूध
दूध मंऽ रांधी लापसी म्हारा भंवरा रे
घींव मंऽ चोंगी चोंगी खाय ।
वाड़ वाया वाडुला म्हारा भंवरा रे .....

इसी प्रकार शेष देवताओं और देवियों के नाम लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

गणगौर नारी जीवन का गीति काव्य है। नारी जीवन के विविध प्रसंगों, पलों का गीतमय चित्रण इन गणगौर गीतों में मिलता है। देवी रनुबाई, सावित्री, गौरा, लक्ष्मी, रोहिणी आदि सभी

मानवीय जीवन के सुख-दु:ख, प्रेम, भक्ति आदि भावों का अनुभव करती प्रतीत होती हैं। गणगौर गीतों में बड़े आदर और श्रद्धा भाव से उन्हें कहीं देवी तो कहीं सामान्य मानवीय रिश्तों में बेटी, सहेली के रूप में चित्रित किया गया है। प्रेम, सौंदर्य, आकर्षण, रूठना-मनाना, मिलन-विरह आदि का वर्णन है। उल्लास, उमंग, अभिलाषा, शिकायत, प्रार्थना आदि मानवीय भावों से ये गीत ओत-प्रोत हैं। हास-परिहास और विनोद की झलक मिलती है।

पति धणियर जी कृषि और बाग-बगीचे के कार्यों में व्यस्त हैं। घर लौटने में विलम्ब हो गया है। उनकी अनुपस्थिति में पत्नी रनुबाई खाना नहीं खा रही हैं। हाँ, वे तो केवल खड़ाखड़ नारियल तोड़कर खोपरा खाती हैं और कटोरा भर दूध पीती हैं। दूध में रांधी लपसी घी मिलाकर खा लेती हैं और कुछ नहीं, भला खाया ही क्या?

राग - आसावरी ताल - कहरवा
थाट - आसावरी स्वर - ग ध नि कोमल

वाड़ वाया वाडुला म्हारा भंवरा रेऽ.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा सा	सा सा सा सा	सा सा रे रे	नि़ नि़ नि़ नि़
वा ऽ ड़ ऽ	वा ऽ या ऽ	वा ऽ डु ऽ	ला ऽ म्हा रा
नि़ सा सा रे	रे - - -	रे रे म म	ग ग रे रे
भं व रा ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ मं ऽ
नि़ नि़ सा सा	रे रे सा सा	सा - सा सा	सा सा सा सा
जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ गा ऽ	कू ऽ ऽ ऽ	ण ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा सा	सा सा सा सा	सा सा रे रे	नि़ नि़ नि़ नि़
जा ऽ से ऽ	ध णि यर	पा ऽ त ऽ	ळा ऽ म्हा रा
नि़ सा सा रे	रे - - -	रे रे म म	ग ग रे रे
भं व रा ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ
नि़ नि़ सा सा	रे रे सा सा	सा - सा -	सा सा सा सा
ठा ऽ ऽ ऽ	न्न ऽ नी ऽ	खा ऽ य ऽ	वो ऽ तो ऽ

सा सा सा सा	सा सा सा सा	सा सा रे रे	नि़ नि़ नि़ नि़
खा ऽ य ख	ड़ा ऽ ख ड़	खो ऽ प ऽ	रो ऽ म्हा रा
नि़ सा सा रे	रे – – –	रे रे म म	ग़ ग़ रे रे
भं व रा ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	पे ऽ ऽ ऽ	य ऽ कं ऽ
नि़ नि़ सा सा	रे रे सा सा	सा – सा –	सा – – –
चो ऽ ळो ऽ	भ ऽ री ऽ	दू ऽ ऽ ऽ	ध ऽ ऽ ऽ
सा सा सा सा	सा सा सा सा	सा सा रे –	नि़ नि़ नि़ नि़
दू ऽ ध मं	रां ऽ धी ऽ	ला ऽ प ऽ	सी ऽ म्हा रा
नि़ सा सा रे	रे – – –	रे रे म म	ग़ ग़ रे रे
भं व रा ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	घीं ऽ ऽ ऽ	व ऽ मं ऽ
नि़ नि़ सा सा	रे रे सा सा	सा सा सा सा	सा सा सा सा
चों ऽ गी ऽ	चों ऽ गी ऽ	खा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ

हाट - हिंडोळो

देवी आज छे वो हतनापुर को हाट,
हिंडोळो बांध्यो सरग बन मंऽ (शिरीष बन मंऽ)

(1) माता अरदा-परदा नारेळ एचाय,
हिंडोलो बांध्यो सिरीस बन मंऽ 2

(2) माता अरदाऽ परदा कुरकई एचाय,
हिंडोळो बांध्यो सिरीस बन मंऽ 2

(3) माता अरदा-परदा बाजुट एचाय,
हिंडोळो बांध्यो सिरीस बन मंऽ 2

(4) माता अरदा-परदा मेवो एचाय (खारिक एचाय)
हिंडोळो बांध्यो सिरीस वन मंऽ

(5) माता अरदा-परदा चूनड़ एचाय,
हिंडोळो बांध्यो सिरीस वन मंऽ

(6) माता अरदा-परदा कपूर एचाय,
हिंडोळो बांध्यो सिरीस वन मंऽ

(7) माता अरदा-परदा गजरा एचाय,
हिंडोळो बांध्यो सिरीस वन मंऽ 2

(8) माता अरदा-परदा गऊंड़ा एचाय,

हिंडोळो बांध्यो सिरीस वन मं ऽ
देवी आज छे वो हतनापुर को हाट – – – – –

रनुबाई मायके आने पर मेले में घूमने-रमने एवं आवश्यक खरीदी के लिये गई। हाट-बाजार में अगल-बगल, आमने-सामने तम्बू लगे हैं। गाँवों में साप्ताहिक हाट लगता है, जिसमें ग्रामीण जनों की आवश्यकता का सामान सभी मिल जाता है। आस-पास के गाँवों एवं क्षेत्रों से भी हाट के दिन व्यापारी विभिन्न वस्तुओं की दुकानें लगाते हैं। गाँव के इन हाटों का एक अलग ही महत्त्व है। रना देवी को गणगौर के समय व्रत-अनुष्ठान के लिये आवश्यक सब सामग्री इस हाट में मिल जाती है। ग्रामीण जीवन का अत्यन्त सजीव चित्रण है।

राग – पीलू　　ताल – कहरवा
थाट – काफी　　स्वर – सभी शुद्ध एवं कोमल

देवी आज छे वो हतनापुर को हाट.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ – सा –	रे – रे –	सा – सा –	सा – सा –
दे ऽ ऽ ऽ	वी ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	ज ऽ ऽ ऽ
रे – म –	रे – रे –	नि़ – नि़ –	प़ – – –
छे ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ह ऽ त ऽ	ना ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे – – –	सा – – –	सा – – –
पु ऽ र ऽ	को ऽ ऽ ऽ	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
रे – म –	रे – रे –	नि़ – नि़ –	प़ – – –
ट ऽ ऽ ऽ	हिं ऽ ऽ ऽ	डो ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा सा	रे – रे सा	नि़ – सा –	रे – – –
बां ऽ ऽ ऽ	ध्यो ऽ ऽ ऽ	स ऽ र ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – – –	– – – –
व ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ऽ	मं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे – – –	सा – – –	सा – – –
म्हा ऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	नु ऽ ऽ ऽ
रे – म –	रे – सा –	नि़ – – –	प़ – नि़ –
बा ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	हां ऽ ऽ ऽ	ट ऽ क ऽ

सा – सा –	रे – – –	सा – सा –	सा – सा –
र ऽ ण ऽ	ख ऽ ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रे – म –	रे – सा –	नि़ – – –	प़ – – –
य ऽ ऽ ऽ	हिं ऽ ऽ ऽ	डो ऽ ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा सा	रे – रे सा	नि़ – सा –	रे – – –
बां ऽ ऽ ऽ	ध्यो ऽ ऽ ऽ	स ऽ र ऽ	ग ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	सा – – –	– – – –
व ऽ ऽ ऽ	न ऽ ऽ ऽ	मं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

मेहंदी

टोडर देस सी मंयदी मंगाड़ो जी 2
टोडर देस सी मंयदी मंगाओ
प्रेम रस मंयदी रंग चुंग
वो तो धणियर राजा हसी पूछ वात जी 2
गोरी किन्न रंग्या तुम्हारा हात,
प्रेम रस मंयदी रंग चुंग
हम तो गया हुता मोठा भाई का गांव जी
लाड़ी बऊ न रंग्या हमारा हात
प्रेम रस मंयदी रंग चुंग
भल्ला रंग्या वो सुभागेण धारा हात वो 2
भला रंग्या जो सुभागेण थारा हात,
प्रेम रस मंयदी रंग चुंग
टोडर देस सी .....

क्रमानुसार सभी देवी–देवताओं का नाम लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

मेहंदी सुहाग, सौभाग्य और प्रेम का प्रतीक है। मेहंदी के रंग में सुंदरता, आकर्षण शीतलता, प्रेम–अनुराग और विश्वास के रंग निहित हैं। उसमें गुरुजनों के आशीष और देवी–देवताओ के आशीर्वाद हैं, अत: हमारे यहाँ हर व्रत–तिथि–त्योहार, शुभ अवसरों, मंगल प्रसंगों पर मेहंदी लगाने का विधान है, जो आनंद को द्विगुणित कर देती है। मधुर स्मृतियों और सुवास से शुभ क्षणों को स्मरणीय बना देती है।

रनुबाई के मेहंदी लगे हाथे को देख प्रसन्नता से धणियर जी पूछते हैं–गोरी! तुम्हारे इन

सुंदर हाथों को किसने रंग दिया? वे बड़े हर्ष और गौरव से कहती हैं कि हमें हमारे भाई ने आमंत्रित किया था और उनकी पत्नी ने हमारे हाथ बड़े प्रेम और आदर से मेहंदी लगाकर रंग दिये हैं। हे गोरी! तुम सौभाग्यशालानी हो, उन्होंने तुम्हारे बहुत अच्छे हाथ रंगे हैं, उनका भी कल्याण हो। उनका जीवन भी प्रेम रस से सदा सराबोर रहे।

राग – पीलू	ताल – कहरवा
थाट – काफी	स्वर – शुद्ध एवं कोमल

टोडर देस सी मयंदी मंगाड़ो जी.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – म म	ग – रे –	सा– नि़ –	सा – ग़ –
टो ऽ ड र	दे ऽ ऽ ऽ	स ऽ सी ऽ	मं ऽ य ऽ
ग़ – म –	ग़ ग़ रे रे	सा सा नि़ नि़	सा – सा –
दी ऽ मं ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ड़ो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ
सा – प प	प ध़ प ध़	– प – म	ग़ – ग़ म
टो ऽ ड र	दे ऽ ऽ ऽ	ऽ स ऽ सी	मं ऽ य ऽ
ध़ – प –	म – – –	– – ग़ –	ग़ – रे –
दी ऽ मं ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ ऽ	प्रे ऽ म ऽ
सा – रे –	सा – ग़ –	ग़ – म म	ग़ – रे सा
र ऽ स ऽ	मं ऽ य ऽ	दी ऽ ऽ ऽ	रं ऽ ग ऽ
– नि़ – –	सा – – –	– – – –	– – – –
ऽ चुं ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा – म –	ग़ ग़ रे रे	सा – नि़ –	सा – ग़ –
वो ऽ तो ऽ	ध णि य र	रा ऽ जा ऽ	हं ऽ सी ऽ
ग़ – म –	ग़ – रे –	सा – नि़ –	सा – – –
पू ऽ छ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ तु ऽ	ली ऽ ऽ ऽ
सा – प –	प ध़ प घ़	प म – म	ग़ ग़ – म
गो ऽ री ऽ	कि ऽ न्न ऽ	ऽ रं ऽ ऽ	ग्या ऽ तु
ध़ – प –	म – ध़ –	– प – –	ग़ – रे –

म्हा ऽ रा ऽ	हा ऽ ऽ ऽ	ऽ त ऽ ऽ	प्रे ऽ म –
सा – रे –	सा – ग़ –	ग़ – म म	ग़ – रे सा
र ऽ स ऽ	मं ऽ य ऽ	दी ऽ ऽ ऽ	रं ऽ ग ऽ
नि़ – –	सा – – –	– – – –	– – – –
ऽ चुं ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

दुलरी

रनु बाई की दुलरी गई रे मोरा साजना
गई–गई रे धणियर जी का हात
दुलरी गई रे मोरा साजना
केत्ता की दुलरी गई रे मोरा साजना
असी केत्ता की देऊं रे घड़ाय, दुलरी गई रे मोरा साजना
बीसकी दुलरी गई रे मोरा साजना
असी चालीस की देऊं रे घड़ाय
दुलरी गई रे मोरा साजना
रनुबाई की .....

इस प्रकार क्रमानुसार सभी देवी–देवताओं का नाम लेकर गीत गाते जाते हैं।

पति–पत्नी के बीच हास–परिहास, चिढ़ना–चिढ़ाना, रूठना–मनाना चलता रहता है, जो उनके प्रेम को और प्रगाढ़ बनाता है। स्त्री आभूषण प्रिय होती है। रनुबाई की दुलरी धणियर जी छिपा देते हैं। रनुबाई चिढ़ती हैं, रूठती हैं, नाराज हो जाती हैं और उन्हें विश्वास है कि मुझे परेशान करने के लिये ही धणियर जी ने कहीं छुपा दी है, अत: वे कहती हैं कि धणियर जी के हाथ ही (द्वारा ही) दुलरी खो गई है। जब रनुबाई बहुत परेशान हो जाती हैं, तब धणियर जी बड़े भले मानुस बनते हुए, मजा लेते हुए कहते हैं– अच्छा बताओ तुम्हारी दुलरी कितने की थी? कहो, तुम्हें कितने की दुलरी घड़वा दूँ? रनुबाई बतलाती हैं कि मेरी कीमती दुलरी बीस (हजार) की है, तो धणियर जी चालीस (हजार) की घड़वा (बनवा) देने का आश्वासन देते हैं और रनुबाई प्रसन्न हो जाती हैं।

राग – भूपाली	ताल – चलत दादरा
थाट – कल्याण	स्वर – शुद्ध

रनु बाई की दुलरी गई रे मोरा साजना.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	सा – रे	ग – प	प – प
र ऽ नु	बा ऽ ई	की ऽ ऽ	दु ऽ ल
ग रे रे	सा – –	सा – रे	ग – रे
री ग ई	रे ऽ ऽ	मो ऽ ऽ	रा ऽ ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	सा – सा
सा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ	ना ऽ ऽ	ग ऽ ई
ध़ सा सा	– रे रे	सा रे –	ग – रे
ग ई रे	ऽ ध णि	य र ऽ	जी ऽ का
ग – –	रे – –	ग – –	रे – सा
हा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	त ऽ ऽ	दु ऽ ल
ध़ सा सा	रे – –	सा – रे	ग – रे
री ग ई	रे ऽ ऽ	मो ऽ ऽ	रा ऽ ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	– – –
सा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ	णा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा सा	सा – रे	ग – प	प – प
के ऽ ऽ	त्ता ऽ ऽ	की ऽ ऽ	दु ऽ ल
ग रे रे	सा – –	सा – रे	ग – रे
री ग ई	रे ऽ ऽ	मो ऽ ऽ	रा ऽ ऽ
ग – –	रे – –	सा – –	– – –
सा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
– रे रे	ध़ सा सा	सा रे ग	रे ग –
ऽ अ सी	के त्ता की	दे ऊं रे	घ ड़ा ऽ
रे सा रे	सा ध सा	सा रे सा	रे ग रे
ऽ य दु	ल री ग	ई रे मो	ऽ रा ऽ
ग – सा	सा – सा	सा – सा	सा – रे
सा ऽ ज	ऽ ना ऽ	बी ऽ ऽ	सा ऽ ऽ

ग – प	प – प	ग रे रे	सा – –
की ऽ ऽ	दु ऽ ल	री ऽ गई	रे ऽ ऽ
सा – रे	ग – रे	ग – –	रे – –
मो ऽ ऽ	रा ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ
सा – –	– सा सा	ध़ – सा	सा – सा
ना ऽ ऽ	ऽ अ सी	चा ऽ ली	स ऽ की
सा रे ग	रे – –	ग – –	रे – ग
दे ऊं रे	घ ऽ ऽ	ड़ा ऽ ऽ	य ऽ ऽ
रे – सा	ध़ सा सा	रे – –	सा – रे
दु ऽ ल	री ग ई	रे ऽ ऽ	मो ऽ ऽ
ग – रे	ग – –	रे – –	सा – –
रा ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	ज ऽ ऽ	ना ऽ ऽ

होली

जी दिसी ऊंग्यो सूरीमल भान
व्हां रे किरसाण भाई हल हांक जी ।।
हळ हळ रतन तलाव, बोया रंग कुसुमळ जी
रंगो रंगो धणियर जी री पाग, राणी रनु बाई की चूनड़ जी
जी दिसी ऊंग्यो सूरीमल भान .....

सभी देवी-देवताओं के क्रमानुसार जोड़ी अनुसार नाम लेते हुए गीत गाते जाते हैं।

हमारे कृषि प्रधान देश में देवी-देवता भी अपनी दिनचर्या कृषि कार्यों से प्रारंभ करते हैं और सामान्यजन की तरह उनके साथ पर्व-त्योहार मनाते हैं। वे आमजन के बीच उन्हीं के साथ रहते हैं, यही लोक देवताओं की विशेषता है। फागुन की बासन्ती बयार और रंग-रस भरी प्रकृति के उल्लासपूर्ण वातावरण में होली के रंग में सभी के तन मन एक-दूसरे को रंगने के लिये लालायित हो उठते हैं।

पूर्व दिशा से सूर्योदय हो रहा है और धणियर राजा हल हाँक रहे हैं। खेत में हलते-हलते पास का सरोवर अरुणोदय बेला में केशरिया रंग भरा दिखाई देने लगा। मानो धणियर जी ने सरोवर में केशरिया (लाल-पीला -उदयकालीन सूर्य की आभा) रंग ही बो दिया और वही सरोवर में फैल गया है। यह देख लोग कहते हैं- चलो सरोवर के इस कुसुमल (लाल सुनहरे) रंग में धणियर जी की पागा और रनुबाई की चूनर रंग देंवे। बहुत आनंद आयेगा ।)

राग – भूपाली ताल – दीपचंदी
थाट – कल्याण स्वर – शुद्ध

जी दिसी ऊंग्यो सूरीमल भान..............

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा धृ धृ	सा – सा –	सा – सा	रे ग रे सा
जी ऽ ऽ	दि ऽ सी ऽ	ऊं ऽ ग्यो	सू री म ल
धृ धृ धृ	धृ सा –	सा – –	रे – ग ग
भा ऽ ऽ	ऽ न ऽ	व्हां ऽ ऽ	रे ऽ कि र
सा – सा	रे – ग –	ग रे ग	सा – सा –
सा ऽ ण	भा ऽ ई ऽ	ह ल ऽ	हां ऽ क ऽ
सा – –	सा – – –	सा धृ धृ	सा सा सा सा
जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	ह ल ऽ	ह ऽ ल ऽ
सा– सा	रे ग रे –	सा – –	धृ धृ धृ धृ
र ऽ त	न ऽ त ऽ	ला ऽ ऽ	ऽ व ऽ ऽ
धृ सा सा	रे – ग –	सा – –	रे – रे –
बो ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	रं ऽ ऽ	ग ऽ कु ऽ
ग – रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
सु ऽ ऽ	म ऽ ल ऽ	जी ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

गुलाल सी वो माता भरी वो परात
रंगन भरी पिचकारी
बुचका की रनुबाई चूनड़ ओढ़्या
गयणा पे्र्या ते जड़ाव
(1) पेरी ओढ़ी न रनुबाई गया सासू जी पास
देवो हुकुम खेलां होळ्ई 2
तुमरा धणियर राजा तप का हो लोभी
वो नहीं खेलगा होळ्ई 2
एतरो सुणत रनुबाई रोस भराण्या
पकड़ी बैयां खेलो रे होळ्ई 2

क्रमानुसार सभी देवी–देवतओं के नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

सुहावने फागुन माह में सारी प्रकृति सज उठी है और होली पर सभी एक–दूसरे को रंग गुलाल से सराबोर करते हैं। रनुबाई भी होली खेलने के लिये उत्सुक हो उठती हैं। वह अपने बुचके (बैग या पेटी) से साड़ी गहने पहनकर होली खेलने की तैयारी कर अपनी सास जी से अनुनय–विनयपूर्वक कहती हैं कि आप हमें अनुमति और आपके सुपुत्र धणियर जी को होली खेलने का आदेश दीजिये। सासु जी कहती हैं कि तुम्हारे पति तो तप के लोभी हैं, वे भोग–विलास से दूर हैं, वे होली नहीं खेलेंगे। यह सुन हठपूर्वक अधिकार जताते हुए धणियर जी का हाथ पकड़कर खींचते हुए कहती हैं– चलिये, होली खेलें। भला धणियर जी ऐसे साधिकार प्रेम भरे आग्रह को कैसे टाल सकते थे।

राग – भीमपलास　　　　ताल – दीपचंदी

थाट – काफी　　　　स्वर – ग नि कोमल

गुलाल सी वो माता भरी हो परात...........

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
नि़ – –	सा – रे –	रे – ग	ग रे सा –
गु ऽ ऽ	ला ऽ ल ऽ	सी ऽ वो	मा ऽ ता ऽ
सा – सा	ग ग ग ग	रे – सा	नि़ – प़ –
भ ऽ री	हो ऽ प ऽ	रा ऽ ऽ	त ऽ ऽ ऽ
सा – रे	सा – – –	रे – ग	ग – रे –
रं ऽ ऽ	ग ऽ न ऽ	भ ऽ री	पि ऽ च ऽ
प़ – नि़	सा – – –	– – –	– – – –
का ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – –	सा – रे –	रे – ग –	ग रे सा –
बु ऽ च	का ऽ की ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ
सा – –	ग ग ग ग	रे सा सा	नि़ – प़ –
चू ऽ ऽ	न ऽ ड़ ऽ	ओ ऽ ऽ	ढ़ूया ऽ ऽ ऽ
प़ नि़ –	सा – सा रे	ग – ग	रे – सा सा
ग य ऽ	णा ऽ पे ऽ	र्‍या ऽ ऽ	ते ऽ ज ऽ
रे – –	सा – – –	सा – –	सा – – –
ड़ा ऽ ऽ	व ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

नि़ – –	सा – सा रे	ग़ – ग़	रे – सा –
पे ऽ ऽ	री ऽ ओ ऽ	ढ़ी ऽ न	र नु बा ई
सा – सा	ग़ – ग़ –	रे – सा	नि़ – प़ –
ग ऽ या	सा ऽ सू	जी ऽ ऽ	पा ऽ स ऽ
प नि़ नि़	सा – सा रे	ग़ – –	ग़ – रे –
दे ऽ ऽ	वो ऽ र ऽ	जा ऽ ऽ	खे ऽ लां ऽ
सा रे रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
हो ऽ ऽ	ळ्ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – नि़	सा – सा रे	ग़ – ग़	रे – सा –
तु ऽ म	रा ऽ ध णि	य ऽ र	रा ऽ जा ऽ
सा – सा	ग़ – ग़ –	रे – सा –	नि़ – प़ –
त ऽ प	का ऽ हो ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	भी ऽ ऽ ऽ
नि़ – नि़	सा – रे –	रे – ग़	ग़ – रे –
वो ऽ ऽ	न ऽ हीं ऽ	खे ऽ ऽ	ल ऽ गा ऽ
सा रे रे	सा – – –	– – –	– – – –
हो ऽ ऽ	ळ्ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – नि़	सा – सा रे	ग़ – ग़	रे रे सा सा
ए ऽ त	रो ऽ सु ऽ	ण ऽ त	र नु बा ई
सा – –	ग़ – ग़ ग़	रे – सा	नि़ – प़ –
रो ऽ ऽ	स ऽ भ ऽ	रा ऽ ऽ	ण्या ऽ ऽ ऽ
प़ प़ नि़	नि़ – नि़ –	सा रे ग़	ग़ – रे –
प क ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	बै ऽ या	खे ऽ लां ऽ
सा रे रे	सा – – –	– – –	– – – –
हो ऽ ऽ	ळ्ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

रींझणो

डावां हात तेल फुलेल, म्हारा जवणा हात मंऽ आरती जी
धणियर राजा सुता सुख सेज,
रनुबाई डोल रींझणो जी
डोलतज डोलतऽ आई गई भोळ्ई नींद

हात को रींझणो भुई पड़्यो जी
धणियर राजा खऽ आयो बड़ो रोस
तड़ातड़ मार्‌या ताझणा जी
रनुबाई खऽ आयो बड़ो रोस
आसन छोड़ी भुई सुता जी
राणी खुटी मंऽ का चीर कुम्हलाय,
असो कसो रोसणो जी
पालणा बाळो को इलखाय असो कसो रोसणो जी
राणी पलंग का फूलड़ा कुम्हलाय
असो कसो रोसणो जी
डावां हात तेल फुलेल - - - - -

स्वामी एवं परिवार के लोगों की देखभाल एवं सुख-सुविधा का ध्यान रखना हर भारतीय नारी अपना कर्त्तव्य और धर्म मानती हैं। गणगौर-गीतों में नारी जीवन के प्राय: सभी प्रसंगों का गीत-मय चित्रण मिलता है। प्रेम-श्रृंगार, हास-परिहास, वेदना-पीड़ा, विरह-रूठने और मनाने के क्षणों का अत्यंत सहज चित्रण बहुत कम शब्दों में अत्यंत मधुरता के साथ मिलता है।

रात्रि विश्राम पूर्व रना देवी स्वामी धणियर जी को आराम पहुँचाने के लिये पंखा झलती हुई पलंग पर बैठी हैं। पंखा-झलते-झलते स्वाभाविक रूप से उन्हें स्वयं नींद आ गई और पंखा उनके हाथ से छूट कर नीचे गिर गया। गर्मी से व्याकुल धणियर जी को क्रोध आ गया और उन्होंने रनुबाई को दो-तीन थप्पड़ लगा दिये। भला रनुबाई इस अपमान को कैसे पी जातीं। वे भी रूठ कर पलंग से उतर कर भूमि पर लेट गईं। बात बिगड़ती देख शीघ्र धणियर जी बड़े प्यार से समझाते और मनाते हुए कहते हैं- रानी ऐसी भी क्या नाराजी ठीक है? देखो पालने का अपना प्यारा बच्चा बिलख रहा है, शैया के फूल कुम्हला रहे हैं, अपना रोष और दु:ख छोड़ो, आओ हम सुख से विश्राम करें। तुम अपने आसन पर ही सुशोभित होती हो, शैया छोड़ भूमि पर नहीं।

राग - काफी　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - दोनों गंधार -दोनों निषाद

डावां हाथ तेल फुलेल.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - रे -	सा - नि़ -	प़ - सा -	रे - रे -

डा ऽ वां ऽ	हा ऽ थ ऽ	ते ऽ ऽ ऽ	ल ऽ फू ऽ
ग ग रे रे	सा – नि़ प़	प़ प़ नि़ –	सा – रे रे
ले ऽ ऽ ऽ	ल ऽ म्हा रा	ज व णा ऽ	हा ऽ थ मं
ग ग रे रे	सा – नि़ –	सा – – –	सा – – –
आ ऽ ऽ ऽ	र ऽ ती ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	सा – नि़ –	प़ – नि़ –	सा – रे –
ध णि य र	रा ऽ जा	सू ऽ ता ऽ	सु ऽ ख ऽ
ग – रे –	सा – प़ –	नि़ – सा –	सा – रे –
से ऽ ऽ ऽ	ज ऽ र ऽ	ना ऽ दे वी	डो ऽ ल ऽ
ग – रे –	सा – नि़ –	सा – – –	– – – –
रीं ऽ ऽ ऽ	झ ऽ णो	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा ग रे	सा नि़ प़ –	नि़ नि़ सा सा	रे ग सा रे
डो ल त जो	डो ल त ऽ	आ ई ग ई	भो ऽ ळ्ई ऽ
ग – रे –	सा – प़ –	नि़ – सा –	रे ग सा रे
नीं ऽ ऽ ऽ	द ऽ हा ऽ	थ ऽ को ऽ	रीं ऽ झ णो
ग – रे –	सा – नि़ –	सा – – –	– – – –
भु ऽ ई ऽ	प ऽ ड्यो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
सा – रे –	सा – नि़ प़	नि़ – सा –	रे ग सा रे
ध णि ये र	रा ऽ जा ख	आ ऽ यो ऽ	ब ऽ ड़ो ऽ
ग – रे –	सा – प़ –	नि़ – सा –	रे ग सा रे
रो ऽ ऽ ऽ	स ऽ त ऽ	डा ऽ त ड़	मा ऽ र्या ऽ
ग – रे –	सा – नि़	सा – – –	– – – –
ता ऽ ऽ ऽ	ज ऽ णा ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

सपना

सूती न हो धणियेर सपनोऽ सो (हो) देख्योऽ
सपना को अरथ बताओ भोळा धणियेर 2

(1) मानसरोवर मनऽ सपना मंऽ देखेऽ
भर्‌यो तुर्‌यो भंडार मनऽ सपना मंऽ देख्यो ।

(2) वयती सी गंगा मनऽ सपना मंऽ देखी ऽ
भरी-तुरी वावड़ी मनऽ सपना मंऽ देखीऽ
(3) सरावण तीज मनऽ सपना मंऽ देखी,
कड़कती इजळई मनऽ सपना मंऽ देखी।
(4) गोकुळ को कान्हो मनऽ सपना मंऽ देख्यो।
तखरतो इच्छू मनऽ सपना मंऽ देख्यो।
(5) गुलाब को फूल मनऽ सपना मंऽ देख्यो ।
झपकतो दिवळो मनऽ सपना मंऽ देख्यो,
(6) कवलारी केल मनऽ सपना मंऽ देखीऽ,
वाड़ उप्पर की वांझुली मनऽ सपना मंऽ देखी।
(7) पेळ वाळई नार मनऽ सपना मंऽ देखी,
ऊंगतो सो सूरज मनऽ सपना मंऽ देख्यो।
सपना को अरथ बताओ भोळा धणियेर .....

धणियेर जी ने सपने का अर्थ बतलाया

(1) मान सरोवर थारो बाप हो रनादेव,
भर्‌यो-तुर्‌यो भंडार थारो ससरो हो रनादेव।
(2) वयती सी गंगा थारी मांय वो रनादेव,
भरी-तुरी वावड़ी थारी सासू हो रनादेव।
(3) सरावण तीज थारी बईण हो रनादेव,
कड़कती बिजळई थारी नणद हो रनादेव।
(4) गोकुळ रो कान्हो थारो भाई वो रनादेव,
तरवरतो बिच्छू थारो देवर हो रनादेव।
(5) गुलाब को फूल थारो बाळो हो रनादेव,
झपकतो दीवळो थारो जंवई हो रनादेव
(6) कवळारी केल थारी कन्या वो रनादेव,
वाड़ उप्पर की वांजुली थारी दासी वो रनादेव।
(7) पेळा वाळई नार थारी सौक (सौत) हो रनादेव,
ऊंगतो सो सूरज थारो स्वामी वो रनादेव।
सपना को अरथ बतायो भोळा धणियेर .....

इस गीत में प्रतीकों के माध्यम से पारिवारिक जीवन का सजीव चित्रण किया गया है।

साथ ही पारिवारिक सदस्यों के स्वभाव का भी, सटीक वर्णन है। गीत के पहले भाग में रनुबाई ने स्वप्न में जो चौदह चीजें देखीं उनका अर्थ वे अपने पति धणियर जी से पूछती हैं और दूसरे भाग में धणियर जी रनुबाई को देखे गये स्वप्न और उन चौदह चीजों का अर्थ बतलाते हैं। वास्तव में लोक गीतों में यह स्वभाव-चित्रण की दृष्टि से अद्वितीय है।

रनुबाई अपने पति से कहती हैं कि रात में मैंने जो स्वप्न देखा, आप उसका अर्थ बतलाइये। मैंने सपने में मानसरोवर देखा, भरा-पूरा भंडार देखा, बहती गंगा और भरी-पूरी बावड़ी देखी, श्रावण की हरियाली तीज और कड़कती बिजली देखी, गोकुल का कन्हैया एवं तरवरता (तीव्रता से चलता) बिच्छू देखा! गुलाब का फूल और झपकता दीपक देखा, केले का वृक्ष, बांझ स्त्री का खेत देखा, पीली साड़ी वाली स्त्री एवं ऊगता सूरज देखा। हे स्वामी! मुझे सपने का अर्थ बतलाइये। धणियर जी ने उत्तर दिया- मानसरोवर तुम्हारे पिता हैं, रनादेवी तथा भरा-पूरा भंडार तुम्हारे ससुर हैं। बहती हुई गंगा तुम्हारी माँ है एवं भरी-पूरी बावड़ी तुम्हारी सास है। श्रावण तीज तुम्हारी बहिन हैं और कड़कती बिजली तुम्हारी ननद। गोकुल का कन्हैया तुम्हारा भाई है और तरवरता बिच्छू तुम्हारा देवर है। गुलाब का फूल तुम्हारा बेटा है और झपकता दीपक दामाद है। आँगन की केल तुम्हारी कन्या है तथा बाड़ की बांझ तुम्हारी दासी है। पीला वस्त्र पहने हुई स्त्री तुम्हारी सौत है एवं ऊगता हुआ सूर्य तुम्हार स्वामी है- रनादेवी।

मुस्कराकर रनादेवी कहती हैं, स्वामी आपने सपने का बिलकुल सही अर्थ बतलाया।

राग - मालकौंस	ताल - कहरवा
थाट - भैरवी	स्वर - ग ध नि कोमल

सूती न हो धणियर सपनो सो............

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - - -	ग - म ध	म - म -	ग म ग -
सू ऽ ऽ ऽ	ती ऽ न ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	ध णि य र
सा - सा -	नि - ध -	सा - - -	म - म -
स ऽ प ऽ	नो ऽ सो ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	ख्यो ऽ ऽ ऽ
सा - सा -	ग - म ध	म - म -	ग - म ग
स ऽ प ऽ	ना ऽ को ऽ	अ ऽ र ऽ	थ ऽ ब ऽ
सा - सा -	नि - ध -	सा - - -	म - म -
ताऽ वो ऽ	भो ऽ ळा	ई ऽ श् ऽ	व ऽ र ऽ

अन्तरा

सा – – –	ग – म ध	म म – म	ग म ग –
मा ऽ ऽ ऽ	न ऽ स ऽ	रो व ऽ र	म ऽ न ऽ
सा – सा –	नि – ध –	सा – सा –	म – म –
स ऽ प ऽ	ना ऽ मं ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	ख्यो ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – मध –	म – म म	ग म ग –
भ ऽ र्यो ऽ	तु ऽ र्यो ऽ	भं ऽ डा र	म ऽ न ऽ
सा – सा –	नि – ध –	सा – सा –	म – म –
स ऽ प ऽ	ना ऽ मं ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	ख्यो ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – म ध	म – म –	ग म ग –
व ऽ य ऽ	ती ऽ सी ऽ	गं ऽ गा ऽ	म ऽ न ऽ
सा – सा –	नि – ध –	सा – – –	म – म –
स ऽ प ऽ	ना ऽ मं ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	ख्यो ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ग – म ध	म – म म	ग म ग –
भ ऽ री ऽ	तु ऽ री ऽ	बा ऽ व ड़ी	म ऽ न ऽ
सा – सा	नि – ध –	सा – सा –	म – म –
स ऽ प ऽ	ना ऽ मं ऽ	दे ऽ ऽ ऽ	ख्यो ऽ ऽ ऽ

बांझुली

माता वांझबाई वांझबाई सब कय 2
माता नई कैय कोई बाळा की मांय

(1) माता चार मयना वांझुली नद्दी सुती 2
माता नईं आई रेवा भरपूर,
जल जमुना मंऽ अंबो मंवरियोऽ

(2) माता चार म्हयना वांजुली कुव सूती
माता नईं वदरी कुवा की कराय
जल जमुना मंऽ अंबो मंवरियो

(3) माता चार म्हयना वांजुली वावळ सूती
माता नई डस्यो वासुकी नांग जल जमुना मंऽ.....

(4) माता छाब्या–लीप्या वो म्हारा ओटला (अंगणा)
माता नहीं म्हारो खेलणहार जल जमुना मंऽ .....

(5) माता मांज्या धोया वो भर्या बेडुला
माता नईं म्हारो ढोलणहार, जल जमुना मंऽ ....

(6) माता राम रसोई म्हारा व्हां नित नवी
माता नहीं म्हारो जीमणहार, जल जमुना मंऽ ....

(7) माता एक दीजे वो लूलो पांगळो
म्हारी संपत को रखवाळो, जल जमुना मंऽ ....

नि:संतान स्त्री मातृत्व सुख से वंचित होती है। मातृत्व प्राप्ति में स्त्री जीवन की पूर्णता और सार्थकता मानी जाती है। संतान-हीन स्त्री को बाँझ (वांज) संबोधन बहुत पीड़ादायक होता है। वह अपनी व्यथा गणगौर माता के सामने व्यक्त कर एक सन्तान (भले ही वह लूली-लंगड़ी क्यों न हो) कृपापूर्वक देने की याचना करती है, ताकि उसका बांझपन मिटे और उसकी संपत्ति का कोई रखवाला और उत्तराधिकारी हो। उसके आँगन में भी किलकारियाँ गूंजे, लीपे-पुते आँगन-ओटले पर बच्चा खेले, भरे हुए बेडूले के पानी को कोई खेले-ढोले-फेंके, नित नये बनने वाले भोजन को कोई बच्चा खाये-फैलाये और तरह-तरह की चीजें खाने की जिद करे, वह भी उस बाल-लीला-क्रीड़ा का आनंद ले सके। यह बांझ स्त्री की पीड़ा को व्यक्त करने वाला अत्यंत करुण और मार्मिक गीत है।

राग - काफी　　　　ताल - दीपचंदी
थाट - काफी　　　　स्वर - ग, नि कोमल एवं शुद्ध

माता वांझ बाई, बांझ बाई सब कय..........

स्थाई

× - - -	2- - -	× - - -	3 - - -
सा रे ग	रे - सा -	नि़ - प़	प़ - नि़ -
मा ता ऽ	वां ऽ झ ऽ	बा ऽ ई	वा ऽ झ ऽ
सा रे ग	रे - रे -	सा - -	सा - -
बा ई ऽ	स ऽ ब ऽ	क ऽ ऽ	य ऽ ऽ
सा - रे	म - म -	प- म म	ग - रे -
मा ऽ ता	न ऽ ई ऽ	कैय को ई	बा ऽ ऽ ऽ
सा - रे	म - म -	म म म	ग - रे
ळा ऽ की	मा ऽ ऽ ऽ	ऽ य ऽ	ज ऽ ळ ऽ
सा सा नि़ नि़	सा - सा	रे - ग -	ग - रे -

ज मुना मं	अं ऽ ऽ	बो ऽ ऽ ऽ	मं ऽ व ऽ
सा – सा	सा – सा –	सा – –	सा – – –
रि ऽ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा रे ग़	रे – सा –	नि़ – प़	प़ – नि़ –
मा ता ऽ	चा ऽ र ऽ	म य ना	वां ऽ ऽ ऽ
सा रे ग़	ग़ रे –	सा – –	सा – सा –
जु ली ऽ	न द्दी ऽ	सू ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ
सा – रे	म – म –	प – म	ग – रे –
मा ऽ ता	न ऽ ई ऽ	आ ऽ ई	रे ऽ वा ऽ
सा – रे	म – म –	म – म	ग – रे –
भ ऽ र	पू ऽ ऽ ऽ	ऽ र ऽ	ज ऽ ळ ऽ
सा सा नि़ नि़	सा – सा	रे – ग़ –	ग़ – रे –
ज मुना मं	अं ऽ ऽ	बो ऽ ऽ ऽ	मं ऽ व ऽ
सा – सा	सा – सा –	सा – –	सा – – –
रि ऽ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

वाड़ी दर्शन

रनुबाई–रनुबाई खोलो किवाड़ी,
पूजण वालई कवं की ठाड़ीऽऽ.....2
खोलो किवाड़ी मैया देखां थारी वाड़ी, दरशन की बलिहारी 2

(1) *कळस भरी न हम गंगाजळ लाया,*
मैया खऽ न्हावण करावां
गांठ भरी न हम चूनड़ लाया,
माता खऽ पेळो ओढ़ावांऽ
खोळो किवाड़ी मैया देखां थारी वाड़ी,
दरसन की बलिहारी .....

(2) *छाबा भरी न हम फूलड़ा हो लाया*
माता खऽ फूलड़ा चढ़ाया
खोळो भरी न हम नारेळ लाया,
मैया खऽ नारेळ चढ़ाया

अरे खोळ्ो भरी न हम मेवो जो लाया
मैया खऽ भोग लगावां
खोळ्ो किवाड़ी मैया देखां थारी .....

(3) *हात धरी न हम आरती जो लाया*
भैया की आरती उतारां,
कपूर धरी न हम आरती उतारां,
भैया का दरशन पाया,
अरे खोलो किवाड़ी मैया देखां थारी वाड़ीऽऽ
दरशन की बलिहारी .....

गणगौर आनुष्ठानिक पर्व के अंतर्गत देवी के जवारे बोये जाते हैं एवं पवित्रतापूर्वक दोनों संध्याओं में सींचे जाते हैं। जिनके घर 'बाड़ी' रहती है, उसी परिवार के लोग सेवा करते हैं एवं आठवें दिन माता 'पाट बैठती' हैं, तो जगमाय हो जाती है और सारा गाँव उनके दर्शन और पूजन के लिये आता है। गाँव के सभी स्त्री-पुरुष-बच्चे दर्शन-पूजन करते हैं, उस समय यह गीत गाया जाता है।

माँ दरवाजे खोलो। द्वार पर हम पूजा करने वाले कब से प्रतीक्षा में खड़े हैं। आप किवाड़ खोलिये। आपके दर्शन की बलिहारी है। हम आपके स्नान के लिए गंगा जल लाये हैं, ओढ़ाने के लिये चुनरी, भोग- भेंट के लिये नारियल और मेवा लाये हैं, फूल-मालायें आपके श्रृंगार के लिये लेकर खड़े हैं। कपूर से आरती उतारकर हमने मैया के दर्शन पाये हैं। देवी के दर्शन की बलिहारी है।

राग -भीमपलास | ताल - दीपचंदी
थाट - काफी | स्वर - ग , नि कोमल

रनुबाई-रनुबाई खोलो किवाड़ी.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि - नि	सा - रे -	ग - ग	रे - सा -
र ऽ नु	बा ऽ ई ऽ	र ऽ नु	बा ऽ ई ऽ
सा - सा	ग - ग -	रे - -	नि - प -
खो ऽ ऽ	लो ऽ कि ऽ	वा ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ

नि – नि	सा – रे –	रे – ग	ग ग ग रे
पूं ऽ ऽं	ज ऽ न ऽ	वा ऽ ळ्ई	क ऽ वं की
सा रे रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
ठा ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
खो ऽ ऽ	लो ऽ कि ऽ	वा ऽ ड़ी	मै ऽ या ऽ
सा – सा	ग – ग	रे – –	नि – प़ –
दे ऽ खां	था ऽ री ऽ	वा ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	रे ग –	ग – रे –
द ऽ रं	स ऽ न ऽ	की ऽ ऽ	ब ऽ ली ऽ
सा रे रे	सा – सा –	सा – –	सा – – –
हा ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

नि – नि	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
कं ऽ ळं	स ऽ भ ऽ	री ऽ न	ह ऽ म ऽ
सा – सा	ग – ग –	रे – –	नि – प़ –
गं ऽ गा	ज ऽ ळ ऽ	ला ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	ग ग ग	रे – रे –
मां ऽऽं	ता ऽ ख ऽ	न्हा ऽ व	ण ऽ क ऽ
सा रे रे	सा – – –	सा – –	सा – – –
रा ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	ग – ग	रे – सा –
गां ऽ ऽ	ठ ऽ भ ऽ	री ऽ न	ह ऽ म ऽ
सा – सा	ग ग ग ग	रे – –	नि – प़ –
चू ऽ ऽ	न ऽ ड़ ऽ	ला ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
नि – नि	सा – रे –	रे – ग	ग – रे –
म ऽ ई	या ऽ ख ऽ	चु ऽ न	ड़ ऽ ओ ऽ
सा रे रे	सा – – –	सा – –	सा – – –
ढ़ा ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

आरती

म्हारी रनुबाई–रनुबाई सब कय 2
म्हारी सईत बाई वो तुम सांचा देवऽ
पांच दीपक की रे आरतीऽऽ 2

म्हारी गऊर बाई–गऊर बाई सब कय 2
म्हारी लक्ष्मी बाई वो तुम सांचा देवऽ
पांच दीपक की रे आरतीऽऽ 2

म्हारी रोहेण बाई–रोहेण बाई सब कय 2
म्हारी गजरा बाई वो तुम सांचा देव 2
पांच दीपक की रे आरतीऽऽ 2

गणगौर के नौ दिनों में प्रतिदिन पूजा–अर्चना के पश्चात् आरती होती है। गणगौर या रनुबाई की अनेक आरतियाँ गाई जाती हैं। गौर पूजा के पश्चात् प्रमुख आरती– 'करंडा कस्तूरी' गाई जाती है या 'गऊर–म्हारी गऊर, म्हारी केसरवर्णी गऊर' गाई जाती है। इसी प्रकार आठवें दिन माता पाट बैठती हैं और 'बाड़ी' में से लोग अपने–अपने रथों में अपनी देवी (जवारे–एक रथ में पांच कुरकई, जोड़े में दस कुरकई जवारे) अपने घर ले जाते हैं, तब रात्रि में हर घर (जहाँ देवी–जवारे रथ गये हैं) से महिलायें आरती लेकर 'बाड़ी' में और अन्य सभी घरों में देवी की आरती के लिये जाती हैं, यह तब आरती गाई जाती है। इसके अतिरिक्त प्रतिदिन के रतजगा या जागरण और उत्सव के समाप्ति के समय भी यह आरती गाई जाती है।

इस आरती में वर्णन है कि केवल एक ही देवी नहीं है, ये सभी देवियाँ सच्ची और महत्त्वपूर्ण हैं, इनका सबका समान महत्त्व है– सबमें एक और एक में सब देवियाँ हैं, उन सभी की हम सब सादर पाँच दीपकों से आरती उतारते हैं।

राग –भीमपलासी	ताल – दीपचंदी
थाट – काफी	स्वर – ग़ , नि़ कोमल

म्हारी रनु बाई रनुबाई सब कय.....

स्थाई

× – – –	2– – –	× – – –	0 – – –
नि़ – नि़	सा – सा –	ग़ – म	प – प –

म्हा ऽ री	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई	र ऽ नु ऽ
म – ग	सा– सा –	ग – नि़	सा – – –
बा ऽ ई	स ऽ ब ऽ	क ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
प – प	प म म –	पनि धनि –	प – प –
म्हा ऽ री	स ई त ऽ	बाऽ ईऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म	ग – म –	प – –	म – – –
तु ऽ म	सां ऽ ऽ ऽ	चा ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ
गरे सानि –	सा – – –	ग – म	प – प –
ऽऽ ऽब ऽ	पां ऽ ऽ ऽ	च ऽ दी	प ऽ क ऽ
म ग रे	सा – ग –	नि़ – नि़	सा – सा –
की ऽ रे	आ ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	0 – – –
नि़ – नि़	सा – सा –	ग – म	प – प –
म्हा ऽ री	ग ऽ ऊ र	बा ऽ ई	ग ऽ ऊ र
म – ग	सा – सा –	ग – नि़	सा – – –
बा ऽ ई	स ऽ ब	क ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ
प प प	प – म म	पनि धनि –	प – प –
म्हा ऽ री	ल ऽ क्ष्मी ऽ	बाऽ ईऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म	ग – म –	प – प	म – म –
तु ऽ म	सां ऽ ऽ ऽ	चा ऽ ऽ	दे ऽ ऽ ऽ
गरे सानि –	सा – – –	ग – म	प – प –
ऽऽ ऽव ऽ	पां ऽ ऽ ऽ	च ऽ दी	प ऽ क ऽ
म ग रे	सा – ग –	नि़ – नि़	सा – सा –
की ऽ रे	आ ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ	ती ऽ ऽ ऽ

अबोला

अरे सायबा खेलण गई गणा गऊर
अबोलो केऊं लियो जी महाराज
(1) अरे सायबा अबोलो देवर जेठ,
सायब जी सी ना रव्हां जी महाराज।।

(2) अरे सायबा बंधी गई रेशम गांठ,
टूटे पर ना छूटऽ जी महाराज
(3) अरे सायबा खाटो दूध अरू धई
टूट्यो मन ना जुड़ऽ जी महाराज
अरे सायबा खेलण गई गणा गऊर
अबोलो केऊं लियो जी महाराज

गणगौर गीतों में हमें स्त्री जीवन के विभिन्न प्रसंगों का सजीव वर्णन मिलता है। दाम्पत्य जीवन के विविध क्षणों का चित्रण इन गीतों में बड़े ही मनमोहक रूप में मिलता है। प्रेम-आकर्षण, श्रृंगार, रोष, रूठना, मनुहार करना, क्रोध और आग्रह, विनय, अनुग्रह और कृपा के रसपूर्ण वर्णन अत्यन्त स्वाभाविक एवं जीवन्त हैं।

पत्नी यदि देर तक उत्सवों, पर्वों, सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो जाती है, तो पति महोदय उसकी अनुपस्थिति में उदास हो उठते हैं और वे उनके विविध कार्यों में असुविधा होने पर असहज हो उठते हैं और रुष्ट होकर मौन ले लेते हैं, रूठ जाते हैं। यह स्थिति पत्नी के लिये भी अत्यन्त असहनीय होती है। वह विविध प्रकार से पति को मनाने का प्रयास करती है।

रनुबाई अन्य देवियों गौरा, सावित्री, लक्ष्मी, रोहिणी आदि के साथ गणगौर खेलने गई थीं और विलंब होने पर धणियर जी ने अबोला (मौन) ले लिया है। सो रनुबाई तर्क देकर समझाते हुए कहती हैं कि हम तो गणगौर खेलने गईं थीं, भला आपसे बात किये बिना कैसे रह सकूँगी। अबोला देवर-जेठ से हो तो चल भी जाये, पति से नहीं और हमारे प्रेम संबंध की रेशमी डोर में यदि गाँठ पड़ जाये तो वह डोर टूट तो सकती है, किन्तु गाँठ खुल नहीं सकती। फटे दूध का दही बन जाता है, वह पुनः दूध नहीं बन सकता। वैसे ही दाम्पत्य में अबोला की गाँठ नहीं पड़ने देना चाहिये। आप क्रोध छोड़िये, मुझे क्षमा कीजिये। आपके प्रेममय वचनों बिना नहीं रह सकूँगी।

राग -दुर्गा ताल - दीपचंदी
थाट -बिलावल स्वर - शुद्ध स्वर

अरे सायबा खेलण गई गणा गऊर.....

स्थाई

× - - -	2- - -	× - - -	2 - - -
रे रे रे	रे रे रे	सा रे रे	रे- - - -
अ रे ऽ	सा य बा ऽ	खे ऽ ऽ	ळ्ण ऽ ऽ ऽ

रे – ग	रे – सा –	ध़ – ध़	ध़ – ध़ –
ग ऽ ई	ग ऽ णा ऽ	ग ऽ ऊ	र ऽ अ ऽ
रे रे रे	रे रे रे रे	सा – रे	सा – – –
बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ	के ऽ ऊं	ऽ लि ऽ ऽ
रे – ग	रे – सा –	सा – –	सा – रे –
यो ऽ जी	म ऽ हा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ
रे रे रे	रे रे रे सा	रे – रे	रे – – –
अ रे ऽ	सा य बा अ	बो ऽ ऽ	लो ऽ ऽ ऽ
रे ग ग	रे – सा –	ध़ – ध़	ध़ – ध़ –
दे ऽ ऽ	व ऽ र ऽ	जे ऽ ऽ	ठ ऽ सा ऽ
रे – रे	रे – सा –	रे – –	सा – सा –
हे ऽ ब	जी ऽ सी ऽ	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ
रे– – ग	रे – सा –	सा – –	सा – रे –
व्हां ऽ जी	म ऽ हा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ

अन्तरा

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
रे रे –	रे रे रे –	सा – रे	रे – रे –
अ रे ऽ	सा य बा ऽ	बं ऽ धी	ग ऽ ई ऽ
रे ग ग	रे – सा –	ध़ – –	ध़ – ध़ ध़
रे ऽ ऽ	श ऽ म ऽ	ड़ो ऽ ऽ	ऽ ऽ र टू
रे – –	रे – सा –	रे – –	रे – सा –
टे ऽ ऽ	प ऽ ण ऽ	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ छू ऽ
रे – ग	रे – सा –	सा – सा	सा – रे –
टे ऽ जी	म ऽ हा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ
रे रे रे	रे रे रे –	सा – रे	रे – – –
अ रे ऽ	सा य बा ऽ	फा ऽ ऽ	ट्यो ऽ ऽ ऽ
रे – ग	रे – सा –	ध़ – ध़	ध़ – ध़ –
दू ऽ ध	अ ऽ रू ऽ	ध ऽ ऽ	ही ऽ टू ऽ
रे – –	रे – सा –	रे – –	रे – सा –
ट्यो ऽ ऽ	म ऽ न ऽ	ना ऽ ऽ	ऽ ऽ जु ऽ

रे – ग	रे – सा –	सा – सा	सा – रे –
ड़ ऽ जी	म ऽ हा ऽ	रा ऽ ऽ	ऽ ऽ ज ऽ

श्रृँगार

शुक्र को तारो रे ईश्वर ऊंगी रह्यो
कि तेकी मख टीकी घड़ाव,
असी हठ वाळई ओ रनुबाई गोरड़ी 2
कि (ध्रुव) धुरूव की बदळई रे ईश्वर तुली रही
कि तेकी मख चूनड़ रंगाव
असी छंद वाळई ओ गऊर बाई गोरड़ी 2
कि असी हठ बाळई .....
कि कड़कती बिजळई ओ ईश्वर कड़की रही
कि तेकी मख मगजी लगाव
असी हट वाळई ओ सईत बाई गोरड़ी 2
कि नवलख तारा रे ईश्वर चमकी रह्या
कि तेकी मख अंगिया सिलाव
असी हट वाळई ओ लक्ष्मी बाई गोरड़ी,
कि असी छंद वाळई ओ लक्ष्मी बाई गोरड़ी
कि वासुकी नाग ओ ईश्वर बलखी रह्यो
कि तेकी मख वेणी गुथाव,
असी हट वाळई ओ रोहण बाई गोरड़ी
कि शुक्र को तारो .....

स्त्री आभूषण प्रिय होती है, हो भी क्यों ना! आभूषण उसके सौंदर्य को कई गुना बढ़ा देते हैं। भला सुंदर दिखना कौन स्त्री नहीं चाहेगी। आभूषण के आकर्षण से तो देवियाँ भी नहीं बच पाती हैं। रना देवी अपने स्वामी धणियर जी से जिन आभूषणों को ला देने का आग्रह करती हैं, वे अलौकिक एवं अनुपम गहने हैं। सावित्री जी ब्रह्मा जी से, गौरा देवी ईश्वर (महेश) से तो लक्ष्मी जी विष्णु जी से तथा रोहणी चन्द्रमा जी से उनके सेवक मौलई राजा से उनकी पत्नी गजरा देवी ये श्रेष्ठ आभूषण ला देने की मनुहार करती हैं। गणगौर के इस गीत में प्रकृति के उपादानों से अनुपम श्रृंगार साधनों की अनूठी कल्पना संजोई गई है। भाव और उपमाओं के उपयोग से यह अनूठा गीत है। संस्कृतिविद् डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने इस गीत को 'विश्व लोक साहित्य का अद्वितीय गीत' कहा है। इस गीत ने पद्मश्री पंडित रामनारायण जी उपाध्याय को इतना प्रभावित किया कि उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन 'लोक' को समर्पित कर दिया।

इस गीत में रनुबाई अपने पति से सर्वाधिक प्रकाशमान शुक्र तारे की बिंदी, बादलों की चूनर जिसमें कड़कती-चमकती बिजली की गोट लगी हो, नवलख चमकते तारों की अंगिया जिसमें चमकते चाँद-सूरज की टूकी लगी हो और बलखाते वासुकि नाग की वेणी बनवा देने की मांग और आग्रह करती है। है न ! अनुपम उपमाओं से पूर्ण सौंदर्याभूषण।

राग -भीमपलाी	ताल - कहरवा
थाट -काफी	स्वर - ग , नि कोमल

शुक्र को तारो रे ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - सा -	नि - प -	नि - सा -	सा - सा -
शु ऽ ऽ ऽ	क्र ऽ को ऽ	ता ऽ ऽ ऽ	रो ऽ ऽ ऽ
- - - -	रे - - -	नि - नि -	सा - रे -
ऽ ऽ ऽऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ई ऽ श् ऽ	व ऽ र ऽ
ग - ग -	रे - सा -	सा - सा -	सा - रे -
ऊं ऽ गी ऽ	र ऽ ऽ ह्	यो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ
ग - म -	ग - रे -	सा - - -	नि - - -
ते ऽ की ऽ	म ऽ ख ऽ	टी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग - - -	ग - - -	रे - सा -	नि - प -
की ऽ ऽ ऽ	घ ऽ ऽ ऽ	ड़ा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ व ऽ
प - - -	सा - सा -	नि - प -	नि - सा -
ऽ ऽ ऽऽ	अ ऽ सी ऽ	ह ऽ ठ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
सा - सा -	- - रे -	नि - नि -	सा - रे -
ळई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ
ग - ग -	रे - - -	सा - - -	सा - - -
गो ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
नि - सा -	नि - प -	नि - सा -	सा - सा -
धु ऽ रू ऽ	व ऽ की ऽ	ब ऽ द ऽ	ळ ऽ ई ऽ

– – – –	रे – – –	नि़ – नि़	सा – रे –
ऽ ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ई ऽ श ऽ	व ऽ र ऽ
ग – ग –	रे – सा –	सा – – –	– – रे –
तु ऽ ली ऽ	र ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ कि ऽ
ग – म –	ग – रे –	सा – नि़ –	नि़ – ग –
ते ऽ की ऽ	म ऽ ख ऽ	चू ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	रे – – –	सा – – –	नि़ नि़ नि़ नि़
न ऽ ड़ ऽ	रं ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
– – प़ –	सा – सा –	नि़ – प़ –	नि़ – सा –
ऽ ऽ व ऽ	अ ऽ सी ऽ	ह ऽ ठ ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	– – रे –	नि़ – नि़ –	सा – रे –
ळ्ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ
ग – ग –	रे – – –	सा – – –	सा – – –
गो ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

चूड़िलो

आओ न वो म्हारी राणी रनुबाई
लाल चूड़िलो पेरावां 2
लाल चूड़िलो नहीं पेरां हो पिता जी हम
सासरियो नईं जावां

(1) *सासरियो दु:ख भारी हो पिता जी*
म्हारो देवरियो अलवारी
सासू का बोल म्हारा हिरदा मंऽ लाग
नणद का अवगड़ बोल.....

(2) *सासू का बोल बेटी वयकुण्ठ जासे*
नणद छे ढेल परायी
सासू का बोल बेटी खोळां मंऽ लीजे
नणद छे ढेल परायी
देवर ख वो बेटी हसी न जिमाड़जे
वो नर अपणो कव्हासे 2
आओ न वो म्हारी राणी गऊर बाई
लाल चूड़िलो पेरावां

विवाह पश्चात् बेटी को ससुराल जाना ही पड़ता है। बचपन से उसे शिक्षा दी जाती है कि उसे ससुराल में सबके साथ हिल-मिलकर प्रसन्नतापूर्वक रहना सबको अपना मानना, सबकी सेवा करना, सबके साथ मेल-देकर रहना, निभना और निबाहना है।

इस गीत में जब विदा पूर्व बिटिया को भेजने की तैयारियाँ की जाती हैं, तो उसे मेहंदी-महावर लगाकर सीस गूंथकर, आभूषणें से सज्जित कर नवीन वस्त्रों और आवश्यक सामग्रियों, साधनों के साथ भेजा जाता है। चूड़ी वाली आ जाती है, तो पिता जी कहते हैं- आओ बेटी तुम्हें अच्छी लाल चूड़ियाँ भी पहना दें (जो सुहाग-सौभाग्य का प्रतीक होती हैं)। परन्तु ससुराल जाना वे नहीं चाहतीं और कहती हैं- पिता जी मुझे न तो लाल चूड़ियाँ पहिनना हैं और न तो ससुराल जाना है, क्योंकि ससुराल में मुझे बहुत दु:ख है, देवर उद्दंड है, शैतानियाँ कर परेशान करता है, सासु जी के बोल मेरे हृदय में चुभते हैं और ननद के बोल अवगढ़-बेढंगे होते हैं। पिता समझाते हैं- बेटी सास के बोल आंचल में झेल लेना, वो तो बैकुण्ठ जायेंगे। ननद दूसरे घर ब्याह कर चली जायेगी और देवर तो अपने घर का व्यक्ति है, जो भाई की तरह है और सुख-दु:ख में अपने भाई का सहायक होगा। अत: उससे छोटे भाई की तरह प्रेम से हँसना-बोलना, खिलाना और निबाहना। पिता की इस प्यार भरी सीख से संतुष्ट हो रनुबाई ससुराल जाने के लिये तैयार होती हैं।

राग -भूपाली　　ताल - दीपचंदी
थाट -कल्याण　　स्वर - शुद्ध स्वर

आओ न वो म्हारी राणी रनुबाई .....

स्थाई

× - - -	2- - -	× - - -	3 - - -
ध़ सा सा	रे - ग -	रे ग ग	रे - सा -
आ ऽ ऽ	वो ऽ न ऽ	वो ऽ ऽ	म्हा ऽ री ऽ
ध़ सा सा	रे - ग -	रे - -	सा - ध़ -
रा ऽ ऽ	णी ऽ र ऽ	नु ऽ ऽ	बा ऽ ई ऽ
ध़ सा सा	रे - रे -	ग - -	रे - सा -
ला ऽ ऽ	ल ऽ चू ऽ	ड़ी ऽ ऽ	लो ऽ पे ऽ
रे -- -	सा - - -	ध़ सा सा	रे - ग -
रा ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ	ल ऽ चू ऽ
रे ग ग	रे - सा-	ध़ सा -	रे - ग -

ड़ी ऽ लो	न ऽ ही ऽ	पे रां ऽ	हो ऽ पि ऽ
रे – सा	ध़ – ध़ –	ध़ सा सा	रे – ग –
ता ऽ जी	ह ऽ म ऽ	सा ऽ ऽ	स ऽ रि ऽ
रे ग ग	रे – सा –	रे – –	सा – – –
यो ऽ ऽ	न ऽ ईं ऽ	जा ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

ध़ सा सा	रे – ग –	रे ग ग	रे – सा –
सा ऽ ऽ	स ऽ रि ऽ	यो ऽ ऽ	दु: ऽ ख ऽ
ध़ सा सा	रे – ग –	रे – सा	ध़ – ध़ –
भा री ऽ	हो ऽ पि ऽ	ता ऽ जी	म्हा ऽ रो ऽ
ध़ सा सा	रे – ग –	रे ग ग	रे – सा –
दे ऽ ऽ	व ऽ रि ऽ	यो ऽ ऽ	अ ऽ ल ऽ
रे – –	सा – – –	ध़ सा सा	रे – ग –
वा ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ	सू ऽ का ऽ
रे – ग	रे – सा	ध़ सा सा	रे – ग –
बो ऽ ल	म्हा ऽ रा	हि ऽ र	दा ऽ मं ऽ
रे – सा	ध़ – ध़ –	ध़ सा –	रे – ग –
ला ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ	न ण ऽ	द ऽ का ऽ
रे ग ग	रे – सा –	रे – –	सा – – –
अ ऽ व	ग ऽ ढ़ ऽ	बो ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ

बेटी को सीख

पिता जी की गोदी बठी रनुबाई बिनवऽ 2
कहो तो पिता जी हम रमवा हो जावां 2
जाओ बेटी रनुबाई रमी घर आओ
लम्बी सड़क देखी दौड़ी मत चलजो
उच्चो वटळो देखी जाई मत बठजो
नीर देखी न बेटी चीर मत धोवजो
पाठो देखी न बेटी आड़ी मत घसजो
परायो पुरूस देखी हसी मत बोलजो
परायो बाळो देखी हाय मत करजो
जाओ बेटी गवरल रमी घर आओ

गणगौर गीतों में बालिकाओं को जीवन की महत्त्वपूर्ण शिक्षा देने और उन्हें संस्कारित करने की विधि निहित है। कोई उपदेश या शिक्षा सीधे-सीधे देने में कठोर लग सकती है, किंतु खेल-खेल में गीतों के माध्यम से कही गई बात अधिक प्रभावित करती है। यह गीत बालिकाओं-महिलाओं का सदैव मार्गदर्शन करने में सक्षम है। सभी आयु की बालिकाओं, स्त्रियों के लिये सर्वकालिक एवं लाभदयी शिक्षा इस गीत के माध्यम से दी गयी है।

रनुबाई पिता जी से अनुमति लेती हैं कि वे खेलने जायें क्या? जरूर खेल कर आओ, परन्तु कुछ बातों का बेटी ध्यान रखना। लम्बी सड़क देख दौड़कर मत चलना, ऊँची दुकान और ओटला या भवन देख आकर्षित होकर वहाँ बैठ न जाना, कहीं पानी देख नहाने मत बैठना, मर्यादा व लज्जा का ध्यान रखना। लज्जा ही स्त्री का वास्तविक गहना है, पराये पुरुष से हँस-हँस कर बातें करते हुए भटकना नहीं और दूसरों के सुख-वैभव-संतान को देख हाय मत खाना, अर्थात् ईर्ष्या मत करना, दुःखी मत होना। मर्यादाओं और अनुशासन की सीमा में रहकर ही सुखी और सम्मानित हो सकते हैं। गणगौर में विदा पूर्व ये गीत गाया जाता है।

राग -पहाड़ी	ताल - दीपचंदी
थाट -बिलावल	स्वर - शुद्ध स्वर

पिता जी की गोदी बठी ....

स्थाई

म - रे	म - प घ	प - प	म - सा -
पि ऽ ता	जी ऽ की ऽ	गो ऽ दी	ब ऽ ठी ऽ
रे - रे	म - ग -	रे - -	सा - म -
र ऽ नु	बा ऽ ई ऽ	बि न ऽ	व ऽ हो ऽ
म - रे	म - प ध	प - प	म - सा -
क ऽ हो	तो ऽ पि ऽ	ता ऽ जी	ह ऽ म ऽ
रे - रे	म ग रे -	रे - -	सा - म -
र ऽ म	वा ऽ हो ऽ	जा ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

म - रे	म - प ध	प - प	म - सा -
जा ऽ ओ	बे ऽ टी ऽ	र ऽ नु	बा ऽ ई ऽ
रे - रे	म - ग -	रे रे रे	सा - म -

र ऽ मी	घ ऽ र ऽ	आ ऽ ऽ	ओ ऽ हो ऽ
म – रे	म – प ध	प – प	प – सा –
लं ऽ ऽ	बी ऽ स ऽ	ड़ ऽ क	दे ऽ खी ऽ
रे – रे	म – ग –	रे – रे	सा – म –
दौ ऽ ड़ी	म ऽत ऽ	च ऽ ल	जो ऽ होऽ
म – रे	म – प ध	प – –	म – सा –
उ ऽ ऽ	च्चो ऽ व ट	लो ऽ ऽ	दे ऽ खी ऽ
रे – रे	म – ग –	रे – रे	सा – म –
जा ऽ ई	म ऽ त ऽ	ब ऽ ठ	जो ऽ हो ऽ
म – रे	म – प ध	प – प	म – सा –
प ऽ रा	यो ऽ पु ऽ	रु ऽ ष	दे ऽ खी ऽ
रे – रे	म – ग –	रे – रे	सा – म –
हं ऽ सी	म ऽ त ऽ	बो ऽ ल	जो ऽ हो ऽ
म – रे	म – प ध	प – –	म – सा –
प ऽ रा	यो ऽ बा ऽ	ळो ऽ ऽ	दे ऽ खी ऽ
रे – रे	म – ग –	रे – रे	सा – म –
हा ऽ य	म ऽ त ऽ	क ऽ र	जो ऽ हो ऽ
म – रे	म – प ध	प – प	म – सा –
जा ऽ ओ	बे ऽ टी ऽ	र ऽ नु	बा ऽ ई ऽ
रे – रे	म ग रे –	रे – –	सा – म –
र ऽ म	वा ऽ हो ऽ	जा ऽ ऽ	वो ऽ हो ऽ

झालरिया

तोड़ो-तोड़ो रे डेडम डेड
निंबुआ तोड़ी लाव जो
म्हारा नाना देवरिया रो बाग
निंबुआ तोड़ी लाव जो
म्हारी रनुबाई नाखऽ अचार
निंबुआ तोड़ी लाव जो
उनका धणियेर राजा चाखऽ अचार
निंबुआ तोड़ी लाव जो
स्वामी कसो लग्यो लिंबू अचार

निंबुआ तोड़ी लाव जो
हो राणी खाटो लाग रे अचार
निंबुआ तोड़ी लाव जो
हो राणी खट्टो-मीट्ठो लागऽ अचार
निंबुआ तोड़ी लाव जो
तोड़ो-तोड़ो रे डेडम डेड, निंबुआ तोड़ी लाव जो

गणगौर गीतों में हमें पारिवारिक जीवन के बड़े ही सुंदर दृश्य देखने को मिलते हैं। रनुबाई घर-गृहस्थी के कार्यों में भी निपुण है। भोजन के साथ चटनी, अचार-पापड़ उसके स्वाद और रुचि को बढ़ा देते हैं। कुशल गृहिणी की तरह वे अचार डालने के लिये अपने छोटे देवर को बगीचे से नींबू ला देने का आग्रह करती हैं। धणियर जी नींबू लाकर देते हैं और रनुबाई अचार डालती हैं तो धणियर जी उसे चखकर पत्नी को चिढ़ाने के लिये कह देते कि अचार तो बहुत खट्टा है। रनुबाई के बार-बार स्वाद पूछने पर वे हँसकर कहते हैं- रानी अचार तो बहुत स्वादिष्ट बना है, यह तो बढ़िया खट्टा-मीठा बना है। बहुत मजेदार है। रनुबाई प्रसन्न हो जाती हैं। दाम्पत्य जीवन की सुखद झलकियाँ इन गीतों में मिलती हैं।

धणियर जी के आने के बाद आँगन में धणियर राजा-रनुबाई के सजे रथों को बीच में रख कर उसके चारों ओर नृत्य करते हुये झालरिया गीत गाये जाते हैं।

राग -काफी	ताल - दादरा
थाट -काफी	स्वर - ग , नि कोमल, ग , नि शुद्ध

तोड़ो-तोड़ो रे डेडम डेड .....

स्थाई

सा - सा	रे - म	म - म	ग - रे
तो ऽ ड़ो	तो ऽ ड़ो	रे ऽऽ	डे ऽऽ
ग - रे	सा - -	- रे -	नि - नि
ऽऽ म	डे ऽऽ	ऽ ड ऽ	लिं ऽ बू
सा - रे	ग ग ग	रे रे -	सा - -
वा ऽऽ	तो ड़ी ऽ	ला व ऽ	जो ऽऽ
सा - सा	रे - म	म म म	ग रे ग
म्हा ऽ रा	ना ऽ ना	दे ऽ ऽ	व रि या

रे – –	सा – –	– रे –	नि़ – नि़
री ऽऽ	बा ऽऽ	ऽ ग ऽ	लिं ऽ बू
सा – रे	ग़ ग़ ग़	रे रे –	सा – –
वा ऽ ऽ	तो ड़ी ऽ	ला व ऽ	जो ऽ ऽ

अन्तरा

सा – सा	रे – म	म – म	ग – रे
म्हा ऽ री	र ऽ नु	बा ऽ ई	ना ऽ ख
ग – रे	सा – –	– रे –	नि़ – नि़
अ ऽऽ	चा ऽऽ	ऽ र ऽ	लिं ऽ बु
सा – रे	ग़ – ग़	रे – रे	सा – –
वा ऽऽ	तो ऽ ड़ी	ला व ऽ	जो ऽऽ
सा सा सा	रे– म –	म – म	ग – रे
उ न का	धणि य र	रा ऽ जा	चा ऽ ख
ग़ – रे	सा – –	– रे –	नि़ – नि़
अ ऽऽ	चा ऽऽ	ऽ र ऽ	लिं ऽ बू
सा – रे	ग़ – ग़	रे – रे	सा – –
वा ऽऽ	तो ऽ ड़ी	ला ऽ व	जो ऽऽ

सोन्ना रूपा का घड़ा घड़ीला,
रेशम लम्बी डोर हो झालरिया द
बेटी थारा पयला जो आणा ससरा जी आया
धवळो घोड़ो लाया हो झालरियो द
पिता जी हमरा दादा का कुआ वावड़ी
हम बी पाती खेलां, हो झालरियो द
पिता जी हमरा वीरा का बाग-बगीचा
हम बी पाती खेलां हो झालरियो द
पिता जी अब को आणो पच्छो फेरो न हम
सासरिया नईं जावां, हो झालरियो द
बेटी थारा दूसरा जो आणा जेठ जी आया
काळो घोडिलो लाया हो झालरियो द

पिता जी अबको आणो पच्छो फेरो न हम
सासरिया नईं जावां
बेटी थारा तीसरा जो आणा देवर जी आया
पेळो घोड़ो लाया हो झालरियो द
पिताजी अब को आणो पच्छो फेरो न हम
सासरिया नईं जावां, हो झालरियो द
बेटी थारा चवथा जो आणा नणदई जी आया
लाल घेड़िलो लाया हो झालरियो द
पिताजी अब को आणो पच्छो फेरो न हम
सासरिया नईं जावां हो झालरियो द
बेटी थारा पांचवां जो आणा स्वामी जी आया
छैल-बछेरी लाया हो झालरियो द
पिता जी हमरा वीरा का बाग-बगीचा
हम बी पाती खेलां हो झालरियो द
पिताजी अब को आणो पच्छो फेरो न हम
सासरिया नईं जावां हो झालरियो द
बेटी थारो ससरो बी फिरी गयो, जेठ बी फिरी गयो
देवर बी फिरी गयो, नणदई बी फिरी गयो
हाड़ा राव को कुंवर लाड़िलो वो नहीं पाछ जासे
हो झालरियो दऽ
पिता जी चइत- बैशाख को घाम पड़ न म्हारो
कनक-कलेवर मुरझासे, हो झालरियो दऽ
(कड़ीलो बालो मुरझारो, हो झालरियो दऽ)
बेटी म्हारी अरदा लगावसे, परदा लगावसे
छतरी लगई न लई जासे (तंबू तनई न लई जासे)
हो झालरियो दऽ
पिता जी जळ जमुना को हरो नीळो पाणी
देखी न डर लाग, हो झालरियो द
बेटी म्हारी नाव लगावसे, नावड़्या लगावसे
पार उतारी लई जासे (कड़ी बठई न लई जासे)
हो झालरियो दऽ

पिता जी सासरिया मंऽ दु:ख घणेरा
हम सासरिया नईं जावां, हो झालरियो दऽ
बेटी म्हारी अबको जो आणो सासरऽ जाओ
आता चईत लई आवसां, हो झालरियो दऽ

सद्य: विवाहिता बेटी पीहर आने पर पुन: शीघ्र ससुराल जाना नहीं चाहती। अत: ससुराल से लेने आने पर वह अनेक बहाने बनाकर पिता को ससुराल न भेजने और लेने आने वालों का आतिथ्य कर विनयपूर्वक वापिस लौटा देने का आग्रह करती है। पिता जी कहते हैं- बेटी तुम्हारे श्वसुर, जेठ, देवर और ननदोई जी तो लौट गये हैं, किन्तु हाड़ा राव के लाड़िले कुँवर तुम्हारे स्वामी धणियर जी वापिस नहीं लौटेंगे। धूप से बचाव के लिये वे छतरी, पर्दे का उपयोग कर लेंगे और तुम्हें आराम से ले जायेंगे। गहरी नदी को पार करने के लिये नाव-नाविकों की मदद ले लेंगे, यहाँ तक कि तुम्हें गोद में उठाकर नदी पार कर ले जायेंगे। अत: तुम्हें जाना ही पड़ेगा और मायके आई हुई रनुबाई धणियर जी के साथ आखिर पुन: चैत्र में पीहर आने की आस लेकर ससुराल चली जाती हैं।

राग -बिलावल　　ताल - कहरवा
थाट -बिलावल　　स्वर - शुद्ध स्वर

सोन्ना रूपा का घड़ा घड़ीला .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे रे रे रे	रे रे रे रे	रे – सा –	ध़ – सा –
सो ऽ ऽ ऽ	न्ना ऽ ऽ ऽ	रू ऽ ऽ ऽ	पा ऽ का ऽ
सा – रे –	रे रे ग –	रे सा ध़ ध़	सा – सा –
घ ऽ ड़ा ऽ	ऽ ऽ घ ऽ	ड़ी ऽ ला न	रे ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – – –	सा – – –	ध़ – ध़ –
श ऽ म ऽ	लं ऽ ऽ ऽ	बी ऽ ऽ ऽ	डो ऽ ऽ ऽ
ध़ – ध़ –	सा – सा –	रे – सा –	रे – – –
र ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ	झाऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ
सा – – –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –
ऽ रि ऽ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ	द ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे– रे –	रे – रे –	सा – – –	रे – ग –
बे ऽ टी ऽ	था ऽ रा ऽ	प ऽ य ऽ	ळा ऽ जो ऽ
रे – सा –	ध़ – ध़ –	सा – सा –	रे – ग –
आ ऽ ऽ ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	स ऽ स ऽ	रा ऽ जी ऽ
रे – सा –	ध़ – – –	सा– सा –	रे – ग –
आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	ध ऽ व ऽ	ळो ऽ ऽ ऽ
रे – – –	सा – – –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –
घो ऽ ऽ ऽ	ड़ो ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – सा –	रे – रे –	– सा – –
हो ऽ ऽ ऽ	झा ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	ऽ रि ऽऽ
ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –	रे – रे –
यो ऽऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ	पि ऽ ता ऽ
रे – रे –	सा – सा –	रे – ग –	रे – सा –
जी ऽ ऽ ऽ	अ ऽ ब ऽ	को ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ऽऽ
ध़ – – –	सा – रे –	– ग – –	रे – सा –
णो ऽ ऽ ऽ	प ऽ च्छो ऽ	ऽ फे ऽऽ	रो ऽ न ऽ
ध़ – ध़ –	सा – सा –	रे – ग –	रे – रे –
ह ऽ म ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	स ऽ रि ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ ध़	सा – – –
न ऽ ईं ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ
रे – सा –	रे – रे –	– सा – –	ध़ – ध़ –
झा ऽ ऽ ऽ	ल ऽ ऽ ऽ	ऽ रि ऽ ऽ	यो ऽ ऽ ऽ
ध़ – ध़ –	ध़ – ध़ –		
ऽ ऽ ऽ ऽ	द ऽ ऽ ऽ		

रजा

रूणझुण, रूणझुण घुंघरू वाजऽ
म्हारी रनु बाई पावणा आया जी
पावणा आया, म्हारा मन भाया
तुम देवो रजा घर जावां जीऽऽ

इसी प्रकार सईत बाई (सावित्री) गऊर बाई (गौरा देवी), लक्ष्मी बाई, रोहेण (रोहिणी देवी), गजरा बाई आदि सभी देवियों का नाम लेकर गीत गाते जाते हैं।

रूणझुण-रूणझुण घुँघुरू बज रहे हैं। मेरी रनुबाई एवं सभी देवियाँ मेहमान आई हैं। उनके आने से हमें बहुत खुशी हो रही है। हम सब उन्हें मिलने, दर्शन करने, सेवा और सत्कार करने आये थे। अब हे देवियों! हमें अपने-अपने घर जाने की अनुमति दीजिये। हम प्रतिदिन आते रहेंगे। आपके शुभागमन के उत्सव में हम भी सम्मिलित रहेंगे। आज आप हमें घर जाने की अनुमति दें।

राग -भूपाली	ताल - कहरवा
थाट -कल्याण	स्वर - शुद्ध स्वर

रूणझुण-रूणझुण घुंघुरू वाजऽ..............

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग - ग -	ग - ग -	रे - सा -	रे - ग -
रू ऽ ण ऽ	झु ऽ ण ऽ	रू ऽ ण ऽ	झु ऽ ण ऽ
ग ग ग ग	ग ग ग ग	रे सा - - -	सा - सा -
घुं ऽ घ ऽ	रू ऽ ऽ ऽ	वाज ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ री ऽ
सा - रे -	रे - रे -	सा - सा -	ध़ - ध़ -
र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	पा ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ
रे - ग -	रे - ग -	ग - - -	ग - - -
आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग - ग -	ग - ग -	रे - सा -	रे - ग -
पा ऽ व ऽ	णा ऽ ऽ ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
ग- ग -	ग - ग -	रे - रे -	सा - सा -
म्हा ऽ रा ऽ	म ऽ न ऽ	भा ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ
सा- रे -	रे रे रे रे	सा - सा -	ध़ - ध़ -
दे ऽ वो ऽ	ऽ ऽ र ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	घ ऽ र ऽ
रे - ग -	रे - ग -	ग - ग -	ग - ग -
जा ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

तुम देवो रजा घर जावां म्हारी रनुबाई वोऽ
चूल्हा पर खिचड़ी खदबद वो, म्हारी रनुबाई वोऽ
अंगारऽ सीजऽ दाळ, म्हारी रनुबाई वोऽ
ससरा जी सूता द्वार, म्हारी रनुबाई वोऽ
सासू जी दीसे गाळ म्हारी रनुबाई वोऽ
म्हारी नणद मरोड़ऽ गाल, म्हारी रनुबाई वोऽ
म्हारा देवर खऽ चुगली की वाण, म्हारी रनुबाई वोऽ
म्हारा स्वामी सुता-सुख सेज, म्हारी रनुबाई वोऽ
तुम देवो रजा घर जावां, म्हारी रनुबाई वोऽ

गणगौर पर्व के प्रत्येक दिन रात्रि जागरण नृत्य-गीत, प्रहसन आदि द्वारा हास-परिहास उत्सव मनाया जाता है। अंत में 'बाड़ी स्थल' से अपने-अपने घर विश्राम हेतु जाने के लिये देवियों से अनुमति मांगी जाती है, उसे रजा कहते हैं। उस समय ये गीत गाये जाते हैं। बाड़ी से जाने का मन तो किसी भी महिला का नहीं होता, परन्तु घर के आवश्यक कार्य भी गृहणियों को ही करना पड़ते हैं। परिवार के सदस्यों की सेवा भोजन आदि की व्यवस्था भी करना होती है। साथ ही घर-परिवार के लोगों का ध्यान भी रखना पड़ता है। अत: लौटने के कारण बतलाते हुए घर जाने की अनुमति ली जाती है। देवी जागरण हेतु बाड़ी आते समय चूल्हे पर खाना बनाना शुरू कर दिया था, खिचड़ी पक रही है, दाल अंगारों पर बफाई जा रही है- जल न जाय। ससुर जी द्वार के सामने ही पलंग पर लेटे होंगे। विलंब होने पर डाँटेंगे, सासू जी भी अपशब्द कहेंगी, ननद गाल मरोड़ देंगी और देवर जी को चुगली करने की आदत है। स्वामी जी कहीं खाना खाये बिना ही न सो जायें! इसलिये- हे रनुबाई, गौर बाई, सावित्री बाई, लक्ष्मी बाई, गजरा बाई! आप सभी अब घर जाने की अनुमति दें। कल सुबह फिर आयेंगे।

राग - देस　　ताल - कहरवा
थाट -खमाज　　स्वर - दोनों निषाद, (नि, <u>नि</u>)

तुम देवो रजा घर जावां .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
प - म -	प - <u>नि</u> -	- - ध -	प - - -
तु ऽ म ऽ	दे ऽ वो ऽ	ऽ ऽ र ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
म - ग -	रे - ग -	ग - ग -	सा - सा -

घ ऽ र ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा– सा –	रे – म –	म – प –	प – – –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
पम – प	प – प –	नि – ध –	प – म –
चू ऽऽऽ	ल्हा ऽ ऽ ऽ	प ऽ र ऽ	खि ऽ च ऽ
ग – – –	रे – रे –	ग – ग –	सा – सा –
ड़ी ऽ ऽ ऽ	ख ऽ द ऽ	ब ऽ द ऽ	हो ऽ ऽ ऽ
सा– सा–	रे – म –	म – प –	प – प –
म्हा ऽ री ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म –	प – नि ध	प – – –	म – – –
अं ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	र ऽ ऽ ऽ	सी ऽ ऽ ऽ
ग – – –	रे – ग –	ग – ग –	सा – सा –
ज ऽ ऽ ऽ	दा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ळ ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – म –	म – प –	प – – –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म –	प – नि –	ध – प –	म – – –
म्हा ऽ रा ऽ	स ऽ स ऽ	रा ऽ जी ऽ	सु ऽ ऽ ऽ
ग – – –	रे – ग –	ग – ग –	सा – सा –
ता ऽ ऽ ऽ	द्वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – म –	म – प –	प – – –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म –	प – नि –	ध – प –	म – म –
म्हा ऽ री ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	सू ऽ ऽ ऽ	दि ऽ ऽ ऽ
ग – – –	रे – ग –	ग – ग –	सा – सा –
से ऽऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ळा ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – म –	म – प –	प – – –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प – म –	प – नि –	ध – प –	म – म –
म्हा ऽ री ऽ	न ऽ ण ऽ	द ऽ म ऽ	रो ऽ ऽ ऽ

ग – – –	रे – ग –	ग ग ग ग	सा – सा –
ड़ ऽ ऽ ऽ	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ल ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – म –	म – प –	प – प –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
प – म –	प – नि –	ध – प –	म – म –
म्हा ऽ रा ऽ	दे ऽ व ऽ	र ऽ ख ऽ	चु ऽ ग ऽ
ग – ग –	रे – ग –	ग ग ग ग	सा – सा –
ली ऽ की ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ण ऽ	म्हा ऽ ऽ ऽ
सा – सा –	रे – म –	म – प –	प – प –
री ऽ ऽ ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ

मेवा वितरण

दई द्यो दई द्यो रना देवी नार,
आज की धाड़की देओ
म्हारी आज की बी द्यो
म्हारी काल की बी देओ
म्हारी परसों की रही गई उधार
रना देवी धाड़की देओ

इस तरह क्रमानुसार सभी देवियों के नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

गणगौर के समय पूजा-अर्चना, गीत, नृत्य, जागरण आदि के पश्चात् प्रतिदिन सबको प्रसाद स्वरूप मेवा वितरण होता है, जिसमें ज्वार की धानी (लाई), मुरमुरे, मक्के की धानी, मूंगफली, फुटाने, चिरौंजी, मिश्री आदि मिलाकर बांटा जाता है। गरीब-अमीर सभी के लिये सुलभ्य यह प्रसाद बड़े आदर और चाव से सभी खाते हैं। कार्यक्रम के समापन की सूचना स्वरूप रजागीत के बाद प्रसाद मांगते इस गीत को गाते हुए सब प्रसाद लेकर अपने-अपने घर जाते हैं। अगले दिन आने की इच्छा व्यक्त करते हुए विश्राम के लिये घर पहुँचते हैं।

राग – काफी	ताल – दादरा
थाट –काफी	स्वर – ग, नि दोनों (ग ग और नि नि)

दई द्यो, दई द्यो रना देवी नार.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा– सा–	रेरे मम –	– म –	ग रे ग़
दई द्यो ऽ	दई द्यो ऽ	ऽ र ऽ	ना दे ऽ
रे – –	सा – –	रे – –	नि़ नि़ नि़
वी ऽ ऽ	ना ऽ ऽ	रे ऽ ऽ	आ ऽ ज
सा – रे	ग़ ग़ ग़	रे – रे	सा – –
की ऽ ऽ	धा ऽ ड़	की ऽऽ	द्यो ऽ ऽ
सा – सा	रे रे म	म – म	ग – ग
म्हा ऽ री	आ ऽ ज	की ऽ बी	दे ऽ वो
सा – सा	रे रे म	म – म	ग – ग
म्हा ऽ री	का ऽ ल	की ऽ बी	दे ऽ वो
सा – सा	रे ग़ रे	ग़ सा –	सा रे –
म्हा ऽ री	प र सों	ऽ की ऽ	रई गई ऽ
– रे –	सा – –	रे – रे	नि़ – सा
ऽ उ ऽ	धा ऽ ऽ	र ऽ र	ना ऽ दे
रे – –	ग – –	रे – –	सा सा सा
वी ऽ ऽ	धा ऽ ड़	की ऽऽ	दे ओ ऽ
सा सा सा	रे म म	म – –	ग– रे– –
म्हा ऽ री	प र सो	की ऽऽ	रई गई ऽ
– रे –	सा – –	रे – रे	नि़ – सा
ऽ उ ऽ	धा ऽ ऽ	र ऽ र	ना ऽ दे
रे – –	ग़ – –	रे – –	सा – सा
वी ऽ ऽ	धा ऽ ड़	की ऽ ऽ	दे ओ ऽ

रथ बौड़ाना

अंगेली वो माता चंगेली वो माता
दवणी मंऽ को भात जी
असो छे कोई मानवई
म्हारा जाता रथ बवड़ाव जी
आड़ी मंऽ की वांजुली वो माता
वाड़ी मंऽ की रात जी

असा मनीष भाई मानवई
म्हारा जाता रथ बवड़ाव जी
असी स्वरूपा वऊ पातळ्ई
म्हारा चलता जोड़ा जिमाड़ ऽ जी

गणगौर पर्व के अवसर पर रनुबाई एवं अन्य देवियाँ बेटी की तरह आती हैं। बेटियों के पीहर आने पर घर की रौनक बढ़ जाती है। आनंद उत्सव का वातावरण रहता है। फिर बेटियों को विदा करवाकर ले जाने के लिये दामाद आते हैं। उसी प्रकार धणियर जी एवं सभी देव अपनी पत्नियों की विदा करवाकर अपने साथ ले जाने के लिये आते हैं। तब उन्हें आग्रहपूर्वक रोककर मेहमानी की जाती है। यदि कोई 'मानता' लेता है कि हमारा अमुक काम हो जाने पर गणगौर माता के रथ बौड़ायेंगे तो विदा स्थल से वे मानपूर्वक 'बाड़ी' के सभी रथों को अपने घर लाते हैं और रात्रि जागरण, गीत-नृत्य, श्रृँगार, स्वागत-आतिथ्य कर प्रत्येक रथ का एक जोड़ा एवं एक सुहागन (आरती उठाने वाली बहन-बेटी) के हिसाब से भोजन वस्त्रादि देकर कलेवा सहित विदा की जाती है। विसर्जन स्थान से इस गीत को गाते हुए वापिस लाया जाता है। इसे ही रथ बौड़ाना कहते हैं।

राग – भूपाली	ताल – कहरवा
थाट –कल्याण	स्वर – शुद्ध स्वर

अंगेली वो माता चंगेली वो माता.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग – ग –	रे सा ग ग	ग – ग –	रे सा सा सा
अं ऽ गे ऽ	ली वो माता	चं ऽ गे ऽ	ली वो मा ता
सा – रे –	सा – ध़ –	रे ग रे ग	ग – ग –
द व णी ऽ	मं ऽ को ऽ	भा ऽ ऽ त	जी ऽ ऽ ऽ
ग – ग ग	रे – सा –	ग – ग –	रे रे सा सा
अ ऽ सा छे	को ऽ ई ऽ	मा ऽ न ऽ	व ई म्हा रा
सा – रे –	सा ध़ ध़ सा	रे ग रे ग	ग – ग –
जा ऽ ता ऽ	र थ ब व	ड़ा ऽ ऽ व	जी ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

ग – ग –	रे सा ग ग	ग – ग –	रे रे सा सा
अ ऽ सा छे	म नीष भा ई	मा ऽ न ऽ	व ई म्हा रा

सा – रे –	सा ध़ ध़ सा	रे ग रे ग	ग – ग –
जा ऽ ता ऽ	र थ ब व	ड़ा ऽ ऽ व	जी ऽ ऽ ऽ
ग – ग –	रे सा ग ग	ग – ग –	रे रे सा सा
अ ऽ सी छे	स रूपा व ऊ	पा ऽ त ऽ	ळ ई म्हा रा
सा – रे रे	सा– ध़ सा	रे ग रे ग	ग – – –
च ऽ ल ता	जो ऽ ड़ा जी	मा ऽ ऽ ड़	जी ऽ ऽ ऽ

विदा

म्हारी रनु बाई वोऽ सासरऽ जाय
सासरा की साड़ी दूर करऽ वो माता
पीयर को वो पेळ्यो पेरी जाय।

(1) कोई कैय वाण्या, कोई कैय बामण
कोई कैय वोऽ राणा–रजपूत,
नईं हम वाव्या, नईं हम बामण,
नईं हम वो राणा–रजपूत
हम तो रे भोळ्या घर की नार ।।

इस प्रकार सभी देवियों के क्रमानुसार नाम लेते हुए गीत आगे बढ़ता जाता है।

ससुराल जाते समय बेटी पीहर की साड़ी पहनकर जाती है। रनुबाई की विदा के समय उन्हें और समस्त देवियों को 'पेला' (पीली–सिंदूरी–साड़ी) पहनाई जाती है। पीली ओढ़नी ओढ़ाई जाती है। विदा होती रनुबाई के श्रृंगार–सौंदर्य को देख लोग मानो भ्रमित हो जाते हैं कि यह सौंदर्यवती नार कौन है? क्या किसी वैश्य परिवार की वधू है या ब्राह्मण परिवार की अथवा राणा जी की रानी है या फिर कोई राजपूती नार। रनु बाई उनके आश्चर्य और असमंजस को जानकर मुस्कुराती हुई कहती हैं– 'न तो हम वैश्य नारी हैं, न ब्राह्मण की नार और न हम राणा घर की हैं, न ही हम राजपूत नारी हैं। हम तो भोले धणियर जी की नार हैं। हम तो देवी हैं, जो अमुक भाई के यहाँ मेहमान आई थी।

राग–मधुमाद सारंग	ताल–कहरवा
थाट–काफी	स्वर – (नि) कोमल

म्हारी रनु बाई वो सासर.....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा –	नि़ – सा –	रे – सा –	रे – – –
म्हा ऽ री ऽ	र ऽ नु ऽ	बा ऽ ई ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
सा – नि़	नि़ – सा –	रे – सा –	सा – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	स ऽ र ऽ	जा ऽ य ऽ
रे – रे –	रे – सा –	रे – म –	म – म –
सा ऽ स ऽ	रा ऽ की ऽ	सा ऽ ऽ ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ
रे – रे रे	रे – सा –	रे – म –	म – म –
द ऽ ऽ ऽ	र ऽ क ऽ	रो ऽ हो ऽ	मा ऽ ता ऽ
नि़ – सा	रे – र –	रे – रे –	सा – सा –
पी ऽ ऽ ऽ	य ऽ र ऽ	को ऽ ऽ ऽ	वो ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – – –	सा – – –
पे ऽ ळो ऽ	पे ऽ री ऽ	जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे – रे –	रे – सा –	रे म – म	म – म –
को ऽ ई ऽ	क ऽ य ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ण्या ऽ ऽ ऽ
रे – रे रे	रे – सा –	सा – – –	सा – – –
को ऽ ई ऽ	क ऽ य ऽ	बा ऽ ऽ ऽ	म ऽ ण ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	रे – रे –	सा – नि़ –
को ऽ ई	क ऽ य ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
रा ऽ णा ऽ	र ऽ ज ऽ	पू ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त ऽ
रे – रे –	रे – सा –	रे – म –	म – म –
न ऽ ईं ऽ	ह ऽ म ऽ	वा ऽ ऽ ऽ	ण्या ऽ ऽ ऽ
रे – रे –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –
न ऽ ईं ऽ	ह ऽ म ऽ	बा ऽ ऽ ऽ	म ऽ ण ऽ
नि़ – सा	रे – सा –	रे – रे –	सा – नि़ –
न ऽ ईं	ह ऽ म ऽ	वो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	सा – सा –	सा – सा –

रा ऽ णा ऽ	र ऽ ज ऽ	पू ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त ऽ
नि़ – सा –	रे – सा –	रे – रे –	सा – नि़ –
ह ऽ म ऽ	तो ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
नि़ – सा –	रे रे सा सा	सा – – –	सा – सा सा
भो ऽ ळा ऽ	घ र की ऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ र ऽ

दुई महलां रा बीच
पोपटड़ो रेऽ ऽ मोती चुगऽ
कोई देवो न उड़ाय,
आप आप रे पंछी उड़ी जासे ।
रनुबाई अति सरूप ।
हिवड़ो लगई नऽ धणियेर लई जासे ।।

इस प्रकार क्रमानुसार सभी देवी–देवताओं के नाम लेकर गीत आगे बढ़ता जाता है।

गणगौर के जवारे धणियर राजा, रनुबाई के रथों में रखकर सम्मानपूर्वक विसर्जन हेतु नदी पर ले जाते समय ये गीत गाया जाता है। इस गीत में आत्मा–परमात्मा के मिलन का तथा संसार की असारता को प्रतीक रूप में समझाया गया है। गीता की शिक्षा भी है कि जन्म सत्य है, तो मृत्यु भी अवश्य है। आगमन हुआ है तो विदा भी जीवन का कठोर सत्य है।

धरती और आकाश रूपी दो महलों के बीच आत्मा–परमात्मा रूपी दो पक्षी हैं। प्रिया संसार में आकर अपने निर्धारित कार्य कर वापिस अपने पिया–परमात्मा के घर लौट रही है। स्वयं प्रियतम ईश्वर अपनी शुद्ध–पवित्र आत्मा रूपी प्रिया को हृदय से लगाकर ले जायेंगे, किसी अन्य को कोई प्रयास नहीं करना है।

रनुबाई– धणियर राजा के माध्यम से जीवन के इस सत्य को अत्यन्त मार्मिक, मधुर एवं करुण तथा बहुत कम शब्दों में इस गीत में व्यक्त किया गया है।

राग – देस	ताल – दीपचंदी
थाट – खमाज	स्वर – दोनों निषाद (नि , नि़)

दुई महलां रा बीच, पोपटड़ो रे .....

स्थाई

× – – –	2– – –	× – – –	3 – – –
सा – सा	रे – म –	प म प	म – रे रे
दु ऽ ई	म ऽ य ऽ	ला रा ऽ	बी ऽ ऽ ऽ
– प –	प – म –	ग – रे	सा – सा –
ऽ च ऽ	पो ऽ ऽ ऽ	प ऽ ट	ड़ो ऽ ऽ ऽ
रे ग म	ग – ग –	रे – रे	सा – सा –
रे ऽ ऽ	मो ऽ ती ऽ	चु ऽ ऽ	ग ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा – सा	रे – म –	प म प	म म रे रे
को ऽ ई	दे ऽ वो ऽ	न उ ऽ	ड़ा ऽ ऽ ऽ
– प –	प – प –	म – ग	रे – सा –
ऽ य ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	प ऽ आ	प ऽ रे ऽ
रे ग म	ग – ग –	रे – रे	सा – – –
पं ऽ छी	उ ऽ ड़ी ऽ	जा ऽ ऽ	से ऽ ऽ ऽ
सा– सा– सा	रे – म –	प म प	म – रे –
रनु बाई ऽ	अ ऽ ऽ ऽ	ति स ऽ	रू ऽ ऽ ऽ
– – प	प – म –	ग – रे	सा– – सा –
ऽ ऽ प	हि ऽ व ऽ	ड़ो ऽ ल	गई ऽ न ऽ
रेग मम –	ग – ग –	रे – रे	सा – – –
धणि यर ऽ	ल ऽ ई ऽ	जा ऽ ऽ	से ऽ ऽ ऽ

विसर्जन

मांय कैय म्हारी रूणझुण बेटी;
बिन्दी बिना उपाणी जीऽ
काई करूं वो थारी बिन्दी खऽवो,
म्हारा सुभाण उतर्‌या जाय जीऽ
सुभान उतरया परवत चैयढ़ूयाऽ
रीता रथ घर जाय जीऽऽ

इसी प्रकार सभी देवियों के क्रमानुसार नाम लेते हुए गीत गाया जाता है।

बेटी के आगमन पूर्व से सारे घर में उसके आने की खुशी और स्वागत की विविध तैयारियाँ उत्साहपूर्वक चलती रहती हैं और विदाई की भी तैयारियाँ जोर-शोर से चलती हैं। तैयारियों के बीच दामादों के आ जाने पर उनके स्वागत-सत्कार की गहमागहमी में बेटी के लिये उसके श्रृँगार की वस्तुओं और आवश्यक व्यवस्थाओं में कुछ न कुछ कमी रह ही जाती है। माँ को विदा के समय याद आता है कि फलां चीज तो रह ही गई। रनुबाई के लिये बिंदी लाना थी, वह तो लाना रह गई। अब उसके बिना रनुबाई की सजावट में कुछ कमी कुछ खालीपन लग रहा है। यह सुन व्याकुलता से रनुबाई कहती हैं- माँ आपकी बिन्दी या आभूषणों को क्या करूँ? मेरी सच्ची बिन्दी तो मेरे स्वामी, सूर्य अर्थात् धणियर जी हैं, जो अपनी राह चलकर पर्वत चढ़कर उस पार उतर रहे हैं। अत: मैं उन्हीं के साथ जा रही हूँ।

सुहागन के माथे की बिन्दी उदीयमान सूर्य की तरह लालिमायुक्त होती है, जो स्त्री के सौन्दर्य को द्विगुणित कर देती है। बिन्दी ही उसका वास्तविक सौन्दर्य है। स्वामी से ही स्त्री का सौभाग्य और आकर्षण है। यही संदेश है इस गीत में। सूर्य सन्ध्याकाल में अस्ताचलगामी है- प्रतीकात्मक रूप से पर्वत चढ़कर सूर्य स्वामी उस पर जा रहे हैं। अत: रनुबाई भी अब उनके साथ शीघ्र जाना चाहती हैं।

राग - भूपाली	ताल - कहरवा
थाट- कल्याण	स्वर - शुद्ध स्वर

मांय कय वो म्हारी रूणझुण बेटी .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग - ग -	ग - ग -	रे - सा -	ग - ग -
मा ऽ ऽ ऽ	य ऽ क ऽ	य ऽ वो ऽ	म्हा ऽ री ऽ
ग ग ग ग	ग ग ग ग	रे - रे -	सा - सा -
रू ऽ ण ऽ	झु ऽ ण ऽ	बे ऽ ऽ ऽ	टी ऽ ऽ ऽ
सा - - -	रे - - -	सा - ध़ -	- - सा -
बिं ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ	बि ऽ ना ऽ	ऽ ऽ उ ऽ
रे - ग -	रे - ग -	ग - - -	- - - -
पा ऽ ऽ ऽ	णी ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग ग ग ग	ग ग ग ग	रे – सा –	ग – ग –
का ऽ ऽ ऽ	ई ऽ क ऽ	रूं ऽ वो ऽ	था ऽ री ऽ
ग – ग –	ग – ग –	रे – रे –	सा – सा –
बिं ऽ ऽ ऽ	दी ऽ ऽ ऽ	ख ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ रो ऽ
सा – रे –	रे – रे –	सा – सा –	ध़ – ध़ –
सु ऽ भा ऽ	ऽ न ऽ ऽ	उ ऽ त ऽ	र्‌या ऽ ऽ ऽ
रे – ग –	रे – ग –	ग – – –	ग – – –
जा ऽ ऽ ऽ	य ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग ग ग ग	ग ग ग ग	रे – सा –	ग – ग –
सु ऽ भा ऽ	ऽ न ऽ ऽ	उ ऽ त ऽ	र्‌या ऽ ऽ ऽ
ग – ग ग	ग 5 ग –	रे – रे –	सा – सा –
प ऽ र ऽ	व – त ऽ	च ऽ य ऽ	ढ्‌या ऽ ऽ ऽ
सा – – –	रे – – –	सा – ध़ –	ध़ – सा –
री ऽ ऽ ऽ	ता ऽ ऽ ऽ	र ऽ थ ऽ	घ ऽ र ऽ
रे – ग –	रे – ग –	ग – ग –	ग – ग –
आ ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्य गीत

नर्मदा - भजन (तीर्थ)

सच्चा मन सी भजन करूंगा
म्हारी माई वो नरबदा थारी सेवा करूंगा
(1) गंगा बी न्हाऊंगा, जमना बी न्हाऊँगा 2
तिरवेणी न्हाईन हाजर रऊंगा 2
म्हारी माई वो नरबदा थारी सेवा करूंगा
(2) पान जो फूल अरू बेल की पाती 2
फूलड़ा लई न हाजर रऊंगा, म्हारी माय वो .....
(3) मेवा मिठाई अरू मधु पकवान्न 2
भोग लई न हाजर रऊंगा, म्हारी भाई वो .....
(4) ओंकारेश्वर अरू ममलेश्वर 2
दरसन करी न हाजर रऊंगा, म्हारी माई वो
(5) अमरकंट सी गढ़गुजरात तक 2
थारी हऊं परकम्मा करूंगा, म्हारी माई वो - - -
(6) साधु संत नऽ की संगत मंऽ रही न 2
हात जोड़ी ने विनन्ती करूंगा, म्हारी माई वो नरबदा
सच्चा मन सी भजन करूंगा
म्हारी माई तो नरबदा
थारी सेवा करूंगा .....

विश्व की मानव संस्कृति का विकास अधिकतर नदियों के किनारों पर ही हुआ है। हमारी संस्कृति की यह विशेषता है कि जो हमारा उपकार करते हैं, जो जीवन, स्वास्थ्य और सुख शान्ति के लिये आवश्यक हैं, उन्हें हम आदर देते हैं, उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं, उन्हें हम देवी-देवता, माता-पिता संबोधित करते हैं और सम्मान व्यक्त करते हैं।

नर्मदा मध्यप्रदेश की जीवनदायिनी प्रमुख नदी हैं, अतः हम उन्हें देवी तुल्य मानते हैं। उन्हें माँ संबोधित करते हैं। भारत की समस्त पवित्र नदियों के सम्मान के साथ ही नर्मदा का सम्मान भी करते हैं। कहीं भी जायें, हर समय हर जगह हमें नर्मदा माँ का सदैव स्मरण रहता है और आदरभाव बना रहता है। यही भाव इस गीत में व्यक्त हुआ है।

राग - भूपाली	ताल - चलत दादरा
थाट - कल्याण	स्वर - सब शुद्ध

सच्चा मन सी भजन करूंगा ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
स - -	रे - ग	ग ग -	- रे -
स ऽ ऽ	च्चा ऽ ऽ	म न सी	ऽ भ ऽ
सा - रे	रे - ग	रे सा -	ध़ - सा
ज ऽ न	क ऽ रूं	गा ऽ ऽ	म्हा ऽ री
सा सा सा	- सा -	सा सा रे	रे - ग
मा ई वो	ऽ न ऽ	र ब दा	था ऽ री
रे - सा	ध़ - सा	सा - -	- - -
से ऽ वा	क ऽ रूं	गा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा - सा	रे - -	ग ग ग	ग - ग
गं ऽ गा	बी ऽ ऽ	न्हा ऽ ऊं	गा ऽ न
ग ग ग	रे - -	ग ग ग	रे सा -
ज मु ना	बी ऽ ऽ	न्हा ऽ ऊं ऽ	गा ऽ ऽ
रे रे रे	रे - -	रे रे रे	रे रे रे
ति र वे	णी ऽ ऽ	न्हा ऽ ई	न ऽ हा

सा – रे	रे – ग	रे – सा	ध़ – सा
ज ऽ र	र ऽ ऊं	गा ऽ ऽ	म्हा ऽ री
सा सा सा	– सा –	सा सा रे	रे – ग
मा ई वो	ऽ न ऽ	र ब दा	था ऽ री
रे – सा	ध़ – सा	सा – –	सा – रे
से ऽ वा	क ऽ रूं	गा ऽ ऽ	अ ऽ रे
सा – रे	ग – –	ग – ग	रे – रे
ति र वे	णी ऽ ऽ	न्हा ऽ ई	न ऽ हा
सा – रे	रे – ग	रे – सा	ध़ ध़ ध़
ज ऽ र	र ऽ ऊं	गा ऽ ऽ	म्हा ऽ री
सा सा सा	– सा –	सा सा रे	रे – ग
मा ई वो	ऽ न ऽ	र ब दा	था ऽ री
रे – सा	ध़ – सा	सा – –	ऽ ऽ ऽ
से ऽ वा	क ऽ रूं	गा ऽ ऽ	

गंगा देवी

चोखा न चावल भरिया रे चरवा 2
तो सब पोहा मंऽ मोठा जी भाई गरवा, ओ देवी गंगा
ओ देवी गंगा, वय वो सुरंगा 2
थारी झँवर कर रे म्हारा निरमळ अंगा, ओ देवी गंगा

(1) *गंगा की नाव रव ऽ ढाको रे काप 2*
तो आई मिल नऽ म्हारो समरथ बाप, ओ देवी गंगा

(2) *गंगा की लहर ख ऽ ढाको रे साड़ी 2*
तो आई मिल नऽ म्हारी समरथ माड़ी, ओ देवी गंगा

(3) *गंगा की नाव खऽ ढाको रे आका*
तो आई मिल नऽ म्हारा समरथ काका, ओ देवी गंगा

(4) *गंगा की नाव मंऽ नाखो रे हीरा 2*
तो आई मिल नऽ म्हारा समरथ वीरा, ओ देवी गंगा

(5) *गंगा की नाव खऽ ढाको रे रैयणी 2*
तो आई मिल नऽ म्हारी समरथ बयणी, ओ देवी गंगा

(6) *गंगा की नाव खऽ ढाको रे रैणी (रैती) 2*
तो आई मिल नऽ म्हारी समरथ बेटी, ओ देवी .....

(7) *गंगा की नाव खऽ बांधो रे सूत 2*
(गंगा की लहर मंऽ नाखो रे दूध)
तो आई मिल नऽ म्हारा समरथ पूत, ओ देवी गंगा.....

(8) *गंगा की नाव मंऽ नाखो रे मोती 2*
तो आई मिल नऽ म्हारा समरथ गोती
ओ देवी गंगा........

सुरों की (देवों की) नदी गंगा निरन्तर बहती रहती हैं। इस पवित्र नदी का जल हमारे अंग-अंग को, मन को निरमल-पवित्र बना देता है। गंगा की झवर-लहर हमारे तन-मन को पवित्र कर देती है। गंगा में स्नान करने पर हमारे सभी स्नेही और आत्मीयजन आकर हमसे मिलते हैं। गंगा की महिमा अपरम्पार है।

राग - पहाड़ी बिलावल

ताल - दादरा
स्वर - सब शुद्ध

ओ देवी गंगा, वय वो सुरंगा ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा रे सा	- ध़ -	सा - -	सा - -
ओ ऽ दे	ऽ वी ऽ	गं ऽ ऽ	गा ऽ ऽ
सा रे सा	ध़ - -	सा - -	- - -
व य वो	सु ऽ ऽ	रं ऽ गा	ऽ ऽ ऽ
- - ग	ग - -	रे ग ग	- ग -
ऽ ऽ था	री ऽ ऽ	झं व र	ऽ क ऽ
रे - ग	रे - ग	रे - रे	सा - रे
र ऽ रे	म्हा ऽ रा	नि ऽ र	म ऽ ळ
ग - प	ग - -		
अं ऽ ऽ	गा ऽ ऽ		

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ध़ - सा	रे - -	ग - रे	सा - -

गं ऽ गा	की ऽ ऽ	ना ऽ व	ख ऽ ऽ
सा रे सा	ध़ – –	सा – सा	– – ग
ढा ऽ को	रे ऽ ऽ	का ऽ प	ऽ तो ऽ
ग ग –	– ग –	रे ग रे	ग – –
आ ई ऽ	ऽ मि ऽ	ल न म्हा	रा ऽ ऽ
रे – रे	सा – रे	ग प ग	– – –
स ऽ म	र ऽ थ	बा ऽ प	ऽ ऽ ऽ

तीर्थ

कोट पर कोट दिल्ली का दरवाजा,
दिल्ली का दरवाजा
कोट कूदी न म्हारा घर आओ गंगा माता
तुम पर चवर ढुलावां
चेवर ढुलाव हमरा मोठा भाई घरास्या
मोठा भाई घरास्या
उनख अम्मर करी राखो गंगा माता
तुम पर चवर ढुलावां
वो बी अम्मर उनका बालुड़ा बी अम्मर
बालुड़ा बी अम्मर
लाड़ी वऊ रो चूड़िलो अव्हात हो गंगा माता
तुम पर चवर ढुलावां
कोट पर कोट दिल्ली का दरवाजा.....

हमारे यहाँ जब कोई तीर्थयात्रा पर जाता है, तब प्रतिदिन घर–परिवार और गाँव के लोग शाम को एकत्रित होकर तीर्थयात्रा की सफलता और शुभकामना हेतु तीर्थ गीत गाते हैं, उनके सकुशल लौटने की कामना करते हैं। इन गीतों में हमारी पवित्र नदियों, देवी–देवताओं की महिमा का वर्णन, स्तुति और उनसे आशीर्वाद की कामना की जाती है।

इस गीत में गंगा माता को अपने घर आने और परिवार को अपनी कृपा और आशीर्वाद से उपकृत करने का आग्रह है।

राग – भीमपलास	ताल – दीपचंदी
थाट – काफी	स्वर – (ग, नि) कोमल

कोट पर कोट दिल्ली का दरवाजा .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ प़ प़	नि़ ऩ नि़ –	सा – –	रे – नि़ –
को ऽ ऽ	ट प र ऽ	को ऽ ऽ	ट ऽ दि ऽ
सा – सा	रे – ग रे	सा रे रे	सा – नि़ –
ल्ली ऽ का	द ऽ र ऽ	वा ऽ ऽ	जा ऽ दि ऽ
सा – सा	रे – ग रे	सा रे रे	सा – – –
ल्ली ऽ का	द ऽ र ऽ	वा ऽ ऽ	जा ऽ ऽ ऽ
ग ग ग	ग ग म –	ग – म	ग रे सा सा
को ऽ ऽ	ट ऽ कू ऽ	दी ऽ न	म्हा रा घ र
नि़ सा –	रे ग रे –	सा रे रे	सा – – –
आ वो ऽ	गं ऽ गा ऽ	मा ऽ ऽ	ता ऽ ऽ ऽ
नि़ – रे	रे – रे –	ग रे –	सा – नि़ –
तु ऽ म	प ऽ र ऽ	चं व ऽ	र ऽ ढु ऽ
सा – –	सा – – –	सा – –	– – – –
ला ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
प़ – प़	नि़ – नि़ –	सा – सा	सा रे नि़ –
चं ऽ व	र ऽ ढु ऽ	ला ऽ व	ह म रा ऽ
नि़ सा –	रे रे ग ग	सा रे रे	सा – – –
मो ठा ऽ	भा ई घ ऽ	रा ऽ ऽ	स्या ऽ ऽ ऽ
नि़ सा –	रे रे ग ग	सा रे रे	सा – – –
मो ठा ऽ	भा ई घ ऽ	रा ऽ ऽ	स्या ऽ ऽ ऽ
ग ग ग	ग – म –	ग म –	ग – रे –
ऊ ऽ न	ख ऽ अ ऽ	म्म र ऽ	क ऽ री ऽ
नि़ सा सा	रे ग रे –	सा रे रे	सा – – –
रा खो ऽ	गं ऽ गा ऽ	मा ऽ ऽ	ता ऽ ऽ ऽ

नि़ – रे	रे – रे –	ग़ रे –	सा – नि़ –
तु ऽ म	प ऽ र ऽ	चं व ऽ	र ऽ ढु ऽ
सा – –	सा – – –	सा – –	– – – –
ला ऽ ऽ	वां ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

सतगुरु (काया गीत)

सतगुरु न रंगाई म्हारी या चुनड़ी 2
परब्रह्म न बणाई म्हारी या चुनड़ी 2

(1) अष्टकमल दस चरखा चाल्या पंचतत्त्व की पूनी 2
सत्व-रजस-अरू तमस गुणन कीऽऽऽ होऽऽऽ
सत्व रजस अरू तमस गुणन कीऽऽऽ
इड़ा-पिंगळा सुसुम्ना की रे या चुनड़ी
होऽऽ इड़ा पिंगला सुसमना की रे या चुनड़ी
सत्गुरु न .....

(2) जवं या चुनड़ी बुणी न आई,
धोबी का घर दीवी 2
आट-पाट धोबी न धोईऽऽऽ होऽऽऽ
आट-पाट धोबी न धोई
रतन सिळा पर छुपकी, म्हारी या चुनड़ी
होऽऽ रतन सिळा पर छुपकी म्हारी या चुनड़ी
सत्गुरु.....

(3) जवं या चुनड़ी धुळी न आई,
रंगरेजा घर दीवी 2
रंगरेजा न असी रंगी ऽऽऽ हो ऽऽऽ
रंगरेजा न असी रंगी
लाल सुरूख कर दीवी, म्हारी या चुनड़ी
हो लाल सुरूख कर दीवी, म्हारी या चुनड़ी
सतगुरु.....

(4) धुरूव न ओढ़ी, प्रहलाद न ओढ़ी,
ओढ़ी मीरा बाई 2
दास कबीर न असी ओढ़ीऽऽऽ होऽऽऽ
दास कबीर न असी ओढ़ी

ज्यों की त्यों-धर दीनी, म्हारी या चुनड़ी
हो ज्यों की त्यों धर दीनी म्हारी या चुनड़ी

परब्रह्म परमेश्वर ने हमें जीवन दिया। माता-पिता से यह भौतिक शरीर प्राप्त हुआ और गुरू ने कृपापूर्वक जीवन को अपनी शिक्षा से सँवार दिया। अज्ञान तथा अन्य कमियों को दूर कर परिष्कार किया। जीवन के विविध रंगों और पक्षों से परिचित कराया, जीने की सही राह दिखाई, ताकि इस जीवन में सन्मार्ग पर चलकर, कर्त्तव्यों का पालन कर, जीवन का उद्देश्य पूर्ण कर सके। पुनः यह आत्मा शुद्धता के साथ अपने घर परमेश्वर के सान्निध्य में पहुँच सके। इस संसार में ऐसे कई महापुरुष हो गये, जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन परोपकार करते हुए इस जन्म-जीवन रूपी चादर (आत्मा) को पवित्र रखते हुए अपने कर्त्तव्यों का पालन कर, कमल की तरह संसार के माया-मोह रूपी पंक में स्वच्छ रख ज्यों के त्यों रूप में ईश्वर समक्ष समर्पित कर दिया। हम ऐसा जीवन जीएँ, गीत से ऐसा सन्देश मिलता है।

राग - भीमपलास　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - (ग , नि) कोमल

सत्गुरु न रंगाई म्हारी या चुनरी .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
प़ - सा -	रे - ग -	रे - सा -	नि़ - प़ -
स ऽ त ऽ	गु ऽ रू ऽ	न ऽ रं ऽ	गा ऽ ई ऽ
प़ - रे -	रे म ग म	रे - सा -	सा - - -
म्हा ऽ री ऽ	या ऽ ऽ ऽ	चु ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ
प़ - सा -	रे - ग -	रे - सा -	नि़ - प़ -
प ऽ र ऽ	ब्र ऽ ह्म ऽ	न ऽ रं ऽ	गा ऽ ई ऽ
प़ - रे -	रे म ग म	रे - सा -	सा - - -
म्हा ऽ री ऽ	या ऽ ऽ ऽ	चु ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग ग	ग ग ग रे	सा रे रे ग	रे - सा -
अ ष्ट क ऽ	म ळ द स	च र खा ऽ	चा ऽ ल्या ऽ

नि̲ – सा नि̲	प़् – प़् नि̲	सा – सा –	ग̲ रे ग̲ –
पं ऽ च त	त्व ऽ की ऽ	पू ऽ नी ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
प प प प	प प प ध̲	म म म प	प – प प
स त्व ऽ र	जस̲ ऽ अ रू	त म स गु	ण ऽ न की
म – म ग̲	रे – ग̲ रे	सा सा सा –	प़् – रे –
इ ऽ ड़ा पिं	ग ऽ ला सु	स म णा	म्हा ऽ री ऽ
रे म ग̲ म	रे – सा –	सा – सा –	सा रे रे म
या ऽ ऽ ऽ	चु ऽ न ऽ	री ऽ ऽ ऽ	हो ऽ ऽ ऽ
म – प ग̲	रे – ग̲ रे	सा सा सा –	प़् – रे –
इ ऽ ड़ा पिं	ग ऽ ला सु	स म ना ऽ	की ऽ रे ऽ
रे म ग̲ म	रे – सा –	सा – सा –	– – – –
या ऽ ऽ ऽ	चु ऽ न ऽ	ड़ी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

काया

हो रंग मंऽ गोरी हो काळ्ई चुनड़ीऽ
नव मयना मंऽ करी तैयार हो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(1) बाल पणो मनऽ खेली नऽ गवायो 2
भर ज्वानी रो पूर म्हारा तन मंऽ
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(2) माथो सो धोयो म नऽ करयो सिनगार हो 2
म्हारा अंगणा मंऽ बठ्या मिजवान हो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(3) सब हो बराती म्हारो आणो लई चाल्या 2
पाछऽ रोव पियरिया रा लोग हो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(4) सब हो बराती म्हारो आणो लई चाल्या 2
पाछ ऽ रोवऽ पियरिया रा लोग हो, चुनड़ी बड़ी....
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(5) पाछऽ फिरी नऽ हऊं देखण लागी
बंधी लाकड़ा री गाड़ी तैयार हो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

(6) कहत कबीरा सुणो भाई साधू 2
तीन चुकटी की हुई गई राख वो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो
हो रंग मंऽ गोरी हो काळ्ई चुनड़ी
नवमयना मंऽ करी तैयार हो
चुनड़ी बड़ी अनमोल हो

जीवन क्षण-भंगुर है। माता के गर्भ में नौ माह रहकर शरीर का निर्माण होता है और गोरे या साँवले शरीर में परमात्मा अपना अंश आत्मा रूप में स्थापित कर संसार में सत्कार्य करने के उद्देश्य से भेजता है। परन्तु गर्भ में ईश्वर की शिक्षा का पालन करने का आश्वासन देने वाला प्राणी भौतिक शरीर धारण कर सांसारिक माया-मोह में पड़कर ईश्वर को, जन्म के उद्देश्य को भूलकर प्रपंचों में व्यस्त हो जाता है। बालपन खेल में तथा युवा अवस्था राग-रंग में व्यतीत कर देता है। वृद्धावस्था में इंद्रियों के शिथिल हो जाने पर कुछ बनता नहीं और जीवन स्वयं तथा दूसरों के लिये भार स्वरूप हो जाने पर पछताता है और मिले हुए अवसर को गवाँ देता है। उसे जीवन और संसार की सत्यता का ज्ञान इसी अवस्था में होता है। असार संसार की भूल-भुलैया में भटकने के पश्चात् सब कुछ खोकर जब होश आता है, तब सब समाप्त हो जाता है और संसार में रहकर सत्कार्य, परोपकार करने हेतु ईश्वर से वरदान स्वरूप मिला शरीर तीन चुटकी राख बनकर व्यर्थ हो जाता है।

राग - भैरवी | ताल - दादरा
थाट - भैरवी | स्वर -(रे , ग , ध , नि) कोमल

हो रंग मंऽ गोरी हो काळ्ई चुनड़ी .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा म म	म म म	ग रे ग	- रे रे
हो ऽ रं	ऽ ग मं	गो ऽ री	ऽ हो ऽ
सा सा नि़	ध़ नि़ -	सा सा रे	- सा सा
का ऽ ऽ	ळ ई ऽ	चू ऽ न	ऽ ड़ी ऽ
- - नि़	- ध़ -	नि़ नि़ सा	- सा सा
ऽ ऽ न	ऽ व ऽ	म य ना	ऽ मं ऽ
सा सा रे	ग ग ग	म ग प	म म म

क ऽ री	तै ऽ ऽ	या ऽ र	हो ऽ ऽ
ग रे ग	रे सा सा	सा – रे	ग म –
चू ऽ न	ड़ी ऽ ऽ	ब ऽ ड़ी	अ न ऽ
ग ग रे	सा – –	– – –	– – –
मो ऽ ळ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

सा सा म	म म म	ग रे ग	रे – सा
बा ऽ ळ	ऽ प ऽ	णो ऽ ऽ	म ऽ न
सा रे सा	ध़ ध़ नि़	सा सा सा	रे सा सा
खे ऽ ली	न ऽ गं	वा ऽ ऽ	यो ऽ ऽ
– – –	नि़ ध़ ध़	नि़ नि़ सा	सा सा सा
ऽ ऽ ऽ	भ र ऽ	ज्वा ऽ नी	ऽ रो ऽ
सा सा रे	ग – म	ग ग प	म – –
पू ऽ र	म्हा ऽ रा	त ऽ न	मं ऽ ऽ
ग रे ग	रे सा सा	सा – रे	ग म –
चू ऽ न	ड़ी ऽ ऽ	ब ऽ ड़ी	अ न ऽ
ग ग रे	सा – –	– – –	– – –
मो ऽ ळ	हो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ

बनड़ो भलो लोभाण्यो जी, कि रायवर भलो लुभाण्यो जी 2
म्हारी प्रेम सुहागल सुघड़ बनी नऽ, अंबर वर पायो जीऽ 2

(1) *लख चवर्यासी भटकत-भटकत यो दिन आयो जीऽ 2*
यो अवसर अब चूकी गयो तो, फिर पाछे पछतावो।। बनड़ो .....

(2) *सूरिया गाय को गोबर मंगाड़्यो, अंगणो लिपायो जी 2*
पांच-सात अनबिन्दिया मोती, मोतियन चऊक पुरायो। बनड़ो .....

(3) *हरिया बाँस को मंडप बणायो, जामुन पान छवायो जी 2*
पाँच-सात सहेली मिलकर, मंगळ गीत गायो।। बनड़ो . . .

(4) *ब्रह्मा जी तो वेद पढ़ावऽ, विष्णु नऽ भँवर फिराई जी*
सतगुरु सी हथेलो लाग्यो, ओम शब्द वर पायो।। बनड़ो .....

(5) *इनी नगरी का नव दरवज्जा, दसवीं खिड़की जीऽ 2*
खिड़की ऊप्पर सेज पिया की, तन-मन नेह लगाओ।। बनड़ो .....

भारतीय संस्कृति में जन्मोत्सव की तरह ही जीवन के अन्तिम संस्कार मृत्यु को भी हम मरणोत्सव के रूप में मनाते हैं। वास्तव में यह सांसारिक माया-मोह के चक्र से छूटकर आत्मा के अपने घर परमात्मा के पास पहुँचने का अवसर है। आत्मा और परमात्मा के मिलन की घड़ी है। हमारे भक्तिकालीन निर्गुण एवं रहस्यवादी कवियों ने भी आत्मा को प्रिया और परमात्मा को प्रिय की संज्ञा दी है।

विवाह की तरह ही मृत्यु होने पर मानो आत्मा रूपी प्रिया पर मोहित परमात्मा प्रियतम दूल्हे के रूप में ब्याहने आ रहे हैं। घर-आँगन लीप कर चौक बनाये जाते हैं, जिसे जौ-तिल्ली-तुलसी रूपी मोतियों से सजाया जाता है। जैसे विवाह मण्डप बाँस से बनाकर जामुन-आम के पत्तों से छाया जाता है, ऐसे ही बाँसों से मृत देह ले जाने की अर्थी तैयार की जाती है। फूल-माला चंदन-गुलाल से सजाया जाता है, मेवा-पैसे बरसाये जाते हैं, बाजे बजते हैं और स्त्री-पुरुष, परिचित-रिश्तेदार, रुदन-गान-भजन सहित विदा (अन्तिम) करते हैं। सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा जी वेद वाणी उच्चारते हैं और मोक्षदायक विष्णु जन्म-मृत्यु रूपी भाँवरे करवाकर अग्नि के माध्यम से सद्गुरू के (पंडित) दिखाये मार्ग से 'ओम्' मंत्ररूपी वर पाकर आत्मा-परमात्मा रूपी प्रियतम से मिलने चल देती है। शरीर रूपी नगरी के पाँच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्मेन्द्रियों रूपी दसों खिड़की दरवाजों से मुक्त होने पर ही प्रियतम (परमात्मा) से मिलने की सेज मिलती है और आत्मा तन-मन से मुक्त हो उस ईश्वर में अपना सम्पूर्ण नेह-प्रेम समर्पित करती है।

जीवन का अन्तिम संस्कार भी 'मुक्ति' देने वाला आनन्दोत्सव है।

राग - वृन्दावनी सारंग　　ताल - कहरवा
थाट - काफी　　स्वर - (नि , <u>नि</u>)कोमल एवं शुद्ध

बनड़ो भलो लुभाण्यो जी.....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा सा सा सा	ऩि प़ प़ प़	ऩि ऩि सा सा	रे - - -
ब न ड़ो ऽ	भ लो ऽ लु	भा ऽ ण् यो	जी ऽ ऽ कि
सा सा सा सा	ऩि प़ प़ प़	ऩि ऩि सा सा	रे - - -
रा य व र	भ ऽ लो ऽ	लु भा ण् यो	जी ऽ ऽ ऽ
सा सा रे रे	प प प प	प प प प	म प प म
म्हा ऽ री ऽ	प्रे ऽ म सु	हा ग ल ऽ	सु घ ड़ ब
रे रे ऩि सा	रे रे रे म	रे रे ऩि ऩि	सा - - -
नी न अं ऽ	ब र व र	पा ऽ यो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
रे म म म	रे रे सा सा	सा रे रे रे	सा सा नि़ प़
ल ख चौ ऽ	र्या ऽ सी ऽ	भ ट क त	भ ट क त
प़ नि़ नि़ नि़	नि़ नि़ सा सा	रे – – –	रे रे रे रे
यो ऽ दि न	आ ऽ यो ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	यो ऽ अ व
म म म म	प प प प	प प प प	रे प प प
स र अ ब	चु ऽ की ग	यो ऽ तो ऽ	फि र पा ऽ
म म रे रे	सा सा सा सा		
छे ऽ प छ	ता ऽ णो ऽ		

मन पंछी चल्यो रे मुख मोड़ रेऽ
पिंजड़ो रीतो छेऽ 2

(1) *ये पिंजड़ा का कारणऽ, लख चौर्यासी भोगी 2*
नाथ गर्भ मळ मूत्र मंऽ, उलटो रह्यो न कोई साथी,
इन अंधी गुफा सी प्रभु छोड़ रेऽऽ
पिंजड़ो रीतो छेऽऽ 2

(2) *अरे कुल करार कियो गर्भ मंऽ 2*
भूल्यो बाहेर आय,
वो प्रभु दीनानाथ कोऽ
नांव दियो रेऽ बिसराय
काळ आयो ते गरदन तोड़ रेऽ, पिंजड़ो रीतो छेऽ 2

(3) *ये माया का माता-पिता 2*
माया को परिवार,
माया को सब जग कहे, माया झूठी जाल
इनी माया सी मुख तू मरोड़ रेऽऽ, पिंजड़ो रीतो छेऽ 2

(4) *ना पग सी तीरत कर्या,*
कर सी दियो नी दान 2
मुख सी सुमिरन नहीं कर्यो, कथा सुणी नहीं कान
सुख भोग्यो बदन दियो तोड़ रेऽ, पिंजड़ो रीतो छे 2

रे मन पंछी चल्यो न मुख मोड़ रेऽऽ
पिंजड़ो रीतो छेऽऽऽ

योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता में कहा है- जन्म ध्रुव है तो मृत्यु भी ध्रुव सत्य है। जन्म होने पर शिशु, बाल, युवा, प्रौढ़ और वृद्धावस्था के अगले क्रम में मृत्यु है। शरीर नाशवान है, किन्तु परमात्मा का अंश-रूप आत्मा अमर होती है। शरीर रूपी पिंजड़े से आत्मा रूपी पंछी के निकल जाने पर शरीर-पिंजर खाली और व्यर्थ हो जाता है। अत: मनुष्य जीवन मिलने पर सत्कर्म तथा सदाचरण द्वारा प्राप्त मनुष्य जीवन को सार्थक किया जा सकता है, अन्यथा अन्त में जीवात्मा को केवल पछतावा ही हाथ रह जाता है। निष्काम भाव से तथा निर्लिप्त होकर कर्त्तव्य पालन का संदेश इस लोक गीत में अत्यन्त सरस और सरल स्वरूप में प्रगट हुआ है।

प्राणी जब नौ माह माता के गर्भ में रहता है, तब प्रभु से शीघ्र मुक्ति की कामना व प्रार्थना करता है, किन्तु संसार में आने पर उसके माया-मोह आकर्षण में फँसकर ईश्वर को भूल जाता है। अन्त समय आने पर फिर निराशा और पश्चाताप ही रह जाता है।

राग - भूपाली	ताल - दादरा, कहरवा
थाट - कल्याण	स्वर - सब शुद्ध

मन पंछी चल्यो रे मुख मोड़ रेऽ ऽ ऽ .....

स्थाई (दादरा)

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा रे रे	रे ग ग	ग प ग	सा रे रे
म न ऽ	पं ऽ छी	च ल्यो रे	मु ख ऽ
ग रे सा	ध़ - -	ध़ रे रे	रे सा सा
मो ऽ ड़	रे ऽ ऽ	पिं ज ड़ो	ऽ री ऽ
सा - -	सा- -		
ऽ तो ऽ	छे ऽ ऽ		

अन्तरा (कहरवा में)

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
ग ग ग ग	रे ग रे ग	रे रे ग रे	सा ध़ सा सा
ये पिं ज ड़ा	का का र ण	ल ख चौ रया	सी ऽ भो गी
ग ग ग ग	रे ग रे ग	रे रे रे रे	रे रे रे रे

ना थ ग र्भ	म ळ मू त्र	मं ऽ उ ल	टो र ह्यो न
सा ध़ सा सा	सा सा सा सा		
को ऽ ई ऽ	सा ऽ थी ऽ		

स्थाई (दादरा)

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा रे रे	रे ग ग	ग प ग	सा रे रे
इ नी ऽ	अं ऽ धी	गु फा ऽ	सी प्र भु
रे सा ध़	ध़ – –	ध़ रे रे	रे सा सा
छो ऽ ड़	रे ऽ ऽ	पिं ज ड़ो	ऽ री ऽ
सा – –	सा – –		
ऽ तो ऽ	छे ऽ ऽ		

जन्म - बधाई

खुशी हुई जी म्हारा मन कीऽ 2
आज बधाई सियाराम कीऽ 2

(1) माता गवरा जी नऽ गणपति जाया 2
अंजनी नऽ जाया हनुमान जीऽ .....2, आज बधाई.....

(2) माता कौशल्या नऽ रामचन्द्र जाया 2
सुनयना नऽ जाई देवी जानकीऽ .....2, आज बधाई .....

(3) माता कैकई नऽ भरतलाल जाया 2
सुमित्रा नऽ जाया लखनलाल जीऽ .....2, आज .....

(4) राजा दशरथ जी नऽ धेनु लुटाया 2
अऊर लुटाया घोड़ा पालकीऽ, आज बधाई .....

(5) राजा दशरथ घर नवगत वाजऽ 2
सखियन मंगळ गावती रेऽऽ, आज बधाई.....
खुशी हुई जी म्हारा मन कीऽ.....

भारतीय संस्कृति में मनुष्य को संस्कारित करने के लिए सोलह संस्कारों की व्यवस्था की गई है। समुद्र की अनगिनत उठती-गिरती, लुप्त होती और पुनः उठती लहरों की तरह मानव-जीवन भी अनन्त है। जन्म, विकास, चरमोत्कर्ष और फिर अनन्त में लीन होना, पुनः उदय-यही संसार का, जीवन का शाश्वत क्रम है।

शिशु जन्म की खुशी केवल जन्मदाता माता–पिता को ही नहीं होती, वरन् हमारे यहाँ सम्पूर्ण गाँव ही शिशु के स्वागत, जन्मोत्सव के आनन्द में सम्मिलित होता है। जन्म लेने वाला शिशु गाँव–प्रान्त, देश–विश्व का भावी नागरिक होता है। उसे राम या कृष्ण रूप में देखकर ही लोग आनंदित होते हैं। लोक गीतों में नवजात शिशु राम या कृष्ण तथा माता–पिता राजा दशरथ–रानी कौशल्या या बाबा नंद और माता यशोदा के रूप में वर्णित होते हैं।

सन्तान जन्म की खुशी में पिता सभी को भेंट या दान देकर बधाई देने वालों का सम्मान करते हैं। जैसे राजा दशरथ ने पुत्र जन्म के अवसर पर गाय, हाथी–घोड़े, पालकी, वस्त्र, हीरे–मोती, रत्न–आभूषण सब कुछ खुशी में लुटाया था।

राग – काफी　　　　ताल – कहरवा

थाट – काफी　　　　स्वर – (ग , नि) कोमल

खुशी हुई जी म्हारा मन कीऽऽऽ...........

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा रे रे	ग ग म म	प म ध प	ग रे सा नि
खु ऽ शी हु	ई जी म्हा रा	म ऽ न की	आ ऽ ज ब
सा रे म ग	रे सा सा सा–		
धा ऽ ई सि	या रा म कीऽ		

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा ग म	प प प प	प प ग म	नि प ग सा
मा ऽ ता ऽ	ग व रा जी	ऽ न ग ण	प ति जा या
सा रे रे रे	ग म म म	प म ध प	ग रे सा नि
अं ज नि न	जा या ह नु	मा ऽ न जी	आ ऽ ह ब
सा रे म ग	रे सा सा सा–		
धा ऽ ई सि	या राम क कीऽ		

साहेब का स्वरूप

रूप नाहीं रेखा नाहीं, नाहीं है कुल गोत रे।
बिन देही को साहब मेरो, झिल मिल देखूँ जोत रे।।

पाणी पवन सी पातळो, जसो सूर्या मंऽ घाम।
जसो इ ससि को चांदणो, असो छे म्हारो राम।।

निर्गुण निराकार परब्रह्म के स्वरूप का वर्णन करते हुए सन्त सिंगा जी कहते हैं कि परब्रह्म परमेश्वर का कोई रूप, आकार, कुल, गोत्र आदि नहीं है, वह निराकार परम ज्योति है। वह पानी और वायु से भी पतला एवं तरल है। उसका अनुभव और प्रतीति ही की जा सकती है, जैसे सूर्य की धूप, चाँद की चाँदनी।

राग – किरवानी   ताल – कहरवा
थाट – आसावरी   स्वर – (ग , ध) कोमल

रूप नाहीं, रेखा नाहीं ....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा सा प प	प म प नि	ध ध प ध	प म ग म
रू प नाहिं	रे ऽ खा ऽ	ना हिं ना ऽ	हि ऽ है ऽ
प ध प –	– – – –	प प प प	प म म म
कु ल गो ऽ	ऽ ऽ ऽ त	बि न दे ऽ	ही ऽ को ऽ
प म म –	ग म ग म	म प प प	ग रे सा –
सा ऽ हेब ऽ	मे रो ऽऽ	झि ल मि ल	दे ऽ खूं ऽ
प ध – –	– – – –	सा सा प प	प प प प
ज्यो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ त	पा ऽ णी ऽ	प व न सी
प नि ध –	प ध प म	ग म म म	ध प प –
पा ऽ त ळो	ज सो ऽ सू	ऽ र्या ऽ मं	ऽ घा म ऽ
सा सा प प	प ध प म	म ग ग म	ग म ग म
ज सो ऽ ई	स सि को ऽ	चां ऽ ऽ द	णो ऽ ऽ ऽ
म प प म	ग रे रे –	सा – – –	सा – – –
अ सो ऽ छे	म्हा ऽ रो ऽ	रा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ म

ब्रह्म का निरूपण

निरगुण ब्रह्म है न्यारा, कोई समझो समझणहारा

(1) *खोजत ब्रह्म जलम सिराणा, मुनिजन पार न पाया*
खोजत–खोजत शिव जी थाके, वो असो अपरम्पारा।

कोई समझो समझणहारा .....

(2) *शेष सहस्त्र मुख रट रे निरन्तर, रैन दिवस एकसारा*
रिसि-मुनि अरू सिद्ध चौर्‌यासी, अरू तैंतीस कोटि पचिहारा।।
कोई समझो समझणहारा.....

(3) *त्रिकुटी मयल मंऽ अनहद वाजऽ, होत सब्द झनकारा,*
सुकमणि सेज शून्य मंऽ झूलऽ, ओ सोहम् पुरुस हमारा।।
कोई समझो समझणहारा . . .

(4) *वेद कहे अरू कहे निरवाणी, स्रोता करो विचारा,*
काम क्रोध मद मत्सर त्यागो, झूटा जगत् पसारा,
एक बूँद की रचना सारी, जाका सारा पसारा,
सिंगा जी नऽ भर नजरां देख्या, ओ ही गुरु हमारा।।
कोई समझो समझणहारा
निरगुण ब्रह्म छे न्यारा,
कोई समझो समझणहारा .....

निर्गुण निराकार ब्रह्म का परिचय देते हुए सन्त सिंगा जी कहते हैं कि वह निराकार ईश्वर निराला है, सबसे अलग है। उसे कोई समझदार ही समझ पाता है। ऋषि-मुनियों ने ब्रह्म की खोज में अपना सम्पूर्ण-जीवन लगा दिया, परन्तु उसे नहीं पा सके। साक्षात् शिव उन्हें ढूँढते-ढूँढते थक गये। वे भी उस अनन्त ब्रह्म को नहीं पा सके। साधना, सत्मार्ग, सदाचार तथा निरन्तर भक्ति साधना द्वारा उस अनहद - नाद की झंकार को सुन पाता है। आत्मा में तब उस परमात्मा का आभास होता है। उसे बाहर ढूँढने नहीं जाना पड़ता। काम, क्रोध, लोभ, मद, मत्सर, झूठ, स्वार्थ आदि दुर्गुणों को त्यागने पर ही ईश्वर की अनुभूति सम्भव है।

राग - पीलू	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - सब शुद्ध एवं कोमल

निरगुण ब्रह्म है न्यारा .....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा प प प	प ध़ प म	ग़ म ग़ म	प ध़ प -
नि र गु न	ब्र ऽ ह्म छे	न्या ऽ ऽ ऽ	रो ऽ को ई
ग़ म नि़ प	ग़ ग सा नि़	सा - - -	सा प म प
स म झो ऽ	स म झ न	हा ऽ ऽ रा	हो ऽ ऽ ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
ग म ग रे	म ग ग सा	रे रे ग –	रे सा सा सा
खो ऽ ज त	ब्र ऽ ह्म ज	ल म सि ऽ	रा ऽ णा ऽ
रे म म म	म प प नि	प नि ध प	प – नि़ –
मु नि ज न	पा ऽ र न	पा ऽ या ऽ	खो ऽ ज त
नि सां सां सां	नि सा नि ध	प प प प	प नि प प
खो ऽ ज त	शि व जी ऽ	था ऽ क्या ऽ	वो ऽ अ सो
ग ग म म	प – प प		
अ प रं ऽ	पा ऽ रा ऽ		

सन्त सिंगा जी

खेती खेड़ो रे हरी नाम की,
जामऽ मुक्तो लाभ रे, खेती खेड़ो रे हरिनाम की .....

(1) पाप का पालवा कटावजो, काटी बाहेर राळ
करम की कासी एचावजो, खेती चोखी थाय।

(2) वास-श्वास दुई बईल्या छे रे, सुर्ती की रास लगाय,
प्रेम पिराणो कर धरो, ज्ञान आर लगाव।

(3) ओहं बक्खर जूप जो, सोहं सरतो लगाव,
मूळ मंत्र को बीज बोवजो, खेती लट-लूम थाय।

(4) सत् को मांडो रोपजो, धरम पयड़ी लगाव,
ज्ञान का गोळा चलावजो, सुआ उड़ी-उड़ी जाय।

(5) दया की दावण राळजो, बहुरि फेरा नहीं होय
कहे सिंगा पयचाण लेवो, आवागमन नहीं होय।

सन्त सिंगा जी ने निर्गुण, निराकार ब्रह्म का परिचय देते हुए ईश्वर प्राप्ति का सरल मार्ग बतलाया। सन्त सिंगा जी ने कृषि प्रधान भारत देश के लोगों को जो कि मूल रूप से कृषक हैं, उन्हें आध्यात्मिकता का संदेश भी किसान की दिनचर्या से सम्बन्धित प्रतीकों के माध्यम से दिया है। उन्होंने इस गीत में हरिनाम की खेती का सुंदर चित्रण किया है।

पाप रूपी अनावश्यक घास- पात को काट हरिनाम के खेत से बाहर फेंको और कर्म की खरपतवार को निंदाई कर बाहर करो, तो खेती अच्छी होगी, परिणाम अच्छे आयेंगे। श्वास-प्रश्वास रूपी बैलों को सुरत की रास लगाओ और प्रेम पिराणा हाथ में रखकर ज्ञान की आर

लगाओ अर्थात् प्रेम और ज्ञान के द्वारा श्वास-प्रश्वास रूपी बैलों पर अनुशासन रखो। ओम् बीज मंत्र की बोवनी करो तो हरिनाम की फसल लटालूम होगी। सत का रोपा लगाओ और ज्ञान के गोले से माया-मोह के पक्षियों को उड़ाकर अपनी खेती की रखवाली करो। दया की दावण करने पर जनम-जनम के फेरे नहीं होंगे, अर्थात् आवागमन से मुक्ति मिलेगी। बहुत सुंदर रूपक बाँधा है।

राग - भीमपलास	ताल - कहरवा
थाट - काफी	स्वर - (ग, नि) कोमल

खेती खेड़ो रे हरी नाम की ....

स्थाई

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
प प प म	ग - मग रे -	ग रे सा -	सा - सा -
खे ऽ ती ऽ	खे ऽ ड़ोऽ रेऽ	ऽ ह रि ऽ	ना ऽ म की
सा म म म	म ग ग ग	म प म प	प - म ग
जा ऽ मं ऽ	मु क तो ऽ	ला ऽ भ ऽ	छे ऽ रे ऽ

अन्तरा

× - - -	0- - -	× - - -	0 - - -
सा म म म	म म म ग	- ग ग म	प - प -
पा प का पा	ल वा क टा	ऽ व जो ऽ	ऽ रे ऽ ऽ
प प प म	ग - रे ग	सा - - -	सा म म म
का टी ऽ बा	ह ऽ र ऽ	रा ऽ ळ ऽ	क र्म की ऽ
म म म म	म म म प	प - प प	प ध प म
का ऽ सी ऽ	ए चा ऽ व	जो ऽ तो ऽ	खे ऽ ती ऽ
ग - रे -	सा - - -		
चो ऽ खी ऽ	था ऽ ऽ य		

जन्म - मरण से मुक्ति

आवागमन मत कीजे रे मन म्हारा,
फिरी जलमऽ मत लीजे रे ।
तत्त्व पलंग पर सेज-बिछावणा,
शून्य मंऽ डेरो दीजे रे, मन म्हारा ....

सांसारिक माया–मोह के चक्र में पड़कर व्यक्ति ईश्वर को भुला देता है। श्रेष्ठ मार्ग–सत्य, दया, अहिंसा, परोपकार, सेवा आदि को भूल वह स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, मोह, लोभ, अपने–पराये के दूषित भावों से ग्रसित हो पाप कर्म में लिप्त हो जाता है और कर्म फल भोगने के लिए पुनः –पुनः जन्म लेता है और जन्म–मरण के चक्र में फँसकर अपने परमात्मा से निरन्तर दूर होता जाता है।

सन्त सिंगा जी अपने मन को संबोधित कर कहते हैं– अब बार–बार आवागमन– अर्थात् संसार में जन्म लेना और फिर मृत्यु अर्थात् संसार से जाना, अब मत करना। पुनः जन्म मत लेना। सत्कर्म कर संसार से मुक्त होकर परब्रह्म को पहचानों। परम तत्त्व को पहचान अनन्त में उसके पास ही जाओ और उसी में लीन हो जाओ। ईश्वर को भक्ति द्वारा पाया जा सकता है और संसार–चक्र से मुक्त होना तब सम्भव होगा।

राग – आसावरी	ताल – कहरवा
थाट – आसावरी	स्वर – (ग ,ध , नि) कोमल

आवागमन मत कीजे रे मन म्हारा .....

स्थाई

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
सा प प प	प नि ध प	– म ध प	म ग रे ग
आ वा ऽ ग	म न म त	ऽ की ऽ जे	रे म न ऽ
रे सा सा सा	सा रे रे म	म प प नि	नि ध प प
म्हा ऽ रा ऽ	फि रि ऽ ज	ल म म त	ली ऽ जे ऽ

अन्तरा

× – – –	0– – –	× – – –	0 – – –
म ग म प	ध – प प	सां सां सां नि	ध नि ध प
त त्व प लं	ग ऽ प र	से ऽ ज बि	छा व णा ऽ
सा प प प	प नि ध प	– म ध प	म ग रे ग
शू ऽ न्य मं	डे ऽ रो ऽ	ऽ दी ऽ जे	रे म न ऽ
रे सा सा सा	सा रे रे म	म प प नि	नि ध प प
म्हा ऽ रा ऽ	शू ऽ न्य मंऽ	डे ऽ रो ऽ	दी ऽ जे ऽ